॥ श्री ॥

श्रीधर्मशील सद्गुरुभ्योनमः

महाजनवंश मुक्तावली.

४ वर्णकी उत्पत्ति

युक्तिवारिधिः उपाध्याय श्रीरामलाल-
जीगणिः निर्मित.

[प्रकाशक]

शिष्यक्षेम अमर बालचंद्र

सर्व हक्क विद्याशाला अर्पण.

द्वितियावृत्ति २०००.

सं॥ १९७८ सन् १९२१.

पुस्तकका पत्ता:—उपाध्याय श्रीरामलालगणि, बीकानेर
मारवाड मोहल्ला, रांघड़ी.

निछरावल २॥)

प्रिंटरः—रा. रा. चिंतामण सखाराम देवळे, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंटस् ऑफ इंडिया सोसायटीज् बिल्डिंग, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव-मुंबई.

प्रकाशकः—शिष्यक्षेम अमर बालचंद्र, बीकानेर मारवाड मोहल्ला, रांघड़ी.

॥ श्री ॥

॥ अथ प्रस्तावना ॥

धर्म्म सुरतरू जैन धर्म्मी महाजन महाजन वंश मुक्तावली जो मैनैं संग्रह करी है इसमें *वृहत् खरतर भट्टारक गछके श्रीपूज्यजी महाराज बीकानेर विराजितके* दपतरका मुख्य आश्रय तद्वत् श्रीवीकानेर वडे उपाश्रयके ज्ञान भंडारका आश्रय महोपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी उ। श्री आसकरणजी पं। प्र। श्रीमोतीचंद्रजी उ। श्रीलक्ष्मणजी तथा हमारे परमगुरु सम्यग् दर्शन ज्ञानव्रत दाता पंडितशिरोमणि साधूजी महाराज इत्यादिकोंके श्रीमुखसैं श्रवण करा जो जो प्राचीन इतिहास उपलब्ध हुआ वह मैनैं लिखा है यदि मेरी अल्पज्ञताके कारण लिखनेमैं भूल रही हो तो सज्जन जन क्षमा प्रद होंगें किसी भी महाशयका चित्त दुखानेके लिये उल्लेख नहीं किंतु सत्य लिखना धर्म्म है चंद्रमै शीतलता सूर्यमैं उष्णता समुद्रमैं क्षारता इत्यादि अनेकानेक गुणवाले पदार्थोंमैं अंशासैं किंचित् अपगुण भासमान है लेकिन् वह चंद्र आदि पदार्थोंके अपगुणभी प्राणी जनोंके लिये हितावह ही है यदि किसीकों न हो तो क्या यथा चंद्र किरण राशि विरही जनोंको अप्रिय है तथापि सार्व्वजनक अप्रिय नहीं सूर्यके प्रकाशमैं उल्लूककों नहीं दीखता तो सूर्यका प्रकाश सार्व्वजनक अप्रिय नहीं ऐसा कोई कार्य नहीं जिसमैं दूषण खलजन नहीं देते यथा त्यागवैराग्य सर्व्वजन सम्मत है तो उसमैं भी एकसमाजके त्यागी दुसरी समाजके त्यागीमैं अनेक दूषण निकालते हैं यदि एकांत ध्यान करने कोई स्थित हो तो अन्य समाजके जन उसकों खुदगरजी कहते हैं यदि ज्ञानकी उच्चदशा प्राप्तकर अन्य जनोंकों सदुपदेश दे खुदगरजी पना त्यागता है तो अन्य समाजके मनुष्य कहते हैं परोपदेश देनेमैं ही तत्पर हैं आपका उद्धार क्या करा यदि विरक्तता धारकर भिक्षावृत्ति करता है तो अन्यसमाजके जन कहते हैं पुरुषार्थहीनहोकर परायेकी आशा त्यागी नहीं यदि परासा है तो विरक्तता कहां यदि वनोवासी हो नग्नपनैं नदीका जलपान वृक्षोंसैं गिरे फल पुष्पसैं निर्वाह करता है तो अन्य समाजके जन कहते हैं यह जीव अदत्त सचित्तजल सचित्तफलः दिखाते हैं इस लिये ये साधु नहीं, इस प्रकार जन्मसैं ब्रह्मचर्यधारी रहता है तो अन्यसमाजके जन कहते हैं यदि ऐसैं सर्व्व मनुष्य समाज हो जाय तो संसारका नाशही हो जाय और राज्य धर्म्म वर्त्तमान समयका गृहस्थ पन श्रेष्ठ मानते हैं

इत्यादि कारणोकों विचारते हैं तो गुण मैंभी अपगुण निकालनेवाले जगत्मैं विद्यमान है इस लिये बुद्धिमानोंनैं बुद्धयानुसार सत्मार्ग हितावह जो हो उसमैं यथा-शक्ति प्रवर्त्तना, लोकतो चढेकों भी हसते हैं और प्यादलकों भी हसते हैं सर्व्वजनकी एक सम्मति हुई न होगी इति

यतः तथापिक्रियतेग्रंथशंति यद्यपि दुर्जना, नहि दस्युभयाल्लोको दैन्यवानिह वर्त्तते १ [अर्थ] ये श्लोक वैद्यजीवनमैं लिखा है तो भी ग्रंथ करता हूं यद्यपि दुर्जन जन हैं यथा चौरोके भयसैं संसारके लोक क्या दीन दलिद्री वणवै ठैंगैं, कदापि नहीं, यतः खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति ॥ आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति २ [अर्थ] ये श्लोक चाणक्य ब्राह्मणनैं साहानशाहचंद्रगुप्तको कथन करा है, दुष्ट मनुष्य सरसवप्रमाणभी परछिद्र देखते हैं अपणा दुर्गुण बिल प्रमाणकों देखता हुआ भी नहीं देखता २,

इसलिये बुद्धिमत्ता वह कहाती है यदि किसीनैं उपदेश देते दुगुर्णोकों त्यागना बतलाया तो वणे जहांतक अपनां वा अपने समाजको सुधारनेका प्रयत्न करै यदि दुर्गुण नहीं त्यागा जावै पूर्वकर्म्मयोगसैं तो फेर उपदेश दाता ऊपर द्वेषभाव धारण करना बुद्धिमत्ताका कार्य नहीं कलियुगमैं सत्यवक्ता पना किसी पुण्यवंत दीर्घदृष्टि न्यायवंतकोंही अछा लगता है, बाकी तो जैसैं सच्च बोले बालकनैं अपणी वैधव्य माताकों कहा हे माता, पिता तो मरगया, तैनैं ये सुक्ष्म २ का जल क्यों सारा है वस तत्काल माता क्रोधातुर हो मारने दोडी तब भागते हुये सच्चबोलेनैं कहा सत्य कहै, मांमारे, यदि मनको रुचता असत्य गुण भी किसीका वर्णन करो तो बडे लोक प्रशन्न होते हैं क्योंकी आज संसारमैं खुसामदी ताजा रुंजगार हो रहा है लेकिन् चर्प्पट पंजरीमैं स्वामी शंकरनैं कहा है यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं २ इस प्रकार जैनधर्म्मके शक्रस्तवके अनंतर प्रणिधान दंडकमैं भी लिखा है लोग विरुद्धच्चाओ, अर्थात् जो कार्य शुद्ध है यदि लोक विरुद्ध है तो नहीं आचरण करना पुनः ऐसा भी है शत्ये नास्ति भयंक्वचित्

जैनधर्मपर आक्षेप करनेवालोंकों निरुत्तरकर्त्ता खरतर गच्छके श्वेतांबराचार्य उपाध्याय समय २ पर विजयकर्त्ता होते रहै, विक्रमशीले शताब्दीमैं श्री जिनचंद्रसूरिः बादसाह जहांगीरके सन्मुख मसूरपठाणकों धर्म बादमैं जयकरा, जिनआज्ञाके लोपक निन्हवोंका पराजय करा, खरतर गच्छपर आक्षेप करनेवाला धर्मसागरजी तपागच्छीको, पाटणनगरगुजरातमैं ८४ गणके उपाध्याय वाचकादि मुनिमंडल समक्ष, शास्त्रार्थ करने बुलाया लेकिन् असत्यवादी होनेके कारण आये नहीं, केइ दिन सभा

रही, आखिर उहां आये हुये सर्व गच्छके गीतार्थोनें धर्म सागरजीको मृषावादी समझ ८४ गणसे निकाला खरतरगच्छकों जिनाज्ञा पालक विजयपत्र लिखा जिसका तांबा पत्रवाडी पार्श्वनाथजीके मंदिरके ज्ञान भंडारमें रखा, नकल सामाचारी शतकमें उपाध्याय समयसुंदरजीनें लिखी है, उससमय भव्यजीव श्री संघमें हर्षका पारावार छागया, ग्रंथ रचनेवाले आप धर्म सागरजी अपने लिखे लेखको सत्य नहीं कर सके तो उस ग्रंथकों माननेवाले खरतरगच्छका पराजय करना लिखते हैं विजयसारमें यह लेख स्वमताभिमानसूचक सर्वथा असत्य है, यदि सत्य होता तो विक्रम संवत् उगणीश शय चोहत्तर पचहत्तर, छिहत्तर पर्यंत खरतर गच्छके मणिसागर सुमति-सागर मुंबईमें शास्त्रार्थ करने कितने छापे द्वारासूचना देते रहे लेकिन् एक भी सन्मुख परपक्षी नहीं हो सके, वस मालुम हुआ आपके विजय सारके लेखकी सत्यता वृथाकुसंपकी वृद्धि करणी, बुद्धिमत्तानहीं है,

पूना नगरमें श्रीजिन भक्तिसूरिः जीने पेसवाराव शिवाजीके सन्मुख वेदांतमति-योंसें चर्चाकर जैनधर्मका विजयडंका बजाया, सादडीगाममें तपागच्छ वालोंनें खरतर गच्छकों जिनाज्ञा विरुद्ध कथन करा, तब शास्त्रार्थमें तपोको निरुत्तर करा, श्रीसंघ भव्य जीवप्रमुदित हुए, निर्मल जलको गदलाकरनेवाला महिष और शूकर ग्रीष्मसे तपायमान गदलाकरता है लेकिन् जल अपने शीतल गुणको नहीं छोडता है, योधपुरमें राठोडराजा मानसिंघजीके सन्मुख शभामैं कास्मीरी पंडितोंनें जैनधर्म का उपहास्य करके कहा जैनसनातनवाले तक्रसैं अलग किये अनंतर दो घटिकाके नवनीतमैं समुर्छिम पंचेंद्रीजीवोंकी उत्पत्ति तद्वर्ण कहते हैं, येसर्व्व मृषावाक्य अप्रमाण है, तब माहाराजानें जैनयति महाविद्वान् शंभु (शिवचंद्र) जीकों शास्त्रार्थके लिये पालीसैं आमंत्रन करा तब इसवाक्यके प्रत्युत्तरमैं शिवचंद्रजीनें एकगऊ मंगवाकर उसकी पूंछकों इधर उधरकर देखने लगे तब माहाराजा आश्चर्यमैं आकर पूछा हे गुरु पूंछ मैं क्या देखते हो शिवचंद्रजीनें उत्तर दिया हे नरेंद्र प्रष्णकर्त्ता पंडितोंके मंतव्या नुसार गऊकीपूंछमैं तेतीस कोटिदेवता रहते हैं इसलिये इतनी देर देखा लेकिन् एकदो भी देखनेमैं आया नहीं ३३ कोटि तो दूर रहै ये वचन सुण राजादिक हसपडे वे पंडित लज्जितहो शिवचंद्रजीकी काव्यबंध स्तुति करी नृपनैं वादिगज सिंह पद दिया इसप्रकार विक्रमशताब्दीउगणीशमैं खरतर गछ मंडलाचार्य बालचंद्रसूरिनैं नाशकमैं महाराष्ट्र तेतीस पंडितोंकों जैनधर्म नास्तिक नहीं आस्तिकोंमैं अग्रेश्वरी है सिद्ध कर दिया पंडितोंनैं विजय पत्र लिख दिया इसप्रकार उज्जणमैं पंडित रायचंद्रजी यतिनैं दक्षणीपंडितोंकों शब्दशास्त्र और स्याद्वादन्यायकी शेलीसैं अन्य न्यायको सूर्य सन्मुख तेजहीन तारकवत् कर-

दर्शाया शिष्य नहीं मिलनेके कारण का'ल दोषसैं यति गुरुओंकी वृद्धि तथा कालदोषसैं अवशेषोमैं विद्याकी न्यूनता हो रही है

हम धारतेथे वर्त्तमानमैं साधुनाम धरानेवाले कुछ उन्नती करेगें लेकिन् ये तो परस्पर द्वेषापत्तिसैं ग्रसित होते हुये अन्यदर्शनियोंकों सर्वज्ञधर्मकी प्राप्तिकराने किंचित्भी उद्यम नहीं करते अमूल्य समय परस्परके रागद्वेषमैं व्यतीत करते हैं, यदि शास्त्रार्थ परस्परही करना होतो, शमभावसैं निसल्यपनै करना चाहिये, वैसा नहीं करते, केवल परस्परमैं, कुसंपकी वृद्धि करना यथार्थ नहीं, पकडापक्ष कोई नहीं त्यागता, उनोंनें तो उसको सत्यही मान रखा है, कषायोंकी चोकडी क्षय करनाही, परम पदका सोपान है

और जो साधुओंके नामधारी, भाषाकी कहाणियां गीत गानेवाले हैं वे तो व्याकरण काव्य कोश न्यायादिकके अणपढ अन्य दर्शनियोंसैं किस प्रकार शास्त्रार्थ कर सक्ते हैं, वे तो यति आचार्योंके प्रतिबोधे हुये, जैन समाजकों अपने कुयुक्तियोंद्वारा, अपना मंतव्य मनाते, जन्मव्यतीत करते हैं, उन अन पठितों कीये प्रशंसा, डाक्टर हार्मन जे कोवी भी, सम्यकृतया कर गया के, संस्कृत प्राकृत अन्य २ जैन ग्रंथ बहुतोंके पढनेकी आवश्यक्ता है, इत्यादि, इनोंकी अण-पठितताकों देखकर कह गया था, इत्यादि एक वार्त्ता अद्भुत इस समाजमैं देखी, कोई दुसरे धर्म्मवाला इनका ठाठ देखने इन समाजके मनुष्यसंग उन मताध्यक्षके शमीप चला जावेतो बैठे हुये, हजार पांचसो गृहस्थ, कहने लगते हैं, संसारसैं पार पाना है तो, श्रद्धा धारलो, इहां धनवान हो जाओगे, तब वह मताध्यक्ष आधिपति कहता है, कुछ जाण पना है, तब सर्व्व गृहस्थ कहते हैं, कुछ पूछना हो तो पूछलो, ऐसै अंतरयामी सर्वज्ञ, फेर नहीं मिलेंगें, शंका मनकी निकाल लो, तब जो इन समाजका स्वरूप जानता है, वह तो, कह देता है, मुझें कुछ भी नहीं पूछना है, और जो इन समाजके स्वरूपका, अजाण हो, कोई इनकों जबाब नहीं आवै ऐसी वार्त्ता पूछ बैठता है, वस उसी समय, उस एक मनुष्यके पीछै वे हजार मनुष्य, कोलाहल मचाते हैं, उसकी बात सुणने नहीं देते और वने जहांतक उसकी आजीविका भंग करते प्राण कष्टतक पहुंचा देते हैं, और जो इनोंकों मालूम होती है के अमुक विद्वान हमारी कथन कसी वार्त्ताकों जैन सूत्रोंसैं, वा, हमारी कुयुक्तियोंकों, न्याय युक्तिसैं खंडन कर्त्ता है, तब अपने समाजके लोकोंकों प्रथम हीसैं शिक्षा देने लगते हैं, अमुक मनुष्य कुशी लिया है, अपना द्वेषी है, इससैं वार्त्ता करनेसैंही, पाप लगता है, ऐसा सुणते ही, घणीक्षमा तहत्त, दीनबंधु, कृपासिंधु, पृथ्वीनाथकों, घणीखमा, वसवे हियाशून्य, ज्ञानचक्षुरहित,

लकीरके फकीर, बाबा वाक्यं प्रमाणं, उसही डगर चलते हैं, इतना विचार नहीं, घर २ भीख मंगेको हम पृथ्वीनाथ क्या समझके कहते हैं और जो दुराचारी कुकर्म्मा परधनवंचक इन समाजसैं धन ठगना चाहै उनोंके लिये यह सहज मार्ग है, बस वह इनके चरण छूअे, और इन वेषधारियोंकी, असत्य स्तुति करै, जाकर हाजरी भरै, असत्य निंदा दुसरे धर्म्म वालेकी करै, वह इनोंकों अत्यंत वल्लभ होता है, उसके लिये, अपने समाजियोंसैं कहते हैं, अमुक भायो, वाई, सत्य-वक्ता, आछो है, तब मुख्य कहता है, विशेष आछो है बस वह इस समाजमैं, ए, मे, पास हुआ, समझा जाता है, कुपात्रका दान, धर्मसैं निषेध करा है, तथापि, उदार दिलसैं देते हैं, ऐसै २ मत भी आर्यावर्त्तमैं कालके महात्म्यसैं, प्रचालित है,

जब तक जैनधर्म्मवाले संप्रति राजावत् जैनविद्वान पंडितोंकों नानादेश भाषा शिखाकर सर्वज्ञधर्म्म सायन्स प्रत्यक्ष प्रमाणसैं हितावहकी पुस्तकैं छपाकर सर्व्व देशी जनों कों उपदेश नहीं करांयगें तावत् उदयकाल आवेगा नहीं दिनोंदिन जैनधर्म्मी जनोंकी शंक्षान्यून इसी कारण हो रही है, जिन २ मतों मैंस्थान २ गृहस्थ लोक उपदेश करते फिरते हैं, उन २ मतोंकी दिनोदिन वृद्धि हो रही है, जैसैं आर्या समाज, ईसाई इत्यादिकोंकी, देखते २ वृद्धि हो गई, जैन ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाणसैं, इसभव, परभव दोनों मैं लाभ दायक धर्म्म उसकी दिनोंदिन हानी क्यों होती है, इसका क्यों नहीं विचार करते हैं, ईसाई धर्म्मके गुरु, मुख्य पोपपादरी, पादरी, मुसलमान मतके पीरजादे पारसियोंके गुरु, शिव, वैष्णव, मतके, ब्राह्मन, गोकुल गुसांई, आर्या, इत्यादि सर्व्व स्त्री धन रखनेवाले हैं, उन उपदेशकोंके वचन, मुख्य-तया शिरोधार्य करते हैं, जैनधर्म तीन फिरके श्वेतांबरी स्त्री और धन रखनेवाला पूरा पंडित सत्योपदेश हितकारीभी कहता हो तो, प्रथम तो सुनेतेही नहीं यदि सुने तो, श्रद्धा प्रतीति नहीं करते, त्यागी स्त्रीधनका, ऊपरसैं इनोंकों दीखना चाहिये बस उसअपठकी वार्त्ता पर भी श्रद्धा करते हैं, जैन सूत्रोंमैं, त्यागमार्ग, साधुजनके लिये अत्यंतही कठिन दर्शाया है, वे सर्व देशोमैं पहुंचही नहीं शक्ते, कहांई जाते है तो, स्थानमैं रहे व्याख्यान करते हैं, उहां स्वफिरकेके विना, अन्य दर्शनी आता नहीं, तब जैन संक्षा कैसैं वृद्धि पावै, महम्मद साहबका मत, और स्वामी शंकरका मत तो, बलात्कारपनैं, वृद्धि पाया था, ऐसा करना, विद्वानोंकों मंतव्य नहीं, इस समय जैसैं ईसाई, आर्या, खुल्ले दरम्यान व्याख्यान करते हैं, वैसा जैनधर्म्म वालोंनें सर्व्वत्र करना, कराना चाहिये, यदि श्रद्धा सर्व्वज्ञ वाक्य पर हो जावै, अभक्षादिक नहीं त्यागसके तथापि श्रेय है, यथा नेम प्रभुके

उपदेशसैं कृष्ण नारायण महावीर प्रभुके उपदेशसैं राजा श्रेणक, इस प्रकार होनेसैं, उनोंके शंतान क्रमसैं व्रतधारी बन जायंगें, स्त्री, धन, रखने वाले सम्यक्त धारियोंनें, तथा सम्यक्त युक्त द्वादशव्रत धारियोंनैं, अनेक जीवोंकों, जैन धर्म्मी बनाया है, स्त्री धनके त्यागी हो, उपदेश करते हैं उनोंकों तो धन्यवाद है, लेकिन स्त्री धन रखकरभी जो मिथ्यात्वीको सम्यक्त्व धारी बनावै उसकों अनंत धन्यवाद है।

इस ग्रंथमैं जैन खरतर गछाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिः माणि धारी श्रीजिनचंद्र सूरिः। तथा श्रीजिन कुशलसूरिः जी आदिकोंनैं जो निज आत्मबलसैं उपदेश देकर मंत्रशक्तिद्वारा राजन् वंशियों ऊपर उपगार करके जैनधर्म्मी महाजनवंशकी वृद्धि करी तदनंतर विक्रम शताब्दी पनरेके उतरते जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिन माणिक्यसूरिःके पट्टधर श्रीजिनचंद्रसूरिः गुरुदेव वीर प्रभूके जन्मराशीपर आया हुआ भस्मराशी गृहके उतरनेके समय अवतारी प्रगटे जिनोंके ज्ञान और क्रियाकी प्रशंसा अनेक शंतजन तथा कर्म्मचंद वछावतसैं श्रवण कर अकब्बर बादसा खास निज लेखणीसैं फुरमाण बीनती पत्र लाहोर नगर देश पंजाबसैं अपनें निज उमरावोंकों गुरुकों आमंत्रन करनें भेजे उस समय आचार्यके ८४ शिष्योंमैंसैं, मुख्यशिष्य, सकलचंद्र उपाध्यायके शिष्य, समयसुंदरजी, विहारमैं, संगथे, उनोंनैं गुरुगुण, छंद, अष्टक भाषाबद्ध रचा है, यथा,

संतनकी मुख वाणि सुणी जिनचंद मुनींद महंतजती, तपजप्प करे गुरु गुज्जरमैं प्रतिबोधत है भविकूं सुमती, तब ही चितचाहन चूंप भई समय सुंदरके गुरु गछपती, भेजे पतसाह अजब्बकी छाप बोलाये गुरु गजराज गती, १ गुज्जरतैं गुरु राजचले विचमैं चौमास जालोर रहे, मेदनी तटमंत्र मंडाण कियो गुरु नागोर आदर मांनल हे, मारवाड रिणी गुरु वंदनकों तरसे सरसे विच बेगब हे, हरख्यो संग लाहोरं आये गुरु पतसाह अकब्बर पांवग हे २, ऐजी साह अकब्बर बव्वरके गुरु सूरत देखतही हरखे, हम योगी यति सिद्धसाध व्रती सबही षट् दर्शनके निरखे टोपी वस अमावस चंद उदय अज तीन बताय कला परखे तप जप्प दया धर्म्म धारणकों जग कोई नहीं इनके सरखे, ३' गुरु अमृत बाणसुणी सुलतान ऐसा पतसाह हुकम्म किया, सब आलम मांहि अमारि पलाय बोलाय गुरु फुरमाण दिया जगजीव दया धर्म्म दाक्षणतैं जिन शासन वीच शौभाग्य लिया, समय सुंदर कहे गुणवंत गुरु दृग देखत हरखत भव्य हिया, ४, हे जी श्रीजी गुरु धर्म्म ध्यान मिले सुलतान सलेम अरज्ज करी गुरुजीव दया नित प्रेमधरे चित्त अंतर प्रीति प्रतीति धरी, कर्म्मचंदबुलाय दियो फरमान छोडाय खंभायतकी मछरी,

समय सुंदरके सब लोकनमैं नितखरतर गच्छकी क्षांतिखरी, ५, हेजी श्रीजिनदत्त चरित्र सुणी पतसाह भये गुरुराजि येरे, चामर छत्र मुरा तब भेट गिगडदं धूं धूं बाजियेरे, उमराव सबे कर जोड खडे पभणे अपने मुखहा जियेरे, समय सुंदर तूंही जगत्र गुरु पतसाह अकब्वर गाजियेरे, ६ हेजी ज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सद्गुरु रींझियेजी हूमायूको नंदन एम अखे मानसिंघ पटो धरकीजियेजी, पतसाह हजूर थप्यो सिंहसूरिः मंडाण मंत्री श्वर वींझीयेजी, जिनचंद पट्टे जिनसिंहसूरिः चंदसूरज ज्यूं प्रतपी जियेजी, ७, हेजी रीहडवंश विभूषण हंस खरतर गच्छ समुद्रशशी, प्रतप्यो जिन माणिक्यसूरिके पट्ट प्रभाकर ज्यूं प्रणमूं उल्हसी, मनशुद्ध अकब्वर मानत है जगजाणत है परतीति इसी, जिनचंद मुनींद चिरं प्रतपो समय सुंदर देत आशीष इसी ८ इति श्रीदादा श्रीजिनचंद्रसूरिः अष्टकम् ॥

उस अकब्वर पतसाहके श्रीजिनचंद्रसूरिः खरतर गच्छा चार्यके प्रथम समागमका चित्र उस समय चित्रकारनैं लिखा वह बीकानेरके श्रीजी साहब के शमीप विद्यमान है, इन खरतराचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिःकों युग प्रधान जगद्गुरु पद बादसाहनैं दिया

खरतर गछाचार्य, श्रीजिनेश्वर सूरिःने अणहिल पत्तनमैं चैत्यवासियोंसैं, जय प्राप्त करा, तब राजा दुर्लभनैं खरा विरुद दिया और राजा परमजिन धर्म्मी हुआ, गुरुसैं शास्त्र अध्ययन करा, यह वृत्तांत गुजरातीमैं छपा गुर्जर भूपावली ग्रंथ, ब्राह्मणोंके रचे मैं भी लिखा है चैत्यवासीयोंके १७ गोत्र श्रावक, खरतरकी शुद्ध क्रिया ज्ञानको देख सुविहित पक्षमंतव्य करा, श्रीपति (ढढ्ढा) गोत्र गुरुनैं प्रतिबोध दे श्रावक किया इनोके चंद्र सूरिः उनोंके अभय देवसूरिः इनोके श्रीजिनवल्लभसूरिः चामुंडा [सच्चाय] देवीकों उपदेशसैं वसवर्त्तीकर ५२ गोत्र श्रावक बणाये, इनोंके दादा श्रीजिनदत्त सूरिः इनोंनैं आत्मलब्धिसैं, महात्म्य प्रगटकर, अनेक क्षत्री राजा ओंका कष्ट मिटा, राजन्यवंश, माहेश्वरवंश, ब्राह्मनादि उत्तमज्ञातीवालोंकों, सम्यक्त युक्त श्रावक बणाये, इनोके मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः दुसरे दादाजीनैं भी अनेक राजन्यवंशियोंकों प्रति बोधकर श्रावक बणाये, इनोंके पंचमपट्टधर दादा श्रीजिन कुशलसूरिः तीसरे दादा प्रगटे इनोनें ५० सहस्रराजन्यवंशियोंके ऊपर ऊपगारकर श्रावक गोत्र किया,

इस प्रकार खरतर बृहद्गछके युग प्रधानाचार्य गुरुदेव जैनमहाजनोंका जीवित विद्यमान समय अनेक उपकारकर धन और जनसैं जिनधर्म्मकी वृद्धिकरी,

देवलोक गमन करनेके अनंतर भी जो भव्यजीव भक्ति भावसैं गुरुदेवका पूजन स्मरण ध्यान करते हैं उनोंके शंकटमैं सहायता, भाग्यानुसार द्रव्यप्राप्ति पुत्रप्राप्ति आदि, अनेक मन वंछितकार्य पूर्ण करते हैं, इस कलियुगमैं हाजरा हजूर देव है

प्रष्ण, देव गुरुके अर्प्पणकी वस्तु भक्ष नहीं तो दादा गुरु देवकी चढाई हुइ सेष सीरणी लोक कैसैं भक्ष समझते हैं [उत्तर] हेमहोदय देव वीतरागतो मुक्त शिव हो गये उनके तो मंदिर स्थापनामैं गत भोग वस्तु अलीन है, और दादा श्रीजिन दत्त सूरिः प्रथम देवलोक हक्कल विमानमैं चार पल्यकी आयुधारी महार्द्धिक देव है; खरतर संघकों श्रीसीमंधर स्वामीसैं पूछनिश्चयकर तीर्थकरोक्त दो गाथा वडगछ नायक देवभद्रसूरिः देवता होनेके अनंतर समर्प्पण करी वह गाथा गणधर पदवृत्तिमैं तथा गुर्व्वावलीमैं लिखी हुई है, पुनः दादा श्रीजिन कुशल सूरिः विक्रमशताब्दी तेरेमैं सिंधुदेश देरा उरमें फाल्गुण कृष्ण अमावश्याकों देवलोक हुये फाल्गुणपूर्णमासीकों सर्व्वत्र खरतर संघको प्रत्यक्षपनें दर्शन देकर कहा वडे दादा सहाबपरमगुरुसौधर्म्मदेवलोकमैं प्राप्त है मेरा आयु दीक्षा लेनेके प्रथमही भुवनपतिनिकायका बंध पडगया था इसलिये असुर कुमार देवपनें उत्पन्न हुआ हूं इसलिये तुम सर्व्व संघ धर्म्म ध्यानमैं तत्पर रहो ऐसा कथनकर अंतर्ध्यान भये इससमय वडे दादासहाबकी भक्ति कर्त्ताके मनोरथ श्री जिन कुशलसूरिः गुरुदेव पूर्णकरते हैं इसप्रकार चारों दादासहाब स्वर्गवासी देव है, उनोके निमित्त करी शेषसीरणी लीन है, उसमैंसैं, जो दादासाहबके सन्मुख चढाई जाती है, वह सीरणी कोई चढानेवाला नहीं खाता है, किंतु स्वस्थानमैं रही सीरणीका भाग खानेमैं दोष किंचित् भी नहीं यथा, एक श्रावक साधुगुरुकों मोदकादिनैवद्य भक्षवस्तुका पात्र भरा लेकर प्रतिलाभनैं खडा होता है, भावभी उसका ऐसा है, गुरु साधूजीकों संपूर्ण प्रतिलाभदूं, उसमैंसैं, साधूजी किंचित्मात्र लेते हैं, अवशेष पात्रमैं रहा मोदकादि क्या संपूर्ण गुरुद्रव्य हो जायगा, कदापि नहीं, सर्व्व श्रावकजन अवशेष पात्रस्थित वस्तुकों खाते हैं, पुनः जहांगुरु महाराज उपाश्रयादिमैं व्याख्यान करते हैं उहां श्रावक, प्रभावनाके लिये, मोदकादि गुरुके पट्टपर प्रथम आरोपणकर, अवशेषवांटते हैं, तो क्या वह प्रभावना गुरुद्रव्य हो जायगी, कदापि नहीं, इसप्रकार, दादा गुरुदेवको चढाये अनंतर, शेषसीरणी, लीन है

प्रष्ण, गौतमगणधरादिक महान्पूर्वाचार्योंका इतना क्यों नहीं बहुमान स्थापनाकरके करते दादा श्री जिनदत्तसूरिः श्रीजिनकुशलसूरिः का बहुमान क्यों करते हो [उत्तर] हे महोदय गौतमादि गणधरोंकी यत्र स्थापना है, और करी भी

जाती है, पूजन स्मरण भी करते हैं, लेकिन्, श्रीसंघकों सहायकर्त्ता, भक्तजनोंका बंछितपूरक दादा गुरु देवभी महान् आचार्योंकी तरे पूजास्मरणके योग्यहै, यथा सर्व तीर्थंकर एक सदृस देवाधिदेव है, उनोमेंभी वीरजिनंदका व्याख्यान कल्पसूत्रके पर्यूषणोंमें सविस्तर पनैं, स्वप्न उतारणा, जन्म महोत्सव, दशोठन इत्यादिविशेषपनैं, सूत्रकार भद्रबाहुस्वामी, तैसैं टीकाकार प्रकरणानुसार विशेषपनैं, रचनाकरी, वैसैंही व्याख्यानकर्ता व्याख्यानकर श्रीसंघको श्रवण कराते हैं, अन्यतीर्थंकरोंका, तद्वत्विस्तार क्यों नहीं करते, तब तो प्रत्युत्तरमैं यही कहना होगाके, शासननायक आसन्न उपगारी होगये, इसलिये विशेषतासैं करा जाता है, इस ही प्रकार जिन २ राजन्य वंशियोंकों मिथ्यात्वका त्याग कराकर अमूल्य सम्यक्त्व रत्न दिया उन राजन्य वंशियोंकी शंतान उनोंके गुणोंसैं आभारी हो उनगुरुदेवकी स्थान २ प्रति स्थापनाकर पूजा स्मरण ध्यान करते हैं, इसकों विचार सक्ते हैं बुद्धिमान, यथा तपगच्छमैं महान् पूर्वाचार्य अनेक ग्रंथोंके रचयिता, ज्ञानक्रियावंत अनेक होगये, उनोंकी स्थापना करके अद्यावधि किसी भी तपगच्छके साधु वा श्रावकोंनैं पूजन स्मरण नहीं करा था, लेकिन् पंजाब देशमैं जोढूंढिये साधु पनेमैं स्थितहो श्रधान परावर्त्तन होनेसैं सात सहस्र ओसवाल [भावडो] कों, जो की खरतरादि गच्छके थे उन्हो जिन प्रतिमाकी पूजा त्याग दीथी उनोंकों पूजे रे बणाये, पीछै आप संवेगीसाधुवने और जैन तत्वादर्शादि केइ ८।९ ग्रंथ भाषामैं रच छपवाकर, प्रसिद्ध कर, जैन संघप्रर उपगार करा, उनोंके देवलोका नंतर, उनोके शिष्य शंतानी, स्थान २ अब आत्मारामजी [आनंद विजयसूरिः] जीकी मूर्त्तियां, स्थापनकर, पुज वाते हैं, गौतमादि पूर्वाचार्योंकी स्थापना पूजा, क्यों नहीं कराई, प्रष्ण कर्त्ता महाशयजी, आत्मारामजीकी मूर्त्तियां स्थापनेवालोंसैं, ये प्रष्ण नहीं पूछा होगा, तभी तो खरतर गणवालोंसैं ऐसा प्रष्ण छाप कर प्रसिद्ध करा है, सामान्य उपगार कर्त्ताकी मूर्त्ति स्थापकर पूजा करानी, क्योंके एक जिन प्रतिमाके पूजा प्रकरणके सर्व संबंधकों वर्जके, अन्य जैन धर्मकी कृतिकों वे २२ समुदाय वाले भी स्वीकार करते थे, और पूर्वोक्त श्री जिन दत्तसूरिः प्रमुख गुरुदेवोनैं तो मदिरामांसमैं प्रवृत्ति कारक, अहिंसा क्या वस्तु है, इस प्रकारके मिथ्यात्व निष्ठ राजन्य वंशियोंकों परमार्हत् बणाये, इसलिये दादा साहबका उपगार असंक्ष गुणविशेष, जिनोंकी पूजा स्मरण करना उचितही है, और दिव्य शक्तिसैं मनोगत इष्ट प्रवृत्तिं, आपदाकी निवृत्ति करणी, ये प्रत्यक्ष उपगारकों भक्त जन कैसैं, विस्मरणकर शक्ते हैं, वृथा आक्षेप करणा, समदृष्टियोंके उचित नहीं, सुज्ञेषु किंबहुना

[प्रष्ण] देवलोकमैं प्राप्त भये सम्यक्त्वीका चौथा गुणस्थानक है, और सम्यक्त्व युक्त व्रतधारीका पंचम गुण स्थानक होता है, प्रमाद मैं वर्त्तमान साधुका छठा गुणस्थानक, अप्रमादीका शप्तम गुणस्थानक होता है, इसलिये श्रावक और साधु चतुर्थ गुणस्थान प्राप्त देवताका वंदन पूजनस्मरण कैसैं कर सक्ता है, [उत्तर] हे महोदय जैसैं वर्त्तमान जिन वंदन पूजनयोज्ञ होते हैं, तद्वत् भावी जिन भी वंदन पूजन योज्ञ होते हैं, जब प्रथम तीर्थंकर, ऋषभदेवजी, इस अवसर्प्पिणी कालमैं, इस भरत क्षेत्रमैं हुये उस समय उनोंनैं भरतचक्रीके पूछनेसैं आप तुल्य आगे २३ तीर्थंकरोंका होना फरमाया, केवल आयु, देहमान, वर्णादिकका भेद कथन करा, तद नंतर भरतचक्री केलाश [अष्टापद] पहाड ऊपर सिंह निषद्या प्राशाद बनाकर चोवीस तीर्थ करोंकी प्रतिमा विराजमान करी, यह कथन आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तीमै श्रुत केवली भगवान भद्रबाहूस्वामी कृतमैं है, इस प्रकार भगवान् ऋषभ तथा ऋषभ पुत्र ९९ मुक्ति केलाश ऊपर गमना नंतर निर्व्वाण स्थानपर स्तूप कराया, यह कथन जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र मैं है, इस प्रकार ऋषभ देवजीके चतुर्विध संघ प्रतिक्रमण षडावश्यक मैं दुसरा आवश्यक चउवीस त्थव [चतुर्विंशति संस्तव] करते थे वह लोगस्सके पाठ मैं सर्व्व श्रावक प्राय जानते हैं, वह वंदन पार्श्वनाथ स्वामीतक करा, उस मैं आगामी भावी जिन जो द्रव्य निक्षेप मैं थे, उनोका वंदन करणा प्रगटपने सिद्ध है, इस कथनानुसार, सीमंधर स्वामी तीर्थ करनैं, जिन दत्तसूरिकों, एक भवावतारी, मोक्ष गमन, फरमाया है, इस लिये वंदन पूजन स्मरणके योज्ञ निश्चय दादासहाब है, १ दुसरा प्रमाण ऐसा है, नंदी सूत्र मै, २२ मी गाथा मैं जिनके लिखे हुये सूत्र अर्द्ध भरत मैं प्रचलित है, तंवंदेखंधलायरिए उन खंधिला चार्यकों वंदन कर्त्ताहूं इस प्रकार २७ पट्टधारी आचार्य देव ऋद्धिगणिः पर्यंतकों, उनके शिष्य सूत्र लेखक देवशेन आगमोंकी नूंद लिखते वंदना करी है, प्रभव स्वामीसैं लेकर पंचम कालमैं जितनें जैनाचार्य शुद्धज्ञान क्रिया भगवंतकी आज्ञाके आराधक हुये, होते हैं, होंयगें, वेसर्व देव लोक मैं देवता हुये हैं क्योंकि जंबूस्वामीके अनंतर मुक्तितो गये नहीं, नंदी सूत्र मैं २५ आचार्योंका वंदन लिखा ओर पढनेवाले करते हैं, सर्व जैन धर्म्मी नवकार मंत्रका स्मरण करते हैं, उस मैं तीनों कालके, आचार्य, उपाध्याय, सर्व्व साधुओंकों, वंदन करते हैं, वे सर्व्व पंचम आरे मैं हुये, होयगें, होते हैं, वे सर्व्व देवगति धारककों वंदन हुआ वा नहीं, इस लिये ये शंका वृथा है, दादासाहबकी स्थापना गुरु पदकी है, नतु देव पदकी

जो सूत्र वा न्यायसैं युक्तिप्रमाण नहीं मंतव्य करै उनोंके लिये सरकारी दिवानी

फोजदारीका कायदा क्या कर सकता, अपने पिताकों पिता भावसैं न माननीय करे, तो उसका, प्रतीकार कायदेमैं क्या है, लोकीक मैं वह प्रशंसा पात्र नहीं कृतघ्नीयोंका, शिरोमणि कहाता है,

उन गुरुदेवके शंतान जती साधुओं नैं जिनधर्म्मपर महान् आपत्तियां अत्याचारीयोंने डाली, उसकों स्वशक्त्यानुसार निवर्त्तनकर लाखों जैन शास्त्र भंडार जिनमंदिर, जिनमूर्त्तियों, जैनतीर्थोंको यथास्थित रखलिया, संघ की आपदा भी, निवर्त्तनकरी, ऐसैं जैनधर्म्मके आदि रक्षक धर्म्मोपदेशक, व्रत प्रत्याख्यान करने, करानेवाले, सामायक प्रतिक्रमण पौषध श्रावकोकों करानेवाले, सूत्र प्रकरणादिके व्याख्यानकर्त्ता, मंत्र, यंत्र, चूर्ण, अंजनादि सिद्ध प्रभावक, कविप्रभावक, जोतिषादि निमित्त प्रभावक, लिखत पठत जीवाजीवादिनवतत्वके अध्यापक, इत्यादि अनेक गुणोंसैं संघके उपकारकर्त्ता, यती वर्गके उपकारोंसैं लायकबंद कदापि दूर नहीं होगें,

लेकिन् वर्त्तमानमैं भारतग्रंथमैं लिखा दृष्टांतकी सफलता दृष्टिगोचर हो रही है, जब पांडवोंकों वनवास हुआ, तब राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणकों संगले वनदेखने निकले आगे देखा तो एकगऊ अपणी जन्मित वत्साका स्तनपान करती है, ब्राह्मणसैं पूछा, हे भूदेव ये उलटी गति क्यों, हो रही है, ब्राह्मननैं कहा, हे राजन्, ये कलियुग भावी स्वरूप दर्शाता है, कलियुगमैं, मातापिता पूत्रीका द्रव्य भक्षण करेंगैं, उसका ये दृष्टांत कलियुग दर्शा रहा है, आगे जाकर देखातो, चंपक वृक्षके कंटक धूल पत्थर लोकजन डालते हैं, और उसके निकटवर्त्ती बंबूलका कंटक वृक्ष उसकी पूजा प्रदक्षिणा वंदन नमन स्तुति पुष्पमाल धूपोत्क्षेपन आदि कर रहे हैं, धर्मराजनैं ब्राह्मनसैं पूछा ये असमंजस स्वरूप क्यों हो रहा है, ब्राह्मननैं कहा, कलियुग भावी स्वरूप दर्शाता है, आगे निर्विवेकी कलियुगी मनुष्य, गुणवंत जनसैं द्वेष रखेगैं, दुःखदेंगें, और निर्गुणी, विद्यारहित, मिथ्या वासितोंकी सेवा, पूर्वोक्त विधि बहुमान करेंगें २, आगे चलकर देखा तो, तीन पुष्करणिया, समश्रेणी है, प्रथम पुष्करणीका जल उछलता है, वह दूरवर्ती, पुष्करणी मैं जाकर गिरता है, शमीपस्थपुष्करणीमैं एक विंदू मात्र भी नहीं गिरता, तब धर्म्मराजने पूछा ब्राह्मण कहता है कलियुगमैं, जो निज होंयगैं, उनोंकों द्रव्यादिनहीं देंगे, अन्यजनकों विशेष देनेमैं प्रीति श्रीमंत जन रक्खेगें ३ इत्यादि कलियुगमैं प्रवर्तनाके आगामी दृष्टांत सार्द्धशतमित कहे हैं, वह तो कलियुगी स्वरूप अवश्य प्रभाव दिखाने लगा है

वाजे जैन गृहस्थ यती जनोंकों उपदेश देने लगते हैं, आपकों द्रव्यसैं क्या करणा है, लेकिन् जिनोंसैं शरीरकी ममता छूटे नहीं, उनोंकों तो द्रव्यकी अवश्य वांछा रहेगी, यदि इनोंसैं त्यागी पना पूर्णतया निभसके तब तो जो जाणकार होता है वह यती तो अवश्य द्रव्यका त्यागी हो जाता है, कहनेकी आवश्यक्ता नहीं, लेकिन् विचार करना चाहिये यदि यती गुरुजनोंकों श्रावक जननगद् द्रव्य नहीं भेट करते तो, यतिगुरु कैसैं द्रव्य रखते, असाढमैं पछे बडी पर्यूषणोंमैं व्याख्यान पूर्ण होनेपर, तपश्याके पारणे, औसरमैं, विवाहमैं, इत्यादि अनेक स्थानपर, द्रव्यदानके लिये पात्र सम्यक्त्वी व्रतधर मानकर भेट करना सुरुकरा, वह ही अद्या वधि प्रचलित है, इस आश्यासैं यति, श्रावक जनोंके लिये धर्म्म उपदेश करने उपाश्रयमैं, तथा गृह ऊपर पर्यंत भी जाते हैं, यदि आश्यात्याग दे तो, निस्पृहस्य तृणं जगत् ऐसा स्वरूप वणजावै, लेकिन् यह भी स्मरणमैं रहे, श्रावक जो जैन धर्म्म सनातनकों मंतव्य करनेवाले हैं उनोंके केई धर्म्म कार्य मंदिर उपाश्रयके, द्रव्यधारी यति गुरु विना, नहीं निकलेगें, जिन २ क्षेत्रोंमैं, जैन गृहस्थोंकों, यति पंडितोंका सहवास रहा, वे तो जिन धर्म्म पर स्थित रहे, और जिनोंकों, यति पंडितोंका, सहवास, नहीं रहा, वे अमूल्य चिंतामणि रत्नसमान, जिन धर्म्मकों, अज्ञानपणे, त्याग कर, मिथ्यात्वियोंकी संगतसैं, मिथ्यात्ववासित हो गये, काशीस्थसन्यासी, महान्यायवेत्ता, रामा श्रमाचार्यजीनैं, ब्राह्मन, सन्यासियोंकी, शभामैं, मुक्तकंठसैं, भाषण करा था, की, जैनधर्म्मका, स्याद्वादन्याय दुर्ग, ऐसा अभेद्य, और दृढ है, इसकों, कोई नहीं खंडन कर शक्ता, और जिन २ महाशयोंनैं, इसके खंडनार्थ लेखनी उठाई, वे वालचेष्टावत्, विद्वानोंके सन्मुख, हास्यास्पद, माने गये हैं, इसके स्वरूपकों, प्रथम समझले, वह कदापि स्याद्वादीके सन्मुख, तर्क नहीं करेगा, अद्यावधि जितनें श्वेतांबर जिन धर्म्मी श्रावक है, उनोंका जिन धर्म्म, यतियोंकी संगतिसैं ही, रहा है, अब चाहै जिनके उपदेशका लाभ मंतव्य करैं, अब तो यतिविद्वान ही समयके फेरसैं, अल्पही रह गये, तादृसलाभ सर्वत्र प्राप्तही कैसैं हो,

जिन मंदिरोंसैं जैनधर्म्मकी प्राचीनता अन्य दर्शनियोंकों भी विदित हुई, संवत् १९।७५ के वर्षके मासिक पत्र प्रयाग सरस्वतीनैं लिखा है मथुरामैं पृथ्वी तल खोदते एक जिन मंदिरका तोरण लेखयुक्त निकला है उस पर लिखा है शिवयशानैं अर्हतकी पूजाके अर्थ ये जिन प्राशाद कराया, महावीरजीद्विवेदी सरस्वती संपादक लिखते हैं, नोट मैं, यह जिन मांदिर, ईशवी सन्के, केइ शताब्दी प्रथमका बना हुआ, अंगरेजविद्वानोंनैं सिद्ध करा है, वह

लखनेऊके अजायब गृहमैं, अंगरेज सरकारनैं रखा है, इस प्रकार जिन मंदिर जिन मूर्त्तियोंद्वारा जैनधर्म्मकी प्राचीनता, अन्य दर्शनियोंके दृष्टि गोचर विश्वास करने योग्य हो रही है, क्यों कि बहुतसे जिनधर्म्मके द्वेषी जिन धर्म्मकों विशेष प्राचीन नहीं मानते थे, लेकिन् जिन मंदिरोंके प्राचीन प्रादुर्भावसैं उनकों भी जिनधर्म्म प्राचीन है ऐसा मानना पडा है.

इस भरतक्षेत्रमैंकेइयक मत मतांतर प्रथम होगये लेकिन् उनोंका नाम निशान तक अन्य दर्शनी नहीं जानते, यथा श्वेतांबर भगवती सूत्रमैं गोसालेका कथन है, लेकिन् दिगांबर जैनी नामधारकोंके पुराणोंमैं उसका नामाचिन्ह पर्यंत भी नहीं है, श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख, प्रथम आर्यावर्त्तमैं रहनेवाले जो बोद्धोनैं गोसालेकों वीरप्रभुसंग दृष्टिसैं देखा था, वे बोद्धग्रंथमैं लिखते हैं, निग्रंथ महावीरका एक शिष्य गोसाल कभी था इस न्याय श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख सत्यप्रतीति करनें योग्य है, गोशालेके मतको माननेवाले उसशमय ११ लक्ष श्रीमंत गृहस्थ थे, और महावीर स्वामीके यथार्थ धर्म्मानुयायी सौराजा और एकलक्ष गुणसठ सहस्रव्रतधारी गृहस्थ श्रीमंत लिखा है, लिखनेका तात्पर्य ऐसा है, इग्यारेलाखके मताध्यक्षका नामाचिन्ह तक आर्यावर्त्तमैं नहीं रहा, और जैनतीर्थकरोंकी प्राचीनता और होना अन्य दर्शनियोंमैं क्यों कर प्रगट होगई, सम्यक्त्वधारी श्रावकोंके जिनमंदिर करानेके प्रभावसैं इसप्रकार गोशाले आदिपूर्व्व मतांतरियोंके गृहस्थ मंदिरमूर्ति बनवाते तो, इससमय उनोंका होना अन्य दर्शनी भी स्वीकारते, ऋषभदेव के शमय पर्यंतकी भी मूर्तियां अद्यावधि मिलती है, क्योंके निर्विवाद सिद्ध है, जैनगृहस्थ असंक्षकालसैं जिनमंदिर, जिनमूर्ति कराते चले आये, [प्रष्ण] जिनमंदिर जिनमूर्ति, पुनःउसकी पूजामैं जल, पुष्प, अग्नि, फलादि आरोपण करना, हिंसा है, और हिंसाका कृत्य जिनधर्मी श्रावक कैसैं करै, [उत्तर] हे भव्य यह तो तुमभी बुद्धिसैं निर्धार कर सक्ते हो, विना तीर्थ करके भक्त श्रद्धानवाले विना जिनमंदिर कोन करावेगा, और वेही जिनमंदिर कराते चले आये हैं, और तीर्थकरके भक्त श्रद्धावंतकों, मिथ्यात्वी कहे, वह मिथ्यात्वी जिनाज्ञाका विराधक होता है तुम विचार लो तीर्थ करकी श्रद्धा भक्ति मिथ्यात्वीको कैसैं हो सके, जिनमंदिरोंके करानेवाले निश्चय सम्यक्त्ववंत सिद्ध होते हैं, मिथ्यात्वी वोही कहाता है जो तीर्थंकरसैं वे मुख हो, अब रही ये कुतर्क की, पूर्वोक्त विधिमैं हिंसा है, सो स्वरूपहिंसा यत्किंचित् एकेंद्री जीवोंकी दिखती है जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, कराने, वा पूजामैं, तबतो तुमलोकोनैं उपवास, बेला, तेला अठाई, पक्ष, मासक्षमणादि तपस्याकों भी त्यागदेना चाहिये, इस मनुष्य देहधारीके शरीरमैं, बेइंद्री, तेंद्री, त्रसजीव भी असंक्ष है चूरणिये,

गिंडोले, जूं, लीख, चर्म्मजूं आदिक २० जातिके, पन्नवनासूत्रजीवपदमैं, अर्श मैं, कंठवेलमैं, द्विन्द्रियजीव कहा है नारूकों, बेइंद्री जीव कथन करा है, उनोंका जीवतव्य मनुष्यकृत आहारपानीसै हैं, जवउपवाशादिमैं, उन जीवोंकों, आहारपानी नहीं मिलता, तब वे, मर जाते हैं, अब तुम विचार करो, धर्म्मके अर्थ असंक्षजीव हलते फिरतेको, मारना, ये हिंसा विशेष, वा जिनमंदिरादिमैं, एकेंद्रीजीवोंकी हिंसा बताकर त्यागदेना, वह विशेष, इसलिये ही आचारांगसूत्रमैं, लिखा है

आसवासेनिरासवा, निरासवासेआसवा, अर्थात् आश्रव वह निराश्रव, निराश्रव वह आश्रव, धर्म्मकार्यमैं हिंसाकी दलील करणी, जिनाज्ञासैं विरुद्ध है सर्व्व कार्यमैं इरादा (भाव) अनुसार, धर्म्म, और पापका बंध होता है

प्रतिष्टाकल्प नामग्रंथ १० पूर्वधर श्रुतकेवली भगवान वज्रस्वामीका रचा हुआ है, इस लेखानुसार, जिनमंदिर, जिन प्रतिमाकी प्रतिष्टा कराई जाती है,

१२ कालीके अनंतर ८४ आगमोंमैं २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति आदि १६३ शलाका पुरुषोंका इतिहास, श्रावकोंका जीवन चरित्र आदि पूर्ण पनैं नहीं लिखागया, अन्य २ अनेकस्थल जैसैं दृष्टिवाद विछेदगया वा ११ अंगमैं विंदुमात्र-स्थल लिखागया, वाकी पूर्वधारियोंने, वा श्रुतधर आचार्योंनैं, जो लिखा, वह घोर जुल्मसैं वचेवचाये लाखों शास्त्र जैनके विद्यमान है, पाटन, पट्टन, खंभायत जेसलमेरादिकोंके भंडारोमैं, वे शास्त्र जैनधर्म्मके अगाध ज्ञानका परिचय दे रहे हैं, सूत्रोंमैं विशेषतया साधुमार्ग काही उल्लेख लिखागया, श्रावकोंकी दिन-चर्या, रात्रिचर्यादिक आचार विचार, श्रुतधर आचार्योंनैं गुरु परंपरागत श्रवण करे हुये प्रकीर्णलिखे उसमैं मिलते हैं,

ओसवाल मरुधरदेश वास्तव्योंसैं दान लेनेवाले १६ ॥ जातिके भोजक मग जाति अपनेको साकलद्वीपी कहते हैं, लेकिन् काशी गयाके देशमैं वसने वाले, साकलद्वीपी ब्राह्मन और हैं, वे भी भोजक कहाते है, काशीमैं उनोंनैं अपणी ब्राह्मनोंमैं, श्रेष्टता सिद्ध करने, संस्कृतमैं पुस्तक छापी है, उन भोजक साकल-द्वीपियोंसै, इन भोजकोंसैं कुछभी संबंध सिद्ध नहीं, इन ओसवाल मारवाडि-योंके, भोजकोंका, इतिहास, टाडसहाबके लिखे, राजपूताने इतिहाससैं, संबंध मिलता है, तत्व क्या है, वह तो सर्वज्ञ जानें,

ब्राह्मन ज्ञाति मुख्य तो एकही स्थापित हुई यथावेदोक्त श्रुती है, ब्राह्मणोमुख-मासीत्, जैन धर्मवाले भी माहण [ब्राह्मण] संज्ञा सम्यक्तयुक्त उत्कृष्ट द्वादश व्रत धारक, उभयकाल षडावश्यक, तथा षट् नियम नित्यधारक, पांचसै मनु-

ष्योंका नाम प्रचलित प्रथम हुआ, उनोंमैं आज्ञाकर्त्ता आचार्य कहलाये, वाचना देनेवाले उवझाय [उपाध्याय] कहलाये, उवझायशब्द जैनसूत्र प्राकृतका है, वृद्ध बहु श्रुती आर्श कहलाये, कल्याणकारी तपकर्त्ता कल्याण कहलाये, विस्तार अर्थयुक्त व्याख्याकर्त्ता, व्यास कहलाये, आगे जिनोंके वाक्य हितावह वह पुरोहित कहलाये, एवंज्ञाति उन माहनोंमैं नानाकारणोंसैं होती गई उसके अनंतर इनोंमें भेद हुआ ऐसा जैन धर्म्मका मंतव्य है, तदनंतर दिनोंदिन वृद्धि होनेसैं देश २ मैं भिन्न भिन्न वसनेसैं, देशोंकी अपेक्षा जाती स्थापित होगई यथा सारस्वता कान्यकुब्जा, गौडाउत्कल मैथिला, पंचगौड इतिक्षाता, विन्ध्यो उत्तर वासिनः १ इसप्रकार द्रविडदेशकी अपेक्षा पंच द्राविड कहलाये.

सर्व ब्राह्मणप्राय अपनेकों इनदशोंके अंतर्गतही मंतव्य करते हैं, जिसमैं सरस्वती नदीके शमीपवर्ती सारस्वत कहलाये कनोजदेशवास्तव्य कनोजिये कहलाये, (सरवर) केशमीपवर्ती सरवरिये, गौडदेशवासी गौड, गुजरातके वास्तव्य गुज्जर गोड, उत्कल देशवास्तव्य उत्कल कहलाये, मिथिलावास्तव्य, मैथिल कहलाये, संखारड्डीऋषिकी शंतान शंखवाल, पाराश्वरकेपारीक, दाधीचके दायमैं, खंडेलाके शमीपवर्ती खंडेलवाल, भृगुऋषिकेभार्गव (दूसर) इत्यादि अनेक भेदांतर गौडोंके इससमय है, द्रविड, कर्णाटी, तैलिंग, महाराष्ट्र, औदिच्य, गुज्जर, इनगुज्जरके भेदांतर, श्रीमाली, पुष्करणे, गूगली, तैलिंगके भेदांतर भट्ट, गोस्वामी, इत्यादि है, साकलद्वीपी भोजक, राजगुरुप्रोहित, भोजक, चोबे, सनाढ्य, पांडे इत्यादि ८४ भेदांतर माने जाते हैं, जिन २ जातिकी पुरानोंमैं, उत्पत्ति लिखी है वह पीछैबने सिद्धहोते हैं, और जिसकी उत्पत्ति पुराणोंमैं नहीं लिखी है, वह सनातन प्राचीन ब्राह्मण सिद्ध होते हैं, (उदाहरण) पुष्करणे ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति किसीभी देवतासैं, वा अमुक ऋषिके शंतान ऐसा लिखत नहीं देखनेमैं आता, इसन्याय, जबसैं ब्राह्मणवर्णकी स्थापना प्रचलित हुई तब हीसैं पोसह करना ब्राह्मण हुये, ये बलात्कार सिद्ध होता है, सूर्यचंद्रादिग्रह, इंद्रादिकदिव्य शरीरधारी देवोंकी तेजोमई प्रतिछाया उनोंकी ये पहचान है, उच्च दरजेके देव, मनुष्य लोककी दुर्गंधिके कारण, एकाएक मृत्युलोकमैं, आते नहीं, किसी तपेश्वरीके तपसिद्धिसैं, वा पूर्वभवके स्नेहके वश ध्यानके वस आते हैं, तो भूमिसैं स्पर्श उनोंका पांव नहीं होता, न्यूनमैं न्यून चार अंगुल पृथ्वीसैं अधर रहते हैं, आंख नहीं टमकारते, पुष्पमाल कंठस्थ नहीं म्लान होती, मनमैं धारे कार्य करने समर्थ, इतने चिन्ह दिखाई देतो, देव समझो, अन्यथा मनुष्य, मनुष्यलोकमैं तथा वागवगीचोमैं, जो देव रहते हैं, वे व्यंतर जाति, वनव्यंतर जाति एवं १६ उनोंमैं भी, महानपुण्यशाली व्यंतर देवभी मृत्युलोकमैं पूर्वोक्तकारणविना नहीं आते, देव देवांगनासैं, रतिक्रीडा करते, पूर्णतृप्ति, वायुके

श्वेतपुद्गलोंके, सग्गाट निकलनेसैं, होती है, मनुष्यवत् शक्तधातुका शरीर देवका नहीं, इसलिये नतोवीर्य (शुक्र) निकलता, मनुष्य, तिर्यंचवत् पुत्रोत्पत्ति नहीं होती, जिनधर्म्मवाले, तथा सायन्सवाले, तो मनुष्यसैं मनुष्योंकी उत्पत्ति, तिर्यंचोंसैंतिर्यंचोंकी उत्पत्ति मानतेहैं, सूर्य, चंद्र, इंद्र, इत्यादिनामके मनुष्यकों उत्पत्तिके कर्त्ता किसी स्त्री संबंधमैं, नामके कारण देव ठहराया होगा, ऐसा अनुमान होता है, १८ पुराणोमैं तथा ईसाईमतावलंबी, ईसाकी माता मिरयमकों, ईश्वरसैं गर्भवती हुई ईसाको जन्मा, ऐसा लिखा है, दुसरोंका मंतव्य ऐसा है, जैनधर्म्मका नहीं है, कबीर पंथी कबीरजीकी पुष्पोंमैं उत्पत्ति, अंतमैं पुष्प होना कहते हैं, गोकुल संप्रदाई कृष्णका अवतार वल्लभाचार्यजीकी, अग्निकुंडमैं उत्पत्ति; कहते हैं एवं अनेक मत है आर्यसमाज मतके उत्पादक स्वामी दयानंदजी अपने रचे सत्यार्थ प्रकाशमैं देवता, और नर्क, ये दोगति परोक्षकों नहीं मानी, लेकिन् दयानंदजी उक्तवेद क्रिया करनेसैं, मनुष्योंका मुक्त आत्मा होना मंतव्य करा, वे मुक्तात्मा सैल करने, इछानुसार इधर उधर घूमते फिरते हैं, विचार होता है देवगति, नर्कगति, सर्व्व दर्शन सम्मत है, उसकों, नहीं मानना, सोतो समझा, लेकिन् मुक्तात्मा, इधर उधर घूमते फिरते हैं, इसमैं प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है, क्या उनोंकों मनुष्योंनैं कभी देखा है, वेदोंके पूर्व भाष्यकार, पुराण, कुराण, सर्व्वमत, देव, इंद्र, नर्कादिगति लिखी है, देवतोंकोंही मुक्तात्मा केइ मतधारी मानते है, मनुष्यवत् शक्तधातु निष्पन्न शरीर नहीं होनेसैं, नास्तिक मत उत्पादक वृहस्पति देव, नर्क, नहीं मानता, लेकिन् स्वामी दयानंदजी जीव, ईश्वर, माना, वृहस्पतिनै नहीं माना इतना तफावत है,

इस महाजनमुक्तावलीमैं, राजन्यवंशी विशेषतया, वाकी ब्राह्मणादि ३ वर्ण अल्प संक्षासैं जिनधर्म्मकी शिक्षा विशेषपनैं आपदा निवृत्ति होनेसैं, पश्चात् सहवास उपगारी आचार्योंका करनेसैं प्राप्तकरी उस उपगार कृत्यमैं, दादा गुरु देवोनैं, निज आत्मबल शक्तिकी स्फुरणा, निःकेवल अहिंसा परम धर्म्मकी वृद्ध्यर्थही करी, स्वार्थवस किंचित् भी नहीं, उन २ चमत्कारोंका लेख देखकर, केइयक आधुनिक जैना भास अपनेमैं साधुत्वगुण सिद्ध करने गर्व्वमत्त कहते हैं, उनोंमैं साधुत्वगुण नहीं था, यदि होता तो लब्धि नहीं स्फुरण करते, ज्ञानशून्य, अविद्यामहादेवीकेशंतान, ऐसै वाक्योंकों तहत्त कह कर सत्य श्रद्धान इस वार्त्तापर लाते हैं, लेकिन् उनोंनैं बुद्धि खरच करणी चाहिये, जिस लब्धिके फिरानेमैं, आज्ञा भंगका दोष लगे आगे अनर्थकी परंपरा वृद्धि पावै, वह लब्धि फिरानेसैं साधुकों आलोचना करना ऐसी आज्ञा जिनेश्वरनैं दी है, और जिस लब्धिद्वारा अनर्थ कृत्यनिर्मूल होकर धर्म्मकृत्य वृद्धि पावै, उसमैं आलोचन प्रायश्चित्त लेनेकी, किसी ग्रंथमैं

भी आज्ञा नहीं, २८ लब्धिमैं केवल ज्ञान, मन पर्यवज्ञान, अवधिज्ञानकी लब्धि, पदानुसारणी लब्धि कही, जिसलब्धिसे केवल एक पदके पढनेसे लक्ष कोटि प्रमाण पद विगर पढे आ जावै, तो विचार लो पूर्वोक्त केवल ज्ञानादिक लब्धि प्राप्त होनेसैं क्या उसकी स्फुरणा, साधु नहीं करते हैं, क्या इनोकों दंड कहांई लिखा है, श्रीजिनदत्तसूरिः प्रमुख आचार्योंनैं आत्मबल लब्धि, निःकेवल हिंसक धर्म्म मिथ्यात्व त्याग कराने, करी, विचारे करे क्या, आपमैं तो अंशमात्र, ऐसी आत्मबलशक्ति नहीं, तब उन अनभिज्ञ अपठितोंके सन्मुख ऐसी गप्पसप्प लगाकर, निज प्रतिष्टा जमाते हैं, जो जिनधर्मके उपगारकर्त्ता आचार्योंके स्थापित ओसवालादिककुलनहीं होता, तो तुमको ये चंगे मालमलीदे मिलने कहांथे हम जब आपके इस कथनकों, सत्य समझैं, और आप मैं, साधुपना समझैं, एक राजन्यवंशीकों, प्रतिबोध देकर, ओसवालोंमैं मिला तोदी जिये, फक्त रांधेकों, रांधने योज्ञ होकर, पुनः, उनोंमैं, साधुपना, नहीं था, ऐसैं २ मृषा लापकर पापपिंड भरते हैं,

और इन आत्मबल मंत्र चमत्कारोंसैं, प्रतिबोधित महाजनोंके इतिहासोंकों, पढकर, आधुनिक आर्यासमाजी आदिकोंकों, इन २ वार्त्ताओंपर, प्रतीति नहीं आवेगी, लेकिन् उनोंनैं दयानंदजीके लेखोंकों, पढा होगा, योगसाधक योगीके, अष्टसिद्धियां, प्रगट होती है, वह अचिंत्य शक्तिधारक, उस योगद्वारा, अनेक कार्य साधने समर्थ होता है, यथा वर्त्तमान समयमैं, उन गुरुदेवके योगमैसैं, अल्पांस योगसाधक, मेस्मेरिजम कर्त्ता, अनेक, अद्भुत कार्यकी सफलता कर दिखाते हैं, व्याधि मिटा देते, भूत, भविष्यद्, वर्तमान, दूरवर्त्ती निकटवर्त्ती बता-देना, अपने आत्मबलकी शक्ति, अन्य आत्मासैं मिलाकर मुक्तात्मा(मृत)कका आव्हान करना आदि प्रत्यक्षपनैं विद्यमान है, सुना है के अमेरिकामैं तो चाहे जिस मृत मनुष्यकों बुलाकर, परोक्षपने वार्त्तालाप कराते हैं, वाणी द्वारा जानाजाता है की ये वाणी अमुक मनुष्यकी है, गुप्त गृहका रहस्य बता देता है, दृष्टिगोचर नहीं होता, तो फिर इस योगधारियोंसैं असंक्ष गुणयोगमैं दृढ साधन कर्त्ता श्री जिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंके चमत्कारोंमैं संदेह करना, कोनसी बुद्धिमत्ता है,

पुनः दयानंदजीनैं पंचमहायज्ञमैं, विवाहादि शोले संस्कारोंमैं वेदोंके मंत्र लिखे हैं और लिखा है, अमुक मंत्र पढकर अमुक कृत्य करना, इसका हेतु क्या होगा, ईश्वरकों दयानंदजीनैं आकाशवत् सर्व्वव्यापी कथन करा है, तब तो संसा-रके यावन्मात्र पदार्थ ईश्वरसैं भिन्न रहा नहीं, वह सर्व्व ईश्वरके आधीन है, तो फिर मंत्रोंकों पढकर कंठशोष करनेसैं क्या सिद्धि है हवनादि करते, वह तो त्रिकालदर्शी है, मनुष्योंकी अपेक्षा तीन काल है, ईश्वरकी अपेक्षा केवल सर्व्व

वर्तमानकाल है, ये वेदोंके मंत्र ईश्वरनैं अपनी पूजाके अर्थ किस लिये रचे जो कुछ मनुष्य उसके अर्थ कृत्य हवनादि करे उससैं ईश्वर प्रशन्न होता होगा, तब तो रागी हुआ, जो ईश्वरके अर्थ मंत्र पढ कृत्य नहीं करे, उसपर द्वेष करता होगा, इसन्याय द्वेषी ठहरा जब राग द्वेष विद्यमांन है, एसेको कोन बुद्धिवान ईश्वर मान सक्ता है, यदि वेदोक्त मंत्र कुछ कार्य साधने समर्थ है तो, अन्यमंत्रोंकों असत्य क्या समझ कहते हैं, मंत्रका अर्थ गुप्त रहश्यका कहना होता है,

भगवंत महावीर सर्व्वज्ञनैं पंचम आरेमैं, २३ बेर उदयकर्त्ता २००४ युग प्रधानोंका प्रादुर्भाव कथन करा ये आरा २१ हजार वर्षोंका है, उसमैंसैं, जिनवल्लभ, जिनदत्त, जिनचंद्र आदि नाम विद्यमान है, इन गुरुदेवोनैं, जिन धर्म्ममैं उदय करा,

फर्मान जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादसा गाजीका हुक्काम किराम व जागीर दारान व करोरियान व सायर मुत्सद्दियान मुहिम्मात सूबे मुलतान विदानंद किचूं हमगी तवज्जोह खातिर खैरंदेश दर आसूदगी जमहूर अनाम बल काफ फए जाँदार मसरूफ व मातू फस्त कि तबकात आलम दरमहाद अमनबूदा बफरागे बालबइबादत हजरत एजिद मुत आल इश्तगाल नुमायंद व कब्ले अर्जी मुरताज खैर अंदेश जिनचंदसूरिः खरतरगच्छ कि बफैजे मुलाजिमत हजरते मासरफ इखतिसास याफता हकीगत व खुदातलबी ओब जहूर पैवस्ता बूद ओरा मशगूल मराहिम शाहंशाही फरमूदैम् मुशारन् इले है इल्तिमास् नमूद कि पेश अर्जी हीरविजयसूरिः सागर शरफ मुलाजिमत् दरियाफ्त बूद दर हरसाल दोवाजदहरोज इस्तदुबा नमूदा बूदाकि दरां अय्याम दर मुमालिके महरूसा तसलीख जांदारे नशवद व अहदे पैरामून मुर्ग व माहीव अमसाले आँनगरदद् व अजरूय मेहरबानी बजाँ परवंरी मुल्त मसे ऊदरजै कबूल याफ्त अकनू उम्मेदवारमकि यकहफ्तै दीगर ईं दुबा गोय् मिसले ओं हुकूमे आली सरफ सुदूर याबद् बिनाबर उमूम राफत हुक्म फर मूदैम् कि अज तारीखै नौमी ता पूरन मासी अज शुक्ल पच्छ असाढ दर हरसाल तसलीख जाँदारे न शवद् व अहदे दर मकाम आजार जाँदार मोरेनगर दद् व अस्ल खुद आनस्त किचूं हजरते बेचूं अजबराए आदमी चंदी न्यामतहाय गूनागूं मुहय्या करदाअस्त दरहेच वक्त दूर आजार जानवर नशवद् वशिकमे खुदरा गोर हैवानात नसाजद लेकिन् बजेहत् बाजे मसालह दानायान पेश तजबीज नमूदा अंद दरीं बिला आचार्य्य जिन सिंहसूरिः उर्फ मानसिंह ब अरज असरफ अकदस रसानीद् कि फरमाने कि कब्ल अर्जी व शरह सदर अज सुदूर याफ्ता बूद गुम शुदा विनाबरां मुताबिक मजमून हुमा फरमान मुज द्द फरमान मरहमत फरमूदैम् में बायद् कि

हस्बूल मस्तूर अमल नमूदा ब तकदीम रसानंद ब अजफरमूदह तखल्लुफ व इन हिराफ नवरजंद दरीं बाब निहायत एह तमाम व कदगन् अजीम लाजिम दानिस्ता तग इयुर ब तबद्द दुलू बकबायद आंराह नदिहंद तहरीरन् फीरोज रोजसी बयकुम माह खुरदाद इलाही सन् ४९

अहिंसा फर्मान बादशाह अकबर

[१] वरिसालए मुकर्रबुल हजरत स्सुलतानी दौलतखां दरचौकी [उमदे उमरा]

[२] जुब्द तुल आयान राय मनोहर दरनौबत वाकया नवीसी खा-जालालचंद

हिन्दी योधपुरस्थ मुन्सी देवीप्रशादजी कायस्थने करा पारसीसे

फरमान मोहरछाप अकबर बादसा गाजीका सूबे मुलतानके बडे २ हाकिम जागीरदार करोडी और सब मुत्सद्दी [कर्मचारी] जानले कि हमारी यही मानसिक इच्छा है कि सारे मनुष्यो और जीव जन्तुओंको सुख मिले जिससे सबलोग अमनचैनमें रहकर प्रमात्माकी आराधनामें लगेरहें इससें पहले शुभचिंतक तपस्वी जिनचंदसूरिः खरतरगच्छ हमारी आमखासमैं हाजर हुआ जब उसकी भगवद्भक्ति प्रगट हुई तब हमनें उसकों अपनी बडी बादशाहीकी मेहरबानियोंमें मिलालिया उसनें प्रार्थनाकी इससे पहिले हीरविजयसूरिनें सेवामें उपस्थित होनेका [हाजर रहनेका] गौरव प्राप्त किया था और हरसाल १२ दिन मांगे थे जिनमें बादशाही मुल्कोंमें कोई जीव मारा न जावे और कोई अदमी किसी पक्षी, मछली और उन जैसै जीवोंको कष्ट न दे उसकी प्रार्थना स्वीकार होगई थी, अबमें भी आशा करता हूं कि एक सप्ताहका और बैसा ही हुक्म इस शुभ चिंतकके वास्ते हो जाय इसलिए हमने अपनी आमदयासे हुक्म फरमा दिया कि आषाढ शुक्लप्रक्षकी नवमीसे पूर्ण मासीतक सालमें कोई जीव मारा न जाय और न कोई आदमी किसी जानवरको सतावै असल बात तो यह है कि जब परमेश्वरनें आदमीके वास्ते भांति २ के पदार्थ उपजाये हैं तब वह कभी किसी जानवरको दुख न दे और अपने पेटको पशुओंका मरघट न बनावैं परन्तु कुछ हेतुओंसे अगले बुद्धिमानोंनें वैसी तजबीज की है इन दिनों आचार्य जिन सिंहसूरिः उर्फे मानसिंहने अर्ज कराई कि पहले जो ऊपर लिखे अनुसार हुक्म हुआ था वह खो गया है इस लिये हमनें उस फरमानके अनुसार नया फरमान इनायत किया है चाहिये कि जैसा लिख दिया गया है वैसाही इस आज्ञाका पालन किया जाय इस विषयमें बहुतही कोशिश और

ताकीद समझ कर इसके नियमोंमें उलट फेर न होने दें ता. ३१ खुरदाद इलाही सन् ४९ हजरत बादसाहके पास रहनेवाले दोलत खांके हुक्म पहुंचानेसैं ऊमदा अमीर और सहकारी राय मनोहरकी चौकी और ख्वाजा लालचंदके वा किया [समाचार] लिखणेकी बारीमें लिखा गया

युग प्रधान जगद्गुरु भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरिः इल्काब इनायत मेजर जनरल सर जांन मालकमकी लिखी हुई मेमायर आव् सेंट्रल इंडिया नामकी पुस्तक दो जिल्दोमें है उसकी दूसरी जिल्दमें उनोंनें इस फरमानका जिक्र लिखा है

तथा उज्जैण मालवाके जैनमंदिरमें इस फरमाणका शिला लेख है.

जैन ग्रथोंसे पुष्करत्रय प्रादुर्भाव

वीतभयपत्तन सिंधुदेशमें २५०० वर्ष लगवग राज्यथा उहां उदाई राजाथा उसनें विशाला नगरी जो पूर्व देसमें उसका स्वामी चेटकराजा उसकी बडी भगनी त्रिसला जो क्षत्री कुंडपुराधीश सिद्धार्थकों व्याही थी उससैं नंदिवर्द्धन १ और वर्द्धमान [महावीर] ये दो पुत्र उत्पन्न हुये जिसमैं महावीर ३० वर्षकी वयमें राज्य स्त्री त्यागकर निग्रंथ हुआ १२॥ वर्ष तपकर मोहादिकर्मोंकों क्षय कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी जैनधर्मका २४ मां तीर्थंकर कहलाया चेटककी ७ पुत्रियां हुई ६ तो ६ राजोंकी राणियां हुई जिसमें प्रभावती उदाईकों व्याही ७मीसु ज्येष्टा कुमारी दीक्षाले साध्वी हो गई इसके संग पेढाल विद्याधर सन्यासीनें बलात्कार संगम करा तब उसके सत्यकी नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १४००० सहस्र विद्या सिद्धकर इग्यारमा रुद्र कहलाया जिसको लोक महादेव कहते हैं उस उदाई राजाकी स्त्री प्रभावतीको देवविनिर्मित जीवित महावीर स्वामीकी मूर्ति प्राप्त हुई, उस प्रतिमाकी पूजा त्रिकाल करती थी, उसकी पूजोपकरण रक्षार्थ कुब्जादासी नियत थी, निमित्तज्ञानसैं अपनी आयु अल्प जांणकर पर भव सुधारने पति उदाई नृपसें दीक्षार्थ आज्ञा मांगी राजानें कहा यदि तूं तप संजम ब्रह्मचर्य द्वारा परलोकमैं देव पद पावे और मेरे संकटमें सहायता करनेकी प्रतिज्ञा करे तो दीक्षाकी आज्ञा देताहूं राणीनें प्रतिज्ञा करी आज्ञानुसार साध्वी हो षट्मास तपसंजम आराधकर सौधर्म प्रथम देवलोकमैं देव हुई, इधर जीवित स्वामीकी प्रतिमा राजा उदाई त्रिकाल पूजते रहा एकसमय गांधार देशी श्रावक जीवित स्वामीके दर्शन पूजार्थ आया उसकों अतीसारकी व्याधि हुई तदा साधर्मी जानकर कुब्जा दासीनें परिचर्याकी निरोग होनेपर उसनें दो गुटिका प्रत्युपकारमें कुब्जाकोंदी और कहा एक गुटिकासे तेरा कुब्जत्व निवृत्त होगा दूसरी गुटिकासे सौभाग्य वृद्धि होगी, वैसाही हुआ उससमय उज्जैण

१ इसका पूर्ण वृत्तांत जैन दिग्विजयछपे हुये ग्रंथमैं देखो ।

पुराधीस इसके रूपकी प्रशंसा श्रवणकर दूती संचार कर जीवित स्वामीतुल्य अन्य प्रतिमा स्थापन कर उस प्रतिमायुक्त अनल गिरि गंधहस्तीपर दासी और प्रतिमाको लेकर उज्जैण गया दुसरे दिन पुष्पमाला मूर्त्तिकी म्लान देख, राजा शंकित हुआ, क्योंकि मूल देवाधिष्टित प्रतिमाका अतिशय था, जो पुष्प आरोपन किया जाता, वह म्लान नहीं होकर निजरूपही रहते थे, दासीभी नहीं पाई, तदनंतर राजा, अपनें सर्व हस्तियोंकों निर्मद हुआ देखकर, अनुमान करा, अवश्य अनलगिरि गंधहस्ती इहां आया उसकी गंधसे सर्व हस्ती मेरे निर्मद होगये, वह चंड प्रद्योतविना अन्य राजाके नहीं है तब दूत भेजा दासी तुझैं दी लेकिन जीवित स्वामीका स्वरूप पीछा भेज, दासी उस प्रतिमाका इष्ट होनेसैं मूर्तिविना रहे नहीं, इसलिये चंडप्रद्योतनें, दैना इनकार किया, तदा राजा उदाई, ससैन्य चढाई करी, लोद्रव पत्तनकी भूमि शमीप, जल नहीं, शेन्या जलाभावसे, व्याकुल हुई, राजा चिंताग्रस्त अत्यंत हुआ, उस समय, वह प्रभावती देवता प्रगट हो, अक्षयजलका, दिव्य कुंडरच, चिंता निवृत्तकरी, पुन अधुना रामदेवका स्थान है, तत्र जलाभावसैं, दुसरा कुंड रचा, जो कुष्टी अंधेआदि किसी समय आरोग्य, रामदेवके मेले में उस दिव्य शक्तिसैं होते हैं, तीसरा जलाभाव अधुना जो अजयमेरु नगर है उसके निकट भूमीमैं हुआ, तब तीसरा पुष्कर इहां देवतानें रचा, जिसकों अन्य दर्शनी पुष्कर तीर्थकर मानते हैं, राजा उदाई चंड प्रद्योतसैं युद्धकर कारागार कर संग ले पीछा घिरा, एक दिवस भाद्रपद शुक्ल पंचमीको राजा उपोषित पोषध करने, रसोईदारसैं कहा, मैंतो आज उपोषित रहूंगा, चंडप्रद्योतकों, यथारुचि भोजन करा देना, रसोईदारनें चंड प्रद्योतकों पूछा, तब चंडप्रद्योत भयभीत हो, विचारने लगा, निरन्तर उदाई मुझैं, संग भोजन कराता, आज अवश्य विष देकर मारेगा, तब बोला, आज मेरे भी उपवास है, तब रसोईदारनें चंडप्रद्योत कथित वार्ता कही, तब राजा भयसैंभी उपवास करनेवाला, स्वसाधर्मी समझ, विचार करा साधर्मीको कैदी रखकर मुझैं उपवास पोसह करना उचित नहीं, तब स्वर्णकी वेडी तुडा परस्पर क्षमापनाकर, पौषध साथमें करकर, उज्जयणीका राज्य पीछा दै, विदा किया, परस्पर साढू भी थे, क्योंके चेटक राजाकी पुत्री १ चंड प्रद्योतकोंभी व्याहीथी इसलिये, इति त्रिपुष्कर प्रादुर्भाव यह लेख दानादि कुलक, कल्पसूत्र वृत्ति आदि ग्रन्थोंमें लिखा है.

इस पुष्करके, किंचित् दूरवर्त्ती, वृद्ध पुष्कर [बुढ्ढा] पुष्कर अन्य भी है, नमालम विक्रम संवत् १२ शताब्दीमें, मंडोवरका राजा नाहरराव पडिहारनें कोनसा पुष्करका जीर्णोद्धार करा, इस देवाधिष्टित पुष्करका जल तो अक्षय

पातालका है, घाट प्रमुख बंधाया हो तो, आश्चर्य नहीं, इहांके पंडे पोकरिये, सेवग कहाते हैं, उत्पत्तिका इतिहास इनोंकाये कहते हैं, व्यासके पुत्र शुकदेव, उनोंके ५ पुत्र हुये, उनोंकी शंतान हम है, ब्राह्मणोंके पुराणोंसे सिद्ध है, शुकदेव, यावज्जीव ब्रह्मचर्य धारी ऋषि थे, जैनियोंके ज्ञातासूत्रमें भी ऐसा लिखा है, शुकदेव संन्यासी, द्वारिकामें, था बच्चापुत्र, जैनसाधूसैं, धर्मसंबंधी प्रष्णोत्तर पूछकर, पांचसय सन्यासियोंसैं, जैन दीक्षा, स्वीकार करी, अंतमें संत्रुजय पर्वतपर पंच-शत ही मोक्ष पाये, तब किस शास्त्रानुसार, शुकदेवजीके ५ पुत्र होना, लोक-मंतव्य करै, टाड सहाब २० हजार बेलदारोंका, पुष्करपर ब्राह्मन बनाना लिखा है, वह पुष्करणे ब्राह्मण, सैंधवारण्य वासियोंके संग बिल्कुल नहीं मिलता, क्योंके न तो पुष्करपर पोकरणोका अधिकार है, न पुष्करके गर्दन वाह पोकरणोंकी वस्ती है इस लिये, दुसरी यह बात भी है के ओसवालोंके भोजकोंमें ६ गूजर गोड गोत्रोंके ब्राह्मण ६ खंडेलवाल गोत्रोंके ब्राह्मण, ४ गोत्रके पुष्करणे ब्राह्मण, मिलके, भोजक ओसवालोंके गृहकच्ची रसोई खानेसैं, भोजनसैं भोजक कहाये, जाति-भास्कर ग्रंथमें, श्रीमालमैं ५ हजार ब्राह्मण भोजक होना लिखा है, और ओस-वालोंके १८ गोत्र ओसियांमें उनोंके साथ भोजक होना लिखा है, ओसियां पत्त न भी श्रीमाल नगरीके राजपुत्रोंनें ही वसाई थी केवल ३० वर्षका अंतर है, टाड साहबके प्रत्युत्तररूप ग्रंथ व्यास मीठा लालजीनें छपाके प्रसिद्ध करा है, उसमें लिखा है, ओसवालोंके भोजक श्वयं मंतव्य करा है कि हमारी १६ जाति ३ ब्राझणोंके गोत्र मिलके बनी है, जब २२२ बीयेवा इसे पुष्करणा ब्राह्मण-गोत्र विद्यमान था, तभी तो उनोंमेंसै ४ गोत्र पुष्करणे, भोजक हो गये, तो फिर पुष्करणे ब्राह्मण पुष्करपर बनना कैसै सिद्ध हो, पोकरिये, पोकरणे, सदृश नाम मिलनेसैं क्या दोनों एक हो सक्ते हैं, कदापि नहीं, ओसवालोंके भोजक, साकल द्वीपी सर्वथा नहीं है, न इनोंकी मग जाति है, में भी इनोंके कथनानुसार इनोंकों प्रथमावृत्तीमैं मग लिखा था, अन्य २ प्रमाण मिलनेसे, त्रुटियोंकों यथार्थपने सुधारी है, जब परशुरामनें कृत्तिकार्जुनका नाशकर हस्तिनागपुरका राज्यपती बना, यमदग्नि-कों कृत्तिकार्जुननें मरवाया था, इस द्वेषसे, तदनंतर क्षत्रियवर्गका ७ वखत नास करा, उस समय, बहोतसे, क्षत्रिय क्षत्रियधर्मकों त्यागकर, व्यापार करने लगे स्यात् वेही रोडे, क्षत्रिय लबाणे आदि हो तो आश्चर्य नहीं, केइयक दरजी नापित आदि कर्म कर शूद्र बण गये, उस कृत्तिकार्जुन राजाकी स्त्री विद्याधर राजाकी पुत्री गर्भवती परशुरामके भयसे भाग कर तापस ऋषियोंके आश्रममें जाकर शरणागत हुई उनोंको निजस्वरूप कहा, वे दयासे इसकों भूमिगृहमें प्रछन्न रक्खा उहाँ पुत्रजन्मा तापसोनें सुभूम नाम धरा जब वह ८ वर्षका हुआ उस

समय इसका मामा विमानमें बैठा उधरसें निकला उस बालकके पुण्यसे उसका विमान अटका, तब वह तापसोके आश्रममें उतरा और नमन कर विमान खलनका स्वरूप कहा, तब तापसोंने जाति नाम वा स्थान पूछा उसनें कहा, तब भूमि गृहमें बैठी सुभूमकी माता अपने भ्राताको जाण बाहिर आरुदन करती भ्रातासे संपूर्ण वृत्तांत निवेदन करा तदनंतर तापसोंकी आज्ञासें भगनी और भागनेयको विमानारूढकर वैताढ्य (तिव्वत) स्वराजधानीमें लेगया एक सहस्र आठशुभचिन्ह अलंकृत भागनेयको देख निमित्तज्ञानी [जोतषी] से पूछा इस बालकके भावी फल कहो । तब निमित्तज्ञनें कहा, ये चक्रवर्ति साम्राट् भूचरोंमें होगा और परशुरामका हंता यही बालक है, नैमित्तकको द्रव्य सत्कार कर विसर्जन करा अस्त्र शस्त्रकला आदि लीलामात्रसे वह सुभूम अल्पकालमैं ७२ कलामें निपुण हुआ इधर परशुरामनें एकदा निमित्तज्ञसें पूछा मेरी आयु कितनी अवशेष है, तदा निमित्तज्ञनें शास्त्रानुसार कहा हे राम जिनक्षत्री राजाओंको मार २ दाढायें उनोंकी एकत्रित करी है, उन दाढाओंकी जिसकी दृष्टि मात्रसैं क्षीर हो जावे, उस क्षीरका वह भोजन करने लगे, वह तेरा हंता जाणना, तब परशुराम शत्रुको पहचाननें नगरके बाहिर एक महादानशाला बनवाई जिसमें स्वदेशी विदेशी अतिथि तथा पंथी जनोंकों अन्न जलादि मिले उहां एक शालामें, स्वर्ण-रत्नमई महान् सिंहासन स्थापित कर उसपर स्वर्णस्थाल क्षात्रियोंकी दाढासें भर-कर स्थापन कर पांचसय वीरोंकों तद् रक्षार्थ ससस्त्रनियत करे और गुप्तरहस्य कहा, इधर एकदा सुभूमनें मातुलके समक्ष मातासे पूछा हे अंब मेरा पिता कहां है और अपना निजस्थान कहां है तब माता रुदन करती संपूर्ण वृत्तांत कहा उससमय माताको सुभूमनें कहा तू निश्चिंत रह में परशुरामको मेरे पिता शमीप प्राप्त करूंगा राज्य लेलूंगा ऐसी प्रतिज्ञा कर मातुलकों संगले सीधा हस्तिनागपुर आया दानशालामें विश्रामार्थ प्रवेश करा इसकी दृष्टिपातसे दाढाओं स्वर्ण स्थालस्थ क्षीर हो गई मातुलकों कहा में क्षुधातुरहूं क्षीर भक्षणकर्ताहूं और भक्षण करने लगा त्योंही सुभट धाये उनोंकों मातुलनें छिन्नभिन्न कर डाले, ये खबर पाते ही परशु लिया हुआ परशुराम सुभूमके वधार्थ आया तदा उस स्वर्ण स्थालकों, अंगु-लीपर घुमाके फैंका वह उससमय चक्ररूप हो परशुरामका शिर पृथ्वीपर गिराया, आकाशमैं देव दुंदुभिका शब्द और देवतोनें जयजय चक्रीश चिरंजीव इत्यादि शब्दकर सुभूमपर पुष्पवृष्टि करी तदनंतर सुभूम षट्खंडके ३२ सहस्र मुकुट वद्धरा-जाओंको वसकरा, १४ रत्न, १६ सहस्र यक्षसेवक, नवनिधान, ८४ लक्ष हस्ती ८४ लक्ष अश्व, ८४ लक्ष रथ, छिन्नूं कोटी सुभट, प्राप्तकर, पिता, और क्षात्रि-योंका, बैर लेने २१ बेर निब्राह्मणी पृथ्वी करी, उस भयसे, ब्राह्मण केई तो शस्त्र

धारण कर लिये, केई व्यापार, क्षेती, भृत्यकृत्य, तथा केईयक, स्वर्णकार हो गये, जो ब्राह्मणि या सुनार कहाते हैं, मैथिल ब्राह्मण, चित्रकारपना करने लग गये, रजतस्वर्ण लकडी प्रमुखका कृत्य भी करते हैं, वह वीकानेरमें जेपुरिया कहातें हैं।

इस प्रकार मरण भयसें चारो वर्णोंका कृत्य करने लग गये वनोवास त्याग, नगर, ग्रामोंमें, निवास करा, अनुमान होता है, वे अग्निहोत्री, उस निब्राह्मणी पृथ्वी सुभूमके करनेके भयसे, भागकर, केइ इरानमें जावसे, इरानका नाम, अरण्य वास्तव्योंके रहनेसें, अरण्य शब्दका अपभ्रंस हुआ हो तो आश्चर्य नहीं, वे मुसलमानोंके मतके प्रशार समय भाग कर पुनः आर्यावर्त्तमें आये, वे पारसी कहलाते हैं, ईरानमें भी राज्यशासन सुभूमकाही था उस भयसें यज्ञोपवीत कमरमें प्रछन्नपनें रखी थी अभी भी उस मुजब ही रखते हैं, जैसें ब्राह्मणोंका अग्नि इष्ट है, उससे सविशेष पारसीयोके, अग्नि इष्ट है, सूर्य, समुद्र, गऊ, जैसें इस समय ब्राह्मणोंके मंतव्य है, तद्वत् पारसियोंके भी है, इस कारण उस समयका अनुमान होता है, वकरीद करनेवाले मुसलमान भी, अजेर्यष्टव्यं, इस पर्वत ब्राह्मण कृत वेद पदके अर्थसे छागमेधसे, स्यात्संबंध धराते हैं, मुसलमान होनेसे वेदमंत्रकी जगे, विसमिल्लाह अर्थात् सुरू करता हूं नाम खुदाके, ऐसा इस अरव्वी पदका अर्थ होता है, जैसे पर्वतके चलाये वेद अर्थकी श्रुतियोंमें अनेक देवतोके अर्थ अश्वमेध, गऊमेध, नरमेध, छागमेध, इत्यादि यज्ञयाग, किसी कालमें अत्यंत ही हुआ करता था, क्वचित् २ अभी भी होता है, ये आठमाचक्रवर्ति सुभूम हुआ, इसके पीछे पुनः ब्राह्मणधर्म, जाग्रत हुआ, तथापि चार वर्णोंका कृत्य, सर्वथा छूटा नहीं, वैरानुभाव निकृष्ट वस्तु है, परशुरामजीने क्षत्री धर्म विद्ध्वंस करा, तैसे सुभूमनें ब्राह्मणधर्म विद्ध्वंस करा, इसलिये जैनसर्वज्ञका कथन है, हिंसा मत करो, जिसकों जो दुःख देता है, वह समय पाय बदला लेता है यथा मनुस्मृतिमें लिखा है मांस इसकी निरुक्ति जिसको में भक्षण करता हूं समां वह मुझकों भक्षण करेगा, ये कथन सत्य विश्वास करने योग्य है

कायस्थ दो प्रकारके हैं, प्रथम चित्रगुप्त क्षत्री ऋषभ भगवानके तनवंकसीपर नियत था, आभूषण वस्त्रादि कायाके निमित्त भोगोपभोग वस्तु उसके स्वाधीन थी वह लिखत पठत शस्त्रधारण और षट्कर्मधर्म, और प्रभुकी काया सेवा करता था, उसके ८ पुत्र हुये विवाह इनोंका काश्यप गोत्र क्षत्रियोंमें हुआ इनसें ८ गोत्र इनोंके हंस आदि नामोंसे विक्षात हुये तनवक्सीका कार्य करनेसे लोकीक कायस्थ कहने लगे, भरतचक्रवर्त्तिनें इनोंकों अर्हन्नीतिके वेत्ता जाणकर न्यायालयका कार्य, और राजा, राय, इत्यादि पद दे, पृथ्वीपति बनाया,

दुसरे चंद्रसेन कायस्थ, कृत्तिकार्जुनके परिवारवाले परशुरामके समय भयसे

चारों ही वर्णका कृत्य करने लगे, ब्राह्मणोंकी सेवासे कायस्थ नामसे प्रसिद्ध हुये ये ज्ञातिवाले बडे दक्ष चतुर राज्यकार्यकर्त्ता होते हैं हेदरावाद दक्षणमें, कायस्थ, तथा खत्री जागीरदार राजापद रायपदसे युक्त हैं

आभीरदेशी, अहीर, गऊपालन, सेवा मुख्य वृत्ति है, बीकानेरमें केइ खबास कहाते हैं गोप, ग्वाले इनोंमेसे केई जाति भिन्न हो गई है,

तीन हजार वर्षसैं पहिले तातार देससें शर्मीरामा महाराणीने दक्षण भरतपर चढाई करीथी ऐसा इतिहास तिमिरनासकके तीसरे भागमें लिखा है उसनें महा-संग्राम पूर्वदेशमें कर शंब निसंब राजा जिन धर्मियोंको मार अपणी आज्ञावर्ताई मनुष्योंकों कष्ट देने लगी तब उसको प्रशन्न करने श्यामाकी मूर्त्ति सर्वत्र स्थापैन कर लोक पूजने लगे और ब्राह्मणोके आज्ञानुसार भैंसा वकरा आदिकी बलि देने लगे तब शमीरामा प्रशन्न हो अपने भक्तोंकों सोम्य दृष्टिसें देखने लगी देवी पूजाकी प्रवृत्ति दक्षण भरतमें उस दिवससे हो गई उसके राज्य शासनमें तातार देशी लोक इहां वस गये वे जाट नामसे प्रसिद्ध है इनोंकी स्त्रियोंका वेष धावला आदि देख तातार देशी पना प्रसिद्ध होता है इनोमें कोई धर्म प्रथम नहीं था इहां मारवाडमें रहते २ जसनाथजी इनोंमें हुये, इनोंमेंसे विसनोई भिन्न हुये इनोंमें जांभा जी हुये, इन दोनोंने दयाधर्म इनोंमें प्रवर्त्ताया, इन दोनोंके उपदेश रहित जाट मद्यमांसका परेज नहीं करते हैं, भाटी राजपूत इनोंसै विवाह करा, उस वंसमें, पंजाब देशवासी, भरतपुर आदिके जाटराजा विद्यमान है, नाभा पटियाला आदि, थली देशमें भी जाटोंका राज्य था, संवत १५०० सै पीछै राठोड राव बीकाजी इनोंसै राज्य युद्ध करके लेलिया,

कोटंबिक [कुणबी] ये दक्षण भरतके एक तरेके वैस्य जाति प्रथमसे है, गऊ पालन, खेती व्यापार राज्य सेवा इनोंका कर्त्तव्य है,

सीरबी यह भी एक कृषक जाति भरतक्षेत्रकी है, इनोंमे वगडावत २४ भाई राजा हो गये थे, इत्यादि नाना जातियोंका निवास स्थान, ४ वर्णोंसे विभक्त दक्षण भरत है, इस समय विशेषपने, धर्म नामसैं ४ है जैनी, १ पुराणी २ समाजी, ३ और काजी ४ इनोंके भेदांतर एक सहस्र होगये हैं, ईसाई धर्म भी हिन्दमें होगया, बौद्ध धर्म इहां नहीं है, हिन्दू मत २० करोड मनुष्य संक्षा, २० करोड मुसलमान मत संक्षा, २५ करोड ईसाई मत संक्षा, ५० करोड मनुष्य, बौद्ध मत संक्षा है,

जिसमें मांस नहीं खानेवाले बेजेटेरियन ५ करोड भी नहीं होंगें

मुसलमानोंसे सुणा है, जीवोंकों मारना आजाब है, लेकिन् खाना सबाब है इसमें सम्मिलित एक मताध्यक्ष कहता है जीवोंके मारनेसे एक पाप हो, बचानेसे

१८ पाप होय यदि ऐसा यह उपदेश राजा प्रजा सर्व मंतव्य करके एकको एक बचावे नहीं तब तो, प्रलयकाल, जैनियोंका छट्ठा आरा इस समय हो जावे वा नहीं, यह उपदेश न्याय मार्गका प्रत्यक्ष नाश कर्त्ता है क्योंके जब पोलिस आदि राज्य वर्ग तथा प्रजावर्ग एकको एक नहीं बचावे तब तो जगतमें वैरानुभावसें बलवान अवश्य निर्बलकों प्राण रहित कर देगा, उससें बलवान् उस्कों प्राणरहित कर देगा सिंह श्वापदादि जंतु गण मनुष्योंका संहार कर देगा, इत्यादि स्वरूप बणनेसैं, जगत् मैं हाहाकार मचेगा, इस लिये बुद्धिवान विचार तो करे, इस उपदेशके कर्त्ता केसे न्यायवंत हैं, और जीव जंतु गणके केसे हित सुख बंछक है राज्य धर्म विरुद्ध, ये उपदेशक सिद्ध होते हैं.

अन्य दर्शनी ६८ तीर्थ कहते हैं जैन धर्मकी तीर्थावली इस मुजब है

सोरठ देशमैं तीर्थाधिराज शत्रुंजय तीर्थ १ गिरनार नेम प्रभुके चार कल्याणक तीर्थ २ आबू तीर्थ ३ नाडोल तीर्थ नाडोलाई तीर्थ ४ वरकाणा तीर्थ ५ राणपुरा तीर्थ ६ मूंछाला महावीर तीर्थ ७ ओसियां तीर्थ ८ संखेश्वरा तीर्थ ९ तारंगा तीर्थ १० भोयणी तीर्थ ११ अंतरीक तीर्थ १२ मगसी तीर्थ १३ फलोधी पार्श्व तीर्थ १४ लोद्रवाजेसल मेरु तीर्थ १५ दक्षण हेद्दराबाद राजस्थ कुलपाक तीर्थ १६ अमी झरा तीर्थ १७ जीरावला तीर्थ १८ साचोर तीर्थ १९ भरु अछ तीर्थ २० खंभात स्थंभन तीर्थ २१ पंचासरा तीर्थ २२ गोगानवखंडा पार्श्व तीर्थ २३ पाटण तीर्थ २४ तिब्बत राजधानी अष्टापद [केलास] तीर्थ वरफसैं ढक गया अलोप २५ बीकानेर भांडा सरादि तीर्थ २६ हस्तिनागपुर तीर्थ दिल्ली शमीप २७ कासी तीर्थ २८ भेलू पुर तीर्थ २९ भदाणी तीर्थ ३० सिंह पुरी तीर्थ ३१ चंद्रावती तीर्थ ३२ ये सब कासी शमीप है प्रयाग ऋषभ ज्ञानतीर्थ ३३, अयोध्या ऋषभ जन्मकी, सामकी राजधानीमैं है, लेकिन् अन्यतीर्थ करके कल्याणक इस अयोध्यामें हुये इस लिये अयोध्यातीर्थ ३४ नवराई तीर्थ ३५ चंपापुरी तीर्थ ३६ पावापुरी तीर्थ ३७ क्षत्रिय कुंड (कुंडलपुर) तीर्थ ३८ गुणशिला तीर्थ ३९ राजगृहीमैं ५ पंचपहाड तीर्थ ४४ बराकडनदी [ऋजुवालिका] वीरज्ञानतीर्थ ४५ शिखर गिरिराजतीर्थ ४६ मिथलातीर्थ ४६ कपिलपुरतीर्थ ४७ मथुरातीर्थ ४८ जहां २ तीर्थपतिका जन्म १ दीक्षा २ केवल ज्ञान ३ निर्वाण ४ हुआ वे सर्वस्थल तीर्थरूप है, अधुना संवत् ६०० विक्रमकावणा भांदक (भद्रावतीतीर्थ) दक्षणमैं चंद्रपुर हीं गणघाटशमीप है, ४९, काकंदी तीर्थ ५० जहां २ जिनमंदिर मुसलमानोंने, नष्टकर दिये, उस स्थानके तीर्थ अलोप हुये, केई जैन तीर्थोंको शिववैष्णवमतियोंनें, बलात्कार स्वतंत्र कर लिये, उनोंके नांम नहीं लिखे,

केई कहते हैं, तीर्थतो, साधु १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका ४ इन चारों सिवाय सूत्रोंमें, तीर्थ नाम चलाही नहीं, [उत्तर] जंबू द्वीपपन्नत्ती सूत्रमें तीर्थंकरोंके जन्माभिषेकके शमय ६४ इंद्र एकत्रित हो अपने २ आज्ञाकारी देवतोंकों आज्ञा दी है, हे देवो तुम गंगा सिंधू पद्मद्रहादि तीर्थोंका तीर्थजल अभिषेकार्थ लाओ तब बे देवता लाये हैं यदि स्थावर नदी तीर्थ नहीं होती तो समकितवंत इंद्र तीर्थजल कैसे लानेका कहते पुनः भरतचक्रीका दिग्विजय षट्खंडका इस ही सूत्रमें लेख है उसमें मागध १ बरदाम २ प्रभास ३ एवं ३ तीर्थोंको भरतादि चक्रवर्त्ति साधते हैं इन स्थावर स्थानोंको तीर्थ सूत्रोंमें लिखा है वा नहीं जो प्राणी एकांत पक्ष स्थापन कर्ता है उसपर एकांतनय वादक मिथ्यात्वका अवश्य वज्रपात होता है सर्वज्ञ जैनधर्म स्याद्वादी है इस लिये एकांतनय नहीं दयादान पूजा, विषय, और कषाय शुद्धभाव विगर एक क्षेत्र है, ऐसा समयसारमें लिखा है,

तीर्थकर्ता होनेसे तीर्थंकर कहाते हैं, ऊपर लिखे स्थावर तीर्थ भी उन तीर्थपतीकी स्थापनासै हैं, जीव जिसद्वारा तिरे, वह तीर्थ कहाता है, किंबहुना जाति भास्कर वेंकटेश्वर प्रेसमें छपा सो लिखता है, वैश्योंका कृत्य खेती, व्यापार, गऊ आदि पशुवृत्ति, और व्याज, जैनियोंके उपदेशसैं क्षेती गऊआदि पशुवृत्ति वैश्योंनें त्याग दी, लेकिन् क्षेती करना अवश्य था इत्यादि (उत्तर) सर्वज्ञ जैनाचार्य उपदेशद्वारा लाभालाभ संपूर्णकृत्योंका दर्शाते हैं, उसमें जिसकों जो रुचे वह व्रत वह अंगीकार करता है, माहेश्वरी, ओसवालादि तो क्षत्रिय वर्ण थे व्यापारमें विशेष द्रव्यलाभ देखा, जीवहिंसा अल्प, इस लिये, स्वीकारी होगी क्योंकि नीतिका वाक्य है, यतः वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी, किंचित् २ कर्षणे, अस्तिनास्तिच सेवायां. भिक्षानैवच नैवच १ अर्थ. वाणिज्यसे लक्ष्मी वृद्धिपाती है, व्यापारद्वारा अमेरिकन जर्मन जापानादि अडवोंपति हो गये, व्यापार द्वारा अंग्रेजसरकार बादसाह साम्राट् हो गये व्यापारसें पारसी मुसलमान बोहरे आदि महाश्रीमंत हो गये, अग्रवाल, महेश्वरी ओसवाल पोरवालादिक हजारो लक्षाधीस सइकडों कोट्याधीस विद्यमान है व्यापार केवदोलत अहिंसा धर्म पालनेसैं मनुष्योंमें श्रेष्ठ पदसे अलंकृत है, अग्रवालादि महाजनोंकी सेवा इस व्यापारमें चारोंवर्ण कर रही है, प्रथमसाह, बादसाह, इहां तक, उच्च श्रेणीमें व्यापार द्वारा प्राप्त हैं, [किंचित् किंचित् कर्षणे] अर्थात् कृषाणकर्मक्षेतीमैं कुछ २ द्रव्यप्राप्ति होय कभी वृष्टि अभाव होय तब धान्योत्पत्ति होय नहीं, तब ऋण लेना पडे व्याज देना पडे वर्षामें उत्पन्न धान्य ऋणमें चलाजावे, शुक [चिडिया सूए आदिपक्षी] सलभ [टीडी] चूए शूकर प्रमुख जीव धान्य भक्षण कर जावै, इस लिये द्रव्यलाभ विशेषतासें किसी भी समय होवै नहीं, और हल चलाते पृथ्वी फाडते

पृथ्वीमें रहे चूए, गिलेरी, सांप, आदि अनेक स्थूल और सुक्ष्मजीवोंका संहार होता है टीडियोंके असंक्षदलको, धान्यरक्षार्थ, मारना, वह जीवहिंसाके अत्यंत लाभ प्राप्तिमें, द्रव्य लाभ अधिक कैसे संभव हो, व्यापारियों तुल्य धनपति कोई कृषक एक दोभी तो आपवतावेतो आपका आक्षेप जैन धर्म पर यथार्थ पने सिद्ध हो सके, जाति भास्कर ग्रंथ निर्माता उपासगदशासूत्रसैं एक जैनधर्मी वैश्य आनंद गाथा पतीका स्वरूप लिखा है, यह आनंद २४ में तीर्थंकरका धर्मोपदेश श्रवण कर स्वशक्त्यानुसार महावीर भगवानके सम्मुख प्रतिज्ञा करी है के में पांचसय हल (बीगा) पृथ्वीमें क्षेती कराऊंगा, लेकिन् महावीर प्रभूनें, उसकूं ये नहीं कथन कराके तूं क्षेती मत करा, वह गृहस्थपने यावत् रहा, तब तक क्षेती कराते रहा, लेकिन् उसका व्यापार ४ कोटि स्वर्णमुद्रासे चलता था ४ कोटि स्वर्णमुद्रा व्याज वृद्धिमें था ४ जहाज व्यापारार्थ, समुद्रमें चलते थे, पांच शय शकटस्थलभूमीमें माल लाने चलते थे,४कोटि स्वर्णमुद्रानिधानमें निरंतर रखता था, ४०००० चालीस हजार गऊओंका ४ गौकुल था इस प्रकारके ' महावीर प्रभूके एक लाख गुणसठ सहस्र व्यापारी व्रतधर श्रावक थे १०० राजा भरत क्षेत्रके श्रावक उनोंके थे और सामान्य अनुव्रती, तथा व्रतवर्जित जिन वचन सत्य है ऐसी श्रद्धानवाले तो प्राय भारतवासी सर्वही थे, श्रेणिक राजा (भंभसारा) दिक राजा, तथा जिन राजपूतोंसै यावज्जीव मांस भक्षण मद्यपान नहीं भी छूटा तथापि जिनवचनानुसार हित अहित, पुण्यपाप, बंध, मोक्ष, का आत्मामें भान हो गया था एसै भी लखों राजपूत उस महावीर प्रभूके परमार्हत् जैनधर्मी श्रावक सम्यक्त धर कहाते थे, जिनोंका एक दोभवोंमेंही मोक्ष हो गया, तत्वज्ञान होना ये ही अलभ्य पदार्थ है, कायाकों अत्यंत कष्ट, और पर प्राणियोंका असंक्षा नास देख जो क्षेती नहीं करते, उसका जैनधर्म क्या करे, जैनाचार्योंकी पूर्व परिपाटी यह थी के, सर्व जनोंके लिये हितावह, मोक्ष प्राप्तिके मार्गका उपदेश कर देना, तूं अमुक वस्तु छोड ही दे, ऐसा अनुरोध जैनाचार्योंनें कदापि नहीं करा है, जो आत्मबोधसे त्याग दै तो भी उस त्यागकी पूर्ण विधिमार्ग समझाना धर्म समझते थे,

द्रव्यव्यय करनेमैं, लाभ होनेपर प्रथम श्रेणीमें, फाटका बाज तैसेंद लाल भी, दूसरे श्रेणीमैं कपडेका व्यापारी, तीसरी श्रेणीमें जोंहरी, चोथी श्रेणीमें धान्यादिके व्यापारी, पांचमी श्रेणीमें सराफीवाले, छट्ठी श्रेणीमें केवल व्याज करनेवाला, सातमी श्रेणीमें सेवाकारक गुमास्ते, उत्तरोत्तर अल्प व्यय कर्त्ता जानना.

अस्ति नास्ति च सेवायां, अर्थात् नोकरीमैं धन होता भी है और नहीं भी होता, वह प्रत्यक्ष है, लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं, और भिक्षा नैवच नैवच अर्थात् भिक्षा वृत्तिसे द्रव्य नहीं होता,

अंग्रेज सरकारके राज्यशासनमें स्वदेशके लोग हाथोंसे व्यापारकी वस्तु बनानेवाले मसीनसे बणती वस्तुके सन्मुख दिग् मूढ होकर कलाकोशलको जलांजली दे बैठे यावन्मात्र पदार्थका व्यापार विदेशी प्रचलित हो गया, उस व्यापारद्वारा मुख्य लाभ तो अन्य २ विलायतोंके व्यापारियोंको प्राप्त होता है, और किंचित् २ आर्यावर्त्तके व्यापारियोंको भी मिलता है, लेकिन् अंग्रेज सरकारके सुखशांतिमय राज्यशासनके प्रताप लूंटेरे डाकूओंसे बचाव होनेसे प्रजा इस समय द्रव्यप्राप्तिसैं सुखसैं निर्वाह करने लगी, गरीब लोक, कर्म करोंके लिये अनेक साधन आजीविकाके उपस्थित हो गये, जिससें भोजन वस्त्र मात्र गरीबोंको भी मिल जाता है, जो उद्यम करते हैं उनोंकों, प्रजाके सुखसाधन, रेलतार बिजलीका उद्योत, अग्निबोट [जलयान] में चकुरसी आदि अनेकानेक वस्तु, मणियारी वस्तुमें, हाड, लकडी, टेन, एलोमीन, काच, लोह, आदिके नाना पदार्थ टेमफीस [घडी] छापखाना आदि विद्यावृद्धिका साधन, बादित्रोंमें हारमोनियम् [बीणा] की प्रतिनिधि, छत्तीस कर्म करोंके अस्त्र, क्षत्री धर्मार्थ तोप, बंदूक आदिके साधन भी विलक्षण, द्रव्यरक्षार्थ तनजोरी नाना भेद, नाना प्रकारके वस्त्र नाना प्रकारके कागद, ऐसा कोई पदार्थ नहीं रहा, जो की अन्य स्थान यूरोपसे नहीं आता हो, रेसमी [कौसिक] वस्त्र जिसकों ५ सय वर्ष प्रथम चीनांशुक आर्यावर्त्तवाले कहते थे, चीन देशसें आता था, बडे द्रव्यपात्रकी स्त्रियें ऐसे वस्त्रको पहरने उत्कंठित रहती थी, सहस्र मुद्रा देने पर प्राप्त होता था, वह कौसिक वस्त्र, मजूरणिये, पर धापन कर रही है, अर्थात् ३।४। मुद्रामें मिलनेलगा, इस्कूल [पाठशाला] दवाखाना [औषधालय] भी प्रजा सुखार्थ प्राय सर्वत्र प्रचलित है, कोई भी हिमायतीबाला किसीके मजबी [धर्म] बाबत अत्याचार नहीं कर सकता, पोष्ट संबंधी सुखसाधन अत्यंत ही उपयोगी जिसके सुख लेखनीसे नहीं लिख्सकते, संपूर्ण दक्षण भरतमें नादियोंपर पुल [पाज] सर्वत्र मार्ग सडक जिसपर अंधा मनुष्य पशु गण भी सुखसे प्रस्थान करते हैं, यत्र २ जलका अभाव था तत्र २ नहर नल लगाकर जल संबंधी सुखसाधन रच दिया, ब्रिटिस सरकारके राज्य प्रबंधका सुख अवर्णनीय है, सर्व लिखा जावे तो एक बड़ा ग्रंथ बनजावे हमारी न्यायशील ब्रिटिस सरकारका यद्यपि निजनिवास स्थान इंग्लंड (लंडन) राजधानीमें हैं, तथापि न्यायनीति सुखसाधन प्रबंधद्वारा, दोनों प्रजावर्गको, एक शरीरके दो नेत्रोंकों तुल्यपने वर्त्तती हैं, और वर्त्तेगी, इनका राज्यशासन शांतिसुखमई चिरस्थाई रहै, जिससें सर्व प्रजा सुखकों प्राप्त हो, परम पदको साधे, किंबहुना,

यदि ग्रंथमें या प्रस्तावनाके संग्रहमें न्यूनाधिक लिखा हो तो विबुधजन क्षमा

प्रदान करेंगे, भूल-होना मनुष्य मात्रका धर्म है, सर्वज्ञ वीतरागही भूलसे वचे है, श्रीरस्तुः कल्याणमस्तुः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

१ उपाध्याय रामलालजीकी विद्याशाला वीकानेर मारवाड मोहल्ला रांघडी
२ जैन मांगरोल सभा, मेघजी हीरजी मुंबई पायधोणी
३ श्री चिंतामणिजीका मंदिर पाटियादारजी मुंबई दूसरा भोईवाडा.

छपे हुये ग्रंथ

न्योछावर

१ रत्नसमुच्चय (रत्नाकर सागर) खरतरगच्छ, तपागच्छके सर्वधर्म कर्त्तव्य, ७)
२ पूजामहोदधि, ३७ पूजागायन विधियुक्त २॥)
३ दादागुरुदेवपूजा, सिद्धमंत्रयुक्त ।=)
४ दादागुरुगुणरत्नावली, स्तवन, छंद, अष्टकादि, १॥)
५ व्यवहारालंकार, धन कमानेका १॥)
६ सिद्धमूर्ति भागप्रथम ॥)
७ सिद्धमूर्तिभाग दूसरा, ३२ सूत्रपाठसे मूर्तिपूजा ॥।)
८ शकुन, दुर्पग्गे, च उपग्गे, कालसुकाल, भावी फल मालम होना १)
९ चाणक्य १६ अर्थ, आशाशकुनावली, स्वरोदय भाषा १)
१० पंचप्रतिक्रमण, १६ स्तोत्र अर्थयुक्त २।)
११ वैद्यदीपक, इसमें, रोगपरिक्षा, इलाज, देशी, यूनानी, डाक्टरी, होमियापथी, स्त्री, बाल, पशुचिकित्सा, अजमूदा है ५)
१२ स्वप्नसामुद्रक, तेजी मंदी, नीलामके अंक निकालन विधिः ।-)
१३ जैनदिग्विजय ६)
१४। २२ समुदायवालोंके उपयोगी गुणविलाश १)
१५ महाजनवंश मुक्तावली, दुसरी आवृत्ति, अति उपयोगी स्थलवृद्धि, २॥)

जवाब मंगानेवाला जुडा हुआ कार्ड भेजा करे, पुस्तक मंगाकर विदेशसे पीछा लोटावै, उसको २४ तीर्थंकरकी सौगन है, नाटपेट पत्र नहीं लेंगें, सौ रुपयेसे कम पुस्तक खरीददारको, कमीसन नहीं मिलेगा, इस समय कागद छपाई सबकी मंहगाई, जिसपर पोष्ट वे रजीष्टरी पोथी नहीं लेती, टिकट खरचदूना करा है।

अनुक्रमणिका ।

भूमिका	पृष्ठ
अनादि जैन धर्मका कथन	१
अठारेगोत्रओ सबाल तथा भोजकोत्पत्ति	३
सुचिंति गोत्रोत्पत्ति...	१४
वराढ़िया दरडा गोत्रोत्पत्ति	१५
चोपडा, कोठारी, गणधर, चीपड–गांधी–वडेर–सांड-गोत्रोत्पत्ति ...	१७
धाडेवा–पटवा–टाटिया–कोठारी–	१९
गोठि गोत्रोत्पत्ति	२१
सींवसरा गोत्रात्पत्ति	२४
समंदरीया गोत्रोत्पत्ति	२५
झाबक–झांबड–झंबक	२६
वांठिया–लालांणि–त्रमेचा–हर्षावत–साह–मलावत–	२८
चोरडिया–भटनेरा–चोधरी–सांवसुखा–गोलछा–पारख–बुचा–गुल-गुलिया–गुगलिया–गदहिया–रामपुरिया सासपचास–... ...	२९
भंडसाली २ चंडालिया–भूरा–वद्धाणी–	३३
भंडसाली सोलंखी	३५
आयरिया लुणावत...	३८
बहुफणा–वाफणा	३९
रत्नपुरा–कटारिया–जलवाणि	४१
डागा–मालू–भामुं–पारख–छोरिया	४३
रांका–सेठि–सेठिया–काला–वोक–वांका–गोरा–दक	४४
रावेचा–पुगलिया–...	४६

डोसी–सोनिगरा– ४९
सांखला–सूराणा–स्यांल–सांड–सालेचा पुनमिया– ५०
आघरिया– ५२
डूगड–सेखाणी–कोठारी–सुघड़... ... ... ५३
मोहिबाल–आलावत–पालावत–गांग–दुधेडिया–साख सोले ... ५४
वोथरा–फोफलिया–दसाणी वछावत–साह–मुकीम, जेनावत–डूंग-
राली साखा ९ ... ... ५५
गेहलडा गोत्र ६६
लोढा गोत्र२ ... ... ६८
बोरड गोत्र ६९
नाहर–... ... ... ७०
छाजेड ७१
संघवी ७२
सालेचा–वोहरा ७३
भंडारी— ७३
वांगाणी— ७३
डागा— ७३
श्रीपति–ढढ्ढा–तिलोरा ७४
पीपाडा— ७६
घोडावत–छजलांणी ७६
कठोतिया– ७८
भूतेडिया... ... ... ७८
जडिया... ... ... ८०
कांकरिया ८२
आबेडा खटोल ८२
खेतसी पगारिया मेडतवाल ८३

श्री श्रीमाल ८३
बाबेल सिंधवी ८५
गडबाणी भडगतिया... ... ... ८५
रूणवाल बेगाणी ८५
पोकरणा... ... ... ८७
कोचर, महेश्वरी, धर्मतत्व कथन ८७
मतांतरोंका वर्णन ... ...
वैद, श्रेष्ठ गोत्रोत्पत्ति ९९
मिन्नी, भुगडी, खजानची १०१
मुहणोत, पींचा गोत्र १०१
गोत्रोंके जुदा होनेका वृत्तान्त १०१
यति शिक्षा ... ...
कच्छदेशीओ सवाल वृत्तान्त १०४
श्री माल १३५ गोत्र वृत्तान्त १०६
पोरवाल २४ गोत्रोत्पत्ति ११६
हूंबड १८ गोत्रोत्पत्ति ११४
८४ गच्छ वृत्तांत ११७
८४ श्रावगी गोत्रोत्पत्ति ११९
वाममार्गका वृत्तान्त... ... ... १२४
५२ गोत्र वघेर बाल १२६
२८ नरसिंह पुरा गोत्र १२७
२२ गोरारा गोत्र १२८
अग्रवालोत्पत्ति ४ वर्णवृत्तान्त १२९
३६ शुद्रकुल नाम... ... ... १३१
महाराजा बीकानेर... ... ... १२९
महाराजा योधपुर १४०

भाटी जेशंल मेरु राजा १४०
ओसवंश संक्षा १४२
गृहस्थाश्रम व्यवहार.... ... ... १४८
आचार, विचार, शिक्षा ... ...
स्त्रियोंकूं शिक्षा १५५
अर्हन्नीत्तिसे हक्कदारी कानून १५९
सूतक निर्णय १६२
सर्व धर्मका सारतत्व १६२
गंधर्व भोजक, शाक्त भोजकोत्पत्ति १६३
१२॥ जाती वैश्य १६५
मध्यदेशी ८४ वैश्य जाति १६५
वृहत्खरगच्छ पट्टावली १६६
श्वेतांबरोमें चमत्कार कथन १७७

छापेके कारण अशुद्धियां रही है पृष्ट १७६ में बंधा करा है उस जगहमूं बंधा पढना, प्रस्तावनाके पृष्ट ४ में वाद साह जहां गीर करा है उस जगह शाह जहां पढना,

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ जैनराजपूत महाजन ओसवाल वंशोत्पत्ति प्रारम्भ ॥

वंदोंश्री महाबीर जिन, गणधर गौतमस्वाम, मात ।
नमूं नित सारदा, पूरण बंछित काम ॥ १ ॥
ओसवालवड भूपती, शूर बीर मच्छराल ॥
राजकुमर दाता गुणी, शरणागत प्रतिपाल ॥ २ ॥
अश्वपती महाजन बिसद, जिनधर्मी रजपूत ॥
दया धर्म श्रद्धा धरी, अदल करे करतूत ॥ ३ ॥
देव एक अरिहंत जिन, गुरू जती अभिराम ॥
द्रव्य भाव पूजा करे, अहनिशधर्मी धाम ॥ ४ ॥
ख्यात लिखूं इस वंश की, वडज्यूं पसरो साख ॥
रहोसदा चढ़ती कला, धनसुत कीरति लाख ॥ ५ ॥

श्री चोबीसही तीर्थंकरोंके शासनमैं उग्रकुल १ भोगकुल २ राजन्यकुल ३ और क्षत्रीकुल ४ इन चारोंवर्णोंवाले जो जैनधर्म पालते थे बो सब गृहस्थ श्रावक नामसें कहलाते थे, इतिहास तिमिर नाशकके ३ प्रकाशमैं राजा शिवप्रशाद सतारे हिन्द लिखता है स्वामी शङ्कराचार्य्यके पहले इस आर्यावर्त्तमैं २० करोड़ मनुष्योंकी वस्ती सब जैन (बौद्ध) थे, बेदके माननेवाले काशी कन्नोज कुरुक्षेत्र काश्मीर इन चार क्षेत्रमैं बहोत कम संख्या प्राय अस्तवत् रह गये थे, जैनोंकों बौद्ध इसवास्ते लिखा है कि और विलायतों वाले जैनोंसें वाकिफकार नहीं है कारण जैनियोंकी वस्ती मध्य खण्ड मैं कई लाखोंकी संख्या मात्र रह गई है, चीन जापानके जो मांसाहारी तांत्रिक, रातके खानेवाले बौद्ध हैं, उनसें आर्यावर्त्तके जैन-(बौद्धों) सें कोई संबन्ध नहीं है, मतलब अब जो जैनमतके विरोधी

हिन्दमें २० करोड़ मनुष्योंकी वस्ती है, वो सब जैनधर्म वालोंकी सन्तान है, कारण इनोंके बडेरे सब जैनधर्मी थे, जैनधर्मी राजा, तथा प्रजाकी वस्ती थी, इस वक्त मैं अमेरिका, इंगलिस्तान, जर्मन, आदि विलायतोंके, बड़े २ विद्वानोंका, निर्धार किया हुआ है, कि, सृष्टीके प्रवाहकी, सरुआतसें ही, जैनधर्म है, बाकी आजीविकाके लिए, पीछेसें, मनुष्योंनें, नये २ धर्मोंकी कल्पना करी है, इस बातकी सबूती देखणी हो तो, अमेरिका वगैरह, देशोंमैं फिर कर, दया धर्मका, उपदेश करनेवाले, स्वामी विवेकानन्दजी कृत, (दुनियाका सबसें प्राचीनधर्म), इस पुस्तकको देखो, इन स्वामीनें आज दिन तक अन्यधर्म वालोंको, विलायतोंमैं, मदिरा मांसादिक कुकर्म छुडाकर, बड़ा ही उपकार किया है, स्वामीका बेष, गेरू रंगित है, ऐसे संन्यासीयोंका, जीवितव्य, सदाके लिए, अमर है, स्वामी शङ्कराचार्य्य, जिन्होंको हुए हजार आठसै वर्ष हुआ, ऐसा इतिहास तिमिर नाशक मैं, लिखा है, इन्होंनें, राजाओंकी मदद पाकर, जैन धर्मियोंको, कतल करवाया, ये बात माधवाचार्य्य कृत, शङ्करदिग्विजय मैं, लिखी है, बस बलात्कार दयाधर्म जैन छुडाकर मिथ्यात्व हिंसाधर्म लोकोंको, धारण कराया, मरता क्या नहीं करता, इस न्यायसें, लोकोंनें, कबूल कर लिया, पीछै रामानुजादिक, चार सम्प्रदायनें, मांस मदिरा, योंतो खानेके लिए मनाई करी, मगर, यज्ञ कर खाने मैं, दोष नहीं माना, इस तरह जैनधर्म घटते गया, राजाओंनें, जैनधर्मके, कठिन कायदे देख, पूर्वोक्त आचारियोंका, माल खाना, मुक्त जाना, उपदेश पर, कायम होते गये, यथा राजा, तथा प्रजा, इस न्यायसें, जैनधर्म, जो मुक्तिमार्ग था, सो लोकोंनें, छोड़ दिया, वेद परयकी न मनानेवाले, स्वामी शङ्कराचार्य्यनें, ऐसा उपदेश करा, वेदकी श्रुतीसें, जो यज्ञ मैं घोड़े बकरे आदि जीवोंकों मारते हैं, उन जीवोंकी हिंसा नहीं होती, ये बात मांसाहारियोंकों रुची, तब, देवी, भैरूं आदिकोंके, सन्मुख पूजाके बहाने, पशुओंकों मार, मांस खाणेमैं दोष नहीं, ये भी यज्ञ हैं, और रामानुजादिक भक्तिमार्ग वालोंनें, छप्पन भोग, छहों ऋतुओंके सुखदाई, खान पान, पुष्प, अतर, राम, कृष्ण नारा-

यणकी मूर्तिकी, बलि देकर, भक्तजनोंकों, प्रशादी खाणा, शुरू कराया, ऐसे इन्द्रियोंके सुख पोषण रूपधर्मके सन्मुख, पांचो इन्द्रियोंका, दमन करणा, ऐसा त्याग वैराग्य रूप, जैन धर्म, कब प्रशन्न, मोजी सोखी लोकोंकों, आता था, इत्यादि कारणोंसें, जैन धर्म थोड़े पालनेवाले, लोक रहगये, २४ मैं अन्तके तीर्थंकरने फरमाया था कि, है गौतम, भस्म राशी ग्रह मेरे जन्म राशि पर, मेरे निर्वाण बाद आयगा, इस कारण जैनधर्मका, उदय २, पूजासत्कार, कम होता जायगा, तब महाप्रभावीक आचार्य्य २१ हजार वर्षके पंचम आरेमें २३ वक्त जैनधर्म बढाते २ उद्योत करते रहेंगें मेरा शासन अखण्ड २१ हजार वर्ष चलेगा चतुर्विध संघ रहेगा ऐसा लेख निर्वाण कलिका वगैरह ग्रंथोंमैं लिखा है इस तरह जैनधर्मका स्वरूप भगवद्वचनसें जानकर जिन जिन आचार्य्योंनें जैनधर्मकी उन्नती करी नींव पुखता डाली सो संक्षेप वृत्तान्त यहां दरसाते हैं इस जैनधर्मके लाखों श्रावक बनानेवाले पड़ते कालमैं उद्योतकारी प्रथम सवा लाख घर राजपूतोंके महाजन वंशके १८ गोत्र थापनेवाले पार्श्वनाथ स्वामीके छठे पाटधारी श्रीरत्नप्रभसूरिः वाद ५२ गोत्र लाखों घर महाजन बनानेवाले श्रीमहावीरस्वामीके ४३ मैं पट्टधारी श्रीजिन वल्लभसूरिः एक लाख तीस हजार घर राजपूतोंकों महाजन बनाने वाले दादा गुरुदेव श्रीजिन दत्त सूरिः हजारों घर महाजन बनानेवाले मणिधारी श्रीजिन चन्द्र सूरिः ५० सहस्र श्रावक बनानेवाले श्रीजिन कुशल सूरिः इत्यादि फिर गुजरात देश मैं लाखों घर जैनधर्मी श्रावक बनानेवाले, मलधार हेम सूरिः, पूर्ण तल्लगछी श्रीहेमाचार्य्य, और छुटकर गोत्र कई २ और भी अल्प संख्यासे, और आचार्योंनें, बनाये हैं, ज्यादह इतिहास सर्व गोत्रोंका लिखणेसें, लाख श्लोकसंक्षा होणा सम्भव है, इस लिए विशेष प्रसिद्ध २ गोत्रोंका इतिहास लिखते हैं—

सबसें पहले महाजन १८ गोत्र ओसियां पट्टणसें प्रगट भये, ये पट्टण विक्रम सम्बतके पहले चारसे वर्षके करीब वसा था, जिसका कारण ऐसा हुआ, श्रीभीनमाल नगरीके राजा पमार भीमसेनके पुत्र ३ बडा

ऊपलदेव, छोटा आसपाल, और आसल, ऊपलदेव राजकुमार, ऊहड़, ऊधरण, दो मंत्रियोंकों संग ले, दिल्लीके शाहन्शाह साधुनाम महाराजाकी आज्ञा ले ओसियां पट्टण नगर बसाया, राजाकी रक्षामें चारों वर्णोंके करीब, ४ लाख घर, बस गये, जिसमैं सवा लाख घर तो, राजपूतोंके थे, तीस वर्ष जब, राज्य करते व्यतीत हुए, राजा प्रजाका धर्म, देवी उपासी, वाममार्ग था, उन्होंकी देवी, सच्चाय थी, मांसमदिरासें, देवीकी पूजा कर खाणापीणा करते थे, इस बातकों, मुक्ति जाणेका, धर्म समझते थे, इस समय, श्रीपार्श्वनाथजी भगवानके, छठे पाटधारी, श्रीरत्नप्रभसूरिः, केशी कुमारगणधरके, पोते चेले, मास क्षमणसें यावज्जीव पारणा करणे वाले, १४ पूर्व्व धर श्रुत केवली भगवान, विचरते २, श्रीआबू पहाड़ तीर्थ पर, पांचसौ साधुओंके संग, चातुर्मासमैं रहै, जब बिहार करणे लगे, तब उस तीर्थकी अधिष्टायिका अम्बादेवीनें, अरज करी, हे प्रभु ! मरुधर देशकी तरफ बिहार करणा चाहिए, गुरूनें कहा, इस देश मैं, दयाधर्मी लोकोंकी, वस्ती नहीं होणेसें, साधुओंकों, धर्मध्यानमैं अन्तराय पड़ता है, आहारपानी मिल नहीं सकता, तब अम्बाने कहा, आपके पधारणेसें, बहुत धर्मका लाभ होगा, तब गुरूने पांचसौ साधुओंकों, गुजरातकी तरफ भेजे, एक शिष्यकों संग ले, बिहार करते, ओसियां पट्टण पहुंचे, किसी देवस्थानमैं, आज्ञा लेकर मास क्षमण तप करते हुए ठहरे, चेला अपणे लिए गोचरी जाता, धर्मलाभ करते फिरता, लेकिन जैन धर्मकी मर्यादसें, किसी जगह आहारपानी नहीं मिला, तब, किसी गृहस्थका रोग, औषधीसें मिटाकर, उसके घरसें, भिक्षा लेकर निर्वाह किया, ये बात गुरूनें, ज्ञानके उपयोगसें, जाणा, तब शिष्यको उपालंभ दिया, तब शिष्यनें, हाथ जोड़ बिनती करी कि, हे प्रभु इस वस्तीमैं, हरगिज, ४२ दोषरहित, आहार नहीं मिलता, जानकर मैंनें दोषित आहारसें निर्वाह किया है, तब गुरूनें कहा, बिहार करणा चाहिये, तैय्यार हुए, तब उस महात्मा मुनिःके, तपके प्रभावसें, सच्चाय देवीनें बिचारा, धिक् २, ऐसे तारण तरण, निस्पृही, मुनिः, इस वस्तीसें, भूखे जांयगें तो, इस वस्ती मैं अमंगल होगा, तब देवी साक्षात् प्रगट होकर, नम्रता पूर्वक, अरज करी,

हे कृपासिन्धु, ऐसे आपकों, जाना उचित नहीं है, आप इस प्रजाकों लब्धि मंत्रसे, धर्मकी शिक्षा दो, गुरूनें कहा, साधू बिना कारण लब्धि फिरावे तो, दंड आवै, तब, देवीने कहा, हे भगवान, आपसें कोई बात छिपी नहीं है, तीर्थंकरोंकी आज्ञा है, भगवती सूत्र मैं साधुओंको, तलवार ढाल लेकर जिनधर्मके निन्दक, तथा, घातियोंकों समझाणेकों, साधू लब्धि वन्तको, उत्पतणा कहा है, संघ मैं महा आपदा डालणे वाले, महा दुर्बुद्धि, बली ब्राह्मणकों विष्णु कुमारनें, पुलाक लब्धिसें, जानसें मार डाला, आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मुक्तिगये, उस दिनसें राखी बांधनेका त्यौहार ब्राह्मनोंनें चलाया, और आगे गोसालेका जीव जो साधुओं पर, रथ डालेगा, उसकों, सुमंगल साधू रथसहित जलायगा, गोसालेका जीव नरक जायगा, मुनिः आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मैं मुक्ति जांयगें, दशा श्रुत स्कंध सूत्रमैं, संघकी आपदा मिटाणे, लब्धि फिराणी लिखी है, आज्ञाका आराधक कहा, लेकिन संघके कार्य निमित्त लब्धि फिराणेवाला साधु विराधक नहीं, यदि विराधक होते तो, उसी भवमैं मुक्ति साधू कैसें जाते, संसारके जीव भी, लाभ विशेष, और हानि अल्प, ऐसा काम सब बुद्धिमान करते हैं, ऐसा व्यवहार देखणेमैं आता है, और साधू लोक भी ऐसा करते हैं, जैसें मुनिः, एक गांमसें दूसरे गांम, जब बिचरते हैं तो, अनेक जीवोंकी हिंसा होती है, परन्तु एक जगह जादा रहनेसें स्नेहबद्ध मुनिः हो जाते हैं, और, अति परिचय, अति अवग्या, ये दोष भी लगता है, नालक बचन भी है, (दोहा) बहता पानी निरमला, पड़ा गंधीला होय । साधू तो रमता भला, दाग न लग्गे कोय ॥ १ ॥ और अनेक क्षेत्रों मैं, विद्वान मुनिःयोंके उपदेशसे, अनेक भव्य जीव, सम्यक्त्व व्रत धारते हैं, जिनमन्दिर, ज्ञान भण्डारकी, सम्हाल होती है, मिथ्यात्वी निन्हवोंका, दाव नहीं लगता, श्रावक लोक स्यादवादन्याय तत्व पढ़कर, अनेक जीवोंको समझाणेके लिए, समर्थ होते हैं, इत्यादि अनेक लाभकी तरफ बिचार करके, बिचरणेकी आज्ञा तीर्थंकरोंनें दी है, फिर द्वार बन्द करणा, और खोलणेंसें, प्रत्यक्ष पंचेद्री जीवों तककी, हिंसा है, इसलिये साधू साध्वीके प्रतिक्रमण सूत्रमैं, (उघाड़ कवाड़ उघाड-

णाए) इसका पाप तीर्थंकरोंने, फरमाया, परन्तु साध्वीयोंकों द्वार बन्द करणा और खोलणेकी आज्ञा दी, मतलब कोई लंपट रातकों, खुला द्वार देख साध्वीयोंका, शील न खंडित कर दै जीवहिंसासें शील रक्षाका विशेष धर्म समझ साध्वीयोंको, उपाश्रयका द्वार बन्द करणा, तीर्थंकरोंनें फरमाया, इस तरह माछीगर धीवरसोनक कसाई सर्व यवन जातीयोंके देव कुल, मठ मंडपादि कराणेसें, एकान्त हिंसा, आरम्भ आश्रव फरमाया श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रके आश्रव द्वार मैं, ओर महानिशीथ सूत्रमैं, दानशील तप: भावनाका जो फल, ऐसा फल, श्रीजिनराजके मंदिर कराणेवाले श्रावकोंकों, तीर्थंकरोंने फरमाया है, मन्दिर जिनराजका कराणेवाला, श्रावक, वार मैं देवलोक जावै ऐसा फरमाया है, इसलिये ज्ञाता सूत्रमैं, जहां द्रौपदी पूजा करणे गई, उहां जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंका, कराया हुआ था, चम्पा नगरी भगवान महा-बीरके, केवल ज्ञानयुक्त बिचरते समय मैं, वसी, उसके पाड़े पाड़े याने महोल्ले महोल्ले में, जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंके, कराये हुए थे, तभी तो, उवाई सूत्र मैं नगरीके वर्णनमैं, लिखा है, श्रावक लोकोंने जिन मूर्त्तियां असंख्या करवाई, तभी तो, व्यवहार सूत्रमैं, साधुओंकों जिन प्रतिमाके सन्मुख, आलोयण लेणा, लिखा है, बिगर प्रतिमा भराए, किसके सामने, आलोयण लेणा सिद्ध होता है, इत्यादि अनेक बातोंसें, सिद्ध है कि, जिसमैं अल्प पाप बहुत निर्जरा, वह काम साधु श्रावकोंकों, करनेकी आज्ञा तीर्थंकरोंने दी है, आप श्रुतकेवली, सर्व जाण हो, मैं इतने दिन, मिथ्या धर्म मैं, मुरझा रही थी, आज आपकों अवधि ज्ञानसें जाण, मिथ्यात्व त्याग, अर्हत भाषित तत्वकों अक्षर अक्षर सत्य समझा, आपके पास आई हूं और मेरी अरजको आप, सफल करो, दयाधर्म वढे, इसमैं आपकों बडा ही लाभ है, यद्यपि आप वीतरागी, एक भवावतारी, निर्मोही हो, तथापि धर्म बृद्धि करणा, आपका कार्य है, क्या महावीर स्वामी, सद्दाल पुत्रकों, यों नहीं समझा सकते थे, तथापि उसके मकान पर चला कर गये, और अनेक बातें पूछी, पीछै श्रावक करा, केवल ज्ञानी वीतरागीकों, घर पर जाणेकी, क्या आवश्यकता थी, लेकिन जो जिस तरह पर, समझनेवाला हो, उसकों उसी तरहसे दया

धर्मकी प्राप्ति, वीतरागी कराते हैं, इतनी वीनती सुण, गुरूनें चेलेको भेज नगरमैंसें, एक रूईकी पूणी मंगवाई, दशमैं विद्याप्रवाद पूर्व्व मैं लिखे मंत्रसें, उस पूणीका सांप बनाकर आज्ञा दी, जैसे दयाधर्मकी वृद्धि होय, ऐसा कर, अब वो सांप, भरीसभामैं, बेठे हुए राजा ऊपलदेवके पुत्रकों, जाके काट खाया, लोक मारने भगे, अदृश्य हो गया, राजाने विषवैद्य, गारुडी, जोगी, ब्राम्हन, मंत्र वादी चिकित्सकोंसे बहुतही चिकित्सा कराई, परन्तु विष विस्तार पाते ही गया कुमर अचेतन मृतकतुल्य हो गया, उस दिन नगरीमैं हाहाकार मचगया, प्रायः प्रजानें, अन्न जल भी, नहीं लिया, मरा जांण, श्मसानको ले चले, लाखों मनुष्य रोते, पीटते, नगरके द्वार पर्यंत पहुंचे, तब गुरूकी आज्ञासें, चेलेनें रथी रोकी, और बोला, तुम इस रथीकों मेरे गुरूके पास, ले चलो, अभी कुमरकों जीवित कर देंगें, ये बचन सुनते ही राजा ऊपलदेवनें, कुछ धीरज पाया, और चेलेके पिछाड़ी हो लिया, जहां, श्री आचार्य्यजी महाराज, विराजमान थे, उहां पहुंचा, आचार्य्यको देखतें ही राजाका दिल, ऐसा दरसाव देणे लगा कि, अवश्य मेरे पुत्रको, ये भगवान जीवित दान देंगें, राजा अपना, मस्तक गुरूके चर्णोंमैं धरकर, दीनस्वरसें, रोता हुआ बोला, हे प्रभु मेरे बृद्धपनेकी लाज, आपके आधीन है, पुत्रबिगर सब जग सूना है, इस तरह बहुत स्तुति करी, और बोला, स्वामी, मेरा कुटुम्ब तो उसराण, आपकी सन्तानसें कभी न होगा, बल्कि, ओसिया पट्टणकी सब प्रजा इस मुनिः भेषसें, कभी वेमुख न होगी, तब सब प्रजा भी, गद् गद् स्वरसें कहने लगी, हे पूज्य कुंवरजीकों जो आप सचेतन कर दोगे तो, सब प्रजा आपकी, सदाके लिए दासत्वपना करेगी, तब गुरू बोले, हे राजेन्द्र, जो तुम सब लोक, जैन धर्म अङ्गीकार करो तो, पुत्र अभी सचेत हो जाता है, राजा प्रजा तथास्तु, जय २ ध्वनिः करने लगी, गुरूजीनें योग विद्यासें पास किया, तुरत वो पूणिया सांप आकर, डंक चूसणे लगा, जहर उतारकर अदृश्य होगया, कुमार आलस मोडके बैठा होगया, और पितासें पूछने लगा, इतने लोक एकत्रित होकर मुझें जंगलमैं रथीमें डालकर, क्यों लाये, ये सुनतेही, राजा और प्रजाके, आनन्दके चौधारे छूटपडे, और राजानें कुमरकों छातीसें

लगाय, बड़ा आनन्द पाया, और राजा सेठ सामंत गुरूका, महा अतिशय देख, साक्षात् ईश्वर समझ चरणोंमैं लगे, और जय २ ध्वनि होणे लगी, राजा बोला, आप, ये राज्य, भण्डार, सर्वस्व लेकर, मुझें कृतार्थ करो, गुरू बोले, हे भूपति, ये तुच्छ सुखदाई, महा दुःखका कारण, राज्यको समझ, हमने हमारे पिताका भी, राज्य त्याग दिया, इस लिये हे राजेन्द्र, स्वर्ग और मुक्तिका, अक्षय सुख देणेवाला, सर्व जीवनकों आनन्द उपजाणेवाला श्रीसर्वज्ञ अर्हत परमेश्वरका कहा भया, विनयमूल धर्मको ग्रहण करो, राजा पूछता है, हे स्वामी, मुझें समझाओ, तब गुरू, सर्व प्रकारकी जीवहिंसा, सर्व प्रकारका झूंठ, सर्व प्रकारकी चोरी, सर्व प्रकारका मैथुन, सर्व प्रकारका परिग्रह, सर्व प्रकारका रात्रि भोजन, त्यागणें रूप, जो धर्म है सो, हे राजा साधुओंके, करणे योग्य है, और गृहस्थके, सम्यक्त्व सहित बारह व्रत है, वह, तीर्थंकरोंने, फरमाया है, देव अरिहंतके चार निक्षेपे, वंदनीक, पूजनीक है, जिनेश्वर देवकी, हे राजेन्द्र द्रव्यभावसे, पूजन करो, श्रीजिनेश्वरका, चैत्यालय कराओ, जिनेश्वरकी प्रतिमा करवाओ, सतरह भेदसें, अष्ट द्रव्यादिकसें, पूजन भावसे करो जैसैं, श्रीराय प्रश्नीसूत्रमैं, लिखा है, तैसैं, सुगुरू पहले लिखे सो, षट्व्रतोंके पालणेवाले, जिनेश्वर देवका कहा भया, सत्यधर्मका उपदेश, यथार्थ करनेवाले, जिनोंकों वस्त्र पात्र, उतरणे मकान, अन्न, पाणी, औषधी, शुद्धगवेषणीय, देओ, वन्दन, सत्कार, गुण कीर्तन करो, धर्म केवलीकथित, जिसमैं पहले तो, बाईस अभक्षका, त्याग करो, नवतत्व; षटद्रव्य, और श्रावक धर्मका आचार विचार सीखो, और आदरण करो, जिनधर्मकी प्रभावना करते हुए, गरीब, अनाथ, दीनहीनका उद्धार करो, रथयात्रा, संघयात्रा, तीर्थंकरोंकी कल्याणकभूमी स्पर्शन रूप, भावभक्तिसें, तीर्थ यात्रा करो, इस तरह, हे राजेन्द्र, व्यवहार सम्यक्त्वकी करणी करते, निश्चय सम्यक्त्वकों, समझो, आत्माही देव, आत्माही गुरू, आत्माही धर्म, इस स्वरूपके ज्ञाता होकर, पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षाव्रत, एवं सम्यक्त्व युक्त १२ व्रत धारो, अमृत रूप जिनवाणी सुणके, सवालाख राजपूतोंका, अनादि मिथ्यात्वका पडदा, दूर हुआ, सबोंनें श्रावक

धर्म, अंगीकार किया, सच्चाय देवीकी सहायतासे, धर्म पाया इस लिये सम्यक्त्व धारणी साधर्मणीकों, उपकारणी जाणके लपसी, नारेल, खाजा, चूरमा, पक्कान्नसें, बली देणा शुरू रक्खा, जगत्तारक वीर प्रभुका मन्दिर कराणा शुरू कराया; सच्चायदेवीने, प्रकट होकर महाजन विरुद दिया, इस बातकों सुणके भीनमालका राजा, आसलने भी, जैनधर्म, अंगीकार करा, और, भीनमालमैं, महावीर प्रभुका मन्दिर, कराणा शुरू करा, दोनों मंदिरोंकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त एक दिन होणेसें, रत्नप्रभ सूरिनें, दो रूप रचकर, ओंसियां और भीन मालके मन्दिर मूर्तिकी, प्रतिष्ठा एक कालमैं, करी, जैन धर्मका आचार विचार सीखके, सब राजपूत, १० वर्षमैं हुशियार हुए, जब दोनों मन्दिर भी चार मंडपका शिखर बद्ध १० वर्षमैं तैय्यार हुआ, प्रतिष्ठाके पीछै साधर्मी वात्सल्य राजानें किया, तब ब्राह्मन जो राजाके कुल भिक्षुक थे, उन्होंने भोजनकी बखत सिर फोडी करणी शुरू की, तब राजाने कहा, अगर जैनधर्मकी, श्रद्धा धारण करो, जिन मन्दिरकी सेवा और जतीगुरूकी टहल बन्दगी, धारण करो तो, तुम्हारा मरणे, परणे, लागभाग हम लोक देंगें, अन्यथा नहीं देंगें, तब पूर्वोक्त जातिके ब्राह्मनोंमेंसें, पांच सहस्र पुरुषोंने कहा, ये बात हमैं मंजूर है, परन्तु जिनमन्दिरमैं जो बली चढाये जाती हैं, वो हमैं देणा होगा, क्यों के आगे, ये मर्यादा थी जो जिनमन्दिरमैं बली (नैवेद्यफल) चढाए जाते थे, वो सब मन्दिर ऊपर, कूट पर, धरा जाता था, उसको कऊए आदि जीव भक्षनकर जाते थे, इस वास्ते, कोषमैं कऊएका नाम, संस्कृतमैं बलिभुक् कहते हैं, तब राजानें, अपने पमारोंके कुलभिक्षुककौं, महावीर प्रभुके मन्दिरमें झाडू देणे, बरतण मलणे, दीपक जलाणे, जलालाणे इत्यादि मन्दिरका काम सुपुर्द कर दिया सम्हलाया, मन्दिरका बलिदान खाणेवाला वलिअद् जातका नाम पड़ा, लोकोंनें बलि अद्शब्दको विगाड़ कर, (बलध) कहणे लगे, उपल देव पमारकी सन्तानका श्रेष्ठी गोत्र रत्नप्रभसूरिः नें, स्थापन किया था, वो विक्रम सम्बत् १२०१ मैं चित्तोड़ मैं, राणेजीकी राणीकी, आंख अच्छी करणेसें, वैद्य पदवी पाई, उस दिनसें, श्रेष्ठि गोत्रका नाम, वैद्य गोत्र प्रसिद्ध हुआ, रत्न प्रभसूरिका,

उपकेशगच्छवजाताथा वह सम्वत् १०८० के वर्ष मैं दुर्लभ राजाकी सभामैं कुँअला विरुद पाया, ये बलीअद् भोजक, अभी भी, वैद्य गोत्र और कुमला गच्छके, सेवक पणेका, काम कर, अपना हक्क लेते हैं, इस तरह साधर्मी, वात्सल्य मैं, ओसवाल महाजनोंके संग, भोजन करनेसें भोजक कहलाए, देव अरिहंत, और गुरू जतीकी सेवा करने लगे, तब राजा प्रजाऊंचे शब्दसें, सेवक-कहने लगे, इस तरह ८४ जातके ब्राह्मनों मैं सें ४ गूजर गोडछखंडेलवाल ब्राह्मणगोत्र १०, राजा ऊपल देवके महाजन होते सो वखत हुए, वाकी नव गोत्र वालोंका हक्क, १७ गोत्र, ओसवालोंके सेवक, भिक्षुकपणेके हक्कदार रहै, राजा ऊपल देवके पिताके भ्राता सालगजी जिन्होंकों, राजा, तातजी यानें (पिताजी) कहके पुकारते थे, इसवास्ते प्रथम गोत्र तातेहड़ १ बाफणा २ कर्णाट ३ वलहरा ४ मोराक्ष ५ कुलहट ६ विरहट ७ श्रीमाल ८ श्रेष्ठि गोत्र ये राजा ऊपल देवका ९ सहचिंती गोत्र १० (ये राजा ऊपल देवके प्रधान था उसका) आई चणाग गोत्र ११ भूरि (भटेवरा) गोत्र १२ ये राजाके सेनापतिका, भाद्रगोत्र १३ चीचट गोत्र १४ कुंभट गोत्र १५ डीडू गोत्र १६ कन्नोज गोत्र १७ लघुश्रेष्ठि गोत्र, १८ ये गोत्र राजाजीके भ्राता छोटे आसपाल उसका हुआ, इस गोत्रमैं सोनपालजी नामके नामी पुरुष हुए इनके नामसें लघुश्रेष्ठि गोत्र वाले सब सोनावत बजणे लगे, ऊपल बडे भ्राता जिन्होंका श्रेष्ठ गोत्र आसपाल छोटा भ्राता जिसका लघु श्रेष्ठि, ये दोनों, वैद्य, सोनावत, वजते हैं, सेठिया, और सेठी, गोत्र जो, अब प्रसिद्ध है, वो सब, जिन दत्त सूरजीके प्रति बोधे हुए हैं पालीनगरमैं, और सुचिंती गोत्र वर्द्धमान सूरिः खरतर गच्छाचार्यके प्रतिबोधक है, सुचिन्ती और सहचिन्ती दो गोत्र जुदे जुदे हैं, बाफणा गोत्र और बहुफणा गोत्र अलग २ है वाफणा मैंसें ३७ साखफटी है, इन्होंका गच्छ खरतर है, श्रीश्रीमाल गोत्र श्रीजिनचन्द्र सूरिः खरतर गच्छाचार्यनें महतीयाण गोत्र मैंसें प्रतिबोधके महाजन किए हैं, श्रीमाल गोत्र और श्रीश्रीमाल गोत्र जुदा नहीं है, एक ही है श्रीमाल जातीको, पावों मैं सोना पहननेकी मनाई नहीं

है, मुसलमीन बादसाहोनें, सदाके लिए, बक्सा हुआ है, इन्हों मैं जतीके नख बहुत थे तब तो सगपण भी श्रीमाल २ आपस मैं ही करते थे, अब परिवार बहुत कम होग या, लेकिन गच्छ खरतरमैं ही रहै, इसलिए गुरु भक्तिसे लक्ष्मी तो इन्होकी अब भी दासी बन रही है; अब तो ओसवालोंको बेटी देणे लेणे लग गये हैं, ८४ जातिके व्यापारी गोत्रों मैं श्रीमालोंको बादशाहने, उच्चपद दिया था, इस तरह १८ गोत्रोंकी प्रथम थापना भई, फिर सवालाख देस मैं, रत्न प्रभ सूरिःने, सुघड़ चंडालिया, ये दो गोत्रोंके दस हजार घर प्रति बोधे, दश गोत्र भोजक लोगोंनें वाममार्ग छोडा नहीं, प्रच्छन्न पणेवो भी किया करते रहै, और अभी भी करते हैं, इसवास्ते इन्होंके द्वेषियोंने इस करतूतसें, इन्होंको, शूद्रों मैं, दरज कर दिया, अभी विक्रम सम्बत् १९५७ मैं, श्रीबीकानेर राजपूताने मैं, इन्होंको शूद्र समझ, कर लगाणेका विचार था, आखर ब्राह्मणोंके पुरानोंसे, साबित हो गया कि, भोजक ब्राम्हणोंसे ही बने हुये हैं, टाड साहब कृत राजपूताना इतिहास देखो, तथा व्यास मीठालालजी कृत टाड प्रत्युत्तर देखो, तथा जाति भास्कर ग्रंथ देखो पुराण बणाणेवालोंकी ये चतुराई है कि जिसके गोत्रके प्रथम उत्पत्तिका पत्ता नहीं मिलता है तो उन्होंको किसी देवताकी सन्तान ठहरा लेणा है, मतलब, संज्ञा पूरणेड, इस न्यायसें, इतिहास तिमिर नाशक मैं, राजा शिवप्रशाद, सितारे हिन्दनें, इस पुराणोंकी बात पर पूंछड़िया राजाका दृष्टान्त भी लिखा है, वो सच्चा है, लेकिन जैन लोक ऐसा इतिहास कभी नहीं लिखते, कारण देवताओंकी सन्तान मनुष्य नहीं, देवताओं की उत्पत्ति भोगसें नहीं है, मनुष्यों की उत्पत्ति भोग वीर्यसे है, जानवरसें जान वर मनुष्योंकी मनुष्योंसे उत्पत्ति होती है, तुराईका बीज बोणेसें ककड़ी कैसे पैदा हो सक्ती है, भोजक लोक अपनी उत्पत्ति, सूर्य जो आकाशमैं प्रकाश करता है, उससैं मानते हैं, पुराणोंपर यकीन रखके, बुद्धिमान अंग्रेज तथा जैन तथा और भी अकलवरोंकों विचार करणा चाहिये कि, क्या सूर्य देव ऐसे व्यभिचारी, और अन्याई हैं, सो सती कुन्तीका शील तोड

डाला, और मनुष्य ब्राह्मणोंकी कुंवारी लड़कियोंका, बलात्कार शील तोड़ते फिरता है बाहर सूर्य नारायण गवर्मेन्टके राज्यमैं ऐसा काम करणेवालोंकों जवरजन्नाके कायदेसें, जरूरही सजा होती, उस वक्त उस कन्याके पितानें सूर्यको श्राप देणे रूप सजा देनी लिखी है, खैर हमको, इतिहास यथार्थ जो भया सो लिखणा है किसीके खंडन सें तालुक नहीं, भोजकोंके ६ गोत्र पीछेसें १० जातमैं मिले हैं, इसमैं २ गोत्र तो गूजर गोड़ ब्राह्मन थे, ४ पुष्करणे ब्राह्मण, ये ६ जात मालवदेशके वडनगर मैं, श्री जिनदत्त सूरिजी पधारे, तब मरी हुई गऊ, जिन मन्दिरके सामनें, धर दी, उसको दादा साहबनें, परकाय प्रवेश विद्यावलसें, उठाकर, रुद्रके स्थान पर जा गिराई, और भी इन ब्राह्मणोंने बहुत उपद्रव करणा शुरू करा, तब उहांके क्षेत्राधिष्ठायक बीरोंकों, आज्ञा दी के, तुम इन सब ब्राह्मणोंको समझाओ, उन बीरोंने उन सब ब्राह्मणोंकों, उन्मत्त पागल बणा दिये, वो नंगे होकर बुरी चेष्टासें भटकणे लगे, पीछे वडनगरके राजा, तथा प्रजानें, श्री जिनदत्त सूरिः जीसे, बिनती करी, तब गुरूनें कहा, कि ये लोक सदाके लिए, देव गुरू की, टहल करते रहैं, और मेरे किये हुए, महाजनोंके, भिक्षुक रहैं तो, अच्छे हो जाते हैं, सम्बंध, और भोजन, आगे जो भोजक है, उन्होंके साथ, इन्होंको करणा होगा, राजा प्रजा जमानत करी, तत्काल, वो लोक अच्छे हो गये, इन्होंमें राजाका मुख्य गुरू ब्रह्मसेन, जिसका पुत्र देववृत, सो देवेरा भोजक कहलाया, जिसकी सन्तान बीकानेरमैं हंसावत, तथा आदि सरिया वजते हैं, इन सोलह गोत्रोंका लाग दादा साहबनें समस्त महाजनों पर लगा दिया, पहिली १८ गोत्र पर ही था, महाजन लोक राज्यके कारबारी थे, इससें शिव विष्णुका मन्दिर भी इन्होंके, सुपर्द, करवा दिया, प्रायः भोजक देवीके उपासक हैं, मारवाडके ओसवालोंके पास दान परणे मरणे लेते हैं, टाड साहबने राजपूत इतिहासमैं इन्होंका होना, अन्य ही प्रकारका लिखा है, कइयक इन्होंमैं, कवि हैं, विद्या न्यून है, इस जातिमैंसे जगत सेठजीके पास, कइ यक भोजक विद्वान पंडित गये थे, उस दिनसें, मुरसिदाबादमैं, भोजकोंकों पांडेजी कहा करते हैं, इतने कर संक्षेप इतिहास महाजन १८

गोत्रोंका, तथा १६ गोत्र भोजकोंका, दिखलाया, इस बातकों हुए कितने बर्ष हुए, सो प्रमाण लिखते हैं, ओसियां नगरीके नामसें महाजनोंकों ओसवाल संज्ञा भई, राजा ऊपलदेवका कराया हुआ, बीर प्रभूका मन्दिर ओसियांमैं, आंसल राजाका कराया हुआ, भीनमालमैं, अभी विद्यमान है, माहेश्वर कल्पद्रुम ग्रंथमैं, ओसवालोंके होणेका जमाना इस तरह लिखा है,

सवईयाच्छन्द

श्रीबर्द्धमान जिन पछैं बर्ष बावन पद लीधो, श्रीरत्न प्रभुसूरि नाम तास सत् गुरूव्रत दीधो, भीनमालसूं ऊठिया जाय ओसियां वसाणां, क्षत्री हुआ साख अढार उठै ओसवाल कहाणां, एक लाख चौरासी सहस्र घर; राजकुली प्रति बोधिया, रतन प्रभू ओस्या नगर ओसवाल जिण दिन किया।१।, प्रथम साख पमार, सेससी सोद सिंगाला, रण थम्भा राठोड़ वंसच ऊआन वचाला, दइया सोलंखी सो नगरा कछावा धन गोड कहीजै, जादम हाड़ा जिंद लाज मरजादलही जै,। खरदरापाट औपे खरा, लेणा पटाज लाखरा, ।एक दिवस इता महाजन भया सूर बड़ा बडीसाखरा ॥ २ ॥

इसके पीछै खरतर गच्छाचार्य्योंनें प्रायः बहुत गोत्र प्रति बोधे, किंचित् अल्प गोत्र, और २ आचार्य्योंने प्रति बोधे सो सब, इन्हों मैं, मिलते गये, सुनते हैं, सम्बत् सोलहसे मैं खरतर गच्छाचार्य्यसे, मोहणोत गोत्र, प्रति बोधे गया, बस जाता जम्बू ले गया, और आड़ी टाटी दे गया, वो न्याय इस गोत्रसें हुआ, फिर कोई भी गोत्र राजपूत माहेश्वरीया ब्राम्हनों मैं से नहीं थापा गया, ये प्रताप सब तत्व दृष्टिसें देखोतो, जिन प्रतिमानिन्दकोंसें हुआ, कालका महात्म इन्होंका आचार विचार देख, राजपूतमाहेश्वरी और ब्राम्हण लोक, जैनधर्मसें, घृणा करणे लग गये, इस बखत जो जैनधर्म चल रहा है, सो सब प्रताप जती आचार्य महा राजोंका है, अब तो वाजे महाजन भी ऐसे कठिन बनगये हैं सो जिन धर्मकी प्राप्ति कराणे वालोंकी, सन्तानसें, बेमुख होगये हैं, और अपने बडेरोके बचनोंकों, भूल गये हैं, लायक मन्द लोकोंका, बाप, और बात, एकही है, सवइयेमें लिखा है कि श्रीवर्द्धमान भगवानके निर्वाण पहुंचे बाद ९२ वर्ष पीछै, रत्नप्रभ

सूरिःकों आचार्यपद गुरूनें दीया है और ७० वर्ष पीछै वीरप्रभूके निर्वाणके ओसियांमैं अठारे गोत्रोंकी थापना करी, भोजक लोक सम्बत् वीया वाईसा कहते हैं सो सच्च है, लेकिन, वीया वाईसा, राजा नंदिवर्द्धनका है,—राजा विक्रमका नहीं, सो हिसाब लिखते हैं, जब भगवान महाबीरने दीक्षा ली तब संवत्सरीदान देकर, प्रथम प्रजाका, ऋण उतारकर भाई राजानन्दिवर्द्धनका सम्बत्सर चलाया, पीछै प्रभू ४२ वर्ष विद्यमान रहै और निर्वाण पाये बाद ७० वर्ष पर १८ गोत्र हुए एवं ११२ दस वर्ष बाद आचार विचार सीखते तथा मन्दिर कराणेमैं लगा १२२ वर्षपर प्रतिष्ठा तथा साधर्मी वात्सल्यके भोजन पर, भोजक गोत्रकी थापना भई, ऐसाही प्रमाण कमला गच्छके आचार्यके पुस्तकमैं तथा हमारे बडे उपाश्रयके भण्डारके पुस्तको मैं लिखा है, तथा भगवान महाबीरकों मुक्ति पहुंचे को, इस ग्रंथके लिखते वक्त २४४९ का सम्बत् चल रहा है, याने अश्वपती गोत्रकी प्रथम थापनाकों भए, आज, २३७९ वर्ष बीता है, विक्रम सम्बत् १९७६ तक, अब खरतर तथा और २ आचार्य्योंके बनाये भये, गोत्रका संक्षेप इतिहास दरसाते हैं,

प्रथम सुचिन्ती गोत्र

विक्रम सम्बत् १०२६ मैं श्रीजैनाचार्य वर्द्धमान सूरिः खरतर विरुद पाणेवाले श्रीजिनेश्वर सूरिःके गुरू, विहार करते, दिल्ली पधारे, उस नगरका राजा सोनी गरा, चौहाण, उसका पुत्र बोहित्थ कुमारकों, वगीचेंमैं सूतेको, पेणा सांप, पी गया, नगरी मैं हाहाकार मचगया, रोते पीटते, मरा जाण स्मशान मैं गाडनेको लाये, उहां बड़ वृक्ष नीचे पांचसय साधुओंसे विराजमान, आचार्यने पूंछा, ये कोण मरगया लोकोंने सब स्वरूप कहा, राजानें, बिनती करी, हे सन्त महापुरुष, आपका दया धर्म सफल होय, किसी तरह, मेरा सुत सचेतन होय तो, मैं, और मेरा परिवार, आपके उपकारसें, सदाके लिए आभारी रहेंगें, इस पुत्रकी सन्तान जहां तक सूर्य चन्द्रमा पृथ्वीपर उद्योत करेंगें उहां तक आपकी सन्तानकी चरण सेवा करते रहेंगें, इस वक्त जो दुःख, मेरे तनमैं हो रहा है, सो पर-

मेश्वर ही जानता है, इसके दुःखसे मैं भी मर जा ऊंगा, तब आचार्य बोले, हे राजेन्द्र, जो तुम सपरिवार जैनधर्म धारण करो और मेरे शिष्य प्रशिष्योंसें, वे मुख धर्मत्यागके तुमारी सन्तान कभी नहीं होवे तब तो पुत्र सचेत हो सक्ता है राजा तथा परिवारके लोकोंनें इस बातको पूर्ण ब्रम्ह परमेश्वरकी साक्षीसें प्रतिज्ञा की गुरूने दृष्टिसें पास किया तत्काल ही कुमर आलस्य मोड़ बैठा हो गया सर्व लोकोंके मनमें परम आनन्द हुआ राजानें गुरू महाराजकों महोच्छव पूर्वक नगरमैं पधराये धर्म व्याख्यान सुनकर सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत उच्चरे कुमर जैनधर्मका आचार विचार सीखा गुरू महाराजनें इसकों सचेत करणेसें सचेती गोत्र स्थापन करा गच्छ खरतर मानते हैं सहचिन्ती गोत्रसें सचेती गोत्र जुदा है।

वरदिया [वरढिया] दरडा।

धारा नगरीका राजा भोज परलोक हुए बाद तंबरोंनें मालवदेशका राज्य ले लिया भोजराजाके पुत्र १२ थे १ निहंग पाल २ तालणपाल ३ तेजपाल ४ तिहुअणपाल ५ अनंगपाल ६ पोतपाल ७ गोपाल ८ लक्ष्मणपाल ९ मदनपाल १० कुमारपाल ११ कीर्तिपाल १२ जयतपाल इत्यादिक ये सब राजकुमार धारा नगरीकों छोड़ मथुरा मैं आ रहै तबसें माथुर कहलाये कुछ वर्षोंके बीतने बाद गोपाल और लक्ष्मण पाल, के कई गांममैं जावसे, सम्बत् ९५४ मैं, श्री नेमिचन्द्रसूरिः श्रीवर्द्धमान सूरिःके दादा गुरू उद्योतन सूरिःके गुरू, वहां पधारे, उस वखत लक्ष्मणपालनें, गुरूकी बहुत भक्ति करी, धर्मोपदेश हमेशा सुणा करे, एक दिन, एकान्तमैं, गुरूसें अरज करी, है गुरू न तो मेरे पास, ज्यादह धन है, और न मेरे, कोई शन्तान है, इन दोनों बिना जीवितव्य, संसारमैं बृथा है, आप परोपकारी हो, कोई ऐसी कृपाकरो के, मेरी आसा पूर्ण होय, तब गुरूने कहा के,

---

१ इस गोत्रके भाग्यशाली सेठ बृद्धिचन्दजी सिंधीया सरकारके खजानची थे, इन्होंके पुत्र गुलाबचन्दजीनें फल वर्द्धी पार्श्वनाथके मन्दिरके चारों और हजारों रुपे लगाकर गढ बणवाया पार्श्व प्रभूकी कृपासें इन्होंके पुत्र हीराचन्द्रजी अजमेर नगरमैं महा श्रीमन्त धर्मशाली देवगुरूके भक्त रहते हैं.

जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, सर्व कामना सफल होयगी, धन पाकर सात क्षेत्रोंकी भक्ति करणा, सुपात्र तथा दीन हीनकों दान देणा व सदाके लिए, तुम्हारी सन्तान मेरे शान्तानोंके धर्म उपाशक, वेमुख न होगी तो, जा तेरे मकानके पिछाडी अगणित द्रव्य जमीनमैं, गडा है, उसकों निकालते, जो तुझें मत निकाल ऐसा शब्द कहै, उसकों कहणा, मैं, नेमिचन्द्र सूरिःका, श्रावक हूं, इस धनका आधा भाग, सुकृतार्थ लगावेगा, तब तेरे तीन पुत्र होगा इतना सुन, लक्ष्मणपाल अपनी भार्या समेत सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत गृहण करा उसी तरह, वो निधान निकला, शत्रुञ्जयका संघ निकाला, अगणित द्रव्य धर्म मैं लगाते, तीन पुत्र उत्पन्न हुए, १ यशोधर २ नारायण ३ और महीचंद्र, गुरू श्रीनेमिचंद्रसूरिने, आशीर्वाद दियाथा, इन पुत्रोंसें तुम्हारा कुल बढेगा, योवन अवस्थामें महाजनवंशमैं इन्होंका विवाह किया, उसमैंसे पहले नारायणकी स्त्रीके गर्भ रहा, पीहरमैं जाके जोडा जन्मा जिसमैं लडका तो सांपकी आकृतीवाला और दूसरी लड़की, इन दोनोंको लेकर सुसरार आई, अब वो सांपकी आकृतिवाला लडका शीतकालमें चूल्हेके पास सोताथा, लोटपोट करता चूल्हेके पास चला गया, भावीके वस उसकी वहननें पाणी गरम करणे पिछली रातकूं अंधेरेमें चूल्हा सिलगा दिया उससें वो नाग आकृति बालक जलकर मरा, शुभ भावसें व्यंतर देवता भया अब वो नागदेवके रूपसें आकर अपनी बहनको तकलीफ देणे लगा, तब लक्ष्मणपालने यंत्र, मंत्र, बलिदान, वगैरह कराया, तब प्रत्यक्ष होकर बोला, जबतक मैं व्यंतर योनिमें रहूंगा तबतक लक्ष्मणपालकी संतानकी लडकियां, कभी सुखी नहीं रहेगी, कुछ न कुछ आपदा होगी, ये बात सुण, बहुत लोगोंने विचारा, सच्च है या झूठ, इतनेमें एक कमरके पीडावालेने आकर कहा, जो तूं सच्चा देव है तो, मेरी कम्मर अच्छी करदे, तब देव बोला, लक्ष्मणपालकै घरकी दिवालसें तेरे दरदकी जगह स्पर्शकर, अभी पीडा चली जायगी, उसने दिवालसें स्पर्श किया, कम्मर अच्छी हो गई, तब उस देवनें लक्ष्मणपालको वर दिया, जो चिणक पीडावाला तुमारे घरका स्पर्श करेगा सो तीन दिनसें निश्चय पीडा

रहित होगा, वर दिया, उसका अपभ्रंश लोक वरडिया कहणे लगे वो उसकी बहिन भाईके हत्याके निवृत्त्यर्थ मोहसें शुभध्यानसें मर व्यंतर निकायमें देवी भई, भूवाल उसका नाम है, इसकों कुल देवी कर पूजणे लगे, नेमिचन्द्र सूरिः के तीसरे पाटधारी, जिनेश्वर सूरिःकों खरतर बिरुद् मिला, मूल, गच्छ इन्होंका खरतर है,

कूकड़ चोपड़ा गणधर चोपड़ा चीपड़गांधी वडेर सांड

खरतर गच्छाधिपती, जैनाचार्य, अभयदेव सूरिःजीके शिष्य, वाचनाचार्यपद-स्थित, श्रीजिनवल्लभ सूरिः, ११९६ वर्ष विक्रमके, विचरते २ मंदोदर नगरमें पधारे, उहाँका राजा, नाहडराव पड़िहार साख इन्दा गुरूकी बहुत भक्ति करी, और विनती करी, है परमगुरू मेरे पुत्रके पुत्र नहीं, गुरूनें कहा, पुत्र होनेसें संसार बढ़ेगा, साधू संसार बढाणे विना जैनसंघके काम विना, निमित्त भाखे नहीं, इसलिए तूं, इतना करार करे की, पहले पुत्रकूं आपका शिष्य दीक्षित करदूंगा तो, बताकर पुत्ररूप संपदा कर दूं, राजानें बडे हर्षसें, ये बात मंतव्य करी, गुरूने कहा, तुम और तुह्मारी स्त्री, ये मेरा वास चूर्ण, सिरपर लो, दोनोंनें लिया, गुरूनें कहा बचन मत पलटना, चार पुत्र होगा, गुरू विहार कर गये, क्रमसें चार पुत्र हुए इधर सम्बत् ११६९ मैं श्रीअभय देवसूरिः, वादि देवसूरिः अपने धर्म मित्रकों, कह गये, मेरे पट्ट पर, बल्लभकों, स्थापन करणा, देवसूरिःनें कहा, वल्लभकी आयू अब थोड़ी है, लेकिन इसनें वाचनाचार्य्य पद मैं रहते ५२ गोत्र राजपूत माहेश्वरी ब्राह्मनोंकों, जिन धर्मी महाजन बनाये हैं, इस लिए, महा प्रभावीक है, मैं आचार्य्य पद मैं स्थापन कर दूंगा, श्रीजिन वल्लभ-सूरिःकों स्थापन किया, ६ महीने आचार्य्य पद पालके, देवभद्र सूरिःकों सोम चंदको पट्टधारी बनानेका वचन कथन कर स्वर्गवास हुए, १०८ चिन्ह करके सुशोभित, शरीरधारी, श्रीजिनदत्त सूरि नाम देवभद्र सूरिनें सूरि मंत्र दिया, तीन क्रोड़ ह्रीं कारके जपकी सिद्धि कर, श्रीजिन दत्त सूरिः विचरते २ मन्दोवर नगर पधारे राजानें बहुत ही, उच्छव करा भक्ती दरसाई, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र, गुरू महाराजका वचन याद है, आपने

क्या प्रतिज्ञा करी थी, राजाने राणीसे पूंछा, राणी बोली, राजाके पुत्रकों श्रीजिन दत्तसूरिः, घर २ भीक्षा मंगायगें, सर्वथा पुत्र नहीं देने दूंगी, पुत्र दिया तो, प्राणत्याग दूंगी, तब राजानें लाचार हो, गुरूसें कहा, हम सब, आपहीके हैं, आपका गुण हमारी शन्तान कभी नहीं भूलेगी, गुरू उहाँसे बिहार कर गये, कर्मके वसरातकों भोजन करते समय, बडे पुत्रके, सांपकी गरल खाने मैं, आगई, कूकड देवके, प्रभात समें वैद्योंनें, चिकित्सा बहुत करी लेकिन् कुछ फायदा नहीं हुआ, तीसरे दिन सर्व शरीर फूट गया, मंत्र, यंत्र सब कर चुके, महा दुरगन्ध, महा विद्रूप, वदनमैंसें, पूय झरणे लगा, मृत्युके मुख पड़ा, राणी, हाय २ कर रोने लगी, शहर मैं, हाहाकार मच गया, तब गुणधरजी कायस्थ, हंसजाति जो उस समय दीवान थे, उन्होंनें राजासें अरज करी, हे महाराज, आपने, महापुरुषोंसें, कपट करा, उसका फल है, आप यदि अपना भला चाहो तो, उन्हीं परम पुरुषके, चरण पकड़ो, राजा उसी समय घोड़े पर सवार हो, सोझत इलाकेसें गुरूकों, पीछा लाया, गुरू देख कर बोले, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारकर, खरतर गच्छ के श्रावक बनो तो, आपका पुत्र अच्छा हो सक्ता है, राजानें कहा, कि मेरी आल औलाद, लायक बन्द होगी, सो खरतर गुरूका, उपकार, कदापि भूलेगी नहीं, न पराङ्मुख होंगे, गुरूनें कहा, ताजा मक्खन लावो, गणधरजी मुख्य मंत्री, तत्काल कूकड़ी नाम गऊका, नवनीत [मक्खन] ले आए, गुरूने योग साधन विद्यासे, अलक्ष दृष्टि पाससें, आत्मबल विद्युत् प्रक्षेपन नवनीत ऊपर करके, आज्ञा करी, चोपड़ो, गणधरजी मंत्रीनें, चोपड़ा, तत्काल पूय श्राव बन्द हुआ, तीन दिवसमैं, गंध निवृत्ति हो, स्वर्णवर्ण निज रूप हुआ, ये प्रत्यक्ष उपकार, चमत्कार देखकर, गुरूकों, धर्म तत्व पूछा, गुरूनें, न्याय युक्तिद्वारा ३ तत्व देव १ गुरू २ धर्म्म ३ का स्वरूप जिनोक्त कथन करा, नाहडजी पड़िहार, राजानें, सह कुटुम्ब, जिनधर्म धारण करा, गुरूनें उस पुत्रका, चोपड़ा, तथा कूकड़ गोत्र, स्थापन करा, तथा चीपड़ पुत्रका चीपड़ गोत्र, हुआ, सांडे पुत्रसें, सांड गोत्र हुआ, सांड गोत्र दो है कूकड़ सांड,

इन्होंमैं है, सियाल सांड दूसरे हैं, उस समय मिथ्यात्व त्याग, हंसकायस्थ मंत्री गणधरने भी, श्रावक व्रत सहकुटुम्ब धारण करा, उनसें गणधर चोपड़ा गोत्र स्थापित हुआ, गुणधरमैंसें, गांधीपनेके व्यापार करनेसे गांधी गोत्र स्थापित हुआ, नानूजीके पांच पुस्तान पीछै दीपचन्दजी भये, उन्होंका ब्याह लग्नादि, ओसवालोंमैं, शामिल श्रीजिन कुशल सूरिः गुरूनें सदाधर्म स्थिर रहैगा, इस न्यायसे, ओसवालोंकी पंक्तिमैं संमिश्रित करादिया, दीपचन्दजी पीछै परिवारकी बहुत वृद्धि हुई, ११ मी पुस्तान सोनपालजी उन्होंके पौत्र ठाकुरसीजी महाबुद्धि शाली, चातुर, सूर, तव रावचूंडेजी राठोड़ने, उन्होंको कोठारका काम सुपुर्द किया, वह कोठारी कहलाये, राव श्री वीकेजीने, बीकानेर मैं, हाकिम पद दिया, वह हाकिम कोठारी कहलाये, इन्होंकी शाखा १२ का पता लगा है कूकड़ १ कोठारी २ हाकम ३ चीपड़ ४ चोपड़ा ५ सांड ६ बूबकिया ७ धूपिया ८ जोगिया ९ बड़ेर १० गणधर चोपड़ा ११ गांधी १२ गणधरोंका निवास मारवाड़ पंच पंदरेमैं, अन्य २ स्थान भी है, मूल गच्छ खरतर, कोठारी संज्ञा अन्य गोत्रमैं भी है, दूगड़ कोठारी, रणधीरोत कोठारी आदि उनसें भाईपां नहीं है,

(धाड़ेवा, पटवा, टाटिया, कोठारी,)

गुजरात देसमैं विभंम पाटणनगरमैं ढेढूजी राजा राज्य करता था, डाभी वंशराजपूत चार पांच सहस्र अश्वपति, लेकिन पर द्रव्य धाड़ा कर लूटै, एकदा समय खरतर गछ़ नायक श्रीजिनवल्लभ सूरीश्वरजी उहां पधारे, श्रावक जननें महामहो त्सव पूर्वक नगरमैं पधराये, तब राजा ढेढूजीने, गुरूके ज्ञान क्रिया की महिमा श्रवण कर, दर्शनार्थ आया, गुरूनें धर्मोपदेश दिया, राजा उपदेश श्रवण कर, हर्षित हुआ, निरन्तर गुरूकी सेवा मैं आने लगा, यों आते जाते अत्यन्त धर्म की रुचि वृद्धि पाई, इस अवसर मैं ग्राम सामन्तका स्वामी ऊहड़ खीची राजपूत, उसने अपनी पुत्री व्याहनेकों, सीसोदिया राणा रणधीरकों, बहुत राजपूतोंके संग डोला भेजा, नवघोडा, एक हस्ती, पञ्चविंशतिसहस्र नगद मुद्रा, स्वर्ण, रूप्य, मई आभूषण रत्नादिक युक्त, इत्यादि द्रव्यसामग्रीका स्वरूप, ढेढूजी राजाने, श्रवण कर, गुरू भट्टारक,

श्रीजिनवल्लभसूरिजीके शमीप आकर, बिनती करी, है गुरू मेरी विजय होय ऐसा समय कथन करो, तब गुरूनें, मनमैं श्रवण करके कहा कि मध्यान्ह समय, अभिजित् नक्षत्र मैं, विजय मुहूर्त आताहै उस मैं जो कार्य किया जावै, वह सर्व सफल होता है ऐसा चामुण्डादेवी कहतीं है, ढेढूजो तथास्तु कह गुरू पद वन्दन कर सैन्यावल संग लेकर उक्त मुहूर्तमैं प्रयाण करा, उनखीचीके भेजे राजपूतों सैं सबल संग्राम हुआ, ढेढूजीके सौ सुभट मृत्यु प्राप्त हुए डेढसो शस्त्र आघातसें, जर्जरित हुए, खीचियोंके दोयसै सुभट यमलोक प्राप्त हुए, अढाइसो शस्त्रोंद्वारा जर जरित हुए, रण भूमिमैं, ढेढूजीने जय पाई, वदन कँवर कन्या और सर्व द्रव्यहस्ती अश्व आदि लेकर निज नगरमैं आए, प्रथम गुरू महाराजके शमीप जाकर, वन्दन, नमन, कर, स्तुति करी, परमपूज्य आपके सत्य वचनानुसार मैंनें जय प्राप्त करी, मुझे जो आप आज्ञा करें वह प्रमाण करूं, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र यह बदन कंवर राणीका जो पुत्र होय वह मेरा श्रावक होय, राजाने यंह गुरूके वचनकों प्रमाण करा, कालान्तरसें सम्बत् ११५१ वर्षे शालिवाहन शाके १०१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ, बुद्धवासरे, सूर्योदयात् गत घड़ी १५ पल २५ पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रे, सुसमये, राणी वदन कंवर पुत्रमजीजनत, दशोठन, करे पीछै, सोहड़ नाम स्थापना करी, तत् समये, श्री जिनवल्लभ सूरिः गुरू महाराजके चरणों उपर धरा, गुरूने वास चूर्ण क्षेपन करा, इसकी माता धाडेसे लाई गई, इसलिए गुरूने इसका गोत्र धाडेवाल स्थापन करा, श्री जिनवल्लभ सूरिःजी विहार कर देवलोक हुये, तदपीछै वल्लभसूरिः के पद ऊपर सम्बत् ११६९ श्री जिनदत्तसूरिः जी हुए-उन्होंने सोहड़को, विशेष प्रतिबोध दे श्रावक व्रत धारण कराया, और उपदेश दिया, पतीके मृत्युअनन्तर, मोहा ग्रस्तपने, जो स्त्री अग्नि मैं जलकर मरे, उस्को लौकिक शती कहते हैं, उसकी मानता, पितर. कुल देवी, इत्यादिक सेवा, भक्ति न करणा, देव श्री बीतराग, अष्टादश दोषण वर्जित, मुक्तिप्रद की भक्ति, गुरू खरतर गच्छके यति साधू, केवली कथित धर्म अर्थ है, अन्य सब अनर्थ रूप है, ऐसाही सम्यक्त्व युक्त व्रत जानकर, सोहड़ने

आत्मसाक्षी ग्रहण करा, परम जिनधर्मी हुआ, तदनन्तर जूनागढ़के नवलखे घूंघल साहकी पूत्री चन्द्र कुंवरसें ब्याह किया, उसका नाम सामरे मैं सज-नादे प्रसिद्ध हुआ, उससें ४ पुत्र उत्पन्न हुए, सारंग १ सगता २ सार्दूल ३ शिवराज ४, इन्होंका परिवार क्रमसैं वृद्धि पाया कारणसें शाखा भिन्न २ हुई इति * मूलगच्छ खरतर.

(गोठी गोत्र उत्पत्ति)

मेघा नामका सार्थ वाह जिसके पांच सय वृषभों ऊपर नाना वस्तु किरि-याणेका भार वहता है, कई मनुष्य सेवक है, स्थान २ आडत है, एक समय इस प्रकार स्वरूप बणा, विक्रम शताब्दी ११९३ मैं गुजरात देश अणहिलपुर पत्तनमैं एक महा द्रव्य पात्र राज्य माननीय यवन है उसके गृह भूमिके मध्य पार्श्व जिनेश्वरकी प्रतिमा है, उस पार्श्वप्रभूका अधिष्टायक, पार्श्व यक्षनें उस यवनको स्वप्न मैं कहा तेरे गृह भूमिके मध्य मैं, पार्श्व जिनेन्द्रकी प्रतिमा है, उसको तूं भूमिमध्यसें निकाल कर, मेघा नाम सार्थवाहको देदे, और उस सार्थ वाहसें पांच सय मुद्रा तूनें ले लेना, वह कल प्रभात समय तेरे गृहद्वार सन्मुख वस्तु किरियाणेकी बालध लेकर निकलेगा, उसके मस्तक पर कुंकुम तिलक उपर अक्षत लगे हुए होंगे, इस चिन्हसें पहिचान लेना, यक्षराज हरा अश्वहरा पलाण (काठी) उसपर हरे वस्त्र हरित रंग आप धारण करा हुआ, यवनको दर्शन दिया और कहा, यदि तूं मेरा कथन नहीं मंतव्य करेगा तो, तेरे पुत्र कलत्र परिवारको, तथा नगद द्रव्यकों, हस्ती अश्वादि सर्व सम्पत्तिको, कुशल कल्याण नहीं होगा, ऐसा स्वप्नमैं स्वरूप देख, यवननिद्रासें जाग्रत हो, अपनी स्त्री बीबीसें स्वप्नका स्वरूप सर्व निवेदन करा, बीबी ऐसा वृत्तान्त श्रवण कर भयभीति हो अपने पतिसें कहने लगी हे प्राणनाथ शीघ्रतया उस वुत्तको भूमिमैंसे निकालो नहीं तो कोई अवश्य हानी होगी, ये कोई जिन्दोंका बादशाह है

* प्रथम छपी मुक्तावली मैं छापा गयां इतिहास वह एक जीर्णपत्र पर लिखा दूर करके यह इतिहास जोधपुरसें मेडतावाले ऋषभदासजी धाड़ेवालने ३ प्रमाण दे लिख भेजा इस लिए यह लिखा है.

या खुदाका भेजा प्रेसता है वह दर्शाव देकर तुम्हें कह गया है, तब वह यवननें रात्रिकों उसी समय उठके उक्त स्थानको खोदा, तब वह पार्श्व प्रभूकी मूर्ति प्रगट हुई, तब उस यवनकों पूर्ण विश्वास हो गया के जिसने मुझकों दर्शन देकर जो वार्त्ता कही थी वह वार्त्ता वैसी ही होगी, तब बीबी और यवन अपने बालबच्चों युक्त पार्श्व प्रतिमा सन्मुख ताजीम (विनय) सें हाथ जोड़ कहने लगा कि हे देव तूं क्रोधितमत होना हम तेरी बंदगी करने तेरे बंदे हैं, जो आज्ञा तेरी होगी वही करेंगे, गृहके द्वारा ऊपर जाके उस सार्थ वाहका मार्ग गवेषणा करनेको स्थित हुआ, इधर इस ही प्रकार उस यक्षनें मेघा सार्थ वाहकों स्वप्न मैं दर्शन देकर कहा अण हिलपत्तन मैं एक यवन तुझकों पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा देगा, और पांच सय मुद्रा तुझसें याचेगा, तूं शीघ्र उसको पांच सय मुद्रा देकर पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा ले लेना, उसकी पूजा अष्ट विधीसें तूं निरन्तर प्रभात करना मध्यान्ह पुष्पादिसें अंग रचना संध्याको आरती धूपोत् क्षेपन की करना, तुझें इहभव, परभव, उभय लोकमैं लाभप्रद होगा, ऐसा कह अन्तर ध्यान हुआ, प्रभात समय उठ नित्य करतव्य स्नान तिलकादि कर प्रयाण करा सूर्योदय समय अणहिल पत्तन प्राप्त हुआ, देवकथित चिन्हों द्वारा पहिचान कर यवननें पार्श्व प्रतिमा अर्पण करी पांच सयमुद्रा याचनेसें सार्थ वाहनें यवनको दिये बडे विनयसें पूजा द्रव्यभाव करता स्वव्यापारमैं महान् लाभ पार्श्वयक्षकी सहायतासें उपार्जन करता क्रमसें मेघा सार्थ वाह पारकर जो देश गोढवाड और पाली मारवाड के शमीपस्थ देश उहां जाकर प्राप्त हुआ, पार्श्व जिन प्रतिमाका चमत्कार, मनो वाञ्छित पूरक प्रभावसें, यात्राके अर्थ धर्मी जन आने लगे, ज्ञाता अङ्ग, राय प्रश्नी, जीवाभिगम सूत्रोक्त विधीसें सतरह भेदादिक द्रव्य भाव युक्त पूजा करने लगे, क्रमसें सार्थ बाहने स्थल भूमिमैं प्रयाण किया जब १२ कोस आया अकस्मात् जिन प्रतिमाका वाहन स्थम्भित होगया पदमात्र चले नहीं, ये स्वरूप देख सार्थ वाह चिन्तातुरपनें निद्रा प्राप्त हुआ तत्काल यक्ष राज आकर स्वप्नमैं कहता है कि हे सार्थेश चिन्ता मत कर,

ये प्रतिमा यहांसे, स्थल देशमैं नहीं गमन करेगी, कारण इस देशके वास्तव्य, ग्रामीण, निर्विवेका मरु स्थल्या, अर्थात् निर्विवेकी (विचार शून्य) मनुष्य ग्रामोंके वास्तव्य, प्राय विद्याहीनपनेमैं हैं, बूझ्झ बुजाकडकी आज्ञा माननेवाले हैं, जलरहित, कंटकदेश है, इस लिए तूं, यहां पर पार्श्व प्रभूका, भुवन करा, जहां अक्षतके स्वस्तिक पर, नगद मुद्रा तूं देखे, उस स्थल मैं अगणित द्रव्य निकलेगा, और जहां हरा नारेल तूं देखे जल भरा, उहां मीठे जलका कूप निकलेगा, जहां गीला गोमय (गोवर) पड़ा तूं देखे, उहां खारे जलका कूप निकलेगा. अक्षतके स्वस्तिकपर जहां पुंगीफल (सुपारी) देखे उहां पाषाण (पत्थर) नाना प्रकारके जैसा चाहियेगा वैसा निकलेगा, शिला वटा, शिल्पशास्त्रका, पूर्णपारंगामी सिरोही नगरमैं रहता है, उसके गलत कुष्ठ रोग है, वह मिटा दूंगा, और उसको मन्दिर बनानेकों कहदूंगा, उस्को आमंत्रण करना, इत्यादि कहकर अदृश्य हुआ, सार्थ वाह हर्षित हुआ, उक्त द्रव्यबलसें प्रथम दो कूप कराये तत्पश्चात् सिलावटेको बुलाया, पार्श्व भुवन कई वर्षोंसैं चार मंडप, खंभ २ पर, नाटक करती, वाजित्र बजाती, पुतलियां, एवं प्रशंसनीय कोरणीयुक्त, शिखरबद्ध, भुवन निष्पादन करा, कुंकुम पत्रिका भेज २ श्रीसंघको एकत्रित करा, सवालक्ष देशमैं विचरते हुए, खरतर गण नायक, श्रीजिनदत्त सूरिःजीको, प्रतिष्ठाके लिए बिनती करी, गुरू ऐसा शुभ लग्नमैं, चैत्यप्रतिष्ठा कर, पार्श्व प्रभूकूं बिराजमान कर, वासचूर्ण मंत्राभिषेक करा मंगल जय शब्द हुआ, उस समय आकाशमैं देव दुदुंभिका निनाद, करके साढी बारह कोटि सोनइये देवतोंने बर्षा करी और कहा, ये सर्ववर्षित द्रव्य, संघपति, मेघाके लिये दिया गया है, ऐसा चमत्कार, श्रीजिनदत्त सूरीःजीका, प्रत्यक्ष देख, मेघा सार्थ वाह सम्यक्त युक्त बारह व्रत, दादासाहिबके, समक्ष धारण कर, खरतर श्रावक हुआ, मेघा पुत्र गौडी हुआ, इसने भी सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत धारण करा, गुजरात, गोढ़वाड़के श्रावकोंने पार्श्व प्रतिमा पूजक समझ गोठी[1] कहना शूरू करा,

---

१ संस्कृतमें, महाधनवंत, नगरमें मुख्य, राजा प्रजाका हितचिंतक, बुद्धिवानको गोष्टी कहते हैं,

गुजरात देशमैं देव पुजारीकों वर्तमानमैं गोठी कहा करते हैं, गोडीजी समाधि मरणकर मरयक्ष हुआ, अवधि ज्ञानसें पूर्वजन्म देख उस पार्श्व प्रतिमाकी महिमा विस्तृत करके पृथ्वीतलमैं रखकर मनुष्योंको स्वप्न देकर, मूर्तिको प्रकटाने लगा, बारह वर्षोंसें उसके नामसें, गवड़ी पार्श्वनाथ, नाम विस्तार पाया, आखरी विठूरे ग्राम प्रगटे, तद्पीछै दर्शन अद्यावधि मूर्तिनें नहिं दिया, गोड़ीके शन्तान, गोठीनामसें प्रसिद्ध हुए, मूल गच्छ खरतर,

(अथ खीमसरा गोत्रकी उत्पत्ति)

मरुधर देश मैं बालेचा चौहाण राजपूत खीमजी नामका उसनें प्रथम ग्रामका नाम परा वर्त्तन कर, खीमसर नाम प्रसिद्ध करा, एक दिवस इन्होंके शत्रु राजपूत भाटी इन्होंकी गऊ ऊँठ प्रमुख द्रव्य लेकर पलायन हुए (भगे) खीमजी राज पूतोंके संग उस धनको लाने निकले, शत्रु प्रबल दलने इन्होंके, बलको, छिन्न भिन्न कर डाला, चिन्ता ग्रस्त हो, पीछै पुनः बल लेने चले, इतने मैं खरतर गच्छाचार्य्य जिनेश्वर सूरिःके शिष्य साधुओं सहित सन्मुख मिले, प्रतापी गुरुत्व पन देख बिनती करी, हे पूज्य आपपर दुःख भञ्जन हो, पर द्रव्य हरण कर ले जा रहे हैं, कुछ प्रतीकार करो, गुरूने कहा, यदि तुम निरपराधी जीवोंके हननेका, मद्य, मांस, और रात्रि भोजनका त्याग करो तो, गुरुदत्त प्रतीकार है, स्वार्थ सिध्यर्थ खीमजी सहित सर्व राजपूतोंने, ४ नियम धारण करे, गुरूने शत्रुवशी करन, अमोघ विधि नमस्कार मंत्रके, ध्यानकी कथना करी खीमजी स्मरन करने लगा उस मंत्रके अमोघ प्रभावसें शत्रुओंके मनोगत पर्यायपलटे सन्मुख आकर सर्व द्रव्य देकर क्षमा याची, ये स्वरूप देख खीमजी आदि राजपूत साश्चर्य हो, जैनधर्म धारण करा, इन्होंके तीन पुस्तानोंका व्याह सम्बन्ध राजपूतों मैं होता रहा, सगे राजपूत उपहास्य, व्याह आदिमैं करते रहै, शस्त्र क्यों धारण करा है, तकड़ी (तराजू) लो, ये प्रत्युत्तर यथार्थ देते, अपराधियोंको दण्ड देते, इन्होंके मन मैं व्याहादिकों मैं, मद्यपान, मांस भक्षणादि देखकर, भीमजी, ऐसी चिन्ता निवृत्त्यर्थ उपाय विचारते थे, इतने मैं जंगम सुर तरु दादा श्रीजिन दत्तसूरिः खीम-

सर पधारे, भीमजी वन्दन करनार्थ, सपरिवार युक्त गये, गुरूने धर्मोपदेश दिया, अवसर पाकर निज दुःख कथन करा, दादा साहिबनें सभा समक्ष निरवद्य भाषण करा, साधर्मी सगपण समो, सगपन अवरन कोय, भक्ति करो साधर्मकी, समकित निरमल होय ? तब ओसवाल श्रावक इन्होंके पुत्र परिवारकों अपनी जाति मैं मिलाये, इन्होंने व्यापार प्रारम्भ किया, खीमसर मैं होनेसें खीमसरा जातिका, नाम प्रसिद्ध हुआ, भीमजीदादा गुरुदेवके शमीप जाकर, अपने सपरिवार (कुटुम्ब) सहित व्रत नियम कर, नव तत्वके ज्ञाता हुए मूलगच्छ खरतर ।

(समंदरिया गोत्र)

पारकर देश पद्मावती नगरके शमीपस्थ ग्राममैं सोढाराजपूत, समंदसी, जिस्के ८ पुत्र थे, देवसी १ रायसी २ खेतसी ३ धन्नो ४ तेजमाल ५ हरि ६ भोमो ७ करण ८ लेकिन उनके पास द्रव्य नहीं, कृषाण कर्मसें वृत्ति करे, धन्ना पोर वालसें ऋण लेवे, धान्यकी निष्पत्ति होनेसें, वृद्धि सहित द्रव्य दे देवे, कान्तार (काल गिरनेसें समंदसीको अत्यन्त कष्ट आपदा भोगनी हो, एक समय समंदसीको विहार करते मुनिपती श्रीजिन वल्लभ सूरिः मार्ग मैं मिले, भव्य परणति होनेसें, वन्दना करी, गुरूने धर्म लाभ दिया, समंदसीने पूछा, हे मुनिवर, मेरा दुःख कब निवर्त्तन होगा, गुरूने कहा, प्राणी मात्र शुभ कृत्यसें सुख और पाप कृत्यसें दुःख भोगता है, यदि तूं सुखाभिलाषी है तो धर्म कर वह अहिंसा मूल धर्म है अहिंसाका स्वरूप निवेदन करा, और नित्य प्रति उभय काल एकान्त स्थलमैं बैठकर सामायक सम भावसें करना, शत्रु ऊपर शत्रुता नहीं, मित्र ऊपर मित्र भाव नहीं राग द्वेषकों त्याग समाधिमैं लीन मन करनेसें आत्म गुणसामायक उदय होता है, इस प्रकार धर्मके रहस्यकों श्रवण कर, समंदसी, गृहस्थ धर्मानुकूल दोनों व्रत गुरूसें ग्रहण करे, उभय काल सामायक करता है प्राणिमात्रकी दया करता है, गुरू विहार कर गये, ये स्वरूप देख साधर्मी जानकर, धन्ना पोरवाल, द्रव्यसें पूर्ण सहायता देने लगा, और ८ पुत्रोंको विद्याभ्यास कराने लगा, भोजन वस्त्रसें न्यूनता नहीं रक्खी, तब समंदसी विचारने लगा अहो धर्मका महत्व-

पना निरुद्यम पनसें भी, भोजन छादन प्राप्त होने लगा, विक्रम सम्वत् ११७५ मैं श्रीजिन दत्त सूरिनें पद्मावती नगरको चरण रजसे, पावन करा, समंदसी धन्ना पोर बालके संग, गुरूकी वन्दना करने गया, गुरूनें धर्मोपदेश दिया, तदन्तर समंदसीनें गुरूसें विनती करी, है पूज्य, गुरू दत्त मैं व्रतसें इस भव मैं सुखी हुआ हूं, पर भव अवश्य सुखा कर होगा, ये आठ पुत्र आपके हैं, गुरूनें वासचूर्ण क्षेपन करा खरतर श्रावक बनाये, धर्मका रहस्य समझाया, तदन्तरधन्ना पोरवालनें, इन्होंकों, भागीदार बनाके, गुजरातमैं व्यापार कराया, समुद्रके मार्ग गमन कर, मोक्तिक, विद्रुम, अम्बर, आदि व्यापारसें, आठो भ्रातानें, कोटान मुद्रा अर्जन करी, गुरू श्रीजिन दत्त सूरिःकी कृपासें; ओसवाल ज्ञातिमैं, मिले, संमदसीके शन्तान, समुद्रके व्यापारी होनेसे, लोक समंदरिया बोहरा कहने लगे, मूल गच्छ खरतर,

(झांवक झांमड झंबक)

राठोड़ वंशी रावचूंडेजीके बेटे पोते १४ जिन्होंने १४ राज्य अलग २ स्थापन करा जिसमेंसें मालव देशमैं रत्न ललाम (रतलाम) नग्रके आसपास २५ । ३० कोशके दूरीपर जो अब झबूआ नगर वसता है इस नगरीके राजा झंबदेके ४ पुत्र सुखसें राज्य करतेथे. सम्बत् १५७५ मैं श्रीजिनभद्र सूरिः खरतर गच्छी विचरते २ उहां पधारे तब राजाने बडे महोत्सवसें नगर मैं पधराये क्यों के रावसीहाजी आसथानजीने श्रीजिनदत्त सूरिःजीकी सेवा करी तब गुरू बोले हे राजेन्द्र क्या इच्छा है आसथानजी अरज करने लगे गुरू राज्य भ्रष्ट हो गया सो किसी तरह राज्य मिले ऐसी कृपा करो तब गुरूनें कहा जो तुम्हारी शन्तान मेरे शन्तानोंको सदाके लिए गुरू मानते रहैं तो मैं आगे होनेवाली बातका निमित्त भाषण करता हूं आसथानजी बोले जहांतक पृथ्वी और धू अचल रहैगा उहांतक हम राठौडोंके गुरू खरतर गच्छ रहेंगे और कभी विमुख नहीं होंगे ये उपकार कभी नहीं भूलेंगे सूर्यकी साक्षी परमेश्वर साक्षी हैं इत्यादि अनेक वचन प्रतिज्ञा अन्तःकरणसें करी तब गुरूनें शासन देवीकी आराधना करी और कहा तुम्हारे कुल मैं चूंडा नाम पुत्र होगा उसके १४

शान्तान राज्यपती राजाधिराज पृथ्वीपती होंयगे और आजसें तुम्हारी कला और तेज प्रताप दिन २ बढ़ते रहेगा, तबसें राठौड, राज्य, धन, परिवारसें दिन २ बढ़तेही गये, ख्यात राठौडों मैं ऐसा लिखा है, (दोहा) गुरू खरतर प्रोहित सिवड़, रोहड़ियो वारट्ट । कुलको मंगत दे दड़ो, राठौंड़ां कुल भट्ट ॥ १ ॥ इस वास्ते झंबदे अपने कुलक्रमके उपकारी गुरूकी भक्ति मैं तत्पर हुआ, इसवक्त दिल्लीके बादशाह यवनने झंबदे पर हुक्म भेजा के, तुम बडे शूर वीर मच्छराल हो, सो घाटेका मालिक, भींया टांटिया भील, न मेरा हुक्म मानता है, और गुजरात देश मैं, चोरी कराता है राहगीरोंको लूटता है. बंध बांध ले जाता है इसकों पकड़के लावोगे तो, तुम्हारी खातिरी दरबार मैं होगी, कुरब वढ़ाकर, पट्टा दिया जायगा, राजा उदास हो, गुरूके शमीप गया, चरण कमल वन्दन कर कहने लगा हे गुरू आप गुरुओंके आशीर्वादसें, ये राज्य पाया, आपके बडे गुरू लोकोंने हमारे बडेरोंके, कईयेक बेर कष्ट आपदा दूर किया है अबकी लाज मर जाद जो गुरू रख दो तो बृद्ध पण सफल हो जाय, और आपके सेवकोंकी अखियात कीर्त्ति राज्य रह जाय, तब आचार्य्य बोले, हे राजेन्द्र जो तुम हिंसा धर्म त्यागके अहिंसा रूप अणुव्रत सम्यक्त्व युक्त जैनधर्म धारोतो सब हो जावे एक पुत्रकों राज्य देणा बाकी महाजन बनो तब गुरूके बचन सुण तहत्त किया तब गुरूनें कहा कल प्रयत्न कर दूंगा काला भैरूं मंडोवराकों आराधन करा उसके वचन लेकर प्रभात समय विजय पताका जंत्रवणा कर राजाको दिया राजाने विचारा जो मैं भुजापर बांधूगा तो न मालुम युद्धमैं खुल पड़े इस लिए उसने अपने बड़े पुत्रकी जांघ मैं चीरकर जंत्र डालकर टांके लगा दिये और गुरूका आशीर्वाद लेकर चढ़ा और उन दोनों भाइयोंको पकड़के बादशाहके सुपुर्द किया बादशाहने वह सब भीलोंका इलाका झबुआ नगरके तांबे दिया सो अभी विद्यमान है राजाने अपने बडे पुत्रकों राज्य तिलक

---

१ जयचंद साथे यति हाड़ गाले हे माले, सेतरामरी सरबग ईधरे पाछीवाले रायपालरायनें दीनपति ग्रह्यो देखायो, कन ऊपर कर कृपा असंखदल अलग उडायो, सूरनें त्रियामेली सरस किया इसावड २ कजां, खरतरे गच्छ हुआ इसाकदेनविर चोकमधजां ।

दिया और कहा हे पुत्र ये राज्य तुम्हारा नहीं समझणा सदा मदके लिए खरतर गुरूसे कभी ऋण मुक्त नहीं हो सकोगे, अभी भी वो राजा लोक उसी मुजब पिताके वचन निर्बाह करते हैं, राजा तीन पुत्रोंके परिवार सहित जैन महाजन हुआ, जिन्होंके ये तीन गोत्र गुरूनें, स्थापन करे, झांवक १ झांमड़ २ झंवक ३ ये तीनों झबुआ नगर मैं हुए,

(वांठिया, लालाणी, ब्रम्हेचा, हरखावत, साह मल्लावत, गोत्र)

विक्रम सम्बत् ११६७ मैं पमार राजपूत लालसिंहजी रणत भंवरके गढ़के राजाको श्रीजिनवल्लभ सूरिःने इस प्रकार उपदेश दिया. लालसिंहजीके पुत्र ब्रह्मदेवके जलंधरका महा भयंकर रोग उत्पन्न हुआ, उस वखत लालसिंहजीने, गुरूसें बिनती करी है गुरू, ऐसी कोई चिकित्सा करो, जिससें मेरा पुत्र आरोग्य हो जाय, तब वल्लभसूरिःने कहा, जो तुम, जैन धर्म धारण करो और मेरे श्रावक बनो तो, पुत्र अच्छा हो सकता है, तब लालसिंहजीने कबूल करा तब गुरूने, चामुण्डा देवीसें उसको आराम करवाया, तब लालसिंहजीनें, सात पुत्रों समेत जैनधर्म धारण करा, उसका बडा पुत्र बडा बंठयोद्धार था, उसकी शन्तान वंठ कहलाए, ब्रह्मदेवके ब्रह्मेचा कहलाये, लालसिंहजीके छोटे पुत्रके लालाणी, साहकी किताब उदयसिंह पुत्रकों भरु अच्छके नबाबनें, इनायत की, वह साह कहलाये मझे पुत्रकी शन्तान मल्लावत कहलाये, हरख चन्दकी शन्तान हरखावत कहलाये, वांठिये चिमनसिंह सम्बत् १५०० से मैं हुमायू बादशाहकी फोजमैं देण लेण करणे लगे, गुजरातके हमलेमैं, सोनेके बरतन फोजके लोकोंने, पीतलके भरोसे बेचा, इससें चिमनसिंह वांठियेके पास वे गिनतीका धन हो गया, इससे बहुत जगह व्यापार हो गया, चिमन सिंहने क्रोड़ो रुपये लगा कर बहुत जिन मन्दिरोंका उद्धार कराया, सत्रुंजय तीर्थकी यात्रा जाते गांम २ प्रति आदमी प्रति, एक २ अकब्बरी मोहर, साधर्मियोंकों वांटी, पहले वंठ कहलातेथे

१ मेड़ता नगरमें बादसाह खाजेकी दरगाह जाते आया द्रव्यकी आवश्यक्ता होनेसें हरखावतकों वुला ५२ सिक्केके ६ लक्ष रुपया मांगे चिन्ताग्रस्त आनंदघनजी मुनिः पास गया मुनिःने योगसिद्धिसे ५२ सिक्के पूर्ण करे बादसाहने हरखावतको साह पद दिया।

मोहरें वांटणेसें वांठिया २ कहलाये इन्होंका परिवार जादह बीकानेर इलाके मैं वसते हैं. मूलगच्छ खरतर,

चोर बेड़िया भटनेरा चोधरी सांव सुखा, मोलछा, पारख, वुचा, गुल गुलिया, गूगलिया गदहिया राम पुरिया साख ९०

पूरबदेश, नगर चंदेरी मैं, खर हत्थ सिंह राठोड़ राजा राज्य करता था जिस्के ४ पुत्र थे, अम्बदेव, नींबदेव २ भैंसा ३ आसपाल ४ सम्बत् विक्रम ११९२ मैं मं, श्रीजिन दत्तसूरिः खरतर गच्छा चार्य्य, युग प्रधान, चंदेरी परगने मैं पधारे, उस वखत, राठ लोकोंकी फोज, संग में लिये हुए यवन लोक काबली, मुल्कों, लूटणा शुरू करा, बहुत अगणित द्रव्य लेकर जाने लगे, तब राजा खरहत्थकों, ये खबर हुई, तब दुष्टोंको सजा देणेके लिए, राजा, ४ पुत्रोंकों संग लेकर सेन्याके संग युद्ध करने चला, युद्ध मैं सब धन राजाके सुभटोंने यवनोंसे छीन लिया, मगर युद्ध मैं राजाके पुत्र घायल हो गये, राजा उन्होंको पालखी मैं डालके पीछाफिरा, शस्त्र वैद्योंने जबाब दे दिया कि, ये पुत्र किसी तरह नहीं बच सकते, राजा सुणतेही मूर्छा खाकर नीचे गिरा, तब लोकोंने, ठंढा पाणी, ठंढी हवा, करके, सचेत करा, विलापात करणे लगा बेटे अचेत पड़े हैं इतने मैं मुनिगणसें सेव्यमान श्रीजिन दत्तसूरिः विहार करते चले आये लोकोंने राजासें अरज करी हे पृथ्वीपती शान्त दांत जितेंद्री अनेक देवता है हुक्म मैं जिनोके ५२ वीर ६४ योगिनीयोंको वस करता पांच पीरोंको ताबेदार बनानेवाले, बिजलीकों पात्रके नीचे थामणेवाले, जंगम सुरुतरु, आपके भाग्योदयसें वो पधार रहे हैं, राजा ये सुणतेही, सामने जाके चरणों मैं गिरपड़ा और रोणे लगा, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र क्या दुःख है, तब चारों पुत्र मृतकवत् पालखी मैं जो पड़े थे. सुभटोंने लाकर हाजिर करे, गुरूने कहा जो तुम जैनधर्मी बनो, मेरी आज्ञा मानो तो, चारों अभी अक्षत अंग हो जाते हैं, राजा कहता है, हे परम गुरूजी, जो मेरी शन्तान और मैं आपसे और आपकी शन्तानोंसे, वे मुख हो कभी सुख नहीं पावेंगें आपकी आज्ञा खरहत्थ की सब शन्तानकों मंतव्य है इत्यादि जब प्रतिज्ञा कर चुका तब गुरूनें जो गणियोंको याद फरमाया

गुरूकी आज्ञासें अमृत छिड़का तत्काल अक्षत अंग चारों बीर योद्धार खड़े हुए गुरूके चरणकी पूजा करी सब राजपूत अचरजके भरे जैनधर्म अंगीकार करा उन्होंके न्यारे २ गोत्र स्थापन करे उन्होंके नाम समुच्चय लिखेंगे राजा खरहत्थके बडे पुत्र अम्बदेवनें चोरोंको पकड़ा वेड़ियें डाली सो चोर वेड़ियें अथवा चोरोंसें जाय भिड़े इस वास्ते चोर भिड़िये कह लाये लोक चोरड़िये कहा करते हैं चोर वेडियोंमेंसे बहोत साखें निकली १ तेजाणी २ धन्नाणी ३ पोपाणी ४ मोलाणी ५ गल्लाणी ६ देवसयाणी ७ नाणी ८ श्रवणी ९ सद्दाणी १० कक्कड़ ११ मक्कड़ १२ भक्कड़ १३ लुटंकण १४ संसारा १५ कोबेरा १६ भट्टारकिया १७ पीतलिया १८ सोनी १९ फलेदिया २० रामपुरिया २१ सीपाणी, दूसरे नींब देवकी शन्तान वाले, भटनेरा चौधरी, कह लाए, इन्होंने भटनेरके लोकोंकी, चौधरायत, भटनेरके राजाके कहणेसें करी, तबसें भटनेरा चौधरी कहलाये, तीसरे भैंसा शाहके ५ स्त्रियां थी इन्होंने अपना रहना, मालवदेश, मांडवगढ़ मैं करा था इन्होंके ५ स्त्रियोंसे ५ पुत्र चौथा पुत्र कुंवरजी इन्होंकी शन्तानवाले सांवण सूका कहलाए सो इस तरह कुंवरजी बहुत ज्योतिष निमित्त शकुन शास्त्र पढ़े थे जो बात कहते सो प्रायः मिलही जाती मांडव गढ़सें चित्तोड़के राणाजीनें कुंवरजीको बुलाये, परिक्षा करणेकों पूछा, कहो कुमर, सावण भादवा कैसें होगा, तब कुंवरजी बोले सावण सूका, और भादवा हरा होगा, राणेजीने वहां ही रक्खा अन्तको जैसा कहा, वैसा ही हुआ, तब राणेजीनें कहा, सच्च तुम्हारा कहणा, सावण सूका गया, तबसें लोक, सावण सूका २ कहने लगे, इन्होंके वंश मैं गुलराजजी गुड़के गुल गुले वना २ कर छोकरोंको खिलाया करते, इसवास्ते छोकरोंने गुल गुलासेठ नामधरा कुंवरजीके वंशवाले, जैसलमेरसें गूगलका व्यापार पालीनग्र मैं करते, इससें लोक गूगलिया कहने लगे, दूसरे वेटे २ गेलोजी इन्होंके पुत्र वच्छराजजीकों मांडव गढ़के लोक गेल वछा कहते २ लोकोंमें गोलछा कहलाने लगे, तीसरे वेटे वुच्चा साह इनकी शन्तान वुच्चा कहलाये ४ वेटा पासूजी आहड़ नगर मैं राजा चन्द्रसेनने इन्होंको सरकारी जवाराहत खरीदने पर झंवरी कायम

किया एकदिन एक परदेशी श्रीमाल झंवरी राजाके पास हीरा वेचनेको लाया राजाको दिखलाया राजाने शहरके सब झंवरियोंकों दिखलाया झंवरियोंने उस हीरेकी बडी तारीफ करी, जिसके पीछै राजानें अपणे झंवरी पासूजीको हीरा दिखलाया पासूजी बोले यद्यपि हीरा बडा कीमती है परन्तु इसमैं एक ऐब है, तब राजाने पूछा वह कौनसी पासूजी बोले, जिसके घर मैं यह हीरा रहता है उसकी स्त्री मर जाती है, तब राजानें श्रीमाल झंवरीकों बुला कर पूछा, हमारे झंवरी पासूजी इस हीरे मैं ऐसी एब बतलाते हैं, उसने अपना कान पकड़ा, और कहने लगा मैंनें हजारों नांमी झंवरी देखे हैं, परन्तु पासूजीकी बड़ाई करणेकी जुबानको हिम्मत नहीं है, सच्च है, मैंने दो व्याह किए दोनों मरगई, तब इस हीरेको एब दार समझ बेचणे आया हूं, पीछे तीसरा व्याह करूंगा, तब राजानें, सत्य पारख जांणके पारख पदवी, पासूजीकों, प्रदान करी, पासूजीकों लाख रुपया सालियाना देणा, उस दिनसें राजानें, कबूल करा, पासूजी उस हीरेकी लक्ष रुपया कीमत देकर श्रीऋषभ देव भगवानके मस्तक पर लगानेको तिलक वणाकर चढ़ा दिया, इनकी शन्तानवाले पारख कह लाए, पांचमा पुत्र सेनहत्थ लाडका नाम (गद्दासा) था, उसकी शन्तान, गद्दहिया कहलाई, खरहत्थजीके चौथे बेटे आसपालजी, इन्होंके आसाणी तथा ओस्तवाल दो लड़कोंसें गोत्र हुए।

(भैंसा शाहने गुजरातियोंकी लज्ज खुलाई)

भैंसा साहके पास, खरहस्थ राजानें, जो यवनोंसें, धन बे गिणतीका छीना था, वो ज्यादह, इन्होंकेही पास रहा, इन्होंकी माता लक्ष्मीबाई, सत्रुंजयकी यात्राकों बड़े महोत्सवसें चली, जगह २ रथ महोत्सव, संघकों भोजन, धर्मशाला, जीर्णोद्धार, याचकोंकों दान देते चली, पाटणनग्र पोंहचते धन पासमैं थोड़ा रहा, तब अपने गुमास्तोंको भेज वहांके बडे व्यापारी नामी चारोंकों बुलाया, उसमैं गद्दभसाह मुख्य था, तब उनोंसे लक्ष्मीबाईने कहा, हमैं क्रोड़सोनइये चाहिए हैं, सो हमारी हुण्डी मांडवगढकी लेकरके दो, तब व्यापारी बोले, तुम कौन हो, क्या जाति, किस जग्रह रहते हो, हम पिछानते नहीं, तब लक्ष्मीबाईने कहा, मेरा पुत्र कहीं छिपा नहीं है, भैसेंकी माता

हूं, ऐसा सुणकर गद्धासाह हंसकर बोला, भैंसा तो हमारे पखाल पाणीकी लाता है, ऐसी हसीकर चले गये, परन्तु देणा कबूल नहीं करा, तब मातानें सवार भैंसेसाहके पास भेजे, और सब समाचार लिख भेजे, तब भैंसासाह अगणित धन लेकर, पाटण पहुंचा, और गुमास्तोंको भेज, गुजरात देसमैं, जगह २ तेल खरीद करवा लिया, और पाटणमैं, उन व्यापारियोंसें, तेल मुद्दतपर, लेणेका वादा किया, लक्ष मोहरे देदी, अब पाटणके व्यापारीने गामोंमैं गुमास्ते भेजे, तेल खरीदणे, लेकिन कहीं तेल मिला नहीं, आखिर को तेल देणेका वादा, आ पहुँचा, अब पाटणके सब व्यापारी, इकट्ठे होकर लक्ष्मीबाईके, चरणोंमैं आ गिरे, और कहणे लगे, हे माता, हमारी लज्जा रक्खो, तब भैंसा साह बोला, राजसभामैं चलकर तुम सब लोग, लंग खोल दो, और आइन्दे कभी दुलंगी धोती नहीं बांधो तो, तेल लेणेकी माफी दूंगा, उन्होंने वैसाही करा, तबसें गुजरातवाले दो लंगा नहीं रखते हैं बाकी गांमवालोंसें, तैल लेलेकर जमीनपर गिराणा शुरू कराया, तेलकी नदी ज्यो प्रवाह चलाया, आखिर गुजरातके व्यापारियोंनें हाथ जोड़, माफी मांगी, तब निशाणीके लिए सबोंकी लङ्ग खुलादी, और भैंसेको पाडा कहणा कबूल कराया भैंसेसाहके कहणेसे अपणे नामका सिक्कासे लहत्थ (गद्दासाह) ने छमासे सोनेका गदियाणा बनाकर दीन हीन कंगालोंको बांटा, तब पाटणके राजाने भैंसासाहकों बुलाकर मान प्रतिष्ठा बढाकर रूपारेल विरुद दिया, याने रूपारेल शकुनचिड़ी प्रशन्न होकर, जब शकुन देती है तो, नवनिद्ध सिद्ध कर देती है, सम्वत् १६२७ मैं सत्रुंजय पर श्रीजिनचन्द्रसूरिःखरतराचार्यके उपदेशसे, १८ गोत्र और भाई होकर, गछ खरतरसे प्रतिबोध पाये, जिनखरहत्थ राठोड़की साखा, इतनी फैली, सगे भाइयोंका कुछ क्षात तो पहिले लिखा है, बाकी कानफरेंसकी रिपोर्टमैं और भी गोत्र गोलछा पारखोंके सगे भाई लिखे हैं सावसुखा १ गोलछा २ पारख ३ पारखोंसे आसाणी ४ पैतीसा ५ चोरवेडिया ६ वुच्चा ७ चम्म ८ नावरिया ९ गद्दाहिया १० फांकरिया ११ कुंभटिया १२ सियाल १३ सचोपा १४ साहिल १५ घंटेलिया १६ काकड़ा १७ सीघड़ १८ संखवालेचा १९ कुरकचिपा २०

साव सुखोंसे गुलगुलिया २१ गूगलिया २२ भटनेरा २३ चौधरी २४ चोरडियोंमेंसें २४ फेर निकले ये सब गोत्र राठोड़ खरहत्थके ४८ गोत्र सगे भाई गच्छमूल खरतर ९० मां ओस्तवाल पारखोंसे ये सब जैन कानफरेंसकी रिपोर्टसें मिलाके श्रीजीके कारखानेसे मिलाके लिखे हैं १८ तीर्थ भाई कांकरिया १ सेल्होत २ भटाकिया ३ बूबकिया ४ खूतड़ा ५ नारेलिया ६ सिन्दूरिया ७ मूंधड़ा ८ नींवाणिया ९ बावेल १० काकड़ा ११ फोकटिया १२ इत्यादि इन सबोंका मूलगच्छ खरतर है।

(भणसाली २ चंडालिया भूरा वद्धाणी)

लोद्रवपुर पट्टण जो कि जेसल्मेरसें ९ कोस है *उहांका राजा यदुवंशी* धीरांजी, भाटी उनके पुत्र सगर, सगरके श्रीधर, राजधर दो पुत्र थे सगर युवराज पदमैं था सम्बत् ११९६ युगप्रधान श्रीजिन दत्तसूरिःलोद्रव पत्तन पास विक्रमपुर पत्तनमैं थे सगर युगराजकी माताकों ब्रह्म राक्षस लगा हुआ था, सो अगम बात कहदेती, वेद पढ़ती, सन्ध्या तर्पण करती, पवित्रता मैं मग्न कई दिनों भोजन नहीं करती, और जब खाणे बैठती तो मण अंदाजके खा जाती तब राजाने अनेक मंत्रवादियोंको बुलाया मगर वो मंत्र मंत्रवादीका विगर पढ़े राणी आप पढ़ देती, आखिर राजानें जिनदत्तसूरिः जीकी प्रशंसा सुनी तब राजा आप सन्मुख गया, और लोद्रवपुर मैं गुरूकों लाया गुरूकों देखते ही ब्रह्म राक्षस बोला, हे प्रभू आपके सन्मुख अब मैं लाचार हूं, कारण आपकी योग विद्याको मैं नहीं पहुंचता आपके सब देवता दास हैं, गुरूनें कहा, आज पीछै धीराके कुटुम्बको कभी सताणा मत, तब ब्रह्म राक्षस बोला है गुरू इस राजाका मैं कथा व्यास था, एक दिन ऐसी हुई के इस राजानें देवीकी स्तुति करी, और मैंने विष्णु सतो गुणी रामचन्द्रकी प्रशंसा करी, राजानें मानी नहीं, तब मैंने कहा है राजा मदिरा मांस चढ़ाणा, जगदम्बा नाम धराणेवाली, अपने पुत्रवत् भैंसे बकरेकों मारके भोग लगाणेवाली, जगतकी माता

१ धीराजी ओसवाल हो गये इस लिये भाटी राजाके कुर्शी नामेमें इनोंका नाम नहीं लिखा गया है।

कैसै हो सकती है, इतना सुणतेही राजानें क्रोधातुर होकर मुझे मरवा डाला, मैं दयाके परणामसें, मरकर, व्यन्तर निकायमैं ब्रम्ह राक्षस हुआ, पूर्व भवके वैरसे मैं, इसके कुलका नास कर डालता, लेकिन आप समर्थ योगी हो, ऐसा कह कर राजा धीरकों कहणे लगा, अरे दुष्ट तूं, देवीकों, जीवोंको मारकर मदिरा मांस चढाता, और खाता हुआ नरक जायगा, अगर स्वर्गमोक्षकी चाह रखता है तो, श्री जिन दत्त सूरिःधर्मकी जहाज है, इन्होंका कहा धर्म धारण कर, सो तेरे कुटुम्बका दोनों भव कल्याण होगा, ऐसा कह कर, राजाके गढका मूल दर्वाजा उत्तर था, सो पूर्वमैं स्थापन कर, गुरूसे सम्यक्त ग्रहण कर, ब्रह्मराक्षसनें राणीका अङ्ग छोड दिया, अपनी निकायमैं चला गया, ऐसा चमत्कार देख राजाने अपने सहकुटुम्ब जैन धर्म अङ्गीकार करा, भंडसालमैं वासक्षेप किया इस वास्ते भणसाली गोत्र, गुरूने स्थापन करा, बद्धाजी भणसालीकी शन्तान बद्धाणी कहलाये, थेरूशाह नामका भणसाली विक्रम सम्बत् सोलसयमैं हुआ, वो लोद्रवपुरमैं घीका रुजगार करता था, उसवक्त रूपसियां गांमकी स्त्रियें इसकों नित्य घी लाकर बेचा करती थी, एक दिन पिछली रातकों, बहुतसी स्त्रियां घीके घड़े ले, गांमसें निकली, इन्होंमैं एक स्त्री, अराई (इढांणी) भूलगई, रस्तेमैं उसनें एक हरीबेलकों मरोड़के, अराई वणाली, लोद्रवपुर पहुंची, इसके घड़ेका घी तोलते २ अन्त नहिं आया, तब थिरूने बिचारा, १५ सेरका घड़ा, इसमैं ३० सेर घी तो निकल चुका, और फिर भी इसमैं घी इतनाही भरा है, अग्रिम बुद्धि वाणियां इस न्यायसें वो अराई, उसने नीचेसें निकाल कर, दुकानके अन्दर फेंकदी सबोंका घी लेके, अराई बालीकों, दूणे दाम दिये, तब वो विचारणे लगी, आज थिरू भूल गया है, तब पीछे बोली अराई तो दे घड़ा कैसे ले जाऊं, इसने कोडा ला, जो जेसलमेरमैं वणता है वो निकालके उसकों दे दिया, तब वो स्त्री बहुतही खुशी होगई आजमैं तो रूपारेल लेके आइथी, वो सब चली गई अबथिरू साहनें जो अपने पास द्रव्य था, उसके नीचे, वो अराई धरी, जितना द्रव्य निकाले, उतनाही अन्दर, तब, श्री जिनसिंहसूरिः आचार्यसें ये सब बात कही गुरूनें कहा सुकृतार्थ संच, तब

थिरूनें धीर राजाका कराया हुआ सहस्त्र फणा पार्श्वनाथके मन्दिरका जिर्णोद्धार कराया, ज्ञान भण्डार कराया, इस तरह क्रोड़ों रुपये लगाये, नवरत्नोंके जिन बिंब भरवाये संघ भक्ति बहुत करी सम्बत् सोलासयवयासीमैं सत्रुंजयका संघ निकाला श्री जिनराजसूरिः प्रमुख कई आचार्य संगमैं थे, समय सुन्दर उपाध्यायनें इन्होंकेही संघमैं सत्रुंजय रास वणाया था, इस बंशवाले जेसलमेरमैं सुलतान चन्दजी कच्छावा बड़े अकलके पूरे सायर पुरुष होगये हैं, उहां भणसाली कछावा बजते हैं, जोधपुरमैं भणसाली सब जातके चौधरी हैं, बादसाह अकब्बरने थेरूसाहकों दिल्ली बुलाकर बड़ा कुरब बढाया, थेरू साहनें, नब हाथी, पांचसय घोड़े नजर किए, तब बादसाहनें, रायजादा की पदवी प्रदान करी, इन्होंकी शन्तानके राय भणसाली कहलाये, आगरेमैं बडा जिनमन्दिर थिरू साहनें कराया, सो अब भी विद्यमान है जोधपुरके भणसाली, नौ वर्षतक अपणे पुत्रोंकी, चोटी नहीं रखते हैं, दादा गुरूके दीक्षित चेले बणा देते हैं, बोरी दासोत भणसाली ब्याह भोजकोंसे कराते हैं, ब्राह्मणोंकों, हींजडोकों, ब्याहमैं नहीं बुलाते हैं

(भणसाली सोलंखी २)

आभूगढ़का सोलंखी राजा आभड़दे, (वह आभोर नाम कहाता है) इसके पुत्र जीता नही अनेक देवी देवता मनाये, लेकिन पुत्र नहीं जीता तब सम्बत् ११६८ मैं श्रीजिन बल्लभसूरिः महाराज, विचरते २ पधारे, तब राजानें, गुरूसें बिनती करी, हे गुरू महाराज, मेरे जो शन्तान होता है, वो मर जाता है, कोई यत्न करणा चाहिये, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, मृतवत्सा दोष मिट जाता है, तब राजा राणी दोनोंने कबूल करा गुरूमहाराजनें कहा, तेरे सातराणियोंके, अब सात पुत्र होंयगें, सो जीते रहैगे, राजा राणी दोनोंने उसी दिनसें गुरूसें, मंडसाल मैं वासक्षेप लिया, इस लिए भणसाली गोत्र थापन करा, सातोंके सात पुत्र हुआ, इन्होंकी आभूसाख प्रसिद्ध भई, इन भणसालियोंनें, जब अंबड़नामका अणहिल पत्तनका, और गच्छका श्रावक मुलतान सिंधदेशके नगरमैं जवाहरात खरीदने गया था, उस वक्त श्रीजिन दत्तसूरिः उहां पधारे, तब राजादीवान सेठ, सामंत,

सब लोक, सन्मुख आकर, वाजे गाजे बड़ी धूमसें, नगर मैं लाये, क्योंकि यहां गुरू महाराजनें, दीवानके लड़केकों, सांप काटे मृतकतुल्यको जिलाया था, इस लिए राजा प्रजा सब गुरू महाराजके, सेवक थे, उस वक्त ये महिमा वो गुजराती अम्बड़ देख कर, गच्छके द्वेषसें, ईर्ष्या अग्निसें दग्ध होगया, तब गुरूकों कहणे लगा, आपका चमत्कार और त्याग वैराग्य जब मैं सफल जाणूँगा, इस तरहके उच्छवसें, जो आप अणहिल पाटण मैं पधारे तो, तब गुरूनें उसके वचनसें इर्ष्या जाणके, जबाब दिया, हम पट्टण मैं इस तरहके उच्छवसें आवेंगे, उस वखत, तूं कर्मगतिसे निर्धन होकर, तेल लूंण वेचता, हमारे सन्मुख आवेगा, पीछै, कई अरसेके गुरू उहां पधारे उस समय पाटण मैं, श्रीजिन दत्तसूरिःके, तीनसय श्रावग वसतें थे, बड़ी धूम धाम उच्छवसें सामेला हुआ, अकस्मात् दलिद्र रूप, चींधड़, तेललूंण वेचणे, गामों मैं, जाता था, धन सब जाता रहा, ऐसा अम्बड़ सामने मिला, गुरूनैं, पहिचान कर कहा, हे अम्बड़, मुलतान मिले थे, पहिचानते हो, लज्जित होके, गुरूके चरणो मैं गिरा और मन मैं द्वेष लाया के, इन्होंके कहनेसें मैं निर्धन हो गया, मतना इन्होंकी महिमा, यहां बढ़े, तब कपटसें जिन दत्त सूरिःका, श्रावक वणगया, गुरूका धर्म व्याख्यान सुणा करे, एक वक्त गुरू महाराजके, तेलेका पारणा था, इसनें भक्तिसें, साधुओंको, बहरनें बुलाये, तब मिश्रीका जल जहर मिला हुआ, बहिरा कर बोला, ये जल गुरू महाराजके योग्य, निर्दोष है, मैंनें पारणेके वास्ते मेरे बणाया था, साधुओंनें गुरू महाराजकों दिया, गुरूने पारणेमैं पी लिया, पीछै मालूम हुआ के, इसमैं बिष है उसवक्त भणसाली श्रावक आभूसाखवाला, पच्चखाण करणे आया तब गुरूनें कहा मुझें जहर होगया ह इतना सुनतेही वो श्रावक अपनी ऊंठनी (सांड) बहुत शीघ्र गामनी पर सवार होकर भूखाप्यासा निकला बिषापहारिणी मुद्रिका लेकर पीछा आया, आचार्य महाराजके वमन पर वमन और बे होसी, वदन काला, और हाथोंमें ऐंठण, चलणे लग रहा है, हजारों मनुष्य इकट्ठे हुए, १ पहर मैं पीछा आकर, उसकों प्रासुकजल मैं, डाल कर, साधुओंने दिया, तत्काल, सर्व उपद्रव, शान्त हो गये, ये बात फैलते २

राजाके पास पहुंची, तत्काल, अम्बड़कों बुलवाकर राजानें, कबूल करवा लिया, राजानें प्राण लेणे की सजा मैं, चौरंगा करणेका हुक्म दिया, तब जिन दत्तसूरिःने साधुओंकों, राजसभा मैं भेजकर, ये हुक्म बन्द करवाया, राजानें देसोटा दिया, जहां २ जावै, उहां हत्यारा कहके कोई इसकों बतलावें नहीं आखिर गुरू पर द्वेष भाव रखता २ अधम मरके व्यन्तर हुआ, अब वैरानसंबंधसें, गुरूका छल देखने लगा, अकस्मात् गुरूका, ओघा आसणसें दूर हटा, तत्काल वो व्यन्तर लेके, उत्पात करता गुरूकों उन्मत्त बणा दिया, गुरू अपने होस मैं होय तो, अन्य देव भी याद करते ही हाजिर होय, उस वक्त वीर और जोगणियां सब उत्तर दिशा मैं कोई व्यन्तरोंके परस्पर युद्ध होता था उहां चले गये थे, भवितव्यता जब आती है तब सुभूम चक्रवर्त्ती तथा भगवान वीरके अनेक देव सेवा करते भी कई मरणान्त कष्ट भोगणा पड़ा था और उसवक्त उस दुष्ट व्यन्तरनें पूरा छल पाया तभी ये कार्य किया उस समय सब खरतर संघनें बलिदान मंत्रादिक किया, तब व्यन्तर प्रत्यक्ष हो बोला, जो उस समय जहरका प्रतिकार करनेवाला भणसाली अपने सब गोत्रको, मेरे बलि करे तो, मैं ओघा देके, श्री जिन दत्तसूरिःकों, निज सत्तामें, कर देता हूं, इतना सुणते ही भणसाली गुरुभक्तिसे गोत्रका, उतारा कराया, व्यन्तरनें ओघादेके जिन दत्तसूरिःकों, छोड़ दिया, भणसालीके सब कुटुम्बको, मारणे निमित्त, जो व्यन्तर उद्यत होता था, तत्काल श्री जिन दत्तसूरिःनें, उस व्यन्तरकों योग विद्यासें, स्थम्भन कर दिया, सब भणसालीके बच्चोंपर ओघा फेरते ही, सब सावधान हो गये, ऐसा अचरज देख, राजाप्रजानें, धन्य २ भणसाली तुह्मारी गुरूभक्ति, जो तुमनें, सारा कुटुम्ब, गुरूके निमित्त, अर्पण करा तुम खर (करड़ा) हो, तबसे सोलंखी भणसाली खरा भणसाली कहलाये, इन्होंका परिवार बड़ी मारवाड़ गुजरात मैं बसता है राय भणसालीसें चंडालिया नख प्रगट हुआ, कछवा हुआ, भूरेजीकी शन्तान भणसाली, भूरा कहलाये, कई पूगलसें उठे वह भणसाली पूगलिया कहलाते हैं, मूल गच्छ इन्होंका खरतर है।

(लूंकड़ गोत्र)

खेता नामका महेश्वरी वाहेती जिसके दो पुत्र लाला, १ भीमा २ ये दोनों नबाब लोदी रुस्तम खांके खजानेका काम करते थे, जिसमैं इन्होंने क्रोडोंका माल, अपने महेश्वरी ब्राह्मणोंकों, वांटदिया, सम्वत् १५८८ विक्रमके किसीने चुगली खाई, नबाबनें, अहमदाबाद मैं, इन दोनोंकों कैद करदिया, एक दिन, पहरे दारोंकी नजर बचाकर ये दोनों भगे, सो गोढ़ वाड़ इलाके मैं, आये, पिछाड़ी इन्होंको पकड़नेको, घोड़े चढे, तब तपागच्छके जतीनें इन्होंसे करार किया, हम तुम्हैं छिपायलें, मगर जैनी श्रावक होना पड़ेगा, इन्होंने कबूल कर, सिपाही लोक ढूंढके चले मये इन्होंने प्राण बचणेसें, जैन धर्म अंगीकार करा, वाद, जोधपुर, फलोदी, गामोंमैं, आनेसें, लुकणेसें लूंकड कहलाये, मूल गच्छ तपा)

(आयरिया लूणावत गोत्र)

सिंधु देशमैं एक हजार गांमके भाटी राजपूत राजा अभयसिंह राज्य करता था, सम्वत् ११९८ मैं श्रीजिनदत्त सूरिः विचरते २ बनमैं उतरे थे, राजा अभयसिंह सिकारकों निकला, उस समय जिनदत्त सूरिः का, एक साधू, गोचरीके वास्ते सामने आया, उसकों देखते ही, राजा बोला, मुण्ड अमंगल है, ऐसे राजाके वचन सुन एक क्षत्रीनें गोली मारी, वह गोली साधूके लगकर गुलाबका फूल होकर गिरपड़ी, राजा घोडेसें उतरकर साधूके चरणोंमैं गिरपड़ा, साधूसें माफी मांगी, तब वो साधू समतासे बोला, हे राजेन्द्र, हमारे गुरू आचार्य वनमैं उतरे हैं, ये सर्व महिमा उनोंकी है, तूं उनोंका दर्शन कर, तब राजा बनमैं गया, गुरूकों नमस्कार करा, तब गुरूनें धर्म लाभ कहा, और राजाकों धर्मोपदेश देते कहने लगे, हे राजा, जीवोंकों मारणा है इसका फल दुर्गति है, जिसमैं भी, क्षत्रीयोंको चाहिये कि, निरापराधी जीवोंकों कभी हणे नहीं, षट्दर्शनको, बेकारण सन्ताना ये राजपूतोंका धर्म नहीं, जैसा इस समय आप करके आये हो, जैन संघकी रक्षा करणेवाली साशनदेवीनें, उस मुनिः की रक्षा करी, और गोलीका फूल कर दिखलाया, ये वचन सुनते ही राजा, आश्चर्य मैं रहा, इन महापुरुषकोंमें

कर आया हूं, इस बातकी खबर यहां बैठेही होगई, ये कोई महापुरुष है, गुरू बोले हे राजा साशनदेवी मुझकों कहगई, इतनेमैं सींधू नदीका तोफान उठा सो पाणीका पूर ऐसा आता दीखरहा है कि मानो पृथ्वीकों जल जलाकार कर सर्व वहा कर ले जायगा राजा बोला, हे गुरू आप शीघ्र रक्षा करो मेरी सर्व प्रजा हजार ग्रामके लाखों की वस्ती की, भवितव्यता आगई, गुरूनें कहा, हे राजा तुम्हारे सब भाटी राजपूत, जो कि हजार गावोंमैं बसते हैं, मेरे श्रावक हो जावें तो, सबोंकी रक्षा हो सकती है, राजाने कहा हे परम गुरू, सब महाजन होकर, आपके दास रहेंगें, मगर शीघ्र ३ राजा तो घबड़ाकर उस दरियावके वेगकों नहीं देखणेकी सामर्थासें, गिरके बोलता है, हे गुरू मुनिः पर मेरे राजपूतनें, बेकारण गोली मारी, माफ २ रक्ष २ करता है तब गुरू बोले, आयरह्या, हे राजा, आय रह्या, उठके देख राजा उठके देखता है, तो, दरियाव, पीछा जा रहा है, तब राजाने उसी समय, बडी धूमसें, वाजा गाजा और अपनी प्रजासहित गुरूकों, सहर मैं पधराया, और दश हजार भाटी राजपूतोंके संग, जैनी हुआ, गुरूनें आयरिया, गोत्र थापन किया इस राजाके सतरमी पीढी लूणासाह हुआ, इसकी सन्तान लूणावत कहलाये लूणा जेसलमेर परगणे मैं आया, मरुधर मैं काल पड़ा देख जगह २ सत्रु-कार, देणा शुरू करवाया, पीछे सत्रुंजयका संघ निकाला, कोलू गाममैं, का-बेली खोडियार, हरखूकों, लुणावत पूजणे लगे, ये लोग बहुत वरसों तक, बहलवे गांममैं वसते रहे पीछै जेसलमेर मैं, इस तरह आयरिया लूणावतोंका बंस विस्तार हुआ, मारवाड़मैं फैल गया मूल गच्छ खरतर है,

(बहुफणा, बापणा,)

धारा नगरीका राजा पृथ्वीधर पमार राजपूत इसकी सोलमी पीढ़ी मैं जोवन और सच्चू इस नामके दो नर रत्न उत्पन्न हुए, किसी कारण इस, धारा नगरको छोड जालोर गढ़कों फतह कर, अपना राज्य कर सुखसें रहने लगे, तब आगेके जो जालोरगढ़के राजा थे, उन्होंने कन्नोजके राठोड़ोंकी, सहायता लेकर, जालोरगढ़ पर चढ़ाई की, बडा घोरयुद्ध हुआ, एक भी हारे नहीं, तब इन दो भाइयोंनें, अपने दिलजमीके आदमी मुल्कों

मैं भेजे, तब गुजरात मैं, श्रीजिनवल्लभ सूरिःको, चमत्कारी पुरुष जानके, सब हकीकत कह सुनाई, तब गुरूने कहा, जावो तुम तुम्हारे राजासें पूछो, जो अगर जैनधर्म अंगीकार करके महाजन बणोतो, हम शत्रुजय करा-देते हैं, तब वो, सुभट, शीघ्र गतिसें जाकर, राजाकों खबर दी, राजा दोनों भाइयोंनें, नम्रता पूर्वक, पत्र लिखा, वह पुरुष पत्र लेकर, उहां पहुंचा तब श्रीजिन वल्लभसूरिःनें, बहुफणा, पार्श्वनाथ, शत्रुजय कर मंत्र दिया, और सब विधि बतलाई, वह पुरुषनें जोवन सच्चू राजाकों विधी पूर्वक, मंत्र दिया, वह एकाग्र मनसे साढ़े बारह हजार जप करके, कही विधीसे, घोड़े असवार होकर सब सेन्या मैं जा खड़े रहै, इन्होंको आया देख शत्रुलोक मार २ करते दौड़े इन्होंने सबके शस्त्र छीन लिये, सबोंको जीत लिये तब सबने हाथ जोड़ माफी मांगी, ये तारीफ सुण, जयचन्द राठौड़नें इन दोनोंको, सत्कार सन्मानसें बुलाया, सब हकीकत पूछी, इन्होंने गुरू महाराजकी सिद्धी बतलाई, तब राजानें अपने सामन्त वणा-कर, मुल्क पट्टा इनायत कर, अपने देश जानेकी आज्ञा दी, पीछै आते गुरूकी तलाश करते, खबर पाई के, श्रीजिन वल्लभ सूरिःजी, स्वर्गवास हो गये, और श्रीजिन दत्तसूरिःभी, बड़े जागती जोत उन्होंके पट्ट प्रभाकर है, तब दोनों भाई, जिन दत्तसूरिःजीके, चरणों मैं गिरे, और बोले आज हमारो वापना, हमारी रक्षा अब कोण करेगा, गुरूनें कहा, तुम जिनधर्म अंगीकार करो तो, गुरू स्वर्गवासी सदा तुह्मारी सहायता करेंगे, इन्होंने श्रीजिन दत्तसूरिःजीसें जिनधर्मका तत्व समझके, श्रीजिनधर्मका सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत लिया, गुरूने बहुफणापार्श्वनाथके मंत्रसें सिद्धी पाई इसवास्ते बहुफणा गोत्र उन्होंने कहा बापना इसवास्ते दूसरा इस गोत्रका नाम वापना भी प्रसिद्ध हुआ रत्न प्रभसूरिःने जो अठारह गोत्रोंमैं बाफणा गोत्र बणाया था, वह अलग है, लेकिन वह भी पमार वंशी थे, इसवास्ते वेभी चैत्यवासी अपणे गच्छकों जाण-कर, श्रीजिन दत्तसूरिःजीके श्रावक हो गये जोबन सच्चूके ३७ पुत्र हुए, उन मैंसें सांवतजी नामके जोबन राजाके पुत्र राजा अजय पालके

पोते, पृथ्वी राजके सेनापती हुए, इन्होंके मुसलमीनोंकी सेन्यासें, ६ वखत संग्राम हुआ ६ वखतही काबुलके बादशाहकों पकड़के चूड़ियां, लंहगा ओढणा, पहराके, बजार मैं घुमाया, ऐसे महायोद्धाकों देख, पृथ्वी राजजीनें, युद्ध मैं नाहटा इस नांमसें ही, पुकारणे लगे, लोक सब नाहटा २ कहणे लगे, इस तरह फतह पुरके नबाबनें, रायजादा पदवी एक पुत्रकों दी, वो रायजादा गोत्र हुआ, इस तरह, ३७ गोत्र बहुफणोंसें निकले १ बापना २ नाहटा ३ रायजादा ४ घुल्ल घोरवाड़ ६ हुंडिया ७ जांगड़ा ८ सोम्-लिया ९ वाहंतिया १० वसाह ११ मीठड़िया १२ वाघमार १३ आभू १४ घत्तूरिया १५ मगदिया १६ पटवा १७ नानगाणी १८ क्रोटा १९ खोखा २० सोनी २१ मरोटिया २२ समूलिया २३ धांधल २४ दसोरा २५ भूआता २६ कलरोही २७ साहला २८ तोसालिया २९ मूंगरवाल ३० मकल बाल ३१ संभूआता ३२ कोटेचा ३३ नाहउसरा ३४ महा-जनिया ३५ डूंगरेचा ३६ कुबेरिया ३७ कूचेरिया' ये अनेक कारणोसें शाखा फटी है, मूल गच्छ सबोंका खरतर है, गुरूका वरदान था, तुम धन परवारसें बधोगे।

(रतन पुरा कटारिया जलवाणी)

विक्रम सम्बत् १०२१ सोनगरा चौहाण, राजपूत रतन सिंहनें रतन-पुर नगर बसाया, जिसके पांचमी गद्दी सं. ११८१ मैं अक्षतीजकों, धन पाल राजा तखत बैठा, एक दिन शिकार करने राजा जंगल मैं गया, घोड़ा उलटा सिखलाया हुआ था, थांमणेंकों ज्यों ज्यों राजाने लगाम खेंची, त्यों त्यों घोड़ा चोफाले होता रहा, तब राजानें लगाम ढीली करी, तब घोडा ठहर गया शिकार हाथ नहीं लगणेंसें पीछा घिरा, रास्तेमें एक तलाव नजर आया, उहां दरखतकी छांहमैं घोड़ेकों बांधके आप सो रहा, इतने मैं एक सर्प निकलके,

१ पटवा बादरमल २ जोरावरमल ३ मगनीराम ४ वगैरह बड़े दानेश्वरी श्रीमन्त ५ भाई भये सत्रुंजयका संघ निकाला १८ लाख रुपया खरचवाकी सात क्षैत्रोंमैं क्रोडों रुपये इन्होंने लगाये इन्होंकी सन्तान उदयपुर जेसलमेर कोटा रतलाम वगैरह शहरों मैं बसतें हैं हर्ष सूरिःका सूरतमैं महेंद्र सूरिःका मंडोवर मैं जिन्होंने पाट महोत्सव करा इन्होंकी उदारता लिखणेकी कलममैं ताकत नहीं इस जमानेमैं ऐसे दाता दुर्लभ होगये ऐसे २ काम करे।

राजाकों काट खाया, राजा थोड़ी देरसें बेहोश होगया, आयुके प्रबल योगसें, श्रीजिन दत्त सूरिःआचार्य उस रस्तेसें बिहार करते चले आए राज लक्षण अङ्गमैं देख, तत्काल ओघेसें पास करा, राजा निर्विष हो कर तत्काल बैठा हुआ, आगे गुरूकों देख, चरणोंमैं गिर पड़ा, गुरूनें धर्म लाभ दिया, राजानें बड़ी धूमसें गुरूको अपने नगर मैं, पधराये, राजा, अपने प्राण देणेके बदलेमें, गुरूकों राज्यभेट करणे लगा, तब गुरूनें कहा, हे राजेन्द्र हमनें यावज्जीव धन कंचनका त्याग किया है, हम राज्यका क्या करें राजानें कहा आपका बदला कैसैं उतरे, गुरूनें कहा, तुम जैनधर्म ग्रहण करके, हमारे श्रावक वणो, हमारा बदला उतर जायगा, तब गुरूकों चौमासे रखा, और धर्मका स्वरूप समझकर, बड़े हर्षसे सम्यक्त युक्त बारह व्रत ग्रहण करे, रतनसिंहका रतनपुरा गोत्र गुरूनें थापन करा, इन्होंके वंश मैं झांझणसिंह बड़ा प्रतापी नर उत्पन्न हुआ, जिसकों दिल्लीके बादशाहनें अपना मन्त्री बनाया, झांझणसिंहनें प्रजाको बहुत सुख दिया, इसवास्ते सब हिन्द मैं उसके नेक नामीका सितारा चमकने लगा, एक समय बादशाहके हुक्मसें सत्रुंजयका संघ निकाला, उहां पट्टणीसाह अबीर चन्दनें आरती उतारणेकी, बोली करी, झांझण सिंहने बाणवें लाख रुपये मालव देशके इजारे की आमदानी देकर प्रभूकी आरती उतारी, इन्होंके दूसरे भाई पेथड़साहनें, सत्रुंजय गिरनार पर ध्वजा चढ़ाई, रस्ते मैं धर्म पुन्य करते पीछा आके, सुलतानसें, सलाम करी, एक दिन किसी चुगलनें, बादशाहसें चुगली कर दी, करोडों रुपये सरकारी खजानेके पुन्यार्थ मैं लगाने साबित कर दिये, बादशाहने गुस्सेमैं आकर, झांझण सिंहको पकड़नेको योद्धोकों भेजे, तब झांझण कटारी लेकर खड़ा हो गया, योद्धे भगे, बादशाहसें अरज करी तब बादशाह आप ही आकर बोले, अरे कटारिया, सच कह कि, सरकारी क्रोड़ों रुपये तेने खाये, झांझण बोला, एक पैसा भी बेहकका मुझे खाणा हराम है, हां अलबत, हजूरके मालसें, खुदाकी बंदगी और खैरायत, जरूर करी गई, अब जिसका पुन्य है, धर्म दलाली, मुझकों मिलेगी, हजूरका नाम जुग जाहिर था,

उसकों गुलामनें, खुदातक पहुंचा दिया, ये बात सुण कर बादशाह खुश हो गया, और सातों गुने माफ कर दिये, दरबार मैं, कटारी रखणेका हुक्म दिया, और फरमाया हे नेक नाम, जो कुछ नाम, और जो कुछ तेरेसें सखावत, करी जाय सो कर, इस तरहसें, कटारिया साख भई, बाद कई पीढ़ी इन्हों की शन्तान, मांड़वगढ़ मैं जावसी, किसी कशूर वश मुसल्मानोंने कटारियोंके सब गोत्रवालोंको, मांडवगढ़ मैं कैद किया, २२ हजार रुपये दण्ड किया, तब खरतर भट्टारक गच्छके जती जगरूपजीनें, मुसल्मानोंको चमत्कार दिखलाकर, दण्ड नहीं लगणे दिया, एक रतनपुरा बलाई (ढेढ़) लोकोंकों रुपये देता लेता वह बलाई कहलाये, इस तरहसें रतनपुरा मैं २४ जात चौहाणोंकी महाजन भये, हाड़ा १ देवड़ा २ सोनगरा ३ मालडीचा ४ कुंदणेचा ५ बेडा ६ वालोत ७ चीवा, ८ कांच ९ खीची १० बिहल ११ सेंभटा* १२ मेलवाल १३ वालीचा १४ माल्हण १५ पावेचा १६ कांवलेचा १७ रापड़िया १८ दुदणेच १९ नाहरा २० ईबरा २१ राकसिया २२ वाघेटा २३ सांचोरा २४ इन २४ जातमेंसे १० साखमहाजन प्रसिद्ध हुए रतनपुरोसे, रतनपुरा १ कटारिया २ कोटेवा ३ नराणगोता ४ सापद्राह ५ भलाणिया ६ साभरिया ७ रामसेन्या ८ बलाई ९ वोहरा १० इन सवोंका मूल गच्छ खरतर है।

डागा मालू भामू पारख छोरिया।

रतनपुरके राजाके दिवान माल्हदेजी राठी तथा भामूजी खजानची जातके राठी तथा राठी वल्लासाह ये राजाकी फोजके मोदी थे जिस समय राजा रतनसिंहकों जिन दत्तसूरिःजीने सांप काटे हुएकों बचाया, तब चमत्कारी महापुरुष जाण माल्हदेजीके बडे पुत्रकों, अर्द्धांगकी बिमारी बहुत सख्त होगई थी, सो किसी विधसें इलाज नहीं हुआ, तब श्रीजिनदत्त सूरिजीसें कही, महाराज बोले रतनपुरके जात राठी महेश्वरी जैनधर्म अंगीकार करें तो, में तेरे पुत्रकों, बचानेका उद्योग करूं, सब राठी रतनपुराके, बासिन्दोंने ये बात कबूल की, कारण एक तो माल्हदेजी दिवान सबके भरण पोषण करनेवाले, व दुसरे ऐसे चमत्कारोंकी

महिमा, दुसरा ऐसा सन्सारमें कोण होगा, जिसमें आपदा नहीं आती है, तब अपने कुटुम्बके रक्षाकारण जाणके, सब राठी मिलके, पालखीमैं डालके पुत्रकों लाये, सबोंने कहा, आपकी शन्तानके हमारी शन्तान सदाके वास्ते, आभारी रहेगें, किसी तरहसे ये कुलदीपक, रूपदे, अच्छा हो जाय, गुरूने योगणियोंको बुलाया, और कहा, इसको तुम सावधान करो, जोगणियोंने कहा हमारी आज्ञा कारणियां, वींझेंविणजारेकी सात लड़कियां अग्निमैं जलकर मरी, इसका कारण रूपदे है बींझेविणजारेको महसूल की, चोरीमैं, रूपदेने पकड़के, कैद किया, और सब माल, असबाब, जब्त कर लिया, तब सातों इसकी कंवारी कन्यायें, क्रोधसें, अग्निमैं जलकर, भस्म होगई, सो शुभ परणामके वश, चाण्डाल जातिकी, सातोंई कन्या, व्यन्तर हुई है, हम उन्होंको, अभी लाती हैं, ऐसा कह उन्होंको लाई तब उन्होंने कहा, हे परम गुरू, हमारा पिता कैदमैं हैं, उसको छोड़ दे और माल पीछा दे दे तो, आपकी कृपासें, ये अच्छा हो जायगा, गुरूने, वींझेंकी बेड़ी तोड़ाई, माल सब दिलाया, तत्काल उसका अङ्ग, अच्छा होगया, तब जोगणियां, और बीझ बाइयोंने कहा, अरे राठीयों जबतक तुम जिन दत्तसूरिःके आज्ञाकारी बणे रहोगे, और खरतर गच्छका उपकार नहीं भूलोगे, उहांतक अर्द्धांगकी बीमारी तुम्हारे कुलमैं नहीं होगी, ऐसा कह, गुरूकी आज्ञा ले, अलोप भई, ये चमत्कार देख, सब रतनपुरके महेश्वरियोंने, जिनदत्तसूरिःजीका, वासक्षेप ले जिनधर्मी हुए, डागा, गोत्रमहेश्वरीयोंसे मूंधडामहेश्वरियोंसे, मूंधडाआवक गोत्र स्थापन किया, भामूजीका पारख, अबींध कांन नहीं बिंधावे, ये राठी महेश्वरियोंसे गोत्र थापा, भोरा गोत्र, राठियोंसें, छोरिया, गोत्र राठियोंसें, सेलोत राठी महेश्वरियोंसे, रीहड़ राठी महेश्वरी, इस तरह ९२ गोत्र रतन पुरमें, महेश्वरीयोंसें, जिन दत्तसूरिजीने स्थापन करा, अनेक जातिनाम महेश्वरियोंमेंथावोही रक्खा।

(रांका सेठी सेठिया कालाबोक बांका गोरादक०)

वल्लभी (बला) सोरठ देशमैं, गोड़ राजपूत, काकू और पातांक, नामके दो भाई, बहुत द्रव्यसें, तंग रहते थे, नगरके दरवज्जेके बाहर तेललूंण वेच-

नेका व्यापार करने लगे, पेट गुजरान भी मुशकिलसें हुआ करे, एक दिन नेमचन्द्रसूरिः आचार्य, वल्लभी नगरमैं पधारे, उससमय ये दोनों भाई, नित्य व्याख्यान सुननेकों, जाने लगे, गुरूसें पूछणे लगे, हे स्वामी, हमभी कभी सुखी होंगे, गुरूनें कहा, जो तुम जिनधर्म सम्यक्त्व गृहण करो तो, सब बताता हूं उन्होंनें ग्रहण करा, गुरूनें कहा, तुम्हारा भाग्य वल्लभी मैं राज्यसें खुलेगा, बहुत धनवान हो जाओगे, बृद्ध अवस्थामैं, तुमकों राजा धन छीनके निकाल देगा, आखिर यवनोंकी फौज लाकर तुम बल्लभी नगरीका विद्धंश कराओगे, और तुम्हारी शन्तान पारकर देशमैं पांचमी पीढी, विस्तार पावेगी, ये दोनों भाई नेमचन्द्रसूरिः सें, सम्यक्त्वी भये, सगपण राजपूतोंमैं था, आखिर ये राजाके मानवंत हुए, वल्लभीका नाशभी इन्होंसे ही हुआ, तदपीछै ये वल्लभी छोड़ पारकर देश, पाली नग्रपास गांम मैं आ बसे, फिर इन्होंकी शन्तान, खेती कर्म करणे लगी आखरको पांचमी पीढी मैं इन्होंके, रांका, और बांका नामके दो लड़के, उत्पन्न हुए वे खेती करते थे, इधर श्री नेमिचन्द्र सूरिःके छठे पाटधारी, श्री जिनवल्लभ सूरिः, विहार करते, उस रस्ते चले आये, इन दोनोंने, वन्दना कर, आहार पाणी बहराया, गुरू बोले तुमकों एक महिनेके अन्दर, सांपका डर होगा, इस लिए तुम महापाप कारी ये कृषाण कर्मका, त्याग करो, ऐसा कह गुरू विहार करगये, ये दोनों, इस बातकी परिक्षा करणेको, करी भई खेतकी रक्षा करते रहे एक दिन सांझको, खेतसे पीछे आते थे, रस्तेमें, सांप पडा था, पूंछ पर पांवटिका, सांपने फुंकार किया, तब ये भगे, उस सांपने इन्होंका पीछा किया, तब ये दोनों एक तलावमैं, कूदपडैं, तिरके पार निकले, दिलमैं डरते २ एक चामुण्डा देवीके मन्दिरमैं घुसकर, दरवज्जा बन्धकर सोगये, प्रभात समय, सांपको देखणे, मन्दिरकी छतपर चढे, देखते हैं सांप मन्दिरके आसपास घूम रहा है, तब इन्होंने, मरणान्त कष्ट जाण, गुरूका वचन याद करा, तब चामुण्डा देवीकी स्तुति करणे लगे, तब देवी मूर्तिके मुख बोली, अरे मूर्खों, जो तुम उसी दिन खेती करणेका त्याग करदेते तो, तुमको, ये डर नहीं होता, गुरूका वचन नहीं माना, जिसकी ये, तुम्हें सजा मिली है, ये श्रीजिनवल्लभसूरिः युग

प्रधाननें मुझकों सम्यक्त्व ग्रहण कराया, और मदिरा मांसकी बलि छुड़ाई, तुम उनोंके, श्रावक होजाओ, तुम सब तरह सुखी होजाओगे, आज पीछै, व्यापार करणा, गुरू महाराजका श्रावक हुए बाद, तुमकों स्वर्ण सिद्धि मिलेगी, जाओ अब सांप नहीं हैं, ये दोनों, उहांसे निकल कर, घर पर आए, उन्होंने खेतीका अनाज वेच दुकान करी, व्यापार चलणे लगा, इधर श्रीजिनवल्लभसूरिः परलोक पहुंचे, उन्होंके पाट श्रीजिन दत्त सूरिःविराजे, स. ११८५ इधर विहार करते पधारे, ये दोनों भाई गुरू महाराजके शिष्य जांण, सेवा करते व्याख्यान सुणकर सम्यक्त्व युक्त, बारह व्रत गृहण करा, गुरूनें, आशीर्वाद दिया, तुम्हारा कुल बढ़ेगा, इन्होंने कहा, हम खरतर गच्छसें, कभी वे मुख नहीं होंगे, गुरूने बिहार करा उन्होंकीं पैठ प्रतीति पारानगर मैं खूब बढ़ी, इधर १ जोगी रस कूंपी भरकर, पाली आया, इन्होंनें भक्ति करी, तब बोला, बच्चा हम हिंगलाज जाते हैं, इस तूंबीको तुम्हारे झूंपड़े मैं, लटका जाता हूं, आऊँगा, तब ले लूंगा, लटका गया एक दिन तवा, तपाभया, उस पर, वो रस की बूंदगिरी, तवा सोनेका हो गया, बस इन्होंने, उसकों उतार, असंख्य द्रव्य, बणा लिया, बडे दानेश्वरी, सात क्षेत्रों मैं, बहुत द्रव्य लगाया, पल्लीवाल ब्राह्मणोंकों, गुमास्ते रखकर, जगह २, व्यापार कराया, इस करके पल्लीवाल ब्राह्मण, सब, धनपती हो गये, एक दिन सिद्धपुरपट्टणके राजाकों, लड़ाई मैं, ९६ लाख सोनइये चाहिये थे, किसी साहूकारनें नहीं दिया, तब सिद्ध राजनें, इनकों बुलाया, इनोंनें सब दिया, तब सिद्ध राजनें श्रेष्ठ पदका स्वर्ण पट्ट मस्तक पर, रखने की आज्ञा दी, जिस मैं लिखा हुआ कुबेर नगर सेठ रांका, और बांकेकों कहा, आवो छोटा सेठिया, उस दिनसें, रांकोंसे सेठि, और बांकेसें सेठिया, इन्होंकी शन्तान काला, गोरा, दक, बोंक, रांका, वांका, एवं ८ शाखा प्रगट हुई, रत्नप्रभुसूरिःनें, जो श्रेष्ठि गोत्र, थापन किया, सो वैद वजते हैं, इन सबोंका मूल गच्छ खरतर है, ।

(राखेचा, पूगलिया, गोत्र)

जेसलमेरका राजा भाटी जेतसी उसका पुत्र केलणदै, उसके गलित

कुष्ठ की बिमारी, उत्पन्न हुई, उसकी वय नौ वर्षकी थी, राजानें बहुत देवी देव मनाये, मगर आराम नहीं हुआ, तब राजा अपणे कुलदेवीको बलि वाकल दे, स्तुति करी, तब किसीके अंग मैं बोली, हे राजा, जो तूं पुत्र अच्छा कराया चाहै तो, सिन्धु देश मैं, परोपकारी, युग प्रधान श्रीजिन दत्तसूरिःके चरण शरण जा. राजानें सिन्धु देश मैं जाकर, गुरूजीसें सब अरज करी, और बोला, आप कृपा कर, लोद्रव पट्टण पधारो, सब नगर आपके दर्शनकी, राखेचाह, गुरूनें कहा, जो तुम, जैनधर्म धारकर खरतर गच्छके, श्रावक वणो तो, मैं चलता हूं, जेतसी रावल बोला अहो भाग्य आपकी सेवा, और अहिंसा रूप जिन धर्म की, प्राप्ति, पुत्र मेरा निरोग होय, इससें मैं जांणता हूं, मेरे पूर्व पुन्य उदय हुए, तब गुरू, लोद्रव पुर पधारे, तीन दिन दृष्टि पास किया सोबन वर्ण काया हो गई, अब राव जेतसीनें सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा मकड़ पुत्रकों राज्य तिलक दिया, गुरूका—त्याग वैराग्यका, हमेशका उपदेश सुण, केल्हण कुमार, दीक्षा लेणेको तैयार हुआ तब गुरूनें समझाया, है बच्छ, तूं बालक नादान है, संजम खांडेकी धार है, पिता तेरा वृद्ध है, तूं अरिहंत देवकी पूजा द्रव्य भावसें कर, महा व्रती, अणु व्रती तथा सम्यक्तियोंकी मन शुद्ध भावसें द्रव्यादिक अनेक प्रकारसें भक्ति कर, बारह व्रत पाल, श्रावक धर्म पालणे वालाभी, एक भवसें, मुक्ति जाता है, सात क्षेत्रों मैं, द्रव्य लगा, केल्हण कुमार बोला, मेरे दीक्षा की करी हुई प्रतिज्ञा भंग होती है, तब गुरू बोले, तेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करणे की सदा मदके लिए, तजवीज, बताता हूं, तूं मेरे सन्मुख मस्तक मुण्डन करा, और मैं वास देता हूं, गुरूने सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत उच्चराया, और कहा, तेरे कुलका बालक नव वर्षका, जब होय, तब इसी तरह पट मुण्डन करा, मेरे शान्तानोंका वास चूर्ण लेगा तो, तुह्मारे कुलकी बृद्धि होगी लक्ष्मी राज्य लीला करते रहोगे, दर्शन की राखेचाह, दीक्षाकी राखेचाह, इस वास्ते गुरूनें राखे चाह गोत्रका नाम, थापन करा, सं. ११८७ मूल गच्छ खरतर वृद्ध थाल आरथाल खरतर भट्टारक गच्छका राखेचाह सदा करते हैं धोत तथा व्याह मैं, पूगलसे उठके दूसरी जगह बसे सो पूगलिया राखेचाह बजते हैं।

(लूणिया गोत्र)

सिन्धु देश मुल्तान नगरमैं मूंधडा महेश्वरी धींगडमल (हाथी साह) राजाका दीवान था, राज्यका बन्दोबस्त न्यायसे करता था, इससें प्रजा हाथी साहको, प्राणकी तरह मानने लगी, इसका पुत्र लूणा, बडा चतुर, राजाका मान्य, योवन अवस्थामैं, शादी करी, एक दिन लूणा स्त्रीके संग, पलंग पर सोता था, उस वक्त, सांपने उसको काट खाया, और नींदसें चमक उठा, ये बातकी खबर होतेही मंत्रवादी, बहुत जहर उतारणे वाले, वैद्योंकी, चिकित्सा करवाई, मगर लूणा मृतक वत् होगया, उसवक्त जिनदत्तसूरिःमुलतानमें थे, महिमा सुण, हाथीसाह रोता हुआ, चरणोंमें जा गिरा, सब हकीकत कही, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्मी, हमारे श्रावक हो जाओ तो, पुत्र सचेतन होता है, हाथीसाहने सह कुटुम्ब, कबूल करा, गुरू चौतरफ पडदे लगवाकर, पिलंगपर ज्यों स्त्री भरतार सोते थे, त्यों सुलाकर, गुरूनें अलक्ष आकर्षण करा, वो सांप आया, और मनुष्य भाषा बोलणे लगा, हे गुरू, मेरे इसके पूर्वजन्मका बैर है, इसने जन्मेजय राजाके यज्ञमें, ब्राह्मणपणेमैं वेदका मंत्र पढके, मेरेको, होम डाला, यज्ञस्तंभके नीचे शांतिनाथ तीर्थकरकी मूर्ति, इन ब्राह्मणोंने, शान्तिके निमित्त जब गाडी, याने, कोई दयाधर्मी देवता, यज्ञमैं बिगाडन कर देवे, उस मूर्तिको, मैंने गाडते देखी, उस प्रतिमाके देखणेसें, मैंने विचारा, ये मुद्रा मैंने पहिले देखी थी, इस करके मुझको मूर्छा आगई, तब जाती स्मरण ज्ञान मुझकों उत्पन्न हुआ, मैंने पूर्वजन्म देखा, पूर्वभवमेंमें जैनधर्मका साधू था, तपस्याके पारणे, भिक्षाको गया, बालकोंने, मुझे चिडाया मे क्रोध करके मरा, सो सांप हुआ, मैंने मनसे सम्यक्त्वयुक्त श्रावक व्रत ग्रहण कर लिया, उस वक्त ब्राह्मणोंके, कहणेसे राजा परिक्षितकी शन्तान, राजा जन्मेजयने, सापोंको पकडवाकर, मंगाया, और ब्राह्मणोंने बेदका मंत्र पढकर, मुझे हवन करा, उस मरतेवक्त मुझे क्रोध हुआ उहांसे, मरके, में नाग कुमार देवता हुआ, ये शिवभूति ब्राह्मण गलत कोढसें मरके, ८४ हजारके आऊखेसें, नारकीया हुआ, उहांसे निकल, वानर हुआ, उहां वनमें, जैनसाधु देशना देते थे, उन्होंने कहा

यज्ञमें पशुहवन करणा इसका फल हिंसा, हिंसाका फल नरक ऐसा वानर सुणकर, जाती स्मरण ज्ञान पाया, उहां सरल भावसें मरकर, हाथीसाहका पुत्र हुआ, मेंने इसकों ज्ञानसें देखा, तब पूर्व बैरसें मारणेकों, सांपके रूपसें, डंक मारा, तब गुरू बोले, हे देव, किये कर्म छूटते नहीं, तेरा बदला तेंनें लेलिया, अब ये हमारा श्रावक है इसका जहर उतार दे, तत्काल नागदेवने, डंकका जहर उतार डाला, और सब लोकोंसें, देवता कहणे लगा, अहो लोकों श्रीजिनदत्तसूरिः तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब, सामाचारीके उपदेशक, पंचमहाव्रत पालक एका भवावतारी तारण तरण गणधर हैं लूणासावधान हो, सम्यक्त्वयुक्त व्रत पच्चखांण करा, गुरूने लूणिया गोत्र थापन करा, सं. ११९२ मूलगच्छ खरतर],

[डोसी सोनीगरा गोत्र]

सम्वत् ११९७ में में विक्रमपुर जो कि भाटीपेमें है उहांके ठाकुर सोनीगरा राजपूत, हीरसेन, इन्होंने क्षेत्रपालकी मानता करी, मेरे पुत्र होगा तो तुम्हारे निमित्त सवालक्ष मोहरें लगाऊंगा, देव वश, राणीके पुत्र हुआ, खेतलनांम दिया, अनुक्रमसें सात आठ वर्षका वह बालक हुआ, ठाकुर जात देणेकी चिन्तामें, मगर सवालक्ष मोहरोंकी जोड़ वणे नहीं, तव क्षेत्रपाल उपद्रव करने लगा कहीं अंगार लगा देवे, कभी राजा राणीका शिर आपसमें लडा देवे, कभी गहणा छिपा देवे, कभी राणीकों छिपा देवे, कभी राजाके संधि २ में दर्द कर देवे, खेतल कुमार उन्मत्त हो गया, आठ २ दिन भोजन नहीं करे, विगर पढ़ा शास्त्र पंडितोंसे संवाद करे, हजार मनुष्योंसे नहीं उठणेका पदार्थ उठा लेवे इस वक्त श्री जिनदत्त सूरिः विक्रमपुर पधारे, ठाकुरनें महिमा सुण बड़े महोत्सवसें गुरूको नम्रमें पधराये, खेतलकुमार गुरूकों देखते ही बोल उठा हे परमगुरू, इस ठाकुरनें, मेरी बोलवा करके, पजा नहीं करी, इससें ये दोषी है, गुरूनें कहा हे ठाकुर, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारण करो, तो में संकट काट देता हूं, क्षेतल कुमार पृथ्वीसें कूद २ कर ५० हाथ ऊंचे छत्तपर जा बैठता है, फेर कूदकर डमरू त्रिसूल लेकर घुघरू पांवमें बांध, गुरूके सन्मुख नाचता है, ये चमत्कार देख बहुत लोक

जमाहुए, ठाकुरनें श्रावक होना मंजूर करा, तत्काल क्षेतल कुमार सावधान होगया, क्षेत्रपाल निजरूपसें, गुरूके चरण पकड़ बोला, हे गुरू हे सर्व देवताओंके स्वामी, आपकी आज्ञा लेपेसो, इस भव परभव दुखी हो, आपके जब श्रावक यह लोक हुए तो, मेरी क्या, बल्के चारों निकाय के देवताओंकी मगदूर नहीं, सो इन्होंकी बुराई कर सके, ठाकुर सह कुटुम्ब जैनी महाजन हुआ, गुरूनें गोत्रका नाम दोसी रखा, लोक डोसी कहने लगे, बाकी राजपूत श्रावक हुए, उन्होंकी शाखा सोनीगरा, बजणे लगी, इन्होंके प्रधान सोहन सिंहजीके पुत्र, पीथलजी श्रावक भए उन्होसे पीथलिया गोत्र प्रसिद्ध हुआ, पीथलजी पमारथे, मूल गच्छ खरतर।

[सांखलासूराणा गोत्र सियाल सांड सालेचा पूनम्यां]

विक्रम सं. ११७९ में, सिद्ध राज जयसिंह, सिद्धपुर पाटणका राजा, उसके पलंगका पहरेदार, जगदेव जिसकों राजा, एक वर्षका एक लक्ष सोनइया देता था, जगदेवजीके सात पुत्र थे, सूरजी, संखजी, सांवलजी, सामदेव, रामदेव, छारड़ इस तरह सुखसे पाटणमैं रहते थे, जगदेवजी बड़े शूरवीर थे अर्द्ध रात्री, काली चवदाशको, पहरा दे रहे थे, उस वक्त, बनमें, बड़ी धूम किलकिलाट अट्टहस्सी, सुणके, सिद्धराजने जगदेवजीकों कहा, ये शब्द कहां हो रहा है निश्चय करके आवो, जगदेवजी, जो हुक्म कहकर, उहांसे निकले, आगे देखते हैं तो, कालिका वगैरह, बडे २ वेताल, व ६४ जोगणियां, इकट्ठे होकर, नाचते और गाते हैं, जगदेवनें पूछा, अरे तुम कौन हो, और क्यों फैलवाजी करते हो, जोगणियां बोली, सिद्धराजनें हमारा बलिदान बकरे भैसें देणेका बन्द कर दिया, सो अब एक महिनेमैं मरेगा, जगदेवने पूछा कैसे मरेगा, जोगणियां बोली, इस देशमैं, महम्मद गजनवीकी सेन्या आवेगी उसमें लाखों मनुष्य मरेंगे, हमारे खप्पर रक्तसें, भरेंगे, उस युद्धमैं, हम जोगणियां, तथा क्षेत्रपाल बीर मिलके दुश्मनोंके हाथ, सिद्धराजको मरवाकर, बलिदान लेंगे, तब जगदेव बोला, किस प्रकार सिद्धराज बचे, जोगणियां बोली, ३२ लक्षणा पुरुषका जो, अगर बलिदान दैतो, शत्रुओंकी फौज मैं, हम सहायता नहीं देंगे, तब जगदेव बोला, मेरा शिर

काटके, तुम्हारे सामने धरता हूं, तुम प्रसन्न होकर, सिद्धराजकी लम्बी ऊमर होय, ऐसी करो, तुम उसपर सुनिजर रक्खो, जोगणियां उसका सत्व साहस देखणेको बोली, तूं बत्तीश लक्षणवन्त, शूरवीर है, तेरे मस्तकके बलिदानसें हम, सब सन्तुष्ट हो जावेगें, तब जगदेव अपणे खड्गसे अपना मस्तक काटने उद्यमबंत हुआ, ऐसा सत्व देख जोगणिये जय २ शब्द कर हाथ पकड लिया और कहा हे सत्वशिरोमणि तूं जयबंतरह, अभी सिद्धराज जयसिंह बहुत वर्ष जीवेगा, म्लेच्छ सेन्या इहां आवेगी, उनको जयकारणी शत्रुदल भंजणी अमोघ विद्या देकर विदा करा, जगदेव सिद्धराजकों सर्व वृत्तान्त कहा, अपना मस्तक काटने आदिका मुख्य वृत्तान्त नहीं कहा, सिद्धराज प्रशन्न हो जगदेवकी महान् प्रशंसा करी राजा युद्धकी सर्व सामग्री तइयार कराई, मलधारहेम सूरिः (मलधार विरुद अभयदेव सूरिःकों, मिला था) आत्मारामजी संवेगी पाल्हणपुर प्रश्नोत्तरमें लिखा है, उस नगरमें आये, जगदेवजी ७ पुत्रयुक्त उनके शमीप जाते आते थे, राजाकी शेन्यामें जगदेवजीके पुत्र सूरजी शेन्यापति थे, एक महीने पीछै काबलके यवनोंका लस्कर आया, युद्ध होने लगा, सूरजी हेमसूरिःसे बीनती करी हे गुरु, युद्धमैं जय हो ऐसी कृपा करो, गुरुनें कहा सावद्यकृत्यमैं सहमति देना हमारा आचार नहीं, यदि तुम श्रावक हो जाओ तो प्रयत्न कर देता हूं, तब ७ पुत्रोंनें मंतव्य करा, गुरुनें विजयपताका यंत्र दिया, सूरजी भुजापर बांध सेन्यामें गये, तत्काल यवन दल भाग गया, सिद्धराजने कहा साबास सूरराणा, वहसूराणा कहलाये, संखजीके सांखले कहलाये, (शांखले राजपूत ओसवाल हुए, वे भी जातिनांमसे शांखले कहाते हैं) सांवलजी युद्धमें भग गये, उनके सर्व शंतानवाले सियाल बजने लगे, जो सावलजीके पुत्र बड़े मजबूत वदनमें हृष्ट पुष्ट थे, सिद्धराज जयसिंह उसको संड मुसंड कहते थे, एक दिन एक चारणनें सभामें हसी करी, कि बाप तो सियाल, ओर बेटा सांड कैसें, । तब सिद्धराजने कहा, " हे सांड हमारा सूरजका सांड है, उससे तूं लड़े तो, दुनियामें, सच्चा सांड कहलावै, । वह उसी वक्त खड़ा हुआ, जब राजाके मस्त सांडकों, छोड़ा, उसी बख्त पकड़ सींग धक्का लगा कर दया चित्तमें

रखता धीरेसे, जमीन पर सुला दिया, । राजा प्रजा जय २ शब्द करकै कहनें लगे कि, सच्चा सांड तूं है; मेरी दी हुई पदवीको तैंने सफल कर बताई; उस दिनसे सांड गोत्र हुआ । दूसरा बेटा, सांवलजीका सुक्खा हुआ, जिसकें सुखाणी कहलाये; तीसरा साल्दे, जिसके सालेचा कहलाये । चौथा पूनमदेव, जिसका पुनमिया, कहलाया, । इस तरह, जगदेवजीके तीनों बेटोंसे इतनी शाखा फैल कर, महाजन हुए । उस जमानेमें तीन आचार्य हेमसूरी नामके विद्यमान थे,— मलधार हेमसूरिः पूर्ण तल्लगच्छी हेमचन्द्रसूरिः । तीसरे हेमसूरीके गच्छका पता नहीं है, मगर आत्मारामजी संवेगी लिखते हैं राजा कुमार पालकों, तीनोंने प्रतिबोध दिया था, तीनोंको राजा धर्मदाता गुरू मानता था ।, मलधार खरतरकी शाखा है, बाकी पूर्ण तल्ल गच्छ विच्छेद भया ।, इन सूराणोंकी माता सुसाणी ओर लोसल, कहाती है; । पीछे अन्यमतका संवत् विक्रम सोलहसौ मैं इस वंशमें प्रचार हुआ । मूल गुरु मलधार गछ इस वख्त सूराणे देवी मोर खाणेकी पूजते हैं ।

आघरिया गोत्र ।

सिंध देशमैं अग्रोहा नगर का राजा गोपाल सिंह भाटी राजपूत उसका परिवार पनेरेमें घरका विक्रम सं. १२१४ मैं मुसल्मानोंकी फौजनें लड़ाई मैं राजाको कैद करलिया उस समय, खोड़िया क्षेत्रपाल सेवित चरणकमल, श्री मणिधारी जिनचन्द्र सूरिःगुरू, अग्रोहा नगर पधारे, उस समय उनका प्रधान घुरसामल, अग्रवाल प्रछन्नपणे मैं, आकर रातको गुरूमें विनती करी, हे गुरू, जो हमारा राजा कैदसें छूट जाय तो, आपका उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे, गुरूनें कहा, जो राजा हमारा श्रावक बणे तो, हम उपाय कर सक्ते हैं, घुरसामलनें, कबूल किया, गुरुनें कहा, तुम आजही देखो, क्या स्वरूप वणता है, अकस्मात् पनेरेमें राजपूतोंकी बेड़ी, टूटपड़ी मुसलमीनोंको खबर हुई, फिर डाली फेर टूट गई, ऐसे सात बेर जब हुआ, तब मुसल्मीन समसेरखां, आश्चर्य मैं आकर, पूछने लगा, ये गोमलसिंह क्या चमत्कार है, गोमल भाटी बोला, मैं नहीं जाणता, ये क्या बात है, समसेरखां, मनमें सोचने लगा, इस राजाके पीछै, किसी

महा पुरुषकी, सहायता है, राजाकों सपरिवारसें, छोड़कर, बोला, हांसी हिसार तुम खरचके वास्ते लेलो, और मेरे उमराव बनो, गोसलने कहा, देखा जायगा, सहरमैं आकर दीवान के घर आया, तब दीवाननें सब बात कही, और गुरूके पास ले गया, और धर्म सुणने लगा, गुरूसें राजा कहने लगा, किसी तरह पीछा राज्य मिल जाय, गुरूनें कहा जैनधर्म धारण करो, राजा सपरिवार जैनी हुआ, रातकों समसेर खांको, क्षेत्रपालने, दरसाव दिया, यातो तुम राज्यपीछा गोसलकों दे दो, नहीं तो तुम्हारे हक मैं, अच्छा नहीं होगा, सुबहकों समसेरखांने, मारे डरके, राजाकों पीछा राज्य दिया, और आप उहांसे अपनी फौज ले चल धरा, गुरूने, आघरह्या गोत्रका नाम धरा, उसको लोक आघरिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर।

[दूगड़ सेखाणी कोठारी गोत्र, तथा सुघड़]

पाली नगर मैं खींची राजपूत, राजाका दीवान था, किसी दुश्मननें राजासे चुगली खाई, तब राजाके डरसें भगा, सो जंगलगढ़मैं जानेसे उसकी इग्यारमी पीढीमें, सूरदेव बडा शूर बीर पैदा हुआ, उसके दो पुत्र दूगड़ और सुघड, ये दोनों भाई मेवाड़मैं जाके आघाट गामके ठाकुर होगये, उस गामके, चौतरफ भील मेंणे चोरी धाड़ा मारते, प्रजाकों दुख देते, उन्होंको दूगड़नें कैद किये, ये तारीफ सुणकर, चित्तोड़के राणाने, इन दोनों भाईयोंको बुलाकर, कुरब बढाया, राव राजा की पदवी दी उस आघाट गामके बाहिर, एक नारसिंह बीरका पुराणा मंडप था, उस गामके लोकोंने, उस मकान को तोड़ाय डाला, तत्काल नारसिंह बीर, गामके लोकोंको बडी, तकलीफ देणे लगा, पणिहारियोंके घडे फोड़ डाले, मनुष्योंके हाथसे खाने पीने की चीजें जमीनमें गिरवा देवै, इत्यादिक पत्थरोंकी बरसात रजो वृष्टि नानाप्रकार के उत्पात देखाणे लगा, इन रावराजाओंने, जंत्र मंत्र, बलि वाकुल बहुत करवाये, लेकिन उत्पात बन्द होवै नहीं, इस वक्त श्री दादा साहबके पट्ट प्रभाकर मणिधारी श्री जिन चन्द्र सूरिः उहां पधारे, सं. १२१७ मैं, इन्होंके सन्मुख, दोनों भाईयोंने विनय पूर्वक गामके कष्टका स्वरूप कहा, तब गुरू बोले, जो तुम जैनी श्रावक हो जाओ तो, बन्दोबस्त

हो जायगा, दोनों भाई श्रावक होगये, तब गुरूनें धरणेन्द्र पद्मावती की, आराधना करणेकों उपसर्ग हरस्तोत्र का स्मरण किया, पद्मावतीनें नारसिंहको पकड़के, गुरूके, चरणोंमैं लगाया, गुरुनें कहा, आज पीछै उपद्रव नहीं करना ये मेरे श्रावक हैं, नारसिंह वीरनें, कबूल करा गुरूनें दूगड सुगडकों कहा, नागदेव तुह्मारे वंशके, सहायक होंयगें, ये चमत्कार देखसी सो दिया, वैरी शाल श्रावक हुआ, वह सीसोदिया गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, इन दोनोंका वंश, धन और जनसें, दादा गुरू देवकी भक्ति करणेसें, दिनपर दिन वड़की शाखा ज्यों, विस्तार पाया, मूल गच्छखरतर, अभीभी दूगडगोत्री, नागकुमारकी पंचमी, कई २ पूजते हैं, दादा गुरू देवकूं सब दूगड मानते हैं, सेखाजीकी ओलाद सेखाणी वजते हैं, कोठारका काम करणेसें कोठारी भी दूगड बजते हैं, मूल गच्छ खरतर है,

(मोहीवाल आलावत,पालावत,गांगा,दूधेड़िया शाखा१६)

मोही नगरमैं पमार राजा नारायण सिंह राज्य करता है, चौहाणोंने घेरादिया, नारायण गढ़का बन्दोबस्त कर, चौहाणोंसे युद्ध करने लगा; लेकिन् चौहाणोंके पास बहुत धन और लाखोंकी फौज थी, नारायण चिन्तामैं चूर्ण हुआ, तब गंगपुत्रनें पितासें अरज करी, कि, हे पिताजी, श्री जिन दत्त सूरिःके पाटधारी, श्री जिन चन्द्र सूरिःका मैंनें मेवाड़ देशमें, दर्शन किया, था, सो बडे चमत्कारी महापुरुष हैं, राजानें कहा, हे पुत्र उन्होंके पास पहुंचणा मुशकिल हैं, गंगने कहा, में हरसूरत, पहुंच जाऊंगा, दूसरे दिन, ब्राह्मण जोतषीका, स्वांग वणाकर, चौहाणोंकी फौजमें गया, और फौजी लोकों को, तिथिवार बताता २ फौजमें से निकल गया, अजमेरपरगणेमें गुरूका वन्दन करा, गुरूकों एकान्तमें, सब वार्ता कही, गुरूनें कहा, तुह्मारा पिता सहकुटुम्ब हमारा श्रावक जैनी हो जाय तो, में सब बंदोबस्त कर देता हूं, गंगराज कुमारनें, ये बात कबूल करी, तब श्री गुरू महाराजनें जया विजया देवीकी, आराधनारूप, पार्श्व मंत्र स्मरण किया, देवीनें एक तुरंग लाकर दिया, गुरूसें अदृश्यता पणेंमें, मालम करा, इस अश्वका चढ़णे वाला, अजयी हो जायगा, गुरूनें, गंगसे कहा, तुम इस घोडेपर सवार हो, देखते

रहो, असंख्या दल तुह्मारे पीछै आजायगा, शत्रु सब भग जांयगे, हमारे कहे हुए वचन चूकणा मत, तुह्मारे मनोरथ सदा सिद्ध होंगे, गंगने चौहाणोंको घेर-लिया चौहाणोंकी फौज भगी, गढ़के अन्दरसें राजा नारायण सिंह देख रहाथा, अजबी चमत्कार देखा, हैरतमें रहा, इतने मैं राजकुमार गंगसिंहने, आके मुजरा किया, और सब हाल कहा, अब राजा अपने सब पुत्रोंकों संग ले, विजय डंका बजाता, श्रीगुरू महाराजके पग मंडे, मोही नगरमें करवाये, जब धर्मोपदेश सुणा तो, राजा रोम २ सें फूलणे लगा, और जैनधर्मी महाजन हुआ, उन सब बेटोंके गोत्र हुए, बडे राजाके पुत्र मोही नगरसें, मोहीवाल कहलाये १ आलावत २ पालावत ३ दूधेडिया ४ गोय ५ थरावत ६ खुड़धा ७ टोडरमल ८ भाटिया ९ बांभी १० गिडिया ११ गोढ़ वाडा १२ पटवा १३ वीरीवत १४ गांग १५ गोध १६ मूल गच्छ खरतर

बोथरा, फोफलिया, दसाणी, वच्छावत, साह, मुकीम, जेणावत, डूंगराणी, साखा ९

श्रीजालोर महा गढके धणी देवडा वंशी चौहाण, महाराजा सामन्तसीजी उन्होंके, दो राणियां थी, जिनसें सगर १ वीरम दै २ और कान्हड ३ ऐसे तीन लड़के, और उमा नामकी एक लडकी हुई सामन्तसीजीके पाटपर, वीरमदेव बैठा, तब बडा पुत्र सगर आकर आबू पहाड़ देवलवाडेका राजा हुआ, कारण सगरकी माता देवलवाड़ेके राजा भीमसिंहकी लड़की थी, वो दूसरी राणीकी अणवणतसें, सगरको लेकर, अपने बापके पास जारही, भीमके पुत्र नहीं था, इस वास्ते दोहीतेकों राज्य देगया, एक सो चालीस गांम सगरके तालूके थे, उसका तेज चारों दिसामें फैल गया, बडा बहादुर दानेश्वरी पणेसें, नेकनामी पैदा की, उस वक्त चितोड़के राणा रतनसीपर, मालव देशका मालिक मुहम्मद बादशाह की, फौज चढ़ आई, राणा रतनसीनें, सगरकों बहादुर जाण, अपनी मदतको बुलाया, सगरके मुहम्मदसें युद्ध

१ दोहा, गिरि अढार आबूधणी, गढ़ जालोर दुरंग, तिहांसामन्तसी देवड़ो अमली माण अभंग १ २ उमा पिंगल राजाकों व्याही थी

हुआ, मुहम्मद भाग गया, राणे रतनसिंहनें, सगर राणा बीर सामन्त, ऐसा पद दिया, सगरनें मालव देश ताबे कर लिया, कुछ मुद्दतके बाद गुजरातका मालिक, वह लीमजात अहमद बादशाहनें, राणा सगरकों, कहला भेजा कि मेरी सलामी, और नौकरी मन्जूर कर, नहीं तो मालवा छीन लूंगा, सगरनें करडा जबाब देदिया, अब इन्होंके युद्ध हुआ, अहमद भग गया, गुजरात सगरनें अपने आधीन कर लिया, कुछ मुद्दत पीछै दिल्लीका बादशाह गौरी-साह, और राणा रतनसीके आपसमैं तनाजा हुआ, गौरीशाहकी फौज चित्तोड़ पर आई, उस समय राणेजीनें सगरकों बुलाया, सगरनें आपसमें मेल करा दिया, बादशाह से २२ लाख रुपये दण्डके लेकर, मालवा गुजरात सगरनें बादशाहको पीछे दे दिये, उस वक्त राणेजीनें सगरकी बुद्धि मानी, और सखावत देख सगरकों मंत्रीश्वरपद दिया, सगर पीछा देवल वाडेमें रहने लगा, इसका चरित्र बहुत है, ग्रन्थ बढणेके सबब नहीं लिखते हैं धर्म इन्होंका शैवमत था, सगरके पुत्र बोहित्थ देवल वाड़का राजा हुआ, बड़ा शूर वीर अकलवर था, सम्बत् इग्यारह सताणवेमें श्रीजिनदत्तसूरिः देवल वाड़ेमें पधारे, गुरूके पास राजा बोहित्थ आया, गुरूने धर्मोपदेश दिया, राजा बोहित्थ पूछने लगा, हे गुरू मुसल्मानोंनें, बडा जुल्म उठा रक्खा है, और ये बड़े जुल्मी है, सो हमारे राज्यकी क्या दशा होगी, गुरूनें कहा, जो तुम हमारे श्रावक बनो तो, सब वृत्तान्त कह देता हूं, बोहित्थ राजा बोला, गुरूमहा-राज श्रावक होनेसे, व्यापार करणा होगा, शस्त्र डाल देणे होंगे, राजापणा चला जायगा, गुरूनें कहा, हे राजा, तुमको संसारके स्वरूपका, ज्ञान नहीं, हाथीका कान, पींपलका पान, जैसा चञ्चल एसी राजलक्ष्मी चञ्चल है, चक्रवर्त्तके पुत्रके पास कर्म वस ५ घोड़े नहीं मिलते हैं, इतने राजपूत वसते हैं, क्रोड़ो, उसमैं राजा कितने हैं, वह विचारो, और मैं तुम्हारे शन्तानोंकों सदाके वास्ते, लक्ष्मी पुत्र बना देता हूं, इतना सुनते ही, बोहित्थ राजानें तत्वकों समझ, जैन धर्मको ग्रहण करा, बोहित्थ राजाकी राणी, बहु रंगदे, जिसके ८ पुत्र थे, बडा श्रीकर्ण १ जेसा २ जयमल ३ नान्हां ४ भीम-सिंह ५ पदमसिंह ६ सोमजी ७ पुण्यपाल ८ इस तरह सातों पुत्रों समेत,

१२ व्रत सम्यक्त्व युक्त ग्रहण करा, पद्मा बेटी थी, तब दादा श्री जिनदत्त सूरिःने आशीर्वाद दिया, हे राजा बोहित्थ जहांतक तेरा वंश मेरी आज्ञाके मुताबिक चलेगा, खरतर गच्छकी भक्ति रक्खेगा, उहांतक राज्यकार्यमें तेरी शन्तानका मानप्रतिष्ठावन्त, एक न एक, सदाके लिए रहेगा, ठाठका मालिक तेरा वंश, पाटका मालक राजा रहेगा धर्मसे वेमुख नहीं होंयगें उहांतक, लेकिन हे राजा तुम पर भवकी नींब लगावो, तुम्हारी आयु थोड़ी है, तब बोहित्थजीका बडा बेटा जिसनें जैन धर्म नहीं धारा, उसकों राज्य पदवीका युवराज बणाया, इस वक्त चित्तोड़के किल्लेपर, दिल्लीके बादशाहकी फौज आई, राणा रायमल बोहित्थ राजाकों अपनी सहायतापर बुलाया, बोहित्थ राजाने दादा साहिबके वचन याद किये, गुरूनें कहा, आयु थोड़ी है, सोमोंका आय बना है, तब सातों पुत्रोंकों, द्रव्य दे देकर, मारवाड, गुजरात, कच्छ देशकों जाणेका हुक्म दिया, और आप श्री कर्णकों देवल वाड़का राज्य-तिलक देकर, युद्धमें चढ़ गये, उहां चारों आहारका त्याग कर, बादशाहसें युद्ध किया, बादशाहकों भगा दिया, मगर आप ११ से सोनहरी बंधसे, युद्धमें अरिहन्तदेव और परम गुरू जिन दत्तसूरिःजीका, ध्यान करते, मरके व्यन्तरनिकायमें, बावन बीरोंमें हनुमन्त वीर हुए, जिन्होंकी शक्ति पूनरा सर गांममें प्रगट है, और जिन दत्तसूरिःजीकी सेवामें, हाजिर रहने लगा, इन सात पुत्रोंकी शन्तान बोहित्थरा, वड़की शाखा ज्यों धन और जनसें विस्तार पाये, अब राजा श्री कर्णके ४ पुत्र उत्पन्न हुए, समधर १ बीरदास २ हरीदास ३ और उद्धरण ४ श्रीकर्ण सूरबीर इसनें युद्ध बलसें मछेन्द्र गढ़का राज्य लेलिया, एक समय बादशाहका खजाना जा रहा था, तब पिताका वैर याद कर, खजाना लूंट लिया बादशाहकों, खबर हुई, तब फौज भेजी, उस लड़ाईमें राणा श्रीकर्ण काम आया, बादशाही फौजनें मछेन्द्र गढ़ कबजे किया, उस समय राणे श्रीकर्णकी राणी, रतनादे, कुछ रत्न संग ले, चार पुत्रोंको संग लेकर, अपने पीहर खेडीपुर जा रही, और अपने पुत्रोंको, कला अभ्यास कराते, २ पण्डित वणालिये, एक दिन रातको सोते हुए,

चारोंकों, पद्मावती देवीनें, स्वप्न दिया, कल यहां खरतर गच्छ नायक, श्री जिनेश्वर सूरिः आचार्य, आंयगे, उन्होंके पास तुम जैन धर्म अंगीकार करोगे तो, तुम पीछै राज्याधिकारी बन जाओगे, प्रभात समय, वोहि बात वणी, ये चारों श्रावक हो गये व्यापार करणे लगे, अगणित धन पैदा करा, अपने गोत्री वोहित्थरोंको संगले, सत्रुंजयका संघ निकाला, रस्तेमें गाम २ में जणे प्रति एकेक मोहर, चांदीका थाल सोपारियोंसे भरकर देते चले, तबसे फोफलिया कहलाये, समधरका पुत्र, तेजपाल उसने गुजरात देशका ठेका लिया, तीन लाख रुपये लगाकर श्री जिन कुशल सूरिःजीका, पाट महोत्सव किया, सत्रुंजयका संघ निकाला, खरतर वसीमें २७ अंगुलके बिंबकी प्रतिष्ठा कुशल सूरिसें करवाई, पिताकी तरह मोहर थाली ९ सेरका लड्डू वांटते, सात क्षेत्रोंमें बहुत द्रव्य लगाया, पाटणमें जिन मन्दिर धर्म शालायें, करवाई, तेजपालका वील्हा, वील्हाके २ पुत्र, कड़वा १ और धरण २ कडवा बड़ा दातार, पिताकी तरह संघ जीर्णोद्धार, लाणें वांटी, एक दिन कड़वा, चित्तोड़ गया, राणेजीनें सन्मान किया, अकस्मात् मांड़व गढ़का बादशाह मुसल्मान चित्तोड़पर चढ़ आया, तब राणेजीकी प्रार्थनासे, बादशाह सें मेल करा दिया, तब राणेजीनें, बहुतसा, धन, घोडा, सिरोपाव देकर, मंत्री बनाया, कुछदिन पीछै फिर गुजरात पाटण गये, राजानें पीछी पाटण देदी, गुजरातकी, जीवींहसा, वन्द करदी, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनराजसूरिःका, सवा लाख रुपये लगा कर, पाट महोत्सव करा, सं. १४३२ सत्रुंजयका संघ निकाला, सात क्षेत्रोंमें क्रोड़ों रुपये लगाये, कडवेजीके तीन पीढ़ीका नाम मिला नहीं, चोथी पीढ़ी जेसलजी हुए, उन्होंके वछराजजी, देवराज, हंसराज, तीन पुत्र हुए, बछराजजी अपने भाईयोंको संगले, मंडोवरके राव रिडमलजी, राठौड़के, मंत्री वण गये, राव रिड़मलजीको चित्तोड़के राणे कुम्भकर्णने धोखेसे मारडाला, मंत्री वछराज जोधेजीको हिकमतसें, मंडोवर ले आया, जोधेजीके मंत्री वछराज रहै, जोधेजीके नवरंगदे राणी साखलोंकी बेटीसे दो पुत्र पैदा हुए; बीका और बीदा किसी कारण

वस १४ प्रधान नामी पुरुषोंके संग बीकाजी योध पुरसें रवाना हुए १५४१ में राजतिलक राती घाटी पर विराजकर किल्ला डाला १५४५ में बीकानेर बसाया, मंत्री वछराजने, अपने नामसें, वछासर गांम वसाया, बछराजने, सत्रुंजय गिरनार तीर्थोंकी यात्रा करी, इनके करमसी, वरसिंह रत्ता, और नरसिंह तीन पुत्र हुए, देवराजके दस्सू, तेजा, भूणा, तीन पुत्र हुए, वछराज जीसें, बछावत कहलाये दस्सूजीके, दस्साणी इसतरह पुत्रोंके नामसें बोथरा गोत्रकी कई शाखा निकली, बीकाजीके पुत्रराव लूणकरणजीनें करमसी को मंत्री वणाया, मुंहते करमसीनें, करमसी सरगांम बसाया, बहुत श्री संघकों इकट्ठा करके, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनहंस सूरिःका पाट महोत्सव करा, सं. । १५७० में बीकानेरमें नेमनाथ स्वामीका सिखरवद्ध मन्दिर करवाया, जो भांडासाह के मन्दिरके पास विद्यमान है। सत्रुंजयका संघ निकाला, एक एक मोहर, एक एक थाल, पांचसेरका लड्डू घर २ प्रति, गांम २ में साधर्मियोंको देता, बीकानेर आया, रावलूणकरणजीके पाट, राव जैतसी जी, उन्होंनें करमसीके, छोटे भाई वरसिंह कों, अपना मंत्री बनाया, वह नारनोलके, लोदी हाजी खानके साथ, युद्ध कर, काम आया, वरसिंहके, मेघराज, नागराज, अमरसी, भोजराज, डूंगरसी (डूंगराणी) कहलाये, और हरिराज, ऐसे छह पुत्र हुए, मंत्री नागराज कों, चंपा नेरके बादशाह मुंदफरकी नोकरीमें रहणा पड़ा, उसनें बादशाहके हुक्मसें, संघ निकाला, तीर्थोंपर, गुजरातियोंकी गड़बड़ देख, भण्डारकी कूंची, कबजे करी, रस्तेमें, एक रुपया, एक थाल पांचसेरका लड्डू, साधर्मियोंकों देता, बीकानेर आया, १५८२ में बड़ा काल पड़ा, तब तीन लख रुपयोंका, अनाज, कंगालोंको, बांटा, एकदिन मोहता नागराजके, सिंधदेश देराउर नगरमें, दादा श्री जिनकुशलसूरिःजीके दर्शनकी, अभिलाषा हुई, संघ निकालणा विचारा, फिर चिन्ता हुई के, सिंधके रस्तेमें, जल मि-

---

१ काका कंधलजी २ रूपाजी ३ मांडणजी ४ मंडलाजी ५ नाथूजी ६ भाई जोगायत्तजी ७ बीदाजी ८ सांखला नापाजी ९ पडिहार बेलाजी १० वैदलाला लाखणसी ११ कोठारी महाजन चोथमल १२ वछावत वरसिंह १३ प्रोहित विक्रम १४ माहेश्वरी राठीसाहसालाजी.

लणा मुशकिल है, इस चिन्तामें निद्रा आगई, तब स्वप्नेमें, दादा गुरूनें, दर्शन दिया, और फरमाया के, हमारा थुंभ कराणा गाम गडालेमें, (नाल)में, फागुण वदि अमावस सोमवार कों, वडका दरखत फटके, सवापहर दिन चढे, देराउरके निज चरण यहां प्रगटे गें, सत्य स्वरूप जांणना, प्रभात समय, मुल्कोमें कागद भेजादिया, बहुत संघ इकठ्ठा हुआ, सं. १९८३ में, उस मुजब चरण प्रगटे, सब संघपर, आकाशसें, केशरकी वर्षा हुई, नागराजने थुंभ कराकर, चरण थापन करे राव वीकेजीके संग, मंडोवरसें, भैरू की मूर्ती आई थी, वह कौड़म देसरपर थापन करी थी, भैरूनें स्वप्नमैं, राव जैतसीजीकों, कहा शहरकी प्रजा, मेरी यात्रा करणे आवे, सो मेरे गुरू, दादासाहिबकी हाजरी मेला किया करे, कारण ९२ बीरोंके मालक दादा गुरुदेव है, राव जैतसीजीनें, भादवा सुदी १३ कों, वैसाही मेला भरवा दिया, अभी यात्रा हुआ करतीं है, नागराजमंत्रीनें, नग्गासर गांम बसाया, राव जैतसीजीके, पाट, राव कल्याणसीजी, विराजे, इन्होंनें नागराजके पुत्र, संग्रामसिंहको, अपना मंत्री बनाया, श्री जिनमाणिक्य सूरिःकों संग ले, सत्रुंजयादि तीर्थोंका संघ निकाला, एकएक रुपया, एक थाल लड्डूकी लांणी बांटते केशरिया नाथके दर्शन कर, चित्तोड़ आये, राणा उदयसिंहजीनें, बडा सन्मान दिया, बीकानेर नरेश बडे प्रशन्न हुए, संग्राम सिंहके करमचन्द पुत्र हुए, सो बडे बुद्धिमान, शूरवीर, दातार उत्पन्न हुए, ये महाराजा रायसिंहजीके मंत्री हुए, इन्होंके वर्त्तमानमें त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीकी, आणेकी वधाई करमचन्दको, मल्ल कवीनें दी, तब सवाक्रोड़का सिरो पांव, वधाई मैं, कर्मचन्द मुंहतेनें दियां, बडे महोत्सवसें बीकानेरमें सामेला किया श्री संघका कराया हुआ उपासरा, श्री चिन्तामणि स्वामीके मन्दिरके पासमें जोथा, सो घरबारी महात्माओंने, अपने घर

---

१ नवहाथी दिया नरेश सो तो मदसें मतवाले, नवें गांम बगसीस लोकनित आवे हाले। एराकीसौ पांच सो तो जगसगलो जाणे। सवाक्रोड़कों दान मल्ल कवि सच्च वखाणे १ कोई राव न राणा करसके, संग्राम नंदनतें किया, युग प्रधानके नाममें, करमचन्द इतना दिया, ॥ २ ॥

बणा लिये, तब मंत्रीनें, अपने घोडोंकी घुड़ शाल, माणक चौक (रांघड़ी) में थी, उहां आचार्यकों, चौमासे रक्खा, चौरासी गच्छके सब श्रावक, यहां आते थे, और धर्म ध्यान होता था, संसार त्यागके बहुत लोग साधु होगये, अनेक बाइयोंनें, साधवीपणा लिया, उनके धर्म ध्यानके लिए, अपनी गऊशाला दी, जो कि अब बडा उपासरा, व छोटा उपासराके नामसें, प्रसिद्ध है, सं। १६२९ का चतुर्मास संघके आग्रहसें, बीकानेरमें करा, प्रतिमा निंदक मतको फैलतेकों उपदेशद्वारा परास्त करते गुजरातके तरफ बिहार किया, कुछ दिनों बाद श्रीबीकानेरसे व्यापारी बन कर्मचन्द लाहोर नगरमें बादशाह अकब्बरशाहके पास गया एक दिन बादशाहने करमचन्दसे पूँछा की करमचन्द धर्म सबसें बडा कौन है करमचन्द बादशाहका आशय समझ गया क्योंके बुद्धिका सागर परम जैनतत्वका जाणकार सम्यक्त्वी था तब बोला (दोहा) बडाधर्म महमंदका, तातें शिव कछु न्यून, एकण राजा बाहिरो, सबसें जैन जबून, ।१। बादशाह अकब्बर, इस दोहेके अर्थको खूब समझ गया के, करमचन्द बडा सायर, जैनधर्मका एक नररत्न है, तब पूच्छा अय करमचन्द तुम किस अबलियाके, मुरीद हो, करमचन्द बोला, हुजूर सिलामत श्रीजिनचन्द्रसूरिःका, बादशाहको जैनधर्म सुणनेकी और ऐसे पुरुषके दर्शनकी चाह भई, तब अपने उमरावोंके संग, विनती फुरमाण खींस कलम लिख भेजी, गुरू विचरते २, लाहोर पधारे, बडे हगामसें बादशाहने सन्मुख आकर कदम पोशी करी, गुरूनें धर्मोपदेश करा, उस दिनसें बादशाहको, धर्म रुचि उत्पन्न हुई, हमेश व्याख्यान सुणते २ मदिरामांस, तथा कन्द मूलका, यावज्जीव त्याग करा हिंसाका त्याग अमलदारीमें करवाया, यावज्जीव सबपाणीका त्याग कर, एक गंगाजल बरताव करणेको बाकी रक्खा, पर-स्त्रीका यावज्जीव त्याग करा, जैनधर्मकों सब धर्मोंसे श्रेष्ठ समझणे लगा, ऐसी सम्यक्त्वकी श्रद्धा, प्रगट हुई, । तब बादशाहनें गुरू अपना मान कर चँवर छत्रादि आपके सब राजचिह्न नजर किये, गुरूनें कहा, त्यागियोंको ये उपाधि नहीं चाहिये, वाद० आपका त्याग सदा कायम है, आपने फरमाया मूर्छा है सो परिग्रह है, आप मूर्छा रहित हैं, क्योंके देव तत्वका

स्वरूप आप दरसाते, तीर्थंकर परमात्माके आठ प्रातिहार्य, चौतीश अतिशय बतलाये, जैसे वे, देवताके समवशरण सोनेके कमलोंपर चलणे आदि, विभूति रहते, तीर्थंकर जैसे वीतराग है, तैसे मैं मेरी भक्तिसें, इस राज्य चिन्होंसें, उपासना कर, जन्म सफल मानूंगा, आप तो दुनियांसे तार्क हो, लेकिन बादशाह राजादिक सेठ सामन्तोंके गुरू, परम चमत्कारी प्रभावीकपणेसें, आपकों जिन पद है, (ठाणांसूत्रमें ९ जिन फरमाया है) आप धर्मकी जहाज हो सदा मदके लिए, आपके शन्तानोंके साथ, मेरी भक्तिका निशाण कायम रहै, तब करमचन्दनें अरज करी, हे पूज्य, राजा भियोग है, जिसपर भी जैन धर्म की दुनिया मैं आडम्बर महिमा दीखेगी सब श्री संघ इस बातसें, आनन्द मानेंगें, तब गुरूनें मौन करा, बादशाह इन्होंके शिष्य श्री जिनसिंह सूरिःको, तखत बिठलाकर राज्य चिन्ह संग कर दिये, और मुल्कों मैं वन्दा वणीका फुरमाण लिखा दिया, माही मुरा तब दिया, ये अकबरका मुरातब बीकानेरके बडे उपासरेमें, करम चन्दनें भेजा दिया, श्री गुरू महाराजके साधु लब्धिवंतनें काजी की टोपी आकाशमें ठहरी हुई को, ओघेसें उतारी, तीन बकरी बताई, अमावस की पूनम कर दिखलाई, इत्यादि चमत्कार दिखलाकर, सब तीर्थोंकी रक्षा के लिये जगह २ बादशाहनें अपने सूबेदार जागीर दारोंपर हुक्मनामा भेजा दिया और हिन्दमें अमारी उद्घोषणा छ महिना एक वर्षके वास्ते जाहिर करा चैत भादवा आसोज चौदस आठम अमावस पूनम हुमायूंका जन्म दिन मरणेका दिन अपना जन्म दिन राज्यका दिन इत्यादि मिला करके तथा हुमायूं बादशाहनें बलात्कार आर्य लोकोंकों मुसलमान वणाना सुरू कराथा वह अकब्बर के दिलसें गुरूनें मिटादिया बादशाह हुमायूंने सब भेष धारियोंकों बलात्कार गृहस्थी बनानेकी आज्ञा दीथी इसमें स्वामी, सन्यासी, वैरागी, जती लोग, बहुतसे घरबारी बन गये थे, आत्मार्थी त्यागी लोकोंने बहुतोंने प्राणत्याग दिया था, बहुत त्यागी रहनेवालोंने शिर पर वस्त्र बांध लंगोटबद्ध महात्मा होगये थे, इत्यादिक जुल्म करमचन्दके कहणे मुजब, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीनें बादशाहको उपदेश दे देकर, बन्द करवादिये, सब मतोंके अवलियोंसें, सत्संग करणा, अच्छा समझ,

उन्होंकी संगत करणे लगा, आज्ञा दी के, कोई धर्मवाला होय, उस पर बलात्कार, कोई अत्याचार हिमायतीवाला, नहीं कर सकेगा, सच्च है, ऐसे मंत्री और ऐसे गुरू महाराजकी शिक्षा जबसे अमल दरवलमें लाया बस इसही बातोंसें अकब्बर बादशाहकी नेक नामी सदाके लिए हिन्दमें स्थिर हुई प्रजाके सुखकारी नियम जो जो गुरूनें बादशाहसें करवाये सो लिखें तो एक बड़ासा ग्रंथ बण जावे, इतना है, इस सब बातोंका मूल कारण बच्छावत बोथरा करमचन्द था, इसवास्ते इन्होंका इतिहास विस्तारसें लिखा है, ये जमाना भस्म रासीग्रह भगवान वीरके, जन्मराशी पर, जो निर्वाण समय आया था वह उतरनेका था, उक्त महाराजानें जैनधर्मका उदय-पूजा सत्कार प्रगट करा, तबसें, दो फिरका साधुओंमें होगया एकतो सिद्धपुत्र क्षुल्लक जती धर्मोपदेशी पंडित, तथा श्रीजिन चन्द्र सूरिःके खरतर गच्छके सब पंचमहाव्रती जैनसाधु इसके बाद तपागच्छ नायक श्री-हीर विजय सूरिः दिल्ली पधारे तब भानुचंद्रजी सिद्ध चन्द्रजी यति प्रमुखनें कलाकौशलतासे बादसाहको प्रशन्न करके ई कार्य उपगारके कराये, सूर्य सहस्त्रनाम कल्पनकर बादसाहको नित्य सुनाने आदि इसलिये केइफरमान भी लिखाये पांच पहाडोंके हिफाजतका फुरमाण हीर विजयसूरिः जीकों लिखवा दिया जिनचन्द्र सूरिःनें तपागच्छी सिद्धिचंद्रयतीको बादसाह अकबरके पुत्र साहसलेमनें दुराचारके कारण कैदकर दियाथा तब आप बादसाहकों समझा कर कैदसे छुड़ाया, ऐसे उपगारी हुये, खरतर गच्छकी गुर्वावलीमें समय सुन्दरजीने लिखा है, फिर विजय दानसूरिःके शिष्य धर्म सागरजीने स्वकल्पित ग्रंथमें खरतर गच्छपर केइ असत्य आक्षेप लिखे, तब जिन चंद्र-सूरिः पाटण पधार उस समयके विद्यमान उपाध्याय वावकादि अन्य २ गच्छ वालोंको एकत्रित कर उहां रहे धर्म सागरजीको बुलाया लेकिन मृषा-वादी होनेसे सभा समक्ष नहीं आये केई दिन सभारही, आखर असत्यवादी समझ खरतर गच्छको विजयपत्र सर्व विद्वान् साधु मंडलीने लिखा, ताम्र-पत्र पाटण वाडी पार्श्वनाथजीके मंदिर ज्ञानभण्डारमें रखा, ये सर्व वृत्तांत समाचारी शतकमें लिखा है, प्रथम चलकर खरतरगच्छ वालोंनें कभीभी

विषवादरूप शब्द नहीं लिखा जब तपोनें आक्षेप करा तब उत्तर देना बाजबी समझ कर दिया, हीर विजय सूरिः भी, त्यागी, वैरागी, आत्मार्थी, जैनधर्मके उद्योत् कारी, प्रगट, हुए, उन्होंका ज्यादह, विहार, गुजरात, गोढ़वाड़में रहा, ये दोनों आचार्य चन्द्र सूर्यसम उदय, २ पूजा सत्कार के, कराणे वाले, प्रगट, हुए, इन्होंकाभी दो फिरका चलता रहा, आपसमें बड़ा संप रहा, खरतर तपोंके, बादशाहके माननीय होनेसें, जती लोकोंका चमत्कार देख २ के, सिद्ध पुत्र जतीयोंको, राजालोक गाम जागीर मन्दिर उपासरेके हिफाजत करणें, शिष्योंको विद्या पढाणेको, देते गये, सो अभीभी विद्यमान है, वच्छावत कर्मचन्दने बीकानेरमें सत्ताईश गवाड, गांम सारणि, धोत, लाहण, वगैरह जातीके कायदे बांधे, मुसल्मान समसेरखांनें, जब सिरोही इलाका लूंटा, उस लूंटमेंसें, १९०० जिन प्रतिमा सर्व धातुकी मिली, सो करमचन्दनें बीकानेरमें चिन्तामणिजीके मन्दिरमें, धरवाई, सो अभी भी बड़े कष्ट उपद्रवादि दूर करणेको, बाहिर निकाली जाती हैं, पर्यूषण पर्वमें ८ दिन, कसाई, भडभूंजे आदिकारुओंके, आरम्भ बन्द करके, लाग बांध दिया, सो अभीभी जाहिरी है, सोलेसय ३९ का काल पड़ा, उसमें करमचन्द बच्छावतनें, कंगालोंको, तथा जैनी भाइयोंको, गरीब जाणके, साल भरका गुजरान दिया था, महात्मा लोगोंने, जिन चन्द्रसूरिः की, अवज्ञा करी थी, महाजनोंकी वंसावली पास रहणेसे, मस्त हो रहे थे, भवितब्यताके वस, ये काम बुरा हुआ, करमचन्दनें सोचा, जब लोक बही बट्टोंको धन देते रहेंगे तो, जैन धर्मके आदि कारण जती साधुओंका, बहुमान लोक नहीं करेंगे, ऐसा विचार कर, धोखेबाजीसें, गृहस्थी महात्माओंकों, इकट्ठे करके, वंशावलीकी बहिये माणक चौकके कूए में गिरादी, उन महात्मा गृहस्थियोंका, रकीना, औसर व्याहोंमें बागवाड़ी वगैरह का, बांध दिया, वह भी मजूरी करे तो, जो जो वंशावली, भण्डारोंमें, तथा श्री पूज्यजी महाराजके, पुस्तकालयमें, तथा दूरदेशी महात्माओंके पास रहगई, सो हाजर है, परन्तु किसी वंश वालोंके नाम, ओस वालोंके महात्मा लोकोंके पास सें न मालूम, किस तरह पर, भाट लोकोंके पास दस ९ पीढीके

हाथ लगणेसें, भाटोंने ओसवालोंपर सिक्का जमाणा प्रारम्भ करा है, और अश्वपत लोक जैन धर्म धरानेवाले जती लोकोंसे, हरवातपर मुंह मचकोड़ते हैं, और भाटोंके लिए कडा कंठी मोती दुशाले देकर, इनायतीकी खूबी दिखाते हैं, जती महात्मा तो कुपात्र ठहरगये, मांस, मदिरा खाणेपीणेवाले भाट लोकोंका दान, सुपात्रों में, दरज हुआ, बाहरे पंचम आराकलियुग, तेरे विना, ये दशा कोन बनाता, अश्वपती महाजनोंकी वंशावली जती महात्मा बिना अन्यके पास होय सो, बिल्कुल गलत झूठी है, 'अश्वपत लोकोंको, इस बातका निर्धार करना चाहिए, आखिरकों, बादशाहनें, करम चन्दकों, हमेशा अपणेपास रखणा शुरू करा, तब किसी कारणसें, राजा रायसिंहजी; गुस्से होगये, सूरसिंहजी जब गद्दी नशीन हो, दिल्ली पधारे, तब करमचन्दके पुत्र पोतादिक परिवार बालोंको, विश्वास दे बीकानेर लाये इन्होंके पास, सातसय योद्धा राजपूत थे, एका एक सूरसिंहजीनें इन्होंको मारणे को, सेन्या भेजी, तब उन्होंके पुत्र भागचन्द लक्ष्मीचन्दनें अपणे हाथसे, सब परिवारकों, कतलकर, सातसय राजपूतों संग, केशरिया वागे पहन, युद्ध करके काम आये, इन्होंका चाकर रगतिया झूझार हुआ सो, भोजक लोकरगतिया वीरकर के पूजते हैं, एक बहु गर्भवंती, किसनगढ़, अपणे पीहर चली गई थी उससें जो पुत्र हुआ, उनकी शन्तान, किशनगढ़ उदयपुर वगैरहोमें वसते हैं, वाकी-बछावत मारवाड़ वगैरह बीकानेरके इलाकोंमें, वसते हैं, पीछै सूरसिंहजीनें उन्होंकी जड़ निकालनेसें, माणक चौकका नाम, रांघडी रक्खा, कई दिनोंवाद कोई बादशाही काम पडा, तब राजा इन्होंका स्याम धर्मीपणा बिचारके, बहुत पछताये, आखिरकों, एक पुत्र खेमराजकों, बुलाकर, खींयासर गाम उसके नामसें वसाया, अठ्ठारह हजार वीघा जमीन देकर, बडे कारखानेमें, वच्छावतोंका हाजर रहणा हमें सके लिये कायम रक्खा, ये जमीन रिणी गांमके तालुकेमें है, वोथरोंकी मूलशाखा ९ प्रतिशाखे अनेक हैं, मूल गुरू गच्छ खरतर, वोथरा १ फोफलिया २ वछावत ३ दसाणी ४ डूंगराणी ५ मुकीम ६ शाह ७ रत्ताणी ८ जैनावत, ९ (दोहा) बड़साखा ज्यों विस्तरो, बोहित्थ राणा वंश, दिन २ प्रति चढ़तीकला, अनधन कीर्ति प्रशंस, ॥ १ ॥

(गेहलड़ा गोत्र)

विक्रम सं. १५९२ खीचीगहलोत राजपूत, गिरधर सिंहके पास पिता बहुत धन छोड़गया था, लेकिन ऐश आरामदातारी चारण भाटडूं मलोकोंको करता, सब धन उडादिया, आखिर बहुत तंग हो गया, स्यामी, जोगी, फकडुंके पासकीमियागिरी, ढूंढता फिरता है, एक दिन, खरतर गच्छाचार्य, श्री जिन हंस सूरिः को, बहुत साधुओंके बीच, खजवाणा गाममें विराजमान देखं, भक्तिसें वन्दन कर बैठ गया, अवसर पाकर अपनी सब व्यवस्था कहके बोला, हे दीन दयाल, धन विना जगतमें गृहस्थीकों जीनेसें मरणा अच्छा हैं, गुरूनें कहा सत्य है (दोहा) चढ़ उत्तंग फिर भुय पतन, सेा उत्तंग नहीं कूप, जो सुखमें फिर दुखवसे, सो सुखही दुख-रूप ॥ १ ॥ इसवास्ते सुपात्र विवेकीके पास धन होता है तेा, वह उस धनसें स्वर्ग मोक्षकी नींव डालता है, और जो बुद्धि हीन, धन पाकर, सुकृत नहिं संचते बंबूलके वृक्षरूप कुपात्रोंको दान देते हैं, वो, इस जन्म, व पर-जन्ममें, दुखी होते हैं जिन मन्दिर कराणा १ जिनराजकी मूर्तियें भरवा कर अंजन शलाका कराणी, चैत्य प्रतिष्ठा कराणी, २ केवली कथित सिद्धान्त लिखाणा, पाठशाला स्थापन कराणा, विद्यार्थियोंकों सब तरहसें सहायता देणी, दीन हीनका उद्धार करणा, ऐसे सुकृतके अनेक भेद हैं, तब गिर-धर बोला, महाराज अब जो मेरे पास धन हो जाय तो, ये सब काम करूं, गुरूनें कहा, जो तूं जिनधर्मी श्रावक हो जावे तो, धन फिर हो जाता है, इसने गुरूसें जिनधर्म अङ्गीकार करा, तब जिन हंस सूरिःने, वास चूर्ण मंत्र कर दिया कि, आज रात्रिको कुम्भारके ईंटके पजावेपर, ये डाल देणा, भाज्ञ योगसें बाहिर ५ हजार इटोंका छोटा पजावा दिखाई दिया, वास चूर्ण उसमें डालदिया, वह सोनेकी होगई, चांदकी चांदनीमें, रातोरात, घरपर उठा लाया, ईंटोंके मालिककों, दुगणा मोल देकर, खुश कर दिया, गिरधरसाहके पुत्र, गेलाजी, भोला था, अब तो इन्होंके राजकाज लगगया, धर्ममें बहुत द्रव्य लगाया, वाद गेला साहकों शहरके लोकोंने कहा, चिणेका दाणा तेा, सबोंके घोड़े खाते हैं, आपके घोडोंको तेा, मोहर खिलाणी चाहिये, तब

गोला साहनें, मोहरोंसे तोबरे भरके चढ़ा दिये, तबसें लोक गेलड़ा २, कहन लगे, इन्होंके सातमें पीढी एक पुरुषकों, राठोडोनें किसी अपराधमें पकड़ कर, सब धन छीन लिया, तब वह दुखी हुआ, उसकों नागोरमें, ज्योतिष निमित्तसें, एक जतीनें, मुहुर्त बतलाया, इस वक्त तूं पूर्व देशमें चला जा, राजा साम्राट हो जायगा, ये निकला, सात कोस पर जाके, दरखत की छाह में सो गया, नींद आगई, सूर्य की धूप मुंह पर आई, तब एक सांप निकल के, छांह करके सूर्यके तरफ रहा, इतनेमें ये जागा, सांपको देख कर घबराया, फिर पीछा आया, जतीजीनें देख कर कहा, अरे पीछा क्यों आया, तब वह बोला ये स्वरूप वणा, जतीजीनें कहा, अरे तूं छत्रपती होता था, वह शकुन सांपनें दिखाया था, अभी खेह भरा चलाजा, राजा तो नहीं होगा, तो भी राजा महाराजा बादशाहोंका श्रीमन्त माननीय हो जायगा, ये चलता २, तीन महीनेसें मुरसिदाबाद पहुंचा, क्रम २ व्यापारसें, बढ़ते २ जहाजोंमें माल भेजने लगा, आखिरको खाली नाव पीछी आती, तोफानमें आई, तब नावड़ियोंने भरतीमें पत्थर डाला, वह सब पन्नारत्न था उस दिनसें, असंक्षा द्रव्यपती होगया, इन्होंके पुत्र खुशाल रायजीको दिल्लीके बादशाह ओरंगजेबने, जगत्सेठकी पदवी बखसी, उस पीछै खरतर गच्छाचार्य श्री जिन चन्द्र सूरिःकों सं. १७२२ में सुरसिदाबाद विनतीसें बुलाये, महाराजनें उपदेश दिया, समेत शिखर पहाड़की यात्रा जाते रस्तेमें, प्रजाकों चोरोंका भय, रस्ता मिले नहीं इस लिए संघको दर्शन सुलभ होना चाहिये, तब सेठ साहबनें, झाड़ी झंगीमें साफ रस्ता ६ कोस पर चौकी पहरो, बिठलाये, ऊपरवीसों भगवानके जहां चरण नहीं थे उहां पधराये, और जातभाईजी आवै, उसकों श्रीमन्त वणा देना, बड़ी भक्ति अनेक जिन मन्दिर, घर देरासर, कसौटीके पत्थरसें बनाकर नवरत्नोंके बिंब स्थापन किये, ये मन्दिर हमने विक्रम सं० १९२३ की सालमें, आंखोंसे देखा था, उनकी बदौलत, मुर्शिदाबाद, महमापुर, महाजन टोली अजीमगञ्ज, बालूचर, बगैरह गंजोंमें एक हजार लक्षाधिपति महाजनोंको बना कर बसाया। बीकानेरके गांवोंके, वासिन्दे, जो जो, गरीब महा-

जन जगत सेठजीके पास पहुंचा, उसे निश्चयही श्रीमन्त बना दिया। अंग्रेज सरकारको जगत सेठ साहबकी बदौलत बादशाही इज्जत रखनी हुई। नागपुरके मरेठे राजाको अर्बोंकी जबाहिरात, जगतसेठजीने, बख्शी। बनारसमें राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, जो अंग्रेज सरकारके माननीय हो गये, इन्हीके वंशके थे जिनने कई इतिहास बनाये हैं,। मूल गुरु मच्छ खरतर गेलड़ा गोत्र कुचेरा गांमके चारोंतरफ बहुत वसते हैं।

लोढागोत्र २

लोढागोत्र दो हैं। एक लोढा तो चौहाणोंसे उत्पन्न हुए हैं; पृथ्वीराज चौहाणका सूबेदार लाखण सिंह देवडाचोहाणके पुत्र नहीं था, तब रविप्रभसूरिजीरुद्र पल्ली खरतरसे निकलीं शाखावालोंसे, लाखण सिंहने, पुत्रके वास्ते दुख निवेदन करा। तब गुरुजीने कहा कि जो तूं जैनधर्मी हमारा श्रावक बनै तो तेरे पुत्र हो लेकिन कपटसे जैनधर्म ग्रहण करा जिससे पुत्र हुआ वह लोढे जैसा था, तब राजा पृथ्वी राजनें कहा, अरे मूर्ख ये तेरे कपटका फल है, तब लाखणसी, गुरू कों ढूंढता २ बड नगरमें गया, अपणा कपट कहा, गुरू बड वृक्षके नीचे उतरे थे, उस बड़में रही जो देवी, वह बड़लाई, बोलीके, निशल्य होकर, जैन धर्म कबूलकर, पुत्रके हाथ पैर सब गुरूके आशीर्वादसें हो जांयगे, तब इसनें ऐसाही करा सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत लिये, गुरूनें उस लड़के पर वास क्षेप करा सब अंगोपाङ्ग प्रगटहुए, उसका लोढ़ा वंश थापन करा, इन लोढोंकी चार शाखा है, टोडर मल्लोत १ छजमल्लोत २ रतनपालोत ३ भाव सिंघोत ४ टोडर मल्ल छजमलकों दिल्लीमें बादशाहने साहकी पदवी दीथी, राजा टोडर मोजी शौखीनथासो टोडरमलजीको स्त्रियें व्याहमें गीत गाने लगी, माता बड़लाई पूजते हैं, लोढोंका, जोधपुरमें, रावकी पदवी है, पुत्र हुए पीछे इन लोढोंकी स्त्री, बड़लाई पूजेबिगर बाहर नहीं निकलती, ब्याहमें कुम्मारका चाक नहीं पूजते, कालीभेंस बकरी नहीं रखते, झडूला भी पूत्रोंके माताका रखते हैं मूल गच्छ रुद्र पल्ली खरतर, वेगच्छ विच्छेद हुआ बादसम्बत् सतरहसेंमें केइयोंने सपागच्छ कबूल करा बाकी खरतरमें है

(लोढा दूसरे)

लोढामहेश्वरी बाबा विक्रम सम्वत् हजारकी सालमें गुरुमहाराज श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेश सुणकर जैनधर्मका, श्रावक हुआ, ये फकत्त दशहरा पूजते हैं, पाटीकी पूजा करते हैं इन लोढोंका अभी भी गच्छ खरतर है, मेड़ता जिल्लेमे इन्होंके घर हैं, और सोझत इलाकेमैं है

(बोरड़ गोत्र)

आंबागढ़में पमाररराजपूत राव बोरड़ राज्य करता है, सं. ११७९ में खरतर गच्छाचार्य, श्रीजिनदत्तसूरिःजी, उस नगरमें पधारे राजा शिवजीका भक्त था, सो जोगी सन्यासी जितने आवे, उनसें राजा ऐसीही बिनती करे के, मुझको, स्वामी शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, लेकिन कोईभी करा नहीं सक्का, एक दिन राजा श्रीजिनदत्तसूरिजीकी महिमा सुणके, गुरूके पास आया और वन्दनकर, यह बिनती करीके हे गुरू मुझे शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, तंब गुरू कहणे लगे, अगर जो तूं शिवजीका कहा बचन माने तो, प्रत्यक्ष शिवजीसें मिलादूं, राजानें प्रशन्न होय, यह बात मानी, तब जहां शिवजीका लिङ्ग था, उहां गुरू पधारे और राव बोरड़कों कहा, हे राजा अब तूं एकाग्र दृष्टि शिवजीके लिङ्ग पररख, राजानें समाधि लगाय एकाग्र दृष्टि धरी, इतनेमें लिङ्गमेंसे प्रथम धुंआं निकलना शुरू हुआ, बाद शिवजी भस्मी लगाये, नांदियेपर सवार, अर्धांगा पारवतीकों लिये, त्रिशूल हाथमें लिए हुए, मूर्तिके अन्दरसें, निकले, और राजा बोरड़को दर्शन दिया, और मांग २ ऐसा वचन मुखसें कहने लगे तब रावराजा बोरड़ने, हाथ जोड़ बिनती करी, हे नाथ, अन, धन, जन सब आपकी कृपासें हाजिर है, लेकिन जन्म मरणसें छूटूं ऐसा जो परमपद है वो मुक्ति मेरेकों प्रदान करो, वेर २ यही बिनती है, तब शिवजी, हड़ २ हंसने लगे, और बोले, हे राजा, मेंनें आपनेंही मुक्ति नहीं पाई, (दोहा) जाहीतें कछु पाइये, कीजेताकी आस। रीते सरवर पे गये कैसें बुझे पियास ॥ १ ॥ हे राजा सांसारिक कार्य जो कोई मेरेसें होने लायक होय सो मैं, पूरा कर सक्काहूं, भाग्यसे उपरान्त, देवता भी देणेमें समर्थ नहीं, और मुक्तिका

अर्थ, है राजा कर्मोका छूटणा वह तो मोहके क्षय करणेसें कर्म जीवसें छूटता है, अगर ऐसी जो तेरी मुक्ति पानेकी इच्छा है तो, तेरी पीठपर खड़े आत्मार्थी जितेन्द्री परम गुरूके वचनानुसार चल, क्रमसें जरूर मुक्त हो जायगा, ऐसा कह शिवजी एक कोटि रत्न दिखलाकर, अन्तर ध्यान हुए, तब राजानें चकित होकर, गुरूसें मुक्तिका स्वरूप पूछणे लगा, तब गुरूनें, नव तत्वका उपदेश दिया, राजानें अपने सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा, इन्होंसे बोरड़ गोत्र प्रसिद्ध हुआ, मूल गच्छ खरतर,

(नाहर गोत्र)

पहले नागोरके पास, मुंधाड नगर मूंधडा महेश्वरियोंनें बसाया, उस जगह मुंधड देवीका मन्दिर है। उस देवीके, मूंधडे महेश्वरी शैवमती, सर्व भक्त बसते हैं, उन्हीमेंसे भीमका पुत्र देपाल, प्रल्हाद, कूप नगरके राजाका, प्रधान हुआ, और वह धनसें श्रीमंत बनगया, उस देपालके, एक अत्यन्त प्रिय पुत्र था, जिससे उसका नाम आसधीर रक्खा, । उस नगरमें, श्रीलघुशान्ति स्तोत्रके कर्ता मान देवसूरिः आचार्य आये, । सूंडाजी नामका उनका शिष्य गोचरी गया, मगर शैवमती लोगोंनें, जैनधर्मसे द्वेष रखनेके कारण, आहार पानी नहीं दिया, तब सूंडानें गुरूसें सब वृत्तान्त कहा, तब गुरू विहार करने लगे, इस समय शासन देवी आकर बोली, हे गुरू यहां धर्मका लाभ होगा, आप यहां एक दिन जप तप साधो, । तब गुरू शिष्य तेला कर बैठ गये, । इतनेमें शासन देवतानें, देपालके पुत्र आसधीरको उहांसे प्रछन्न पणे उठाकर, लेगई, । जब माताने बालकको नहीं देखा तब सर्वत्र खबर करी, मगर पता नहीं चला, । देपाल पुत्र प्रेमसे विमूढ होगया, । शिष्य जंगल गया था, उसको देपाल बहुत मनुष्योंके साथ रोता पीटता रास्तेमें मिला, उसे रंजमें देखकर, चेलेनें पूछा, तब सब हाल भृत्योंनें, कह सुनाया, । चेला बोला, मेरे गुरूके पास जावो, वह अतिशय चमत्कारी हैं निश्चय तेरा पुत्र बतला देंगे, । सच है गरज दुनियामें, अजब वस्तु है, (दोहा) गरज २ सब कोई करे, गरज होत घनघोर । बिना गरज बोले नहीं, जंगलहूको मोर, । १ मतलबरी मनु-

हार, नेतजिमावे चूरमो, बिन मतलब कोई यार, राबन पावे राजिया, । १ ।
यह वचन सुनते ही, सूंडाजीके चरणोंमें गिरा, देपाल बड़ा दुखी होकर कहने लगा, हे गुरू परमात्मा पुत्रके बिना मेरा, और स्त्रीका, प्राण निकल जायगा, इसवास्ते आप कृपाकरके, बडे गुरू महाराजके पास ले चलो, तब सूंडाजी संग लेकर गुरूके पास आए, गुरूसें देपाल मंत्रीनें, बड़े दीनश्वरसें निवेदन करा तब गुरू बोले, जो तूं, वृहद्गच्छका जैनी श्रावक बने तो, पुत्र मिला देता हूं, देपालनें कहा इसी समय, गुरूनें कहा, पुत्र मिले पीछै तब गुरूनें कहा जातूं, दक्षिण दिशाके उद्यानमें, तेरा पुत्र सुखसें, बैठा है, देपाल और शिष्य व बहुत लोग, उसके संग गये, आगे शासन देवी सिंहणीके रूपसें, उस लड़केको स्तनपान करा रही है, देखते ही, देपाल डरता हुआ, पीछै आकर गुरूसें अरज करी, तब गुरूनें कहा, तूं निशंक चला जा, उस नाहरीकों कहना श्रीमान देवसूरिःका, मैं श्रावक हूं, मेरा पुत्र पीछादे, इतना कहते ही, तुझें पुत्र दे देगी, इतना सुण, साहसकर गया, तब नाहरणी गोदमें पुत्रको लेकर बैठी है, देपाल हिम्मत वचन गुरूसें, नाहरणी पास जाके, गुरूके वचन कह सुनाये, तब नाहरणीनें, देपालकों पुत्र पीछा दिया, और आकाशमें जय २ ध्वनि होने लगी, बहुत हर्षके साथ अपना बडा भाग्योदय मानता, सपरिवार, गुरूके पास जाकर, जैनधर्मी भया, गुरूनें उस आसधीरका, नाहर गोत्र स्थापित करा मानदेव सूरि कोटिक गच्छ चन्द्र कुल वज्रशाखाके आचार्य थे, इन्होंके शन्तान जिनेश्वर सूरिकों खरतर विरुद मिला, मूलगच्छ खरतर देवी इन्होंकी शासन देवी व्याघ्री है, बीकानेरादिक मारवाड़के नाहर अभी भी खरतर गच्छमें है ।

(छाजेहड़ गोत्र)

राठौड़ राजपूत धांधल रामदेव १ पुत्र काजल, संवत विक्रम १२१९ में श्रीजिनचन्द्र सूरिः मणिधारी खरतर गच्छा चार्य, सबीयाण गढ़में पधारे,

१ विद्यमान समयमें सताब चन्दजी नाहरके पुत्र मुरसिदा बादमें बडे श्रीमन्त दातार, अंग्रेज सरकारके मान्नीय, बुद्धिवन्त, मुन्नीलाल पूरणचन्द वगैरह जयवन्त हैं, ।

तब काजलनें, गुरूसें बिनती करी के, गुरू महाराज दुनियांमें लोग रसायण सिद्धि सोना वगैरह होती बतलाते हैं, यह बात सच्च है या झूठ, गुरूनें कहा, हम त्यागी लोकोंको, धर्म क्रियाकों वर्जके और नाटक चेटक करना योग्य नहीं, तब काजल बोला, जिस तरह धर्मकी वृद्धि होय, और में इस विद्याकों एकबार अपनी आखोंसे देखलूं, ऐसी कृपा करो, आपके गुरू श्रीजिन दत्तसूरिःजी तो, ऐसे चमत्कारी होगये, इतना चमत्कार तो, आप ही बतलावो, तब गुरू बोले, जो तूं जैन धर्म अंगीकार कर, हमारा श्रावक बणे तो, ये काम भी हो सक्ता है, तब काजल अपने पितासें, पूछणें गया, तब रामदेव बोला, हे पुत्र, राठौड़ जात, खरतरगच्छके, चेले हैं, तूं अहो भाग्य समझ सो गुरू तुझे जैनधर्म धराते हैं,तब आकर बोला,लो गुरूमहाराज जैनधमा करो, गुरूनें नवतत्व सिखाकर, श्रावक बनाया पीछै दीपमालिकाकी रात्रिकों, श्रीलक्ष्मी महाविद्यासे, मंत्र कर, काजलकों, बास चूर्ण दिया, और बोले, जा इतना बास चूर्ण जिसपर डालेगा, वो सोना होजायगा, लेकिन आजही रातकों, प्रह उगतेमें, लक्ष्मी देवीका विसर्जन कर दूंगा, फिर नहीं होगा, काजलकों तो, यह चमत्कार ही देखणा था, उपाश्रयसें निकलकर, मन्दिर श्रीजिनराजके छाजोंपर, कुछ बास चूर्ण डाल दिया, कुछ देवीके मन्दिरके छाजोंपर कुछ अपने घरके छाजोंपर डालकर घरमें जाके सो रहा, मूंअन्धारे उठके, श्रीजिनमन्दिरमें जाके, दर्शनकर, बाहर निकला, इतनेहीमें, बहुतसे लोक, रस्ते निकलते, बोले, अरे यह सोनेके छाजे, मन्दिरके किसनें चढ़ाये, काजल देख २, बहुत प्रशन्न हुआ, इतनेमें बहुतसें लोक आकर, कहने लगे, रामदेव काजल राठौडके घरके, तथा देवीके मन्दिरके, जैनमन्दिरके, तीनों छाजे सोनेके हैं, तब काजल बोला, अरे लोकों, ये महिमा सब, खरतर गुरूमहाराजकी है, उस दिनसें, काजलोत छाजेहड़ कहलाये, मूल गच्छ खरतर, ।

(सिंघवी गोत्र)

नगर सिरोही गोढ़वाड़में, निनवाणा ब्राह्मन बोहरा, सोनपालके पुत्रकों, सांप काट खाया, खरतराचार्य श्रीजिनवल्लभसूरिःनें सं. ११६४ में जहर

उतारा, सोनपालजीनें जैनधर्म धारण करा, पीछै सत्रुंजयका संघ निकाला, जिससें संघवी कहलाये, पीछै केइयक संघवी गोत्रवालोंनें संवत् विक्रम अठारहसेमें, तपागच्छकी सामाचारी करने लगे, तबसें केइयक खरतर गच्छमें है, केइयोंका तपागच्छ है, शाखा ४ नवलखा १ फरसला २ नव-वाणा ३ पल्लीवाल ४।

(सालेचा बोहरा)

सालमसिंहजी दइया राजपूतकों श्रीमणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिःनें प्रतिबोध देकर जैनी महाजन किया सं. १२१७ की सालमें सियाल कोटमें बोहरगत करणेसें बोहरा कहलाये, मूलगच्छ खरतर।

(भण्डारी गोत्र)

गोढ़वाड़ देश गांम नाडोलका राव, लाखणजी, चौहाणका बेटा, महेसराव वगैरह ६ पुत्र थे, उन्होंको श्रीभद्रसूरिजी खरतर गच्छाचार्यनें, सं.। विक्रमके १४७८ में प्रतिबोध देके जैनधर्मी श्रावक बनाया, देवी इन्होंकी आसा पुरी, जात नाडोल गांममें इन्होंकी लगती है गांम कुचेरोंमें आकरवसें मूलगच्छ खरतर है, पीछै बाद कोई २ दूसरा गच्छ भी मानने लगे, कुचेरा परगणेके भण्डारी अभी खरतर गच्छमें है, साखा दीपावत मोनावत, लूणावत, नींवावत,।

(वांगाणी)

विक्रम सम्बत् सातसयमें बृहद्गछी यशो देव सूरिःजैतपुर पधारे, उहां जयतसिंहजी चौहाण राजाके पुत्र अन्धे होगये थे, जयत सिंहजीनें गुरूसें विनती करी, तब गुरूनें जैनी श्रावक होणा कबूल करवाके, शासण देवतासें एक दिनमें दिव्य नेत्र करवाये, बंग देवका वांगाणी, गोत्र प्रसिद्ध हुआ यह यशोदेव सूरिः खरतर गच्छ वालोंके बड़ेरे थे, इस वास्ते मूल गच्छ खरतर, पीछै संवत् सोलहसेमें और २ सम्प्रदाय मानने लगे,

(डागा)

गोढ़वाड़ देशगांम नाडोलमें, चौहाण राजपूत, डूंगर सिंहजीको पकड़नेके लिए, दिल्लीके बादशाहनें, फौज भेजी, कारण पहली डूंगर सिंहजीनें, बहुतसे

खांन सुलतानकों, मार डाला था, ये खबर डूंगरजीको हुई, तब खरतर गच्छा चार्य, दादासाहिब श्रीजिन कुशलसूरजीके शरणागत हुए, गुरूनें कहा, जो तुम हमारे श्रावक बणो तो, बादशाह तुम्हारे सामने आकर, अभी, आर्जाजी करणे लगे, डूंगर सिंहजी, अपणे कुटुम्ब समेत, कुशल सूरिदादासाहिबके, श्रावक हुए, रातकों बादशाह अपणे महलमें सूतेकों दादासाहिबनें वीरकों हुक्म देकर, उपासरेमें पलंग समेत उठाकर बुलाया, राव डूंगजी उहां बैठे थे, ये चमत्कार देखणेको डूंगजीनें बादशाहसूतेकों जगाया, बादशाह जागकर देखे, तो, कहांका कहांमें आगया, तब डूंगजी बोले, अहो दिल्लीपति, दिल्ली तखतके मालिक, आपनें तो हमकों पकड़नेको फौज भेजी, सो तो अभी यहां पहुंचीही नहीं है, और मैंने तो तुम्हैं कैद करवाके मंगालिया है, तब बादशाहनें पूछा ये वस्ती कौनसी है, तुम कौंण हो, और मुझे कैसे बुलाया, तब डूंगजी बोले, देख मेरे जागती कला जागती जोत, सद्गुरूका मेरे शिर पर हाथ है, तूं मेरा क्या कर सक्ता है, बादशाहने, उठके गुरूमहाराजके चरणोंमें अपना ताज रक्खा, और बोला, अय परवर्दिगार खुदाई कुदरत तुम्हें मुबारक है, मुझें क्या हुक्म है गुरूनें कहा, डूंगजीके परिवारकों, कभी कड़ी नजर नहीं देखणा, दुसरे तेरे राज्यमें जैनधर्मवालों पर कभी जुल्मीपणा मुसल्मीन करणा नहीं, और हमारे श्रावकोंको, हर व्यापार बादशाही फुरमाया जावै, बादशाहनें अजब कुदरत देख, सब करणा कबूल करा तब गुरूनें कहा, जा पलंग पर बैठ, आंख मूंचले, उसी समय दिल्ली दाखल कर दिया, उस दिनसें, सेवड़ोकी कदम पोशी सब जात करणे लगी, डूंगजीसे, डागा गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, राजाजीके राजाणी, पूंजेजीसें पूंजाणी, इन्हीं डागोंकी, शन्तान, जेसलमेर केइवेस, वो जेसलमेरिया वजणे लगे, मूलगच्छ खरतर, सं. विक्रम १३८१ में डागा गोत्र हुआ, ।

(श्रीपति ढड्ढा तिलोरा गोत्र)

विक्रम सं. ११०१ में गोढ़वाड़ देशमें नाणा वेड़ा नगरमें, पाटण नगर का राजा, सोलंखी राजपूत, सिद्धराज जयसिंहके पुत्र, गोविन्द चन्दको, खरतर गच्छी श्री जिनेश्वर सूरिः, खरतर विरुद पाने वालेने, धर्म तत्वका

प्रति बोध देकर, जैनी महाजन बणाया, गोविन्द चन्दका पुत्र तेलका व्यापार करा, बहुत धन उपार्जन करा, तबसें श्रीपति गोत्रकों तिलेरा साखासें पुकारने लगे, तीसरी पीढी झांझण सीजी हुए, जिन्होंनें संघ निकालकर सत्रुंजयकी यात्रा की, इन्होंकी ६ मी पीढी विमलसीजी हुए, जिन्होंने, नाडोल, फरड़, फलोधी, नागोर, बाहड़ मेर, अजमेर, इत्यादि क्षेत्रोंमें, जगह २ जिन मन्दिर कराकर प्रतिष्ठा कराई, सं. विक्रम बारहसेमें, इन्होंके वंशमें, भांडाजी हुए, जिन्होंने जेसलमेर, सिद्धपुर, पट्टण, जालोर, भीनमालमें, शास्त्र संग्रह कराणेमें, ज्ञानभण्डार कराणेमें द्रव्यकी बहुत सहायता दी, भांडाजीके पुत्र धर्मसीजीनें शाह पद प्राप्त किया, सत्रुंजय, आबू, गिरनार, बनारस वगैरहमें, प्रशाद कराया, संघ माल पहन कर, समेत सिखरकी यात्रा की, सत्रुंजय, गिरनार, तारंगा वगैरह, हरजगह पर, सोनेका कलश चढाया, चौरासी यात्रा की, संघमें मोहर २ लाहण वांटी, मोतियोंकी माला, सोनहरी कल्पसूत्र, मुनियोंके अर्पण की, मुनियेंनें संघके भण्डारको सुपरद किया, पृथ्वी परिक्रमादी तीन क्रोड़ असरफियां खरचकर, भण्डार स्थापन करा, बहुतसे मकान बणाये, धर्मसी नांमकों धर्म करणीसें, अमर कर दिया, सम्बत् १२५६ में अम्बिका देवीनें, प्रशन्न होकर, आंमके वृक्षके नीचे, धन बतलाया, धर्मसीजीके नवमी पीढी, कुमार पालजी हुए, उन्होंने सिद्धपुर पाटण छोड़ सिंधदेशका निवास किया, श्री शान्तिनाथजीका मन्दिर सिंधमें करवाया, कुमारपालजीके तीसरी पीढी वाढजी हुए, वह शरीरमें बडे हृष्टपुष्ट मजबूत थे, सं. १६१५ की सालमें, सिंधदेशकी भाषामें, इन्होंको ढड्ढा कहणे लगे, संस्कृतमें (द्रढा), तबसें ढढानख प्रसिद्ध हुआ, बाढजी की चौथी पीढी सच्यावदासजी हुए, उन्होंके पुत्र सारंगजीसे सारंगाणी ढड्ढा कहलाये, सिंधदेशकों छोड़, फलोधी नगरमें वसने लगे, सारंगजीके रुघनाथ मलजी, और नेतसीजी, दो पुत्र हुए, नेतसीजीके खेतसीजी आदि ४ पुत्र हुए, इस जगह रुघनाथ मलजीके परिवारका, पता नहीं मिला, नेतसीजीके तीन पुत्रोंका भी परिवार बहुत हुआ, लेकिन यहां खेतसीजीके परिवारका पत्ता पाया, सो लिखते हैं, खेतसीजीके, रतनसीजी, तिलोक-

सीजी, विमलसीजी, करमसीजी, एवं ४ पुत्र हुए, तिलोकसीजीनें, हुलकरकों सहायता दी, और जो धन, उस लड़ाईमें मिला, उसका चौथा हिस्सा, हुलकरने तिलोकसीजीकों दिया, क्रोड़पती होगये, बाकी तीनों भाइयोंकी शन्तान, बहुत है, लेकिन तिलोकसीजीके चार पुत्रोंके नाम,

१ पदमसीजी	२ धर्मसीजी	३ अमरसीजी	४ टीकमसीजी
ज्ञानमलजी	रामचंदजी	नथमलजी	लालचंदजी
सदासुखजी	सागरचन्दजी	सुजाणमलजी	गुणचन्दजी
उदयमलजी	पुत्र २	सुमेर, उदय, चांदमलजी	मंगलचन्दजी
शोभागमलजी	लक्ष्मीचन्दजी	गुलाबचंदजी एम ए जनरल	
कल्याणमलजी		कान्फरेंस जैन	

तिलोकसीजी बीकोनर वसे, इन, ४ पुत्रोंकी शन्तान, बीकानेर, तथा जयपुर, अजमेर वसते हैं, बाकी ढड्ढे फलोधी आदि मारवाड़में, सारंगजीके पहलेका परिवार, कच्छदेशमें दसा वीसा हो गये,

(पीपाड़ा गोत्र)

गेलोत राजपूत, पीपाड़ नगरका राजा, करमचन्दकों, वर्द्धमानसूरिःनें सं० १०७२ में प्रतिबोध करके महाजन किया मूलगच्छ खरतर।

(घोड़ावत छजलाणी गोत्र)

राजपूत रावत वीरसिंह जायल नगरका राजा था, उसकों शिकार खेलनका बडा शौकथा, एक दिनभी शिकार खेले विना रहै नहीं, एक दिन राजा शिकार खेलने गया, उसी समय नागोर नगरसें विहार करके, श्रीजय प्रभ सूरिः, रुद्र पल्ली खरतराचार्य जायल नगरके वनमें, उतरे थे, आचार्यनें कहा, हे राजा निरपराधी जीवोंकों मारणा, ये राजपूतोंका धर्म नहीं, जो दुश्मनशस्त्र डालदै, मुंहमें घासका तृण उठालेवै, अथवा भगजावै तो, खानदानी राजपूत, न्यायवन्त, ऐसे शत्रुकों कभी नहीं, मारे, तो हे राजा, हिरण, खरगोश, बकरा वगैरह जानवर शस्त्र रहित, नंगे, घास मुंहमें डालणेवाले भयसे भागनेवाले, निरपराधियोंकों तूं कैसें मारता है, राजा न्यायवन्त बुद्धि

वाला था, पूर्व पुण्य जाग्रत हुए, और बोला, है प्रभु आज पीछै, शिकार करके किसी भी जीवकों मारणेका मुझें, यावज्जीव त्याग है, लेकिन सीधा मांस मिल जाय, उसके खानेमें तो कुछ दोष नहीं, तब गुरू बोले हे राजा, मांस खानेवाले नहिं होय तो, कसाई जीवोंकों किसलिए मारे वह उन खाने वालोंके लिए मारता है, इस लिए आधाकर्म लगे मनुस्मृतीमें आठ कसाई लिखे हैं, तब राजा बोला जैसें हरी वनस्पतिके सागकों, जब गृहस्थी पका डालते हैं तो, जैनके साधु उसें निर्दोष समझके, ले लेते हैं, इसी तरह ही किसी और राजपूतनें, मांस आपके लिए, मारके रांधा हो, फिर तो वनस्पतिकी तरह खाणेमें दोष मुझे नहिं लगे, गुरूनें कहा, हे राजा, वनस्पति एकेन्द्री जीव चेतन, प्रथमतो शस्त्र, अग्नि, और खारके स्पर्शसें ही, निर्जीव अचित्त हो जाता है, वैसा मांस अचित्त निर्जीव नहीं होता, मांसके पिण्डमें समय २ असंक्षा जीव, संमुछिम पंचेन्द्री अग्निपर रंधते भी उत्पन्न होते, और मरते हैं, इस तरह, वो पंचेन्द्री एक जीव मरण पाया तो, क्या हुआ, लेकिन असंक्षा जीवोंकी हिंसा, मांसाहारीकों लगती है, मल, मूत्र, सेडा, वीर्य, खून चरबीका पिण्ड, हे राजा मांस खाना मनुष्योंका धर्म नहीं, विवेकी, मनुष्य सुकाकर, अपणे हाथसें वनस्पति तक नहीं खाते हैं, और सूकी वनस्पति कालान्तरमें जीवाकुल हो जाय तो भी नहीं खाते, एकेन्द्री वनस्पति वगैरह ९ थावर विगर मनुष्योंका, जीवित नहीं रह सक्ता, लेकिन, बे इन्द्रीसें लेकर पंचेन्द्री तकके शरीरके पिण्डकी, मनुष्योंकों, खाणे विगर कोई हरजा नहीं पहुंचता, बल्कि मांसके खाणेसें, प्रत्यक्ष दशं अवगुण है, इत्यादि अनेक प्रश्नोत्तरसे, राजा प्रति बोध पाकर जैनी महाजन हुआ, उस बखत, राजाकी कुलदेवी, नवरतोंमें, भेंसा, बकरा बलिदान नहीं मिलणेसें, उत्पात करणे लगीं, तब राजानें गुरूसें कही, गुरूनें विद्या बलसें, देवीकों बुलाई तब देवी बोली, आज पीछे बलिदान नहीं लूंगी, तब राजानें विचारा, ये देवीकी मूर्ति अगर जायल नगरमें रही तो, न जांणे किसी समय,

१ देखो हमारा बनाया हुआ वैद्य दीपक ग्रन्थका तीसरा प्रकाश।

फिर भी इस देवीके लोग उपासक होकर जीवहिंसा करणे न लग जावै, ऐसा विचार अपने पुत्र छजूं कुमारको हुक्म दिया के, जाओ, कुमार इस देवीकी मूर्तिकों, जायल नगरके कुअेमें, जल शरण करदो, छजू कुमार, परम सम्यक्त्वीनें वैसा ही करा, और अपने पुत्र परिवारकों, हुक्म दिया के, आज पीछै, मेरे शन्तान कभी कूँएकों झांखके मत देखणा, और न देवीकी पूजा करणी, तबसें छजूजीके छजलाणी गोत्रवाले, ये दोनों काम नहीं करते, फिर इन्होंका परिवार बहुत फैला, जिसमें एकशेर सिंह नामका पुत्र नागोर नगरमें, बडा घोड़ेका शौखीन था, उसकी औलाद घोड़ाबन कहलाये, एक क्षातमें लिखा है कि, रावत वीरसिंह राजपूतोंमें, गौड राजपूत थे, इसवास्ते छजूजी छजलांणी दुसरा पुत्र वैरीसालके गौड़ावत कहलाये, जरूर जातके गौड ही थे, घोडावत कहणे लगे, प्रथम गच्छ रुद्रपल्ली खरतर पीछै दुसरा गच्छ सं. १५०० सेंमें मांननें लगे, छजू-जीका बनाया हुआ एक कवित्त भी, हमकों याद है, पिताके जीते बनाया है, (कवित्त) नंदनकी नवरही वीसलकी वीसर ही रावणकी सब रही पीछै पछताओगे, उततेंन लाए आथ इततेंन चले साथ इतहीकी जोरी तोरी इत ही गंमाओगे, हेमचीर घोड़ा हाथी काहूकेन चले साथी वाटके बटाऊ जैसै कल ही उठ जाओगे, कहत हैं छजू कुमार सुण हो मायाके यार वंधी मुट्ठी आये हो पसारे हाथ जाओगे, । १ । धन्य है राज रिद्धी भोगते भी चित्त मैं कैसा वैराग्य था, ।

(कठोतिया गोत्र)

जायल नगरके शमीप कठोती ग्राम है, उहांपर अजमेरा ब्राह्मण रहता था, उसकों भगंदरका रोग था, सं. ११७६ में श्रीजिनदत्तसूरिःनें उसकों, मंत्र शक्तिसें, आराम कर उसकों जैन महाजन करा कठोतिया वजणे लगे, गच्छ खरतर ।

(भूतेडिया गोत्र)

सं. विक्रम १०७९ में सरसा पत्तन जंगल देशमें, कछावा राजा दुर्जन सिंघके राज्यमें, ब्राह्मन लोक वाममार्गीथे, सो एक दिन आसोज वदी चतु-

दशीके दिन देवीके उपासी पणे कर, मदिरा मांसले गये, इस मतकी बहुत सी स्त्रियें, उस जगह एकट्ठी हुई, राजाका कोई तो प्रोहितथा, कोई कथा व्यास था, कोई देरासरका मालिक देरासरी था, कोई दानाध्यक्ष था, कोई यज्ञोपवीत धारणकराणे वाला गुरू था, राजा अपणे महलके गोख मैं, बैठा संध्या करता था, इतनेमें, इन एकेक ब्राह्मनोंको, अंधेरी रात्रि मैं, एकही दिशाको, जाते देखा, राजानें, अपणा प्रछन्न मनुष्य भेजा, मनुष्यों-नें, खबर दी के, गरीब परवर, ये सब ब्राह्मन, आज काली चवदश है सो, देवीकी पूजा करने गये हैं, इस बातकी खबर, अपने मतावलम्बी, वाममार्ग-वाले बिगर, और किसीकों, ये बताते नहीं, ये सुणकर, राजानें देखा, ये क्या करते हैं सो, दिखाते नहीं, इस बातकों जाननेके लिए, सय्या पालककों कहा के, मैं किसी काम जाता हूं, तूं मैं आऊं जब दरबज्जा, दरवानोंसें कह-कर, खुला देना, राजा तलवार हाथमें ले, गुप चुप उहां गया तो, जंगलमें, एकान्तदेवीका मंडप, उसका दरवाजा बन्ध देखा, मगर अन्दर शब्द सुनाई दिया, अब वो स्वरूप देखनेके लिए पासमें एक ऊंचा बडका वृक्ष देख उसपर चढकर देखा तो, उहां एक जोगी, उसके पास शराबकी बोतलें धरी हुई, एक बड़ा पात्र जिसमें बड़े पकोड़े मांस पकाया हुआ, सर्व एकत्र किया हुआ, एक प्याला जिसमें मदिरा भरकर, मंत्र बोलता था, फिर पहले उसनें पिया, पीछै सब ब्राह्मनोंकों देवीभक्तोंको उसी प्यालेसें पिलाया, पीछै एक स्त्रीको नग्न करके, उसके, भगकों, जलसें, मदिरासें, प्रक्षालकर, सबकों चरणामृत दिया, पीछै वह कुंडेका नैवेद्य, भगपर चढ़ा २ कर, सबोंकों, वांट दिया, सो सब लोगोंने खाया, पीछै एक घड़ेमें सब स्त्रियोंकी, कंचुकी, उस योगीनाथनें, एकठी करके, उस घड़ेमें डालदी, फिर सबोंको आज्ञा दी के, जिसके हाथ डालणेसे, जिसकी कंचुकी जिसके हाथ लगे, वह चाहै माता हो, चाहै बहिन, बेटी, कोई हो, उससें रमण करे, अर्थात् मैथुन करै, वह गुरू वो देवीसें रमण करै, उस जोगीका और देवीका वीर्य जो निकले, उसकों एक पात्रमें लेकर, पुष्पोंके बीच धरके, भजन गायन करै फिर वह वीर्य, घी सहत मिलाके, सब वाममार्गीचाटे, इस तरह इन्होंके चार मार्गी धूम

मार्गी १ बीजमार्गी २ कांचलिये ३ और कौल ४ इन चारोंका स्वरूप देख, राजा अचम्भेमें, रह गया, राजा अपने महलमें आया, प्रभात समय, स्नानकर, कोई तो भस्मी लगा, रुद्राख्य धारण करा, पंचकेशी, पावोंमें खड़ाऊ, बगलमें मृगछाला, पुस्तक, कमण्डल धारे हुए, ओं नमः सिवाय जपते हुए, ब्राह्मण पधारे, कोई रामानन्दी त्रिपुण्डधारे, तप मुद्रा लिए भये, कोई माधवाचारी तिलक किये, कोई केशरकी आडम्बर खेंचे, कोई कुंकुमके दो फाड़ तिलक किये, कोई मूंछ मुंडाये, लम्बी एक लङ्ग खुली धोती, कुसा डाभ विछाकर, बैठणेवाले, नानाप्रकारसें, विप्रगण पधारे, राजाने उन्होंको देखतेही, सुभटोंको हुक्म दिया के, जल्लादोंसे, इन सबोंको मरवादो, इन्होंने मेरा देश, कापट्यतासें, डूबादिया, बस उन सबोंको राजानें, मरवा डाला, वे मरते कुछ शुभ अभिप्रायसें भूत हुए, अब नगरीमें, घरोंमें विष्ठा वर्सावै, पत्थर फेंके, इत्यादि बहुत उपद्रव करणे लगे, राजा इस बातसें बहुत दुखी हुआ, इस समय, तरुण प्रभसूरिःरुद्रपल्ली खरतराचार्य, उस बनमें आए, ये स्वरूप सुणके राजा, उहां आया, सब स्वरूप कहा, गुरूनें कहा, जो तूं, जैनी श्रावक हो जावै तो, अभी उन सबोंको, बुलाताहूं, राजाने कबूल करा, गुरूने जिनदत्तसूरि दत्ताम्नाय विधिसें, आकर्षण करतेही, भूत प्रकट हुए, गुरूनें कहा खबरदार आज पीछै ऐसा उपद्रव, मत करणा, नहीं तो कीलन करताहूं, भयसें, सब भूतोंनें, कबूल करा, और अन्यत्र चले गये, गुरूनें उस राजाकी, भूत तेडिया जात प्रसिद्ध करी, लोग भूतेडिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर,

(जडिया गोत्र)

सवालख देश, नागोर मेडतेके शमीप कुह्मारी नगर, यादव भाटी, कुलधर राजा, उसके राणी तो ३२, परन्तु पुत्र किसीके भी नहीं, उस चिन्तामें राजा दिलगीर था, इतनेमें श्रीजिन कुशलसूरिः, दादा साहिब उहां पधारे, तब दिवाननें कही, आप चिन्ता छोंडके, इन महाराजाके, चरणका जल राणियोंको पिलाओ, यह गुरू दादासाहिब हाजिरा हुजूर साक्षात् देव है, जिस करके जरूर पुत्र होगा, तब राजानें, बडे हंगामसें, गुरूकूं, नगरमें

पगमंडे कर, चरण धोकर, केशरादिके उत्तम अचित्त द्रव्यसें नव अंगकी पूजा, देवमूर्त्तिकी तरह करी, और वह चरणामृत ३२ ही राणियोंकों भेजा, और राणियोंकों, कहला भेजा कि, इस जलकों, वांट २ कर, पीजाओ, इसमें २१ राणियेंनें तो, गुरूकी भक्ति करके, पी गई, ११ राणियोंनें सुज्ञा कर नहीं पिया, २१ राणियोंके तो पुत्र हुए, ११ राणियोंके नहीं हुए, उस दिनसें खरतर गच्छके सब श्रावक गुरूका महान् अतिशय जांण, पट्ट धारियोंका, चरण प्रक्षालन कर, नव अंग पूजणे लगे, उस पर मोहर रूपिया वगैरह चढाणे लगे, पीछै बादसाह अकब्बरनें फुरमांण लिख कर आम श्रावकोंसें, प्रारम्भ करवाया, खरतरा चार्योंने, द्रव्य लेणा नहीं चलाया, शाहन्शाहनें ये रिवाज प्रारम्भ कराया, सो श्रावक लोक करते हैं, और करते चले आये हैं, अब तो श्रावकोंकों कुछ २ संकल्प विकल्प भी उत्पन्न होता है, मगर इतना खयाल नहीं करते के, प्रथम इन आचार्यों विगर, तुम जैन धर्मको क्या जांणते, दुसरा तुम सबों पर, बादशाह हुमायूका जुलमका हुक्म, मुसल्मान बनानेका था, सो श्री जिनचन्द्रसूरिः न प्रगटते तो, इक लाय लाय इल्लिा महम्मदे रसू लिल्लाके कलमासरीक होना पड़ता, और इन्हींके पहले लाखों मनुष्योंकों, बादशाहनें हिन्दुओंसें मुसल्मीन कर भी डाला था, उस उपकारकों देखते, द्रव्य कोई चीज नहीं हैं, पद्म सूरिः महाराजका चतुर्मास, नागोर था, तब राजा गुरू महाराजका, झड़ोला २१ सोई पुत्रोंके सिर पर रक्खा, और गुरूके पास लेकर आये, गुरूनें कहा आवो बच्चे झडियाओ, इधर आवो, गुरूनें सबों पर वास क्षेप करा, वह जड़िया गोत्र प्रगट हुआ, इन्हीं २१ सोंकी कई २ न्यारे २ नख भी, हो गये, सो लिखणेका अवकाश नहीं, मूल गच्छ खरतर,।

---

१ सूरिः अने साम्राट् ग्रंथ विद्याविजयजीनें लिखा है, उसमें हीरविजयसूरिःजीकी पृष्ठ २६४ मांडण कोठारी, मोहरोसे, पृष्ट २७६ में अबजीभणशाली स्वर्णमुद्रासे, पृष्ट २६५ में छ हजार मोंहरोसे राधनपुरमें पूजा करी, इस प्रवाहानुसार श्रीपूजजीकी पूजा द्रव्यसे सरू है हीरविजयसूरिःजीकों त्यागी वैरागी सब मानते हैं,

(कांकरिया गोत्र)

कंकरावत गांमका खेमटरावका पुत्र, राव भीमसी, पड़िहार, राजपूत, चित्तोडके राणाका सामंत वह राणाजीका हुक्म मानें नहीं, और न नौकरीमें जावै राणाजीनें तलब करा लेकिन गया नहीं, तब राणेजीनें इसकों पकड़ने शेन्या भेजी, सं. ११४२ में खरतर गच्छाचार्य श्रीजिन वल्लभ सूरिः भाग्य योग ककरा गांममें पधारे, राव भीमसी, राणेजीके क्रोधका समाचार कहा, गुरूनें कहा, सैन्या यहां आवेगी, उसका में प्रयत्न कर दूंगा लेकिन तुम हमारे श्रावक जैनी हो जावो तो, भीमसीनें श्रावक व्रत लिया, तब गुरूनें, कांकेर बहुतसे मंगवाये, और उस पर दृष्टि पास करा और राव भीमकों कहा के, जिससमय, राणे जीकी शेन्या आवै, उस समय, तोपों पर बन्दूकों पर तलवार वगैरह शस्त्रों पर, राणेजीकी सेन्या पर, ये कांकरे डाल देना, सो सब शक्ति हीन हों जायगे, और में मास कल्प यहां धर्म ध्यानसें करूंगा, शेन्या आने पर अपने विश्वासी ब्राह्मन पोकरनेकों देकर, वह कांकरे हर शस्त्र अस्त्र फोजी लोकों पर डलवाये, सब तोप, बन्दूक छूटनेसें रह गये, तरवारसे एक पत्ता भी नहीं कटे, तब निरास होकर, शेन्याके लोकोंनें, राणाजीकों लिखा, राणाजीमें, सात गुना माफ कर दिया, और तुम्हारी नौकरी माफ तुम्हारे हमारे मध्य परमेश्वर है, इत्यादि खातिरीसें खास रुक्का लिखा, तब राव भीमसिंहनें गुरूकी आज्ञा मांग चित्तोड़ गया, राणाजीनें सत्कार किया, सब हाल पूछा, तब राव भीम सिंह बोला, गुरूश्री जिन वल्लभ सूरिःका, कांकरिया करामाती है, मेरेमें तो अकड़ाई है, उस दिनसें कंकरावत गांमसें कांकरेके मंत्र अतिशयसें, कांकरिया गोत्र, हुआ, मूल गच्छ खरतर, ।

(आबेड़ा तथा खटोल गोत्र)

मारवाड़ गांम खाटूका चौहाण राजपूत आडपायत सिंह, १ बुधसिंह २ थे उन्होकी सं. १२०१ में श्री जिन दत्त सूरिः नें लक्ष्मी कामना पूर्ण कर जैनी करा, आडपायतरा आबेड़ा, बुधसिंहका पुत्र खांटूगांव, से खटेड हुआ,

मूल गच्छ खरतर, । सं. १९८७ में कई २ इन वंश वाले ओर गच्छमें गये ।

(खेतसी पगारिया मेड़तवाल)

पमार राजपूतोंका गुरू शंकर दास ब्राह्मन, सनाढ्य था, सं ११११ में श्री अभय देव सूरिःका उपदेश सुण भीनमाल नगरमें शिव धर्म त्याग जैनधर्मी हुआ, अभय देव सूरिःको मलधार विरुद था इस वास्ते मूल गच्छ खरतर, बाद और गछमें कई २ गये ।

(श्री श्रीमाल)

श्री दिल्ली नगरमें श्रीमन्त साहश्री मल्ल महतियाण जात पेढ पमार, वह बादशाहके खजानेके मालिक थे, बादशाह श्री मल्लशाहसें, धर्मके बाबत हमेश ठट्ठा करता था, तुह्मारे साहजी ईमान तो जगह पर है ही नहीं, ब्रह्मादेव, विष्णुदेव, महादेव, देवी, सूर्य, अग्नि, पानी, गणेश, इस तरह, अगर गिनावें तो साहजी लाखसें कम नाम नहीं होंगे, तब कहो, इमान तो कहां रहा, शास्त्र तुह्मारे पुराण ऐसे है सो, ठोड़ न ठिकाना, एक पुराणकी बात दुसरे पुराणसें गलत है, सो तुम जानते ही हो, मैंने एक दिन जिन चन्दसूरिःसेबडेसें, धूर्त्ताख्यान हरिभद्रसूरिःका बनाया हुआ, सुना था; सो तुह्मारे पुराणोंमें, ठगाई और पागलके बनायेसें मालम देते हैं, गुरू तुह्मारे भोजन भट्ट, आजीविका करनेमें हुशियार, तुलसीकों माता कहै, और चाब जावे, शालगराम गंडकी नदीका पत्थर, उसकों ठाकुर कहै, और काती सुदी ११ कों बेटाजी, तुलसीमां, सालग बापका, ब्याह अपने हाथ करे, हमारे खान सलेमनें कहा था कि, लाबे बांदी ऐसा नर, जो पीर बबरची भिस्ती खर, सोतो ब्राह्मण तुह्मारे गुरूकों ही देखके, कहा था, नीचसें नीच जातका दान ले लेतें हैं, छोकरे खिलाता, पाणी पिलाता, बोझा उठाता, सन्देशा लाता सईसी, कोचवानी, ऐसा काम कोनसा है, जो तुह्मारे गुरू नहीं करते हैं, उडिया देशमें जगन्नाथ तीर्थ मैं, पंजाब काश्मीरमें, बंगाल वगैरहमें, ब्राह्मण मच्छी बकरेका गोस्त खाते हैं, वेद तुह्मारे ऐसे हैं,

जिसकों तुम, खुदाके कहे हुए मानते हो, उसमें किस जानवरकों, मारके खाणा अंगारमें होमके नहीं बतलाया, छी छी इस वख्तके जरूर मुसल्मान लोग गोस्त खाते हैं, मगर ये नहीं कहते हैं कि, खुदाका हुक्म है, कुरानकी रूहसें जानका मारनेवाला गुनहगार है, देखो वेदमें चारों वर्ण वालोंका बेटिका दामाद घर पर आवे, तब पहली मधुपर्क करना, यानें, गऊको जिबह करनी, फिर उस गोस्तको उबालकर, सब घर वालोंसें, मिजमानी करनी, साहजी मुसल्मीनोंको, क्यों बुरा कहते हो, हाथ लगजाय तो, स्नान करते हो, मुसल्मीन जाजमपर बैठ जाय तो, जल नहीं पीते हो, जैसे तुह्मारे ब्रह्मण बेदके मंत्रको पढ़कर छुरियोंसे, वा, गला घोंट कर, घोड़ा बकरा हिरण वगैरहको, अंगारके कुण्डमें, हवन कर खानेसे स्वर्गमें जाना मानते हैं, ऐसे हमारे काजी पाजी बिसमिल्ला कहके, जानवरोंकी गरदन काटते हैं, जैसा वेदका मंत्र, वैसा हमारे मजहबका बिसमिल्लाह, अरब्बी मंत्र कुरानी है, इस तरह हमेश बादशाह, ताना दिया करै, श्री मल्लजी मुंहता, इस बातकों हमेश विचारे, और पुस्तकोंको देखे तो, बादशाहके वचन, सच मालुम देते हैं, एक दिन बादशाहनें कहा, देखो साहश्री मल्ल, तुह्मारे सब देव ऐबीथे जिन्होंसे तुम तरणा चाहते हो, भागवतके दुसरे स्कंधमें तुह्मारे ब्रह्माजीने सराब पीकर अपनी बेटी सरस्वतीसे जना किया, तोबा २; जिसके बनाये बेद, और उसकी शन्तान ब्राह्मन, जो कुछ करे सो, थोड़ा है, इस समयमें, खबर नबेसीने खबर दी के, हजूर, जांपनाह ,जिन चन्द्रसूरिःसे बडा आया है, बादशाह श्री मल्लको साथ लेकर, सामने गया, आदाब अरज बजाकर, सामने बैठा, गुरूनें देव तत्व गुरूतत्व और धर्म तत्वका, स्वरूप धर्मोपदेश दिया, बादशाहनें मांस खाना छोड़ दिया, श्री मल्ल साह प्रतिबोध पाकर निर्दोषित जैनधर्मका श्रावक हुआ, बादशाहनें कहा अहो श्री मल्ल, अब तेरा जन्म, सफल हुआ, में इस धर्मको अच्छी तरह जानता हूं, मगर इस धर्मके कायदे करड़े बहुत हैं, खुदामे मिल जाणें वास्ते, दुनियामें ये एकही धर्म है, बादशाहनें, उसदिनसें, अम्बाड़ी, मोर्छल, चमर, छत्र, वख-

सीसकर, राजा श्री श्री मल्ल, लिखकर, कुरब हाथी निवेश, और ताजीम दी, तुह्मारी शन्तान सदाके लिए पावोंमें, सोना पहर सकती है, इसकी औलाद श्री श्रीमाल कहलाये, भाईपाइनोंका, श्री मालोंसें रहा सादी मिजमानी श्रीमाल ओसवाल दोनोंसे, कोई ख्यातमें लिखा है श्री मालोंमें महतियाण गोत्र जो है सो ही श्री श्रीमाल पदवी पाई है, धर्म पहले शैव विष्णु सबोंकाही रहा था, मूलगुरू गच्छ खरतर है,

(बाबेल संघवी,)

चौहाण राजा, बाबेल नगरका, रणधीर, रगतपित्तके रोगसें दुःखी था, उसनें कई वैद्योंसें इलाज करवाया, लेकिन आराम नहीं हुआ संवत १३७१ की सालमें श्री जिन कुशल सूरिःजीके गुरू श्री जिन चन्द्र सूरिः, उहां पधारे, राजा बांदणे आया, राजाका वदन जगह २ से फूट गया, गुरूनें कहा, हमारे श्रावक होवो तो, आराम होसक्ता है, राजानें कबूल किया, गुरूनें रातकों चक्रेश्वरी देवीकी आराधना करी, देवीनें संरोहणी औषधी दी, प्रभात समय गुरूनें पेटमें पिलाई, और ऊपर भी लगाई, सात दिनसें, कंचन काया हो गई, बाबेल नगरसें, बाबेल कहलाये, इस वक्त वो गांम वापेऊ बजता है, मूल गच्छ खरतर, फेर सत्रुंजयका संघ निकाला, वो बाबेल संघवी बजते हैं, ये संघवी दूसरे हैं संघवी, और कोठारी, बहुत जातमें हैं।

(गड़वाणी भड़गतिया)

गडवा राठोड़ अजमेर परगणा, गांम भखरीमें, श्री जिन दत्तसूरिनें, प्रति बोध देकर, धनकामना पूर्ण करी, गडवेजीसेगड़ वाणी, मश्करी करनेसें भड़क उठा, जिसवास्ते पूरसिंहजी कूं लोक भड़गतिया, कहने लगे। गच्छ खरतर सवालख देशमें सोढा राजपूत सवासौ रूणवाल वेगाणी गोत्र घर-रूण गांममें रहते हैं, उन्होंका मुख्य ठाकुर, वेगाजी, उन्होंके पुत्र नहीं, और क्षीणताकी बिमारी, अकस्मात् श्रीजिन दत्तसूरिः, सवालाख देशमें विच, रते २ पधारे, सोढे राजपूत सब गये, और ठाकुरकी, हकीकत कही, गुरू बोले, क्षीणता मिट जायगी, जो तुम जैनधर्मी हमारे श्रावक हो जाओतो,

इन्होनें ठाकुर वेगेजीको कही, उसी समय सपरिवार आके मिथ्यात्व त्यागके जिन धर्मी हुए, रूंण गामके नामसें रूण वाल गोत्र हुआ, गुरूनें वेगेजीकों उपसर्ग हरस्तोत्रका, कल्प साधन बतलाया, दूध घृत चावल मिश्रीकी क्षीर खाकर, एक वखंत, अरण्य वास, एकान्त ध्यान, सवालक्ष करना, बतलाया गुरू विहार कर गये सं. १२०२ में रूण वाल गोत्र हुआ ६ महिना साधनासें, एक महिष जितना बली हो गये, गुरूदेव सं. १२११ में अजमेरमें, देव लोक हुए, तब गुरू महाराजके प्रेमी, जो विमानक वासी देव हुए थे, उन्होने आकर सर्व खरतर गच्छके संघको कहा तुम्हारे गुरुदेवसो धर्मदेव लोकमें, चार पल्पकी आयुसें, टक्कलविमानमें, देवता हुए हैं, तब संघनें कहा, श्रीमंधर स्वामीसें पूछके, निश्चय कर दो, गुरू महाराज कितनें भवसें, मुक्ति सिधायगें, तब वह देवता, महा विदेह पुंडरीकणी नगरीमें, श्री सीमंधर भगवानकों, वंदन स्तवन कर, खड़ा रहा, तब श्रीमंधर जिनेश्वरनें दो गाथा कही, वह गाथा, गुर्व्वा वली, तथा गणधर पद वृत्ति प्रमुख ग्रंथोंमें दरज है, परमार्थ उसका ऐसा है, टक्कल विमानसें–चवके तुम्हारे गुरू, महाविदेह क्षेत्रमें, श्रीमन्त कुलमें जन्म लेकर, एक भवावतारी, उहांसे दीक्षाले, केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष होंयगे वह देवता, यहां सर्व खरतर संघको, वह गाथा श्रीमंधर स्वामीकी कही सुनाई, तब सर्व संघनें, जगह २, ग्राम २ नगर २ में, गुरूके चरण थापना कर पूजने लगे, धर्म दाता सम्यक्त्व व्रत देणेके, उपकारी, जिन्होंने लाखोंजीवोंको, जिन धर्म देकर, तार दिया, इन्होंके पाट मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिः विराजै, वह गुरू रूण पधारे, तब वेगाजीनें पुत्रकी वीनती करी, गुरूने क्षेत्रपालसे पूछी, खोड़िये क्षेत्र पालनें, जो विधी कही, चक्रेश्वरी देवीकी पूजा, बतलाई, चैत्र सुदी आशोज सुदी, अष्टमी, नोरल चढ़ाकर, लपसीका, नैवेद्य करनेसें, पुत्र होगा, वेगेजीके पुत्र ४ हुए दो पुत्रकी शन्तान नागोरमें सं. १५७७ में लोढा तपगच्छियोंकी बेटी ब्याही थी, पार्श्व चन्द्र सूरिःनें, तपागच्छमेंसे अलग सम्प्रदाय निकाली, तब वेगाणी २ पुत्रोंकी शन्तान, उस सम्प्रदायकों मांनने लगी, गुरू खरतर को भी मांनते हैं, मूल गच्छ खरतर, बीकानेर वगैरहमें बसते हैं ।

(पोकरणा गोत्र)

गांम हरसोरका राठौड सकत सिंह, अपने परिवार समेत पुष्कर तीर्थके मेले पर, स्नान करनेकों, पधारे, उहां एक स्त्री, जिसके ४ छोटे २ पुत्र, और उसके सगा संबंधी कोई नहीं, वह विधवा स्त्री अपने ४ पुत्रोंकों, कुछ खानेकों देकर, घाट पर विठाकर स्नान करने लगी, इतनेमें गोहने, आके, उस स्त्रीके पावोंमें, तन्तु डाला, वह स्त्री पुकारी, इतनेमें खरतर गच्छके, श्रीजिन दत्तसूरि महाराजका शिष्य देवगणिः अकस्मात् थंडिल्ल, जाके आ निकला, सकतसिंह बोला, अरे दोड़ोरे दोड़ो, कोई नहीं गिरा- सकतसिंह दया लाकर, उस स्त्रीकों पकड़ने कूदा, इतनेमें गोहनें, इनकों भी, तन्तुसें, खेंचा, तब देवगणिःने, जल निस्तारणी, अमोघ विद्या स्मरण कर, कहाकेमें, मेरा श्रावक जांण, बचाता हूं तत्काल ऐसा आश्चर्य हुआ के, मानो हाथ पकड़के, कोई निकालता होय, दोनोंको घाटपर लाके खड़ा कर दिया, हजारों आलम, ये चमत्कार देख, देवगणिःके चरण पकड़े सकतसिंहने देवगणिःके चरण पकड़के कहा, हे गुरू आपन होते तो आजमें, इस जीवका भक्ष होगया था, धिक् है ऐसे धर्मकें चलाणे वालोंको, जो हजारों सूक्ष्म और बड़े जीवोंका घात, आत्माका घात, ऐसा नदी, कुण्ड तलावोंमें, प्रवेश कर, स्नान धर्म बतलाया, अब आपने जैसा मुझे जिवतव्य दिया है, ऐसामें ऋणमुक्त हो जाऊं ऐसा करो, तब देवगणि बोले हे महाभाग, मेरे गुरू अजमेरमें हैं, सो कल यहां पधारेंगें, चौमासा आज उतर गया है, दुसरे दिन गुरू पधारे, धर्म सुनके, ४ पुत्र, उस महेश्वरीके और सकतसिंह सह कुटुम्ब जैन महाजन हुआ, किसी जगह लिखा है इनमें पुष्करने ब्राह्मण श्रावक हो गये इससे पोकरणे गोत्र नाम प्रगटा मूलगच्छ खरतर पुष्करसें पोकरणा कहलाये ।

(अथ कोचर गोत्र)

पृथ्वी अनादि, श्रेष्टि अनादि, छ द्रव्य अनादि, द्रव्य गुण नित्य, पर्याय अनित्य, उत्सर्पणी कालवर्त्तकर, अवसर्पणीवर्त्ते, ऐसे अनंते काल चक्र बीता, और बीतेगा, श्रीआदीश्वर भगवांनसें, जैन धर्म चला, आदिश्वरके

संग, ४ हजार राजवियोंने, दीक्षा ली, उन्होंसे, भूख नहीं सही गई, तब बनमें जाकर, ऋषभ देवका एक हजार आठ नाम बनाकर, गंगाके तट पर, आदि ब्रह्मा, आदि विष्णु, आदि शिव, आदि योगी, आदि बुद्ध, पुरुषोत्तम, जगत्कर्त्ता, इत्यादि स्तवन करते, फलफूल खाते, गंगाजल पीते, वृक्षोंकी छाल ओढते, विछाते, तीनसे तेसठ मत उन्होंसें चला, वल्कल चीरी तापस कहलाये, ऋषभ देवके पोते, मरीचीनें पहले तो जैन दीक्षा ली, जब क्रिया लोच वगैरह नहीं कर सका, तब सुखदाई दण्डीका भेष बणाया, इसका चेला कपिल, कपिलका आसुरी, आसुरीकों कपिलदेव ब्रह्मदेव लोकमें देवता हुए पीछै प्रकृती १ और पुरुष दोसे २५ तत्वसृष्टिका अनादि पना सिद्ध करा इसके शिष्योंकी संप्रदायमें, शंख आचार्यसें, सांख्यमत प्रसिद्ध हुआ, भरत चक्रवर्तिनें, इन्द्रके कहनेसें, बारह व्रतधारी श्रावकोंकों, भोजन कराया, वह भरत राजाकी भक्तिसें, माहन कहलाए, संस्कृतमें, माहन प्राकृत शब्दका (ब्राह्मन) मतहन, यानें ब्रह्मकों पहिचान, यथा राजा, तथा प्रजा, छखंडके लोक, माहनोंको, भोजन वस्त्रादिसें सत्कार करने लगे, विद्या माहण लोकोंके बालक पढणे लगे, तब भरत चक्रवर्तिने, इन्होंको पढाणें, ऋषभदेव, ४ मुखसें, समवरणमें, देसना देनेवाले, आदि ब्रह्माके बचनानुसार, अहिंसा धर्मका स्वरूप त्याग व्रतका स्वरूप, छ द्रव्य, नवतत्वका स्वरूप, स्याद्वाद न्याय, गृहस्थके उपनयन, सोलह संस्कार वगैरह अनेक भावमिश्रित जिनयजनका स्वरूपरूप, चार आर्य वेद रचकर संसार दर्शन वेद १ संस्थापन परामर्शन वेद २ विद्या प्रबोध वेद ३ तत्वावबोध वेद ४ पाठशालामें पढाणे लगे, ६ महिनेसें परिक्षा अनुयोग होनेपर, विद्या मुजब इनाम पारितोषिक देणे लगे, और गृहस्थोंकें माननीय, ७२ कला, जो ऋषभ देवनें, दुनियांके सुख जीवनके लिए, ग्रन्थ बनाकर, प्रजाकों सिखाया था, सो सब ग्रन्थोंपर हक्क, चक्रवर्त्तिनें, माहणोंकों सोंपे, सोलह संस्कार गृहस्थोंके, जन्मसे लेकर मरण पर्यन्त, गृहस्थोंका करवाना, माहनोंके सुपुर्द करा इन्होंमेंसे, वैराज्ञ पाकर बहुत माहण लोक, ऋषभ देवके पास दीक्षा ले लेकर जगह २ साधू होते रहै, गृहस्थ धर्ममें, त्रिकाल श्रीजिनमूर्तिका

अष्टद्रव्यसें, नाना प्रकारसें, याग (पूजा) करते, साधुओंको वन्दन व उनका व्याख्यान सुनना, व्रत पच्चखान ५ अनुव्रत ३ गुणव्रत ४ शिक्षा व्रत, पर्व तिथीमें पोसह करनेसे, पोसह करणा माहण प्रसिद्ध हुए, जिन्होंकी आज्ञासें माहण लोक प्रवर्ते उपधान, आवश्यकादि षट्कर्म करैं, उन २ अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञानवन्त माहणोंको, चक्रवर्त्तिने आचार्यपद दिया, जो वेद आवश्यकादि सूत्रोंके अध्यापक, उन्होंको उवझाय (यानेउपाध्याय) पद दिया, जो आचारजओझा अपभ्रंस शब्दोंसे पुकारे जाते हैं, एक दिन, भगवान कैलाशपर समवसरे भरत बांदणेकों गया, और माहण वंश स्थापन करणेकी बधाई सुणाऊं, इस अभिप्रायकों, भगवानने, फरमाया, हे राजा, जो उत्कृष्ट श्रावक, माहण नामसें, तेनें, स्थापन करा है, वह सब नवमें भगवान सुविधिनाथ निर्वाण तक तो, जैनधर्मी रहेंगे, पीछै जैनतीर्थके साधू बिल्कुल विच्छेद हो जांयगे, तब, ये माहण लोक, तेरे बनाये, सम्यक् श्रुत, ४ वेदोमें, अपनी पूजा प्रतिष्ठा बढानेको, सर्व देवोंके देवमाहण, हैं, इत्यादि आजिवीका जमाने, श्रुतियां वणा २ कर डालेंगे, और क्रम २ सें, जैन धर्मके द्वेषीपणे कर अनेक मतोंके विश्वकर्मा बण बैठेंगें, सर्व ग्रन्थोंमें क्रम २ सें, मिथ्यात्व भरते जांयगे, आगे इन्होंमें, याज्ञवल्क्य उत्पन्न होगा, सो यथार्थ वेदकूं त्यागके, नई कल्पना कर, याज्ञवल्क्य हो वाच इत्यादि अपने नामका वेद श्रुति, जिसका नाम ही परावर्त्तन करेगा, फिर पर्वत, और राजा वसुके समय, यज्ञ शब्दमें, हलते चलते, जीवोंकों, हवन करणा मांस भक्षण करणा, वेदका धर्म पर्वत करेगा, भावी प्रबल है भवतव्यता टलेगी नहीं, चक्रवर्ति बहुत पछताणेलगा, फिर बोला, हे प्रभु, मैंने तो अच्छा काम, धर्मी जात थापना करी है, आगे जो करेगा, सो भरेगा, इसतरह ही हुआ, इस वेदमें हिंसा क्यों कर डाले गई, सो स्वरूप आठमें नारदने, रावणसें कहीं है, ये सब अधिकार, जैन रामायणमें लिखा है, इस तरह आर्य वेदकी कई २ श्रुति वेदोमें, रह गई, वाकी सब, मांसा हारी माहणोंने वेदको नष्ट भृष्ट कर डाला, जो श्रुतियां, जंगलमें रहनेवाले, ब्राह्मनोंको जुदी २ याद थी, सो व्यासनें

इकट्ठी करी, इस लिए उसकों ब्राह्मन वेद व्यास कहने लगे, प्रथम संज्ञा वेदकी तीन ही करी, ऋग् १ यजु २ और साम ३ फिर, इनमेंसे, उद्धार कर चौथा अथर्वण बनाया, इस तरह ४ इन्होंमेंसे, परमार्थकी बात बिल्कुल दोसे चार सय श्लोक संक्षा होय तो, आश्चर्य नहीं, बाकी यूं यज्ञ शाला बनाना, यो घोड़ेको बांधणा, यूं फरसीसें काटणा, यूं अग्निमें पकाणा यो फलाणेको हिस्सा देणा, माता मेध, पिता मेध, अश्व मेध, गौमेध, छाग मेध, फलाणे देवताकों, इस तरह यज्ञ कर तृप्त करणा, सोत्रा मणीं यज्ञ कर, मदिरा पीणा, इत्यादि अधिकार, ही भरा है, इतिहास तिमिर नाशकका तीसरा प्रकाश देखो, वेदोंके भाष्यकार संस्कृत कायदेसें वेदकी श्रुतियोंमें विरुद्धता देखकर, आर्षत्वात् ऐसी समाधानी करते हैं, इस तरह वेदका हाल डाक्टर मेक्स मूलर संस्कृत साहित्य ग्रंथमें लिखते हैं कि वेदके मंत्र भाग बणेको, ३१ सो वर्ष, और छंदो भाग बणेको, २९ ससैं वर्ष मात्र हुए हैं, दुसरी बेर वेद फिर लिखणेका समय विक्रम सम्बत् तीनसेंमें पुन्शी जीयालाल अग्रवाल फरुख नगरवाला, सिद्ध करता है, और पुराणोंका बनाना विक्रम सम्बत् सातसेंमें, उक्त पुरुष सिद्ध करता है ये मनुष्य भी बड़ा खोजी नर रत्न है, पहले इन्होंका वंश वेदमतका था, इन्होंके पिता श्वेताम्बर जैन हुए, अभी ये दिगम्बरी जैन अच्छेगृहस्थ सुननेमें आते हैं, कोचर वंशोत्पत्तिमें, ये बात इसवास्ते लिखी है के, कोचर वंशके बड़ेरे, पहले तो जैन धर्मी थे, वाद फिर वेदमतमें होगये, वाद फिर जैन राजा हुए, वाद सुजाण कवर परम जैन धर्मी राजाके, ७२ सामन्त, परम जैनधर्मी थे, जिसका फिर, इन ७२ पुरुषोंकों माहेश्वरी होना पड़ा, सो बृत्तान्त यहां थोड़ा लिखते हैं, जैन इतिहास मुजब,—

खंडप्रस्थ नगर, जो अब मालवदेशकी सीमापर खण्डेला बजता है किसी इतिहास लेखकने खंडेला जयपुर शमीपस्थ लिखा है खंडेल राजा परम जैन धर्मी था, गुरू इनके दिगम्बर जैन थे, राजानें भट्टारकजीसें पूछा, मेरे पुत्र नहीं, सो स्वामी क्या कारण है, भट्टारकजी बोले, चैत्यालयमें, नाना-विधीसे पूजन करा अतिथी भिक्षुकोंको, दान दे, साधर्मी वात्सल्यता कर, तब

सम्यक्ती देव प्रशन्न होकर, तेरी कामना होणी है तो, पूर्ण करेंगे, राजाने, अपने राज्यमें वह पुण्य कृत्य कराणा प्रारम्भ किया, १२ महिने सम्पूर्ण होनेसे, चक्रेश्वरी देवीनें, आकाशवाणी करी के, हे राजा, पुत्र तो तेरे होगा और दयावन्त, दातार, शूरवीर भी, होगा, परन्तु ब्राह्मण मिथ्यात्वी उसकों, धोखा देकर, मिथ्यात्वी, और भिक्षारी कर देंगे ब्राह्मण यज्ञथम्भ, जहां रोपते हैं, उस थम्भके नीचे अरिहन्तकी मूर्ति गाड देते हैं, जिससें कोई दयाधर्मी देवता देवी वगैरह उस यज्ञको विध्वंस करे नहीं, इस लिए सम्यक्ती देवता तो, उस यज्ञके पासही नहीं फुरकते हैं, ऐसा कह, देवी अन्तर्ध्यान हुई, पुत्र हुआ सुजाण कंवर नाम दिया, सम्पूर्ण ७२ कला सीखके हुशियार हुआ नवतत्व स्याद्वाद न्याय पढा, पितानें, पुत्रकों कहा, हे पुत्र अपने सुभटोंकों भेज २ कर, कहांई भी हिंसक यज्ञ मत होणे देणा, लेकिन तूं खुद यज्ञ होता हो, उहां मत जाणा, ऐसी शिक्षा देकर राज्य तिलक देकर, आप अनसन आराधकर स्वर्गवास हुआ अब राजा सुजाण सिंह, जिनेन्द्र देवके, गांम २ में, मन्दिर पूजा धर्मध्यान करता, जैनमुनि जैन साधर्मीयोंकी भक्ति करता, दयावन्त, कहीं भी जीवोंको कोई मारने नहीं पावै, ऐसी उद्घोषणा कराता हुआ सुखसे सामायक, प्रतिक्रमण, पोसह, दान, शील, तप भावनामें लीन, अपने सामन्तोंकों भेज २ कर, जगह २ हिंसक यज्ञ, ब्राह्मनोंका बंद करा दिया, जैनधर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनोंको समतुल्य गिनता हुआ, जैन ब्राह्मनोंकों लाखों क्रोड़ोंका द्रव्य देता हुआ हिंसक जीवोंको सजा देता वेदकी हिंसा जगह २ बन्ध करवादी, तीन दिशामें दयाधर्म सर्वत्र फैला दिया, उत्तराखण्डमें, म्लेच्छ मांसाहारियोंकी वस्ती, गुण पचास, बडी राजधानियोंमें, म्लेच्छोंहीकी वस्ती समझ इस दिशामें धर्मोपदेश नहीं करवाया, अब इस समयमें मांसाहारी ब्राह्मनोंको, मांस मिलणा मुशकिल हो गया, पहले तो देवताओंके नामसें, यज्ञके बहानेसें, घोड़े बकरेका मांस मिल जाता था, तब काश्मीर देशमें, ब्राह्मनोंने गुप्त सभा- वेद धर्मी मांसा हारियोंकी सुजाणसिंहके भयसें, इकठ्ठी करी, उहां ऐसा भाषण करा ईश्वरका कहा हुआ वेद, उसका जो कर्मकाण्ड अश्वहवन गऊ

हवन, मधुपर्क वगैरह, पाखण्ड नास्तिकमती बौद्ध जैनोंनें, वन्द कर दिया, पुरोडासा यज्ञकी मांसप्रसादी देवता, पितर, ब्राह्मनोंको जो मिलता था, सो सब बन्द कर दिया, इस वास्ते ऐसा कोई ऊपाय होणा चाहिये, सो यज्ञ पीछा शुरू हो जाय तब पांच ऋषियोंने इस बातका प्रचार करणा कबूल करा, और मनमें पांचों दाय उपाय सोचते, मरु धरमें आये, यहां इन्होंकों, ४ राजपूत मिले, जिन्होंको सुजाण कंवरने नोकरी व जागीरसें, बे तरफ कर निकाल दिये थे, वह चारों, आबूगिरी राजकी तलहटीमें पांचो ऋषियोंको मिले, इन्होने अपनां २ दुःख उन ब्राह्मनोंको कह सुनाया, वस ब्राह्मनोंको, भूखोंकों भोजन जाने मिला, विचार करा ये ४ उस सुजाण सिंहके, घरके भेदु हैं, अपना मनोरथ, इन्होंसे सिद्ध हो जायगा ऐसा विचार कर बोले, तुम हमारे कहे मुजब, करो तो, राज्यपति, राजाधिराज बन जाओगे, उन्होंने कहा, हे ऋषियों अंधोंको तो, नेत्रही चाहिये हैं, हम इसी आसामें फिर रहे हैं, वह चारों, इन्होंके संग होगये, आबूपर जाके, इन्होंको कहा के, हम यज्ञ करते हैं, तुम जीते हुए जानवरोंको पकड़ लाओ, यद्यपि धर्म उन्होंका जैन था लेकिन राज्यका और धनका लालची, क्या क्या, अकृत्य नहीं करता, वह चारों, जंगली भीलोंसें मिले, और उन्होंके हाथसें, तरह २ के जानवर पकड़वा मंगाये, यहां ब्राह्मनोंनें अनलकुण्ड बनाया, और उन जीवोंकों हवन करना प्रारम्भ करा तब वह राजपूत, घभराये, ब्राह्मनोंनें कहा हे राजपूतों, वेदमंत्रोंसे, जो देवता, इन्द्र, वरुण, नक्त, पूषा, वगैरहको, बलि दी जाती है, इन जीवोंकी, हिन्सा नहीं होती, ये जीव, और, करणे, कराणेवाले, सब स्वर्ग ही जाते हैं, बड़ा पुन्य होता है, अब उनके दिलका खटका दूरकर, ऋषियोंने, मांस आपभी खाया, और उन्होंको भी, खिलाया, पहाड़के वासिन्दे, भील मीणोंको भी खिलाया, अब वह भील मीणे, इन्होंके हुक्म बरदार भये, ब्राह्मणोंनें कहा, हम जो छल करेंगें, सो तुम सुणों, हम एक ऋषिकों, महादेव बनायंगे, एक भीलणीकों पारवती, और आबू पहाड़सें ऐसी २, औषधी लाई जायगी, उसका धूंवां लगते ही मनुष्य तत्काल बेहोस हो जायंगे, तुम लोक भीलमेंणोंको संग लिए, यज्ञस्थानके आस

पास ही रहणा, और एक मनुष्यको भेजके सुजाणसिंहको, कहला भेजणा कि, हे राजा तुमनें तो, सारे आर्यावर्तमें, यज्ञ करणा बंध करवाया, लेकिन् ब्राह्मण तो, खण्डप्रस्थ नगरके पासही जीवहवनरूप यज्ञ शुरू करा है, वह जब यज्ञविध्वंस करणे आवेगा, तब हम उन्होंको, जहरका धूंवा देकर, अचेत कर भाग जांयगें, तुम लोक उस वक्त खंडप्रस्थक राज्य लेकर चार भाग करलेणा, और ब्राह्मणोंकी भक्ति, राजसूयादि यज्ञ करणा ब्राह्मणोंको, ईश्वर समझणा, उन्होंकों, यथार्थ यह बार्ता पसन्द हुई, बस वैसाही, हुआ, वह सब ७३ राजा युक्त, विष धूम्रसें, अचेत हुए, जैसा क्लोरोफार्मसे होते हैं, उन्होंने, राज्य दबा लिया, ब्राह्मण भाग कर एक योगीकों बैल पर चढ़ाकर, एक औरतको संग लिए, उन्होंके पास पहुंचे, ठंडा पानी छिड़क कर उस मूर्छाका उतार करना ठंडे पदार्थ कपूर वगैरह वो विप्रलोग जानते थे, सो करवाया, वह जोगी बैल पर चढा, भस्मी लगाये, गलेमें सांप, आदमियोंके खोपरियोंकी माला पहना खड़ा रहा, इतनेमें मूर्छा रहित उठे, शस्त्र इन्होंके पहले ही ब्राह्मणोंनें, उठा लिए थे, ब्राह्मन लोक बोले, अरे ये महेश्वर शिवपार्वतीनें, तुमकों सचेतम करा है, तुम सब ब्राह्मणोंके यज्ञविध्वंस करणेको आये थे, तब दिया जो श्राप, उससे तुम पत्थर हो गये थे, अब तुम महेश्वरकी उपासना करो, इतनेमें एक मनुष्यनें खबर दी के खण्डप्रस्थमें, ४ पुरुष राज्याधिकारी होगये हैं, तब ब्राह्मनोनें सुजाणसिंहको कहा, अरे अरे तूं मृत्युनींदसे जागा, तबसे जागा नांम प्रगट हुआ, तब ब्राह्मणोंने, अपनी २ व्रत उन्हों पर लगाई, वह सब माहेश्वरी कहलाये, इन ब्राह्मणोंने, अपने वेद धर्म पर अपने पंजेमें गंठे वाद इन्होंकी स्त्रियें, बाल बच्चे, और कुछ २ व्यापार करणे लायक धन, उन ४ राजपूतोंसे दिलाया, उहां ये माहेश्वरी जात हुई कोई कहते हैं, ड़ीडवानेमें होनेसे ड़ीडू कहलाए, उस नगरीका नाम महेश्वर धरा, वो चोली महेसर मालव देशमें हैं सुजाणसिंह पर ब्राह्मणोका द्वेष था, तब ब्राह्मणोंने कहा अरे भिक्षुक तूं इन्होंकी पीढ़ीयोंका गुणकीर्त्तनकर, मांग खा, वह इन वहोत्तरोंका भाट हुआ, विचारा करे क्या, परवस पड़े लगे

नहीं कारी, ये सब उहां मालवदेशसे, उठके मारवाड डीड वाणेमें आवसे वह सब महेश्वरी डीडू वाणिये कहलाये, ।

इन माहेश्वरियोंमें, जोगदेव पमारके बेटे भी, महेश्वरी डीडू होगये थे, सो कई पीढीयों तक माहेश्वर ही रहे, ये बातका पूरा संवत् तो हाथ लगा नहीं है, मगर विक्रम सम्वत् सातसैका जमाना सम्भव है, वह चार राजपूत पमार १ चौहाण २ पड़िहार ३ सोलंखी ४ इस जातके थे, अव्वल वो सुजाणके नोकर थे, कर्म वस राजाका तो जागाभाट हुआ, और नौकरसो ठाकुर हुए, अब ब्राह्मण लोक इन महेश्वरियोंसें, कहणे लगे, तुम यज्ञ कराओ, और यज्ञका भाग पुरोडासा मांस खाओ, तब ये राजपूत जैनधर्मीपणे, दयाके भींजे हुए अन्तरंग, से बोले, है ब्राह्मणों, ये अकृत्य तो, हमसे नहीं होगा, तुमको गुरू माना, महेश्वर देवभी पूजा, लेकिन ये काम तो, मर-जांयगे तोभी नहीं करेंगे, तब ब्राह्मण, मरणे, परणे, दान, दापा, लेणा इन्होंसे, ठहराया, क्रम २ सें इन्होंकी सन्तान, ब्राह्मण मिथ्यात्वीयोंकी संगतसे, रात्रीको भोजन, बिगर छाणा हुआ पाणी, और कन्दमूलादि अभक्ष पर उतरते गये, पीछै स्वामी शंकरका मत चला, उन्होंने जगतमें दयाधर्म फैला हुआ देख, अपना सिक्का जमाणेको, जैनियोंको मारकुटके वैदपर यकीन तो करवाया, लेकिन यज्ञकी क्रिया तो जैनके हुए दयाधर्मीयोंको, कब रुचे, तब ब्राह्मणोंसे संप करा, सल्ला विचार कर कहा, अब बेदकी क्रिया छोड दो, वेद ईश्वरोक्त है उसकी फकत श्रुतियां विना अर्थ सोलह संस्का-रादिकमें, काम लाओ, लेकिन यह बात कहते रहो, वेदकृत्य सच्चा है, ईश्वरोक्त है, यज्ञ करणा, सतयुगका काम था, अब कलियुग है, इसमें घी तिल खोपरा चिरोंजी, विदामादिक सुगन्ध द्रव्यही, हवन करणा चाहिये, ऐसा कराते रहो, करते रहो, नहीं तो, ये लोक हिन्सा जीवोंकी देखकर, फिर जैन होजांयगे, और ऐसे २ शास्त्र बनानेका हुक्म ब्राह्मणोंको दिया के प्रजाका, दिल ठहरावो, तब पारासर स्मृतीमें ऐसा श्लोक डाला (यतः) अश्वालंभं गवालंभं, पैत्रिकं पलमेवच । देवराच्च सुतोत्पत्तिः,कलौ पंच विवर्जयेत् । (अर्थ) अश्वहोमणा गौ होमणी, श्राद्धमें, तथा मरेके पिछाड़ी, पिंडमें,

मांस देणा, और बड़े भाईकी स्त्री, पति मरे पीछै देवरसें लडका उत्पन्न करणा यह पांच कांम कलियुगमें मना है, यह काम होता था, वो ब्राह्मण वेद मतवालोंका सतयुग था, उसके पीछै जैन आचार्योंका उपदेश सुणके राजा राजपूत तथा महेश्वरी पीछै जैनधर्मी होते गये, सो हमने संक्षेपमें कई २ महेश्वरियोंका, जैनमतमें होणा, पीछा लिख भी दिया है, तब विक्रम सम्वत् तेरहसेमें माधवाचार्य दक्षिणमें हुए, इससे माधवाचार्य सम्प्रदाय विष्णुमतमें कहलाती है, रामानुज, शंकरस्वामीके मतकों धक्का लगानेवाला दयाधर्म कुछ माननेवाला दुनियांको गोष्ठीप्रशाद रामचन्द्रजीका भोग खिलाकर रिझाणे-वाला वेदपर पडदा डालकर अपना भक्तिमार्ग दिखाणेवाला, रामचन्द्रको ईश्वर माननेवाला, शठकोप कंजरका शिष्य मुनिवाहन, यवनाचार्य, चौथे दरजेके शिष्य रामानुज, इस तरह प्रगट हुए द्वैतपक्ष जैनियोंका मन्जूर करा, प्रपन्नामृत ग्रंथ बनाया, सौच मूलधर्म मानकर, खड़े तीन फाडेका, तिलक और शंख, चक्र, गदा, पद्म, लोहेका तपाकर, अपने मतावलंबियोंको, दाग देणेवाला, महादेवके लिङ्गको नमस्कार नहीं करणेवाला, उसने विष्णुमत नया सांक्षमत चलाया, इसके पीछै, माधवाचार्य २ नीमार्क ३ और विष्णुस्वामी ४ विष्णु स्वामीसे निकला वल्लभाचार्य, इन्होंने कृष्णकों देव माना इत्यादि मत चलाया, माधवाचार्यनें फिर अपने मतावलंवियोंको, जैन होता देखके, और जैन पंडितोने शंकर स्वामीके शिष्यनें, शंकर दिग्विजय अभिमानसें जो बनाया उसको खण्डन करता, ऐब लगाता देखके, शंकर स्वामीके २५० वर्ष वीते पीछै दूसरा शंकर दिग्विजय बनाया, उसमें अपने मतावलंबियोंको, ऐसा डर बैठाया, जैसें कोई मातापिता अज्ञान बालककों डराणेको कहते हैं के हाऊ है, वाघड़ है, ये है तो कुछ नहीं, लेकिन डराणेको कहा करते हैं, सोहाल किया है, (यत) न पठेत् यावनीं भाषां, प्राणैः कण्ठगतैरपि । हस्तिना मार्यमाणोपि, न गच्छेज्जिनमंदिरम् । १ । अर्थ । उरदू फारसी हिन्दुस्थानी प्रमुख भाषा न पढणी न बोलणी चाहै प्राण क्यों नहीं चले जांय, और हाथी मारता होय तो भी शरण लेणे भी, जैन मन्दिरमें नहीं घुसणा । १ ।

इसमें सिर्फ अपने वाड़ेकों मजबूत करणेसिवाय और कोई भी, प्रमाण सिद्ध नहीं होता, खैर ब्राह्मनोंके बचनसें अज्ञान बालकवत् शैव विष्णु लोक जैन मन्दिरमें नहीं घुसते हैं, और ज्ञानवान, इस वचनकों, कुंजड़ी केबेर समझते हैं, अपने बेर मीठे, ओरोंके खट्टे, लेकिन बड़ा अफसोस तो यह है कि शैव विष्णु ब्राह्मन लोक प्रथम लिखे शिक्षाकों क्यों भूल गये, माधवाचार्यने लिखा है कि उर्दू फारसी मत पढ़ो, सो तो हमनें हजारों मनुष्योंको, फारसी उर्दू पढ़के नौकरी करते व वकालत करते देखे हैं, माधवाचार्यनें, संदिग्ध बचन धरा है, विचार करता था कि, सभामें पंडित लोक प्रमाण पूछेंगें, तब तो कह दूंगा कि, जैन नाम वैश्याका है यानें। वैष्णवोंने, हाथीसे मरते भी, वैश्याके घरमें जाणा नहीं, तब तो सब लोक कबूल करही लेंगे, नहीं तो अपढ़ लोकोंकों पल्लेमें गांठणेकों, प्रगट नाम जैन मन्दिरहीमें जाना निषेधक होगा, इस समय, वोही हाल बण रहा है, ये इतनी वात प्रसंग बस कोचर जाती महेश्वरी हुए पीछै फिर जैन महाजन हुए, इस वास्ते जैन लोकोंकों, वाकिफ करणेको, लिखी है अब कोचरोंको महाजन होणा, लिखते हैं, सम्बत् ९।५८ में पमार वंसी डीडू महेश्वरी जिनोंकी प्रथम जात, पवार डोडा, पीछै जोगदेव चोटीलेका पुत्र सुजाण कुंमर साथ, महेश्वरी होगया, जिनोंमें पंवारोकी राठी जात पड़ी, राठियोंके १६२ नख जिनोंमें, डोडा मुंहता १२९ में नखमें, डोड़ाजीसूं डोडा मुंहता कहलाया सिरोहीमें पंवार वंसी राज करते थे, उन्होंकी दीवानी करणेसें मोहता पद, डोडाजीकों, राजाने इनायत किया, प्रथम सिरोही पमारोंनें वसाई थी सो वेद गोत्रके इतिहासमें हमने लिखा है, जब गोढ़ वाढ़में विष्णु शैवमती पोर वालोंको, हरिभद्रसूरिजीने, उपदेश देकर, जैनी करा, तब डोड़ाजी भी जैनधर्म

---

१ डोडाजीसें डोडा मोहताराठी वजने लगे ये माहेश्वर कल्पद्रुम पाने ११३ में २ सिरोही पमारोंमें वसाई सो लेख कमले गच्छके महात्मा लखूजी वेदोंकी पीढी दी जिसमें लिखी है और भी कई गोत्रोंका नांम गांम देकर हमको ये इतिहासमें पहले सहायता दी है इन्होंका जस माननीय है कोचर वंसकी उत्पत्ति हमकों कोचर मुंहता लूण करणजी जे संक्षेप दी थी सो धन्यवाद देता हूं।

धारण किया है विक्रम सम्बत् ९।९८ में यहांसे जैनधर्म पालणे लगा, पीछै इन्होंके पोते स्याम देवजी ब्राह्मनोंकी संगत, राजाओंकी नोकरीसे, श्राद्ध करना, मरेके पीछै, सब घरवालोंनें, बाल मुंडांणा, इत्यादि अनेक कर्म मिथ्यात्वीयोंका करणे लगे. इस वक्त सं. १००९ में श्रीनेमिचन्द्र सूरि वृहद्गच्छ वालोंने, पुनः मिथ्यात्व छोडाय. बारह व्रत उच्चराय सम्यक्त्वकी पहिचान कराई, और गुरूनें फरमाया, यहांसें धन माल लेकर तूं गुजरात पाल्हणपुर चलाजा, यहां राज्यमें भंग होगा, तब श्यामदेवजीनें, अपने पुत्रकों, बहुतसाधन देकर, राजासें प्रच्छन्न भेजदिया, वह रामदेव, उहां वहुरायत करणे लगा, यहांसे पाल्हणपुरी बोहरा कहलाये, देवी इन्होंकी वीसल, गुजरातमें मांनी, पहली सचाय थी, सं. १०१४ में पाल्हणपुर दुकान रह वास पूगल करा, तबसें पूगलिया वजने लगे, पीछै पूगलमें मुसल्मानोंका ऐल फैल देखके, सं. १३८९ में पूगल छोड़के, मंडोवरमें श्रीमंडजी आकर वसे, सं. १४४९ में महीपालजीकों राव चूंडाजीनें मारवाड़का सब काम सुपर्द करा राठोड़ोने मुंहता पद फिर दिया इस महीपालजीके पुत्र नहीं सो चित्तमें चिन्ता किया करे एक दिन सोझत गांमके वासिन्दे महात्मा पोसालिया लंगोट बद्ध तपागच्छके किसी राजकाजके वास्ते मंडोवर आये वो काम महीपालजीके हाथ था महात्मा इन्होंके घर आया और बोला महताजी ये काम मेरा करो तुह्मारा कोई काम मेरे लायक होय तो कहो तब महीपालजीने वह काम राव चूंडेजीसें कह निर्वाण चढ़ाया और कहा मेरे पुत्र होगाया नहीं तब महात्मा बोला आज पीछै तेरी शन्तान तपागच्छके महात्माओंको गुरू मानें तब विधी बता देता हूं जिससे पुत्र होगा इसके पहले सिन्धमें तथा मंडोवरमें रहते नेमिचन्द्र सूरिके पाटधारी खरतर गच्छकों गुरू मानते थे तब महीपालजीनें तपागच्छ मानना कबूल करा। तब महात्माने कहा—आसोज चेतमें नवरते करो, वीसल देवी मनावो पुत्र होगा। जब देवी कोचरीके रूपसे बोलेगी, तब कोचर नाम दना, फिर तुमारे वंशको कोचरीका अपशकुन नहीं लगेगा, पूजन आसोज चैत् ८ तथा ९ करना। वीसलरायकी भैंसेकी असवारी है, पुत्र जनमे तब अथवा

परणै तब १।) देवीकी भेट करै । जब पहले पुत्रका कोचरमें आधान रहे तब पांच महीना स्त्रीके बीतनेसे पूजै तो १।) कलसमें राती जोगा दिरावै दसहरा पूजै लेंगी हाथ १।) नारेल १ नव नैवेद्यसे पूजा करणी, इतना काम कोचरोंको करना नहीं, काला कपडा, नीला कपडा, रखै नहीं, घूघरा भैंस बकरी सांकल राखै नहीं, बिछियोंमें रुणरुणा डालै नहीं, चन्द्रबाईका चूड़ा पहरै नहीं, कदास कोई पहरै तो पीहरसें पहरै चरखा पालना झुणझुणा राखे नहीं, । पीला ओढणा पहले पीहरका स्त्री ओढे, पीछे घरका ओढे, इतना काम करणा तब महीपालजी सब कबूल कर, बीसलदेवी मनाई, पुत्र हुआ, कोचरी बोली, तब कोचर नाम दिया । पीछे कोचरजी मंडोवर छोड-कर महीपालजीके संग फलौदीमें आयबसे, सम्बत् १५१५ पीछे महाराजा सूर सिंहजीके संग, उरजाजी कोचर वंशी बीकानेर आये उसमें उरजेके बेटे आठ जिसमें रामसिंहजी १ भाखरसीजी २ रतनसीजी ३ ओर भीमसीजी पिताके संग बीकानेर आये, बीकानेरमें महाराजा सूरसिंहजी सं १६७३ में लेखणकी खिजमत इनायत करी और गांमपट्टा दिया, जिन्होंकी शन्ता-नके घर अन्दाजन १०१ बीकानेर वसते हैं फिर तो सायर मंढी दीवानी वगैरह, अनेक कांमके करता सांमधर्मी राजाओंके हुए, कितनेक घर रतन गढ़ वीदासरे गांम ददरेवा या गांम सारूडे इलाके राजगढ़, या तालूके सदरमें, रहते हैं, बेटे ४ फलोधी उरजेजीके रेह राहूजी १ डूंगरसीजी २ पचायण दासजी, ३ राजसीजी ४ इन्होंके घर ८० अन्दाजन फलोधी वाकी जोधपुर वगैरह बड़ी मारवाड़ सब मिलके जुमले अन्दाजन घर तीनसय कोचरोंके होंयगे, जिनराजके मन्दिरोंकी भक्ति सातक्षेत्रमें धन लगाणा, गुरुभक्ति, सनातन जैनधर्म पर विचारणा, सूरवीर नांमी २ पुरुष इन्होंमें हुए, और होते जाते हैं, फलोधीमें, केइकोचर कानूगा, वजते हैं, (दोहा) देव गुरूकी भक्तिधर, पुत्र वधेपरि वार । अनधनसें चढ़तीकला, कोचर बड़ सुखकार । १ विद्यमान तपागच्छ ।

(पीढियोंकी तफसील)

रामदेवजी १ हरदेवजी २ धनदत्तजी ३ बाहड़जी ४ भीमदेवजी ५

लखमसीजी ६ जसवीरजी ७ मेघरायजी ८ श्रीचन्दजी ९ पालणसीजी १० मूलराजजी ११ देहडाजी १२ भीमड़जी १३ चम्मड़जी १४ झांझणजी १५ महिपालजी १६ कोचरजी १७ भाणोजी १८ देवोजी १९ सीहोजी २० उरजोजी २१ ।

(अथ वेदश्रेष्टी गोत्र)

प्रथम राजपूत धूम १ अगन २ धीर ३ रावसी ४ धांधू ५ वीमल ६ आमल ७ सोमदेव ८ इन्होंके पुत्र ११ सो सब पमार कहलाये, सोढलसी इसकी औलाद सब सोढ़ा कहलाये, भोमदेव १० सीहलदो भाई, भोमरेनर-देव, ११) धीरके पुंडरीक १ माघादेव २ कीरतःचन्द ३ जोधदेव ४ भोपाल ५ धरणीवाट ६ नेरस ७ गर्द्दभिल्ल (गंधर्वसैन ८ विक्रमादित्य इन्होंके पाटानुपाट ९ राजा विक्रम हुए ५ भोज हुए राज तखत उज्जैन लघु भोजके मरे पीछै राज्य गया १२ पुत्र उहांसे निकल गये ६ वीसलका ७ चक्रवर्त्ति ८ पालणदेव ९ जोगीन्द्र १० ११ समरसेण १२ सुखसेण १३ नरदेवके गोदवनराज १४ अचलसेण १५ कर्मसेण १६ केवरसेण १७ बोहसेण १८ बीरधवल १९ देवसेण २० सनखत्त २१ सेणपाल २२ आसधर २३ महीधर २४ शिवधर २५ विक्रमसेण २६ भीमसेंण २७ सामदेव २८ वछराज २९ सुदवछ ३० रतनसी ३१ चन्द्रसेन ३२ । २६ पटधर भीमसेन भीनमालनग्र अपणे नामसे वसाया और सिरोही नगरके पहाड़ पर गढ़ वणाया इस वास्ते नगरका नांम सिरोही हुआ ३२ डूंगरसी ३३ रामसी ३४ कनकसी) भीमसेनके तीन पुत्र उपलदेव बड़ा सो तो ओसियां वसाई सामदेव सिरोहीका राजा हुआ आसल भीनमालका राजा हुआ इसमें ऊपलदेवने तो जैन धर्म धारण करलिया सो ओसवाल हुआ और आसलका श्रीमालमोत्र प्रसिद्ध हुआ नाना श्रीमल्लराजाके नामसें २७ भीमसेणका २८ ऊपलदेव रत्नप्रभसूरिःनें सेठियागोत्र थापा और ओसवाल कहाया भीनमालमें आसल, पीछै कनकसी, सामदेवकी शान्तानको राजा करा।

२८ ऊपलदेवके भृगुनरेश ३९ चक्रवर्त्त ३१ पालदेव ३९ जोगीय ३२ कोगुर ३३ समरसी ३४ सुखमल ३५ सुखमलका छोटा भाई अचल,

सो भीनमालके राजा कनकसीके गोद दिया, सालो ३६ समरथ, ३७ करमण ३८ वोहत्थ ३९ यहांसें भीन मालका राज्य सिरोहीवाले इन्होके परिवार वालोंने दाब लिया, यहां ४ पीढी तक भीनमाल और ओसियांका सिरोहीका एक राजाही हुआ, ४० वीरधवल नाणाने पैदा हुआ इस समय विक्रमादित्य पमार उजैणमें राजा हुआ. इसके वहिनका बेटा, भाणजा, सालिवाहन प्रतिष्ठान पुर (महेश्वर)का राजा सका, चलाया, ये राजा जैन था,उन्होकी शन्तान पहले महेश्वर, तथा गुजरात भावनगरमें, पालीताणे राज्य करते हैं, ।

यहांसे व्यापार करणे लगे ४० वीरधवल ४१ पुन्य पाल ४२ देवराज ४३ मनखत्त ४४ जीवचन्द ४५ वेलराज ४६ आसधर ४७ उदयसी ४८ रूपसी ४९ मलसी ५० नरभ्रम ५१ श्रवण ५२ समरसी ५३ सावंतसी ५४ सहजपाल ५५ राजसी ५६ मानसी ५७ उदयसी ५८ विमलसी ५९ नरसी ६० हरसी ६१ हरराज ६२ धनराज ६३ पेमराज मुखराजभाई ६४ पेमके थानसी ६५ वैरसी ६६ करमसी व्यापार भी करता और वैद्यविद्या भी करणे लगा लोकवेद २ कहते ६७ धरमसी ६८ पुनसी ६९ मांनसी ७० देवदत्त ७१ दुलहा सं. १२०१ में चित्तोड़के राणा भीमसीकी राणीके आंखमें, आकका दूध गिर गया, तब दुलहाको बुलवाया, और कहा तुम वेद्य नाम धराते हो राणीजीकी आंख अच्छी करो, तब दुलहा बोला, अभी दवा लाता हूं, वो चौमासा श्रीजिनदत्तसूरिःजीका चित्तोड़में था, गुरूके पास जाके, अरज करी, तब गुरूने कहा तुमारे पोते दो हैं, सो एकको, हमारा श्रावक करो तो. तत्काल भाइ खोल देता हूं, दुलहेने कबूल करा तब गुरू बोले जाओ जो तुम लगाओगे उसमें तत्काल सिद्धी होगी दुलहेजीनें घीमें गुड़ मिलाके आंखम लगवाया, तत्काल आंख अच्छी होगई, तब राणांजीनें कुरब बढ़ाकर, वैद्य पदवी दी यहांसे श्रेष्ठि गोत्र बदलके वैद गोत्र हुआ, दुलहेके ७२ वर्द्धमान ७३ सचा तथा शिवदेव शिवदेवकों जिनदत्तसूरिःका वासक्षेप दिलाकर खरतर गच्छमें कर दिया, वो वर्द्धमानवैदकान्हासर, अजीम गञ्ज, मारवाड़, वगैरह देशोंमें, अभी चिरजीवी है सचाके ७४

सहदेव और करमण ७५ सहदेवके जसवीर ७६ मोहले ७७ के माणक भाई गोद माणकसी इन्होकी शन्तान बहुत फैली ७८ देल्हो ७९ केल्हणसी ८० त्रिभुवनजी ८१ सादूलसीजी ८२ लोणाजी लाखणसी जैतसी ३ भाई २ भाईबीकेजी संग बीकानेरमें आए जैतसीजीका परिवार फलोधीमें अन्दाजन ८० अस्सीघर वसते होंगे अवशेष सब मारवाड़में लोणाजीके ८३ श्रीमन्तजी ८४ अमराजी सूरमलजी भाई ८५ अमरेकासींमाजी ८६ जीवणदासजी जीवण देसर बीकानेरके इलाके गांम वसाया ८७ ठाकुरसीजी ८८ राजसीजी ८९ आसकरणजी ९० रामचन्दजी ९१ उदयभांणजी ९२ दौलत रांमजी ९२ माणक चन्दजी ९३ घमंडसीजी ९४ मूल चन्दजी अबीरचन्दजी गच्छ कुंअला देवी सच्चाय सेवग बलि अद्

(मिन्नी खजानची भुगड़ी साख १५)

मोहनसिंहजी जातका चौहाणराजपूत उसनें दिल्लीमें मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिःसें प्रति बोध लेकर महाजन हुआ सं १२१६ में मोहनजीरामान्नी खजानेका काम राव बीकांजीका करा खजानची बजनें लगे, भुगड़ी सूखे बेर सिन्धमें बेचते थे इसवास्ते भुगड़ी नख हुआ वाकी नख इनमेंसे फटे हैं लेकिन् नाम नहीं मिला, इसलिए मिलणेसें लिखेंगें, मूलगच्छ खरतर

(मुहणोतगोत्र पींचागोत्र)

किशनगढ़ मारवाड़के रावराजा राठोड़ रायपालजीके १२ पुत्र थे, सो मोहनसिंहजी और पांची सिंहजी भाइयोंकी अणवणतसे जेसलमेर गये, उहां रावलजीने बहुत खातर मुजमानी करी, उहां माणिक्यसूरिः महाराजके पाटधारी, श्री जिन चन्द्रसूरिःका, त्याग वैराज्ञ उत्कृष्ट ज्ञान, तपकी तारीफ सुणके, हमेश व्याख्यान सुणने, आने लगे, अन्तकों मित्थ्यात्व त्याग गुरूके पास सम्यक्त्व उच्चर कर व्रतधारी श्रावक हुए रावलजीनें बहुतही महिमा करी, जेसलमेरमें वसे मुणेजीके मुहणोत, पांची सिंघजीके पींचा गोत्र, प्रगट १५९५ में हुआ उहां सम्बत् सोलेहसेके करीबमें, तपा गच्छके विद्यासागर जतीनें मुहणोत गोत्री खरतरोंकों, अपने गच्छमें कर लिया पींचे खरतरमें ही रहै, बाद उहांसे मुहणोत किसनगढ जोधपुर वगैरहमें राज्यके मुसद्दी हो गये,

ठाकुर बजते हैं, बस ये आखिरी जात हैं ये विद्यासागर दूढियोंकी तरह क्रिया कष्ट दिखाते बृहद्गच्छी खरतरादि गच्छोंके, प्रतिबोधे, राजन्य वंशियोंको, अपने पक्षमें करते गया।

(विज्ञापन)

ओसवन्स रत्नागर सागर है मेरा ये इतिहासक ग्रंथ गागरतुल्य है इसमें कहां तक समावे लेकिन तथापि जो कुछ इतिहास मिला उसकों संग्रह कर के अनेक इतिहास रत्नोंमे इस ग्रंथ गागरको अश्वपति महाजनोंके गुण रत्नसें भरके मैंने पूर्ण कलश करलिया और महाजनोंकी नांम श्रेणि रूप मुक्तावली इस कलसकों पहराकर जैनधर्मरूपकमल पुष्पपर विराजमान अल्प बुद्धिसें करा है, जो कोई भूल चूक अधिक कम लिखा होय, सर्व श्री संघसे क्षमा मांगता हूं ॥ आपश्री संघका सुनिजर वांछक, उ। श्री रामलालगणिः दन्तकथामें सुणां है के एक भोजकने अश्वपतियोंके १४४४ नख लिखे - घरपर आया स्त्रीनें पूछा सब जातलिखली, भोजक बोला, हां, तब बोली, मेरे पीहरके, डोसी जात असपत है, देखो तुम्हनें लिखाया नहीं, तब देखा तो डोसीका नांम नहीं, भोजक हारके बोला, और लिखूं डोसी, फेर घणाई होसी सच्च है मूलगोत्र तो थोडे, लेकिन मगर कोई व्यापार, कोई गांमके नांमसें, कोई राजाओंकी नौकरीसें, खजानेका कामसें खजानची, कोठारी, मुसरफ, दफ्तरी, वगसी, हीरेजीकी शन्तान, हीरावत, इत्यादि पिताओंके नांमसे, लेखणिया, कानूगा, निरखी, इत्यादि राजाओंकी तरफसें इनायत होके, जात पड़ी, सिंघवी, भण्डारी, इत्यादि फिर मुल्कोंके नांमसें, मरोठी, फलोधिये, रामपुरिये, पूगलिये, नागोरी, मेड़तवाल, रूणवाल, इत्यादि बहुत फिरघीया तेलिया, भुगड़ी, बलाई, चंडालिया, वाकचार, बांभी, ये सब कारणोंसें नख हुआ हैं, ओसवालोंमें सैकड़ों गोत निज जात राजपूतोंसें भी विक्षात है, राठोड़, सीसोदिया, सांखला, कछावा, इत्यादि, अनेक जांण लेणा, इसवास्ते २ हजार नख होंयगे, अठारह जातके नख शाखा तो कवलागच्छ प्रतिबोधक है, ६०० नख खरतर गच्छ प्रतिबोध कहै बाकी नख, खरतरके भाई, मल-

धारगच्छी, प्रतिबोध कहै, कई एक अल्प संख्या वडगच्छ चित्रावाल गच्छ प्रतिबोधक राजपूत होंगे, वाकी मलधार श्रावकोंको, हीरविजयसूरिः आदिकोंने, बहुतोंको तपा गच्छ माननेवाले करे, और वस्तपाल तेजपालके द्रव्यकी सहायतासें, ज्यादह हो गये हैं, गुजरातके पूर्ण तल्ल गच्छके भी, इस वक्त तपागच्छ मानते हैं, प्राय जैन पोर वाल हरि भद्राचार्य प्रति वोधक हैं, श्री श्रीमाल श्रीमाल सर्व जात वैष्णव हुए बाद खरतर गच्छी श्रीजिन चन्द्र सूरिःके प्रति वोधक हैं, जहां जिस नगरमें जिस गांममें निज गच्छके गुरू नहीं हो उहां २ तीन पढ़ी वीतणेसें जो वेषधर सम्प्रदाय होय वो गुरू ठहर जाते हैं ओस वंस तो सुरतरू है जो उसकी छांहमें बैठते हैं उसकों छांया फल पुष्प सुगन्ध देते ही हैं, सुरतरूका बीज वोणे वालोंके शन्तानोंके तो, जरूरही उपकारके आभारी होनेका फरज है, इस समय गच्छोंमें तो कमला तपा खरतरा इन तीनोंकी साखाओंही फैलकर जती २ फैल गये हैं क्यों कि १३ तपोंमेंसें सम्प्रदाय निकलीं पांचमकी संवत्सरी माननेवाले जो जो सम्प्रदाय हैं वह सब तपागच्छमेंसे ही निकले हैं लोंकाजी भी तपा गच्छी श्रावक था इत्यादि सम्पूर्ण, जैसै किसी कविनें कहा सर्वे पदा हस्तिपदे प्रविष्टा ८४ गच्छ महावीरके सब जाके चार रहै तपा, खरतर, बड गच्छी भाई हैं, पार्श्व नाथके कुंअला, ये भी ८४ में ही हैं क्यों कि उद्योतन सूरिःके वामक्षेपमें आगये, जैनके सब सम्प्रदाय बड गच्छ, खरतरगच्छ कुंअलाको वर्जके इस तपागच्छसें अलग नहीं, गुजरातमें तपागच्छमेंसे ही अलग होते गये, सामाचारी अलग २ होते गयी कमलामेंसे कोई शाखा निकली नहीं खरतरमें ११ साखा अलग फंटी, लेकिन सबोंकी सामाचारी एक है जिसमें ७ शाखा मौजूद हैं, दो तो आचार्य गच्छ खरतर पाली १ दुसरे बीकानेर २ रंग विजय खरतर गच्छ लखनेऊ ३ भाव हर्ष खरतर गच्छ वालोतरा ४ मंडोवरा खरतर गच्छ भट्टारक जैपुर ५ वृहत् खरतर गच्छ भट्टारक वीकानेर ६ पीपलिया खरतर गुजरातमें फिरते सुणा है

लोंका गच्छके जती तो ६ के हैं लेकिन पूज्याचार्य तो ४ ही विद्यमान है गुजराती लूंपक गच्छी १ कंवरजी पक्षके गुजराती २ धनराजजीके

पक्षके ३ नागोरी २ इनमें १ में भी आचार्य नहीं हैं उतराधी लोंका गच्छी जती थोडे हैं आचार्य नहीं है तपा खरतर वड़ गच्छ कमलोंमें लोंकागच्छवालोंके भाईपा है लेकिन् कछमें रही जो आंचल गच्छी सम्प्रदाय वो लोंकागच्छ वालोंसे भाईपा नहीं रखते हैं, कारण वो पूर्व पक्षका लाते हैं लेकिन् हम तो गुजराती आचार्य नरपत चन्द्रजी पूज्याचार्यकों तथा अजय-राजजी पूज्याचार्यको, तथा नागोरी प्रश्नचन्द्रजी पूज्याचार्यको, तथा रामचन्द्रजी पूज्याचार्यकों, अंतरंग भक्तिसें जिनप्रतिमाको जिन सद्रश भावसें भाव भक्तिदर्शन पूजा करते देखा है, हमारे तो इस न्यायसें लोंकागच्छी प्राणसें भी प्यारे हैं सामाचारीका झगड़ा फिजूल आपसमें चलाणा नहीं अपणी २ रोटियोंके नीचे सब अङ्गार देते हैं व, देरहै हैं आत्मार्थी आत्मासाधे श्रावकोंको जिन आज्ञा मुजब उपदेश करे पक्षपात करे नहीं वह अच्छा है जो प्रश्न श्रावक अथवा जती पूछे तो पूछे का जबाब सूत्र सिद्धान्त पंचांगी में लिखेका दाखला दिखाके देणा जिसकी सामाचारी सूत्र सिद्धान्तकी राहसें मिलती होंगी तो वह जरूर खराही कह लायगा, क्रियावंत जरूर तपेश्वरी कह लायगा मित्रता पणे वर्त्तना जिस कामोंमे जैनधर्म जगतमें अतुल औपमा पावे उस वातोंकी खोज करणा सर्व यती समुदायका सुनिजर वांछक उपाध्याय श्री राम ऋद्धिसार गणिः ।

(कच्छदेशी श्रावकोंका वृत्तांत)

पारकर देशपाली सहरके गिरदावके महाजनलोक, सोलहसे ३५ के वर्षमें, मरुधरमें बड़ा काल पड़ा, उस वखत ५ हजार घर सिन्धुदेशमें अनाजकी मुकलायत जांणके, चले गये, उहां महनत कर गुजरान चलाणे लगे, दो तीन पीढ़ियां वीतनेपर धर्म करणी भूल गये, उपदेशक कोई था नहीं, विना खेवटिये नाव गोता खावे. इसमें तो आश्चर्य ही क्या, उहां इतना मात्र जांणते रहै के, हम जैन महाजन फलाणे २ गोत्रके हैं. तद् पीछै संवत् सतरेसयमें एक आंचल सम्प्रदायके जती, कछके राजाके पास पहुँचा, और राजासें कहा मेरा कुछ सत्कार करो तो, वणियोंकी बस्ती ला देता हूं राजानें कहा जागिर दूंगा, गुरू भाव रक्खूंगा,

तब वह जती सिन्धमें पहुंचा और इन लोकोंको, मिला और पूछा इस देशमें सुखी हो या दुखी, तब वह लोक बोले मुसल्मीन लोक बहुत तकलीफ देते हैं, कोई जिनावर घरमें बीमार होता है तो, काजीकों खबर देणा होता है, तब काजी आकरके हमारे घरपर जीतीं गऊके गले पर छुरी फेरता है, आधे मुसलमान हो गये हैं, उस जतीनें कहा, हमको तुम जांणते हो, हम कौण हैं उन्होंने कहा, नहीं जांणते, तुम कौण हो, तब वह बोला, हमारे संग चलो, कच्छ भुज देशमें राव खंगारके राज्यमें, तुमकों सुखस्थानसें, वसादूंगा, वह सब इकट्ठे होकर, उस जतीके संग कछ देशमें आए, रावखंगारनें सुथरी, नलियां, जखऊ आदि, गामोंमें, वसाया, बहुत खातर तब ज्या करी, अब वह जतीजी तो राज्यके माननीय, जागीरदार वण बैठे, एक तो राज्य-मद, दूसरे बिना कमाया जागीरका धन, अब धर्म उपदेश इन्होकी बलाय करै, वो महाजन खेती करे, गुरुजी जागीरदारसें, रुपया व्याजसें उधार लेवे, रोटी भी जतीके यहां खालेवे, इत्यादि हाल ऐसा बणाके वावाजीका बाबाजी, तरकारीकी तरकारी, बाबाजी तुम्हारा नाम क्या बाबा बोले बच्चा वेंगणपुरी, वो हाल वणाया तब राजानें अपने जो राजगुरू प्रोहित थे, वह इन्होंके गुरू वणा दिये, परणे मरणे जन्मणे पर, वो ब्राम्हनोंने अपना घर भरणे इन्होंको पोपलीला सिखलाई, अनेक देवी देव पुजाने लगे खेतीका काम करणेसें ज्यादह धनवान, इन्होंमें कोई नहीं था, क्यों के, नीतिमें लिखा है, (यत) वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी किंचित् २ कर्षणे ।। अस्ति नास्तिच सेवायां भिक्षा नैवच नैवच ॥१॥ (अर्थ) व्यापारसें लक्ष्मी बढती है, खेतीसें कभी होय कभी बरसात नहीं होय तो करजदारी हो जावै, नोकरीमें धन होय किसी सूमके, नहीं होय खाऊ खरचूके, और भिक्षुक व भीख मांगणे वालेके कभी धन होवे नहीं लेकिन श्रीमाली ब्राह्मनकों वर्जके और भिक्षुकोंके १ इस तरह गुजरान करते थे इस वक्त मुंबई पत्तनकों, अंग्रेजसरकार ने, व्यापारका, मानो सागरही खोलके वसाया, इस वक्त आंचल गच्छके श्रीपूज्यरत्न सागर सूरिःके दादा गुरू सम्वत् १८ गुजरातसें कच्छमें पधारे पहले मार-वाड़में विचरते थे, इन्होंने जिन २ पूर्वोक्त गच्छोंके प्रतिबोधे महाजनोंकों,

अपणी हेतु युक्तियोंसे अपणे पक्षमें करे थे, वो कई दिनों तक इन्होंकी राह देखते रहै, ये तो कच्छ देशमें उतर गये, तब मारवाड़के आंचलिये, लोकोंने नागोरी, तथा गुजराती, कुंवरजीके, धनराजजीके पक्षको, मानने लगे, मारवाड़में ज्यादह प्रसार नागोरीलोकोंका हो गया, सम्बत् १८ में कच्छ देशके महाजन लोक जाती थोडी होणेके कारण, बेटी नहीं मिलणेसें, नाता भी करणे लग गये, उस वक्त आंचल आचार्यने, उन्होंको धर्मोपदेश देकर समझाया, खेतीमें महापाप है, कई लोकोंको सौगन दिलाई, व्यापारके वास्ते बम्बई पत्तन बताया, कइयक लोक इधर आए बदनके मजबूत और उद्यमी साहसीकपणेकर, पहली मजदूरी करनेसे कुछ धन हुआ पीछै साझेसे कम्पनी व्यापार खोला, गुरूदेवकी भक्ति और जती लोकोंके उपकार पर कायम रहै, दिन पर दिन चढ़ती कला, अब और धनसें होती गई, नरसी नाथा कोट्याधिपति धर्मात्मा प्रथम हुआ, उसने बहुत सहायता देकर जातीका सुधारा करा, अढ़ाई रुपये जगह २ मन्दिर धर्मशाला गुरुभक्ति साधर्मी भक्तिमें कच्छ वासी श्रावकोंने सो डेढ़से वर्षोंमें लगाया वह प्रत्यक्ष है, जती श्वेताम्बरियोंका जैसा मान पान भक्ति कच्छी श्रावक रखते हैं ऐसा कोई विरला रखता है, दस्सोंका नाता नरसी नाथेनें बन्द करा, अब तो धर्मज्ञ हो गये, लक्ष्मीसें कुसंप बढ गया, ये पञ्चम कालका प्रभाव, सब गच्छके थे, लेकिन वर्त्तमान आंचल गच्छ मानते हैं दस्से सब, बीसे कच्छमें मांडवी बंदरादिकमें सैकड़ों घर खरतर गच्छ अभी मानते हैं, बीसे व्यापारके वास्ते मारवाड़में उठके कच्छमें बस गये, गुजराती कच्छमें गये वो तपागच्छ मानते हैं,

(अथ श्रीमालगोत्र)

(उत्पत्ति)

भीनमालनगरी जिसका नांम भगवान महावीर स्वामीके विचरते समय श्रीमाल नगर था, राजा श्रीमलकी पुत्री लक्ष्मी उसका बिवाह करणेकी फिकरमें राजानें ब्राह्मणोंसें पूछा, मेरी कन्या साक्षात् लक्ष्मी तुल्य है, इसके लायक रूपवन्त, गुणवन्त वर राजकुमार मिलणेकी तदबीर बतलाओ, स्वयम्बर मण्डप करणेसे, बहुत राजा आंयगे, इसके रूपको देखकर, मोहित

होकरके, आपसमें लडकरके, लाखों आदमी मरेंगे, इससें बदनामी मेरी होगी, तब ब्राह्मनोंने कहा, हे राजेन्द्र, अश्वमेध यज्ञ कर, इसपर लाखों ब्राह्मण देश २ के एकत्रित होंयगे, उन्होंको पूछनेसें तथा जज्ञके पुन्यसें तुह्मारी कन्याकों इन्द्रके समान वर मिलेगा, राजाने अश्वमेध यज्ञकी सामग्री असंख्य द्रव्य लगाकर तइय्यार कराई भगवान महावीरका, समोसरण सत्रुंजयतीर्थकी तलहटीमें हुआ, लाखों पशुजीवोंकी हिंसा देख, श्रीमलराजोंका प्रतिबोध, गौतमसे होणेवाला देख, भगवाननें गौतम गणधरकों आज्ञा दी, हे गौतम, श्रीमाल नगरीका, श्रीमल राजा तुमसें प्रतिबोध पावेगा, लाखों जीवोंका उपकार होणेवाला है, इसवास्ते तुह्मारे शिष्य पांचसय साधुओंको संगले, तुम श्रीमाल नगर जाओ, भगवानकी आज्ञासे, गौतम विहार करते २ मरुधर भूमीमें प्राप्त हुए, इधर राजानें लाखों ब्राह्मणोंको, देश २ मेंसे निमन्त्रण देदे बुलवाया, वे सब यज्ञ करणे तइय्यार हुए, घोड़ेको देश २ में फिराके उहां लाए और भी जीव जलचर थलचर खचर ब्राह्मनोंके वचनसें श्रीमल राजानें अग्निमें हवन करणेको मंगवाये हैं सो सब जीव त्रास पाते विलापात करते करुणा स्वरसे ऐसा जता रहे हैं, अरे कोई दयाका भरा हुआ महापुरुष हमारी अरजी सुणके हमे बचावे, हम बे कसूर मारे जाते हैं अपने २ दिलमें तथा निजभाषामें कहते हैं अरे दुष्ट ब्राह्मणों हम स्वर्ग नहीं जांणा चाहते, ऐसै स्वर्गमें तुम तुह्मारे कुटुम्बके प्यारे, माता पिता भाई वगैरहको, क्यों नहीं पहुंचाते अरे मांस खाणेके लालचियो, हमारे प्राण लेणेसे तुमको स्वर्गके स्वप्न आवेंगें, इस हत्यासें राजा और तुम मांसाहार करणेसें, नरक पात्र होवेगे, जिसनें एसा सास्त्र वणाया, और तुमकों ये क्रिया सिखलाई वह कभी मुक्ति नहीं पावेगा, दुर्गतिमें भटकेगा, हे अन्तर्यामी तुम पूर्ण ज्ञानसें सचराचर जीवोंके, अभ्यन्तरी परणाम सब देखते हो, जाणते हो, हे प्रभु आप दयालु कृपालु हो अब हम निराधार निस्सरण अनाथ जीवोंकी, फरियाद सुनकर, हमारी सहायता करो, इस वखत गौतम गणधर उन २ जीवोंकी कामना मनपर्यव ज्ञानसे, जाणकर, लद्धिबलसें शीघ्र उहां पहुंचे, उहां यज्ञ में हवन होणेवाले जीवोंके, प्रतिपाल, यज्ञशालाके, बाहिर ठहरकर,

दयाधर्मका उपदेश करणे लगे, तब अग्निहोत्री ब्राह्मण गौतमके बहुतसे गोत्री, सगे सुसरे, साले, मामा, फूंफा, वगैरह तथा पांचसय मुनियोंके सगे, कुटुम्बी वगैरह, गौतमकों, देख, वेद पाठी यज्ञका निर्द्धार करणे आए, गौतमनें न्याय सूत्रसें, सबोंके मनमें, दयाका अंकुर बोदिया, यज्ञ याजन पूजायां, श्री जिनराजके मूर्तिकी पूजा है सो गृहस्थोंके ताइं दयाधर्म रूपयज्ञ है, श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमें दयाके साठ नांम, जिसमें पूजा है सो दया है, तब उन्होंने यज्ञका स्वरूप समझा, पंचेंद्री जीवोंका हणना, यज्ञ छोडा, सम्यक्त्व युक्तव्रत धारी ब्राह्मण हुए, उह श्रीमालनगरके होणेसें, श्रीमाली ब्राह्मण दया धर्मी संज्ञा हुई, बाकी पंच गौड देश वासी, तथा पंच द्राविड़ देशवासी, जो जो ऋषि उस यज्ञमें, हाजिरथे, उन्होंने तो जीवकों होमणेका यज्ञ छोडा, और मांस मदिरा पीणा त्यागकर दिया, गौतमके चरण पूजणे लगे, सब जीवोंको यथास्थान पहुंचाया, उहा सवालक्ष राजपूतोंनें श्री मल्लराजाके साथ, जैनधर्म धारण किया, उन श्रीमालोंकी एकसौ पैंतीस जातस्थापन हुई, पंचाल देशी (पंजाब) बंगदेशी कन्नौजदेशी सरबरिये इत्यादि ऋषि विप्र जो यज्ञमें नहीं आए थे, वह सब मांसाहारी ही रहै, क्योंके वेदका यज्ञ तो, जैनाचार्योंनें, प्रायः आर्या वर्त्तमें बन्द कर दिया, तथापि वह ब्राम्हण तो, मांस खातेही रहै, दायमा गौड, गूजर गौड, संखवाल, पारीक, खण्डेलवाल, सारस्वत, और वाघड़, इत्यादिकोंने, गौतमके उपदेशसें, मांसमदिराका खान पान करणा यज्ञ छोड़ा, इस तरह राजपूत ब्राह्मण दयाधर्मी गुरू गौतमके सेवक हुए, पूजा गौतमकी करणे लगे, उसके पीछै मुल्क २ में अलग २ वसणेसें श्रीमाली ब्राह्मणोंकी ४ शाखा फंट गई मारवाड़ी १ में वाड़ी २ लटकण ३ और ऋषि ४॥ इस यज्ञमें सैंधवारण्यवासी (सिन्ध देशके जंगलमें रहणेवाले) पांच हजार ब्राम्हणोंकूं गौतमका उपदेश कर्मयोग नहीं रुचा वैदोक्त पुरोडासा खाणेको यज्ञक्रिया अश्वादिक हवनकों सत्य मानते गौतमकी पूजाको व सत्कारको नहीं सहते गौतमकी निंदा करणे लगे तब श्रीमल्ल राजाके हुक्मसें सर्वतत्रस्थ ब्राम्हणोंने ब्रम्हकर्म रहित जांण, आर्यवेदके बाहिर किया रावणके दिग्विजय

समय पर्वत ब्राम्हणसें पशुवधरूप यज्ञ प्रारम्भ हुआ आर्यवेदोमें मांसाहारियोंनें हिंसक श्रुतियें वणाकर मिला दी उव्हट महीधर सायन आदिक भाष्यकर्त्ताओंने भी वेदोंका अर्थ पशुवध रूप यज्ञ कर मांस भक्षण लिखा इसलिए श्रीमालमें बहुतोंकी सम्मती गौतमके सत्य दयाधर्म पर ठहर गई वो विप्र पीछे सैंधवारण्यकों चले गये खेती करणे लगे भाटी राजपूत जो सिन्धुदेशमें तथा लबाणे जो सिन्धुदेशमें दरियावकी मच्छियोंको मुकाकर वेचते थे उन्होंके गुरू बण गये अब भी उन्होंके गुरू यही हैं जब सम्बत् सतरहमें औसवाल लोक सिन्ध देशसें कच्छ देशमें आए तब कईयक भाटीये लबाणे कच्छमें आवसे, उन्होंको वल्लभाचार्यजी गुसांईजीने, वह व्यापार छुडाकर, व्यापारी वणादिया, जो अब भाटिया वजते हैं, अब थोड़े ही अरसेमें, श्रीमल्लराजाकी राजधानी पर सिरोही गढके राजा पमारका पुत्र, भीमशेन, राजपूतोंको संग ले, श्रीमाल नगरीको घेरलिया, तब राजा श्रीमल्लनें विचारा मैं वृद्ध हूं पुत्र मेरे है नहीं, एक कन्या लक्ष्मी है, में युद्ध करणेके समर्थ हूं मगर युद्धमें लाखों जीवोंका संहार करणा, आखिर तो कोई दूसरा ही राज्य करेगा, जीव वधका पाप मुझे भोगणा होगा, ये घर पर गंगा आगई है, पुत्री देकर पुत्र गोद ले लेणा, दुरस्त है, ऐसा विचार राजा श्रीमल्लने अपने प्रधान सुवुद्धिके संग भीमसेनको कहला भेजा के मेरी पुत्री आपको दी, व्याह करके हथलेवेमें श्रीमाल नगरका राज्य दिया, राजा श्रीमल्ल सब राजरीती सबोंका कुरब कायदामान मुलायजा पुन्य दान किए हुए ग्रांम मुसद्दियोंकी खातरी सब गुप्त रहस्य, जामातको सिखलाते ९ वर्ष श्रावक धर्म पालते राज्यमें रहै तब लक्ष्मीराणीके दो पुत्र हुए ऊपलदेव १ और आसल २ और आसपाल पीछे हुआ ३ राजा भीमसेन आसलकों नानेके गोद दिया और राज्य का हक्क आसलकों कर दिया आसलका नानेके नामसे वोही श्रीमाल गोत्र रहा वाद श्रीमल्ल राजा जामात.की वेटीकी आज्ञा लेकर गौतम पास जाके राजग्रहीमें दीक्षा लेकर तपकर कवल ज्ञानपाय मोक्ष गये, भीमसेनका मत वाममार्ग था, ऊपल और आसपाल वाममार्ग मानते रहै आसल फक्त जैन नामधारी, नानेके नामपर रहा, जैनधर्मकी शिक्षाचार

नहीं जांणता था, भीमसेनके राज्यमें, श्रीमाल वंस वाले जैन धीरे धीरे गुजरात, गोढवाड मालवा, हिन्दुस्तानमें क्रमसें विखर गये, श्रीमाल नगरका नाम भीनमाल धरा गया जब ऊपलदेव होशमें आया तब पिताकी आज्ञा लेकर, छोटेभाई, आसपालकों, संग ले, ओसिया पट्टण जा वसाई, यहां वृद्ध अवस्थामें, रत्नप्रभसूरिःने, इन्होंको जैनधर्म धराया, श्रेष्टि गोत्र स्थापन किया, आसपालका लघु श्रेष्टि गोत्र थापा श्रेष्टि गोत्र तो १२०१ में वैद् वजणे लगे, लघु श्रेष्टि वाले सोनपालजीके नामसे सोनावत बजणे लगे, भीनमालमें भीमसेनकी गद्दी आसल वैठा, वो भी रत्नप्रभसूरिःसे जैनधर्मको धारण करा श्रीमाल गोत्र इसी वास्ते १८ गोत्रोंमें गिणते हैं, श्रीमाल गोत्रकी थापना गौतम स्वामीनें ही करदी थी, अब लक्ष्मी माता वृद्धावस्थामें विचारणे लगीं, के मेरे पिताके हाथसें, २००० विप्र निकाले गये तब इन्होंने अपने पुत्र आसलकों कहकर, उन सबोंको बुलाया और गौतम गुरुकी आज्ञा दयाधर्म पालणा कबूल करवाया टाडसाहव राजपुतानेके इतिहासमें पुष्करणोंका ओडोंसे होना लिखा है, ये विना विचारे लिखा गया, पुष्करणे सनातन है नूतन नहीं है क्योंके गौतमकी अवज्ञा करी थी ब्राह्मणोंसे भिन्नता की थी इस वास्ते तत्रस्थ विप्रोंको प्रशन्न करा वेदाधिकार देकर ब्रह्मकर्म नेष्टित करा, दुसरे ब्राह्मण श्रीमाली छन्यातवाले कहते हैं पुष्कर खोदणेसें ओड़ोंको ब्राह्मण करा ये वार्त्ता असत्य है यह वार्त्ता, द्वेषमें बाकी ब्राह्मणोंने शुरू करी है उस समय ब्राह्मणों की आज्ञा नहीं मानी दयाधर्म और गौतम स्वामीकी अवज्ञा करी थी, राजाके देवी सचाय थी वह पुष्करणोंनेमानी, सिन्धमें देवी उंठाथी, गोत्र पुष्करणोंका, साण्डिल्यस वगैरह जातिका जुदा जुदा है, एक २ गोत्रमें छव २ नख हैं जैन शास्त्रसें, पोसह करणा माहन, भरत चक्रवर्त्तिनें, नाम थापन करा था, पर्व्व तिथीमें पोषध करणेवाले (धर्मस्य पुष्टिं धत्ते इतिपोषध) धर्मकी पुष्टि करणे वाले, जैनधर्मी असंक्षा वर्षतक रहै, फेर और धर्म सबोंने मनमतसें आजिवीका रूप कर डाला, उस पोसह करणा शब्दका अपभ्रन्श पोकरणा लोक कहणे लगे, श्रीमाली ब्राह्मनों की देवी वो राजपुत्री लक्ष्मी है, फिर स्वामी शङ्करा-

चार्यके जुल्मसें श्रीमाली पुष्करणे ब्राह्मनोंने वेद कृत्य कबूल करके यज्ञका मांस खाणा तो कबूल नहीं करा लेकिन मन्नावत श्रीमाली दशहरा वगैरह पर्वों पर लपसीका भैंसा वणाकर कुसाघास डाभसे वेद मंत्र पढ़कर उसके गर्दन पर फेरके प्रशादी बांट खाते हैं ये महिमा अब भी वेदके यज्ञकी करते हैं पुष्करणे ब्याहमें आधी रातको कोरपाण वस्त्रपर सब बैठके गुड़की लपसी और दूध खाते पीते हैं वाद कलसा जांनके दिन जनेऊ ... कर स्नान करते हैं ये निशाणी स्वामी शंङ्कराचार्यजीने पीछी सिखलाई, जो कि अब भी करते हैं, अब तो इन्होंमें सुद्धा चारकी वृद्धि है, त्याग देना ही उत्तम है, क्योंके वुद्धे फलंतत्व विचारणंच ज्ञाति सुधार विद्या वृद्धिसें संम्बन्ध धराता है, विक्रमसं. सातसयमें श्रीमाली ब्राह्मणोंने श्रीमाल पुराण वणाया, उसमें कुछ भेद पाठान्तर ये बात लिखी है, हिन्दमें संप नहीं, करमसोत राजपूतोंका कटक नहीं कुत्तों कीं कतार नहीं, पोकरणोंके पुराण नहीं, श्रीमाल पुराणके अन्तर्गतही अपणी उत्पत्ति मानते हैं, कई पुष्करणे भीनमालसे कच्छमें गये, आधे मरुधर, जेसलमेर, पोकरण, फलोधी, मल्हार जोधपुर बीकानेर, छेड़े बिछड़े, और २ जगह, इस वक्त सब पोसह करणे ४० हजार करीब होंगे, विशेष गोकुली गुशाइयोंके सखा वण रहे हैं, बाकी कुछ शाक्त हैं।

श्रीमाल वणिक गुजरातमें श्रीमाली दसावीसा बजते हैं गोत्रका नाम नहीं जांणते स्वामी शङ्कराचार्यजीके हमलेमें जैनधर्म छोड शैवमती विष्णुमती हो गये थे गुजरातमें हेमाचार्यनें फिर जैनधर्म इंन्होंका कायम रक्खा सगपण जैन विष्णुवोंके होता है दिल्ली लखनऊ आगरा जयपुर झुझणूंके जो श्रीमाल है इन्होंको श्रीजिनचन्द्र सूरिःने शैव धर्मसें प्रतिबोध देकर जैन धर्मी करा वह सब खरतर गच्छमें हैं बड़े २ श्रीमन्त लक्षाधिपती श्रीमाल गोत्री धर्मज्ञ हैं इन्होंकी १३५ जाति राजपूतोंसें फंटी है, ।

(श्रीमाल गोत्र १३५)

१ कटारिया २ कहूंधिया ३ काठ ४ कातेला ५ कांदइय ६ कुराडिक ७ काल ८ कुठारिये ९ कूकड़ा १० कौडिया ११ कौनगढ़ १२ कंबो-

तिया १३ खगल १४ खारेड १५ खारे १६ खौचडिया १७ खौसडिया १८ गदउडघा १९ गलकटे २० गपताणिया २१ गदइया २२ गिला हला २३ गींदोड़िया २४ गूजरिया २५ गूजर २६ घेवरिया २७ घौघडिया २८ चरड़ २९ चांड़ी ३० चुगल ३१ चडिया ३२ चंदेरीवाल ३३ छकडिया ३४ छालिया ३५ जलकट ३६ जूंड ३७ जूंडीवाल ३८ जांट ३९ झामचूर ४० टांक ४१ टांकरिया ४२ टींगड ४३ डहरा ४४ डागड़ ४५ डूंगरिया ४६ ढौर ४७ ढौढा ४८ तवल ४९ ताड़िया ५० तुरक्या ५१ दसाज ५२ धनालिया ५३ धूवना ५४ धूपड़ ५५ ध्याधीया ५६ तावी ५७ नरट ५८ दक्षणत ५९ नाचण ६० नांदरीवाल ६१ निवहटीया ६२ निरदुम ६३ निवहेड़िया ६४ परिमाण ६५ पचौसलिया ६६ पड़वाड़िया ६७ पसेरण ६८ पंचोभू ६९ पंचासिया ७० पाताणी ७१ पापड़गोत ७२ पूरबिया ७३ फलवधिया ७४ फाफू ७५ फोफलिया ७६ फूसपाण ७७ बहापुरिया ७८ वरड़ा ७९ बदलिया ८० बंदूबी ८१ बांहकटे ८२ बाईसझ् ८३ बारांगोत ८४ बायड़ा ८५ विमनालक ८६ वीचड़ ८७ बौहलिया ८८ भद्रसवाल ८९ भांडिया ९० भालोदी ९१ भूबर ९२ भंडारिया ९३ भाडूंगा ९४ भोथा ९५ महिम वाल ९६ मऊठिया ९७ मरदूला ९८ महतियाण ९९ महकुले १०० मरहटी १०१ मथुरिया १०२ मसूरिया १०३ माधलपुरी १०४ मालवी १०५ मारूमहटा १०६ मांदोटिया १०७ मूसल १०८ मोगा १०९ मुरारी ११० मुदड़िया १११ राडिका ११२ रांकिबांण ११३ रीहालीम ११४ लवाहला ११५ लडारूप ११६ सगरिप ११७ लडवाला ११८ सागिया ११९ सांभडती १२० सीधूड़ १२१ सुद्राड़ा १२२ सोहू १२३ सौठिया १२४ हाडीगण १२५ हेडाऊ १२६ हीडोय्या १२७ अंगरीष १२८ आकोडूपड़ १२९ ऊबरा १३० वोहरा १३१ सांगरिया १३२ पलहोट १३३ घूघरिया १३४ कूंचलिया १३५।

इसतरह श्रीमालोंकी १३५ जाती थी बहुतसी तो गुजरातमें बसनेसें गोत्र मारे गये, गुजरातमें गोत नहीं, मारवाडमें छोत नहीं, इस न्यायसें और

वाकी देशोंमें, जो श्रीमालोंकी वस्ती है, उन्होंमें गोत्रका पत्ता लगता है, भीनमाल गुजरात मारवाड़की संधी पर है, इस वास्ते श्रीमालोंके विवाह मरणे परणे का रिवाज, गुजरातियोंकी राह मुजब है, अब तो गुजराती श्रीमालियोंकी, अनेक तरहकी नई जाती संज्ञा बन्धगई है, जैसै के मारफतिया, घमघम, देवी इन्होंकी लक्ष्मी है ये बात यथार्थ मिलती भी है श्रीमाली ब्राह्मण और श्रीमाल लक्ष्मीके तो पात्रही हमने बहुतोंको देखा है,

(पोरवाल जांगडा गोत्र २४)

श्री पद्मावती नगर (पारेवा) में २४ जातके राजपूतोंके सवालक्षगृह वसते थे, इन्होंको महावीर स्वामिके ९ में पट्टधारी, श्रीयशोभद्रसूरिःप्रभुके निर्वाण पीछै डेढ़से वर्ष करीब विक्रमके पूणा तीनसय वर्ष करीब पहले प्रति बोध देके, जैन धर्म धारण कराया, पारेवा नगरके होणेसें पोरवाल कहलाये, पीछै फिर कई हजार घर शैवधर्मी राजाओंकी नोकरीसें होगये, वाकी जैनधर्मी रहै, विक्रम राजाके १०८ वर्ष वीतने पर, पोरवाल जावड़सा, बड़े नामी, शूर वीर जिनधर्मी अड़बों रुपये लगाकर, जिनमन्दिर, जीर्णोद्धार, सात क्षेत्रोंमें द्रव्य लगाया, सत्रुंजयका संघ निकालकर, क्रोड़ो सोनइये, जात्रियोंके लिये लगाये, फिर सत्रुंजय तीर्थका चौदहमा उद्धार कराया, सोले उद्धारोंमें इन्होंका नाम मौजूद है, कई हजार घर विष्णुधर्मीयोंको हरिभद्रसूरिःनें, प्रतिबोधे फिर संम्बत् एक हजारमें उद्योतनसूरिःजीके निजपट्ट धारी, वर्द्धमानसूरिः वैश्नव विमलशाह मंत्रीके, गोत्रवालोंको, तथा विमल मंत्रीको उपदेश दे आबू तीर्थ ब्राह्मणोंने दबा लिया था सो अठारह क्रोड बावन लाख सोनइये खरच ब्राह्मणोंको द्रव्य दे खुशकर पीछै कबजा करा वर्द्धमानसूरिःने मंत्राराधनासे अम्बिका देवीको, प्रत्यक्ष कर बादशाहोंको, बुलाया, जमीनमें अलोपमन्दिर पुष्पमाल ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्याके, हाथसे, जहां गिरे, उहां ही जिनमन्दिर है उसस्थान प्राचीन मन्दिर निकला ये सब विस्तार खरतर गच्छकी गुर्व्वावलीमें विस्तारसे विवरण लिखा है, जिनमन्दिर करवाया, सो विमलवसी नामसें विक्षात है, फिर वस्तुपाल तेजपाल, वह सब संघमें दस्सा करनेवाला, इन्होंने

जगच्चन्द्र सूरिःको चित्तोड़के राणेके पास महातपा विरुद दिराके, आचार्य पदका नन्दी महोत्सव करा, महातपाका तपानामक रलिया जगचन्द्र सूरिःका, जगह २ विहार करवाया तपागच्छ माननेवालोंको हजारोंको श्रीमन्त बणाया, १३ सत्रुंजयका संघ निकाला वे गिणतीका द्रव्य इन्होंने लगाया, तपागच्छकों बहुत सहायता दी, इन्होंकी सहायतासे मारवाड़, गुजरात, गोढ़वाड़में तपागच्छ फैला, आज विद्यमान जो २ मन्दिर जैनियोंके मौजूद है, क्रोड़ोंके लागत केसो सब पोरवालोंकाही कराया हुआ है, वाकी जैनराजाओंका श्री श्रीमाल श्रीमाल ओसवालादिकोंका क्रोड़ों ही लागतका कराया हुआ मन्दिर मुसल्मान बादशाहोंनें नामी मन्दिर तीन लाख तोड़ डाले गुर्जर भूपावली वगैरह इतिहास देखणेसें मालुम होता है फिर निन्नाणवे लाखसोनइये धन्ने पोरवाल राणपुरेके मन्दिरकों लगाया ऐसे २ धर्मात्मा पोरवाल वन्शमें होगये समय मुताविक मन्दिरोंकी भक्तिमें अब भी लगाते हैं गोढ़वाड़में जैन पोरवालोंकी वस्ती बहुत है खरतर गच्छमें भी पोरवाल बहुत थे उपाश्रय खरतरोंके खालीपड़े खरतर साधुओंका बिहार कम हुआ इस ६० वर्षोंमें तपागच्छी साधुओंका जाणा आणा वणतेरहा गच्छ दोनों पोरवालोंका है खरतर तपा मालवेमें चम्बल नदीके किनोरे तीन हजार घर अभी भी वैष्णव धर्मी है।

(पोरवाल २४ गोत्र नाम)

१ चौधरी २ काला ३ धनघड़ ४ रतनावत ५ धनोट्या ६ मजावट्या ७ डबकरा ८ भादल्या ९ सेठया १० कामल्या ११ ऊधिया १२ वखरांड १३ भूत १४ फरक्या १५ लभेपस्या १६ मंडावट्या १७ मुनियां १८ घाट्या १९ गलिया २० भैसोंटा २१ नेवपट्या २२ दानगढ २३ महता २४ खरड्या, देवी इन्होंकी पद्मावती है।

(हुंवड़ गोत्र)

पाटण नगरका राजा अजित शत्रु, जिसके पुत्र दो, भूपतिसिंह १ भवानी सिंह २ भूपतिसिंहकी माता, देवलोक होगई, भवानीसिंहकी माता, पाटराणी, राजाके माननीय थी, राजपूतोंकी रसम है, बड़ा पुत्र होयसो,

पाटका मालिक हो, वैश्य महाजनोंकी रसम है छोटा पुत्र घरका मालिक होय हिस्सा बराबर जितने पुत्र होंय जितना करैं, पिताके जीते दम एक पत्तीपिता अपणी रख लेवे, माताके जीते माता अपणा सब गहणा रख लेवे, पीहरसें मिला हुआ भी, माताको रखनेका अधिकार है, देवे तो खुशीसें हिस्सेमें दे सकती है लेकिन कायदेसें, हिस्सेदारोंका हक्क नहीं है, वह माता पिताके मरेवाद, छोटे पुत्रका होता है, यदि माता पिताका दिल दुसरे पुत्रोंको, या और किसीकों, देणा धारे देसकते हैं, पुत्रोंको रोकणेका अधिकार नहीं है, मातापिताके पास कुछ होय नहीं तो, पुत्र हिस्से मुजब, उन्होंका गुजरान चलावै, इसमें एक धनवंत कमाणेवाला होय तो वोही माता पिताके निर्वाहका जुम्मेवार होता है, सिरपर ऋण, कुटुम्ब खरचका होय तो, सब पुत्र हिस्से मुजब देणेमें जुम्मेवार है, कोई भाई बड़ा व छोटा अङ्गहीण कमाई रहित होय तो, वाकी भाई मिलके, या समर्थ एकही, रोटी कपड़ा देणेका जुम्मेवार हो, राजाओंके बड़ा पुत्र राज्यपती होता है इत्यादि कायदेसें विचार भवानी सिंहकी माता अपणे पतीकी बहुत भक्ति करणे लगी; राजाके भोजन करे पीछै भोजन करै, प्रभात समय मुख देखे विना मुंहमें पाणी नहीं डाले, पतीको निंद्रा आये पीछै आप सोवे, बिना हुक्म कोई भी काम नहीं करै, इमतरह पतिव्रता धर्म, पालती हुई, रहै एकदिन राजा परिक्षाके वास्ते राज्यकार्य करता रहा, जब रातको च्यार वजे राजा रणवासमें गया तो राणी खड़ी हुई सामनें आई राजाने पूछा, क्यों आज सोई नहीं, तब राणी बोली, हुजूरनें शयन नहीं फरमाया, मेरा तो क्या, तब राजा सत्कार कर बाहिर आया, और नाजरकों पूछ निश्चय किया, राणी बिल्कुल रातभर खड़ी रही, तब राजाने राणीके पास जाकर प्रसन्नतासे बोला, तुम्हारे सत्वपरमें प्रशन्न हूं जो मांगणा होय सो मांगो, राणी बोली हुजूरकी महरबानी, राजा बोला, महरबानी तो वनी ही है, लेकिन कुछ मांगो (यतः) सकृद् जल्पन्ति राजानः सकृद् जल्पन्ति साधवः) सकृद् कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृद् २

(अर्थ) राजाकी आग्या एक, साधु वाक्य एक, कन्या एक बेर दी जाती है, ये तीनों एक ही होते हैं ? पुनः ऐसा भी कहा है, अमोघं वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जनं, अमोघं साधुवाक्यंच, अमोघं देवदर्शनं ? (अर्थ) दिनकी चमकी बीजली, रातका गाजना, यथार्थ साधु हो उसके वचन, और देवताका प्रत्यक्ष दर्शन व्यर्थ नहीं होता ? इस लिये वर याच, तब राणीनें कहा, स्वामी आपका अंग जात भवानी सिंह ठाकुर होगा के राजा, राजा समझ गया के राणी पुत्रकों राज्य मांगती है, राजा बोला, जा तेरे पुत्रकों राज्य दिया, भूपतिको जागीर दूंगा राजानें कई अर्से पीछै बडे पुत्रको जागीर तीसरे हिस्सेका दिया, भूपतिनें कबूल करा, राजा परलोक पहुंचा, पिताके तख्त भवानी सिंह बैठा, भूपति सिंहनें अपणे बलसें पिता जितना राज्य बढालिया, अनेक राजा पायना मी हुए, तब भवानी सिंहनें, ईर्ष्यासे दूत भेजा, तूं मेरी सेवा कर, राज्यपती मैं हूं, तूं सामन्त है, भूपतिनें गिनारा नहीं, तब लड़णेको फौज भेजी, तब भूपति सिंहने भाईको, अन्याई जाणकर, फौजकों मार भगाई, और आप आके पाटणके बाहिर कर घेरा दिया, दोनोंके घोर युद्ध हुआ, तब इस भूपति सिंहका मामा, वृद्ध भोजराजा समझाणे आया, लेकिन दोनों भाई माने नहीं, इतनेमें मान तुंगाचार्य भक्तामरस्तोत्रके कर्त्ता, उस वनमें समवसरे, मामा भाणजेकों ले, वन्दनकों गया, और गुरूसें धर्म देशनासुनी, चित्तमें धर्मकी वासना हुई, तब गुरूसें बोला, हे गुरू हूंबड़ हूं, और भवानी लघु है, इस बातकों आप, न्यायसें फरमा दो, कसूर किसका है, । गुरूने वृत्तांत सुण कहा तूं सच्चा है, और भवानीका पक्ष अहंकारपूरित है, तब राजा भोजने, अपना मनुष्य भेजके भवानीको बुलाके चरणोंमें लगाया, तब प्रशन्न होकर भूपतिनें सब राज्य अपना भी भाईकों देदिया, और अपने पुत्रोंयुक्त जैन महाजन श्रावक हुआ, सत्रुंजयका संघ निकाला, गुरूके सामने कहा था के, हूं बड़ हूं, तब गुरूनें जातीका नांम हूंबड धरा, पीछै परिवार बहुत बढा कुमुद चन्द भट्टारकने, कई घर दिगाम्बर धर्ममें किए, कई घर विष्णु होगये

थे, उन्होंको अठारह हजार वाघड़ देशमें रहनेवाले, जो वाघड़ी वजते थे, उन्होंको खरतरा चार्य, वल्लभ सूरिःनें, प्रतिबोध दे खरतर किये, धुंधुंकानगरीमें जिल्लागर हूंबड़नें, अपना पुत्र, बल्लभसूरिः को बहि राया, वो दादा श्रीजिनदत्तसूरिः भये, इस तरह मालवा, मेवाड़, गुजरात, वगैरह देशोमें, हुबड़ दिगाम्बर स्वेताम्बर, दोनों वसते हैं, ।

(गोत्र १८)

सं.	गोत्र.	वंश.	सं.	गोत्र.	वंश.	सं.	गोत्र.	वंश.
१	खेरजा	गहाया	७	भद्रेश्वर	भाटी	१३	सोमेश्वर	कछावा
२	कमलेश्वर	परमार	८	विश्वेश्वर	सोनगरा	१४	जियाण	हाड़ा
३	काकडेश्वर	सोलंखी	९	संखेश्वर	झाला	१५	ललितेश्वर	गहोडिया
४	उत्रेश्वर	चौहाण	१०	गंगेश्वर	जादव	१६	शृंगेश्वर	पडिहार
५	मात्रेश्वर	राठोड़	११	अम्बेश्वर	नेहरा	१७	कास्यपेश्वर	चुवाल
६	भीमेश्वर	देवड़ा	१२	मामनेश्वर	सीसोदिया	१८	बुधेश्वर	चन्द्रावत

(चौराशी गछोंके नाम)

२३ में श्रीपार्श्व प्रभुके शिष्य वर्गोंका, उपकेश गच्छ वजता था, केशी कुमारके नांमसें, वह आचार्य मंदाचारी चैत्यवाशी होगये, पीछै उद्योतन सूरिके पास ८३ थविरोंके, और भी शिष्य जो त्यागी वैरागी महाव्रती वजते थे, उसमें पार्श्वप्रभुके शंतानीभी, एक थविरके शिष्य पढ़ते थे, महावीरस्वामीके ११ गणधरोंके नव गच्छमेंसें एक सुधर्मा स्वामीकाही गच्छ, कायम रहा, वाकी गणधरोंके शिष्य मुक्ति गये, इस गच्छका नाम तो यथार्थमें सौधर्म, निग्रन्थ गच्छ हुआ, बाद क्रम२ से आचर्योंके शिष्यवर्गोंसे, गच्छ कुलशाखा अनेकानेक चली, जोकि श्रीकल्प सूत्रमें दरज है, काल दोषसें, सब गच्छ प्रायः थोडे रहै सम्बत् ९०० सें विक्रमकेमें शंकर स्वामीने राजोके बलसे अत्याचार करा जिस कारण कोटिक गच्छ चन्द्रकुल वज्र शाखाधर आचार्य वृहद्गच्छी श्री नेमिचन्द्र-सूरिःके पट्ट प्रभाकरश्री उद्योत्तनसूरिः महागीतार्थ प्रभावीक, त्याग वैराज्ञ

विराजित, महाव्रती, एक आचार्यही सं. १००० में विचरते रहे, वाकी सब थविर नामसें विख्यात थे, आज्ञा सबपर उद्योतनसूरिः हीकी थी, तब गुरूमहाराज जैन धर्मके उद्योतका समय अर्द्ध रात्रिकों, नक्षत्रोंका स्वरूप देख, वृद्धिभावसें, प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरिकों सूरि मंत्र दिया, फिर ८३ विद्यार्थियोंको भी सूरिः मंत्र दिया, वह सब चौरासीही पालीताणेके सिद्ध बड़के नीचेसें ही गुरूके हुक्मसें अलग २ विचरे, उन्होंने ज्ञानयुक्त क्रियासें, अपणे २ गच्छ प्रगट करे, साधु साधवी आत्मार्थी बणाये उन्होंके नाम ८४ प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरिःके शिष्य जिनेश्वर सूरिःकों खरतर विरुद मिला वह १ खरतर गच्छ २ सर्व देव सूरिका बड़ गच्छ पूनमिया ३ चित्रावाल गच्छ विच्छेद जाकर तपागच्छ प्रसिद्ध हुआ ४ उपकेश गच्छी ओसियांमें जाके शिष्य वर्ग वधाया, इस करके ओसवाल गच्छ कहलाया, ये अभी चारों विद्यमांन है, ५ जीरावला गच्छ ६ गंगेसरा ७ केरंडिया ८ आंणपुरी ९ भरुअच्छा १० उद्रविया ११ गुप्तउवा १२ डेका उवा १३ भीनमाला १४ मुंहडसिया १५ दासरुवा १६ गच्छपाल १७ घोषपाल १८ मग उडिया १९ ब्रह्माणिया २० जालोरी २१ बोकडिया २२ मुझाहड़ा २३ चीतड़िया २४ सांचोरा २५ कुचड़िया २६ सिद्धान्तिया २७ मसेणिया २८ आगम २९ मलधार ३० भावराजिया ३१ पल्लीवाल ३२ कोरंटवाल ३३ नाकदिक ३४ धर्म घोषा ३५ नागपुरा ३६ उस्तवाल ३७ तोषाबला ३८ सांडेरबाल ३९ मंडोवरा ४० सूराणा ४१ खंभायती ४२ बडउदिया ४३ सोपारिया ४४ नाडिया ४५ कोछीपुरा ४६ जांगला ४७ छापरिया ४८ बोरसडा ४९ दो चंदणका ५० बेगड़ा ५१ बायड़ ५२ बिजहरा ५३ कुतपुरा ५४ कोचलिया ५५ सदोलिया ५६ महुकरा ५७ कपूरसिया ५८ पूर्णतल्ल ५९ रेवइया ६० धूं धूं षा ६१ थंभणिया ६२ पंचवलदिया ६३ पालणपुरा ६४ गंधारा ६५ गुवेलिया ६६ सार्द्ध पूनमिया ६७ नगरकोटा ६८ हिंसारिया ६९ भटनेरा ७० जीतहरा ७१ जगायन ७२ भांमसेणा ७३ तागड़ाया

७४ कंबोना ७५ सेवनागच्छ ७६ वाघेरा ७७ बाहड़िया ७८ सिद्धपुरा ७९ घोघरा ८० नेगमिया ८१ संजमा ८२ बरडेवाल ८३ बाड़ा ८४ नागउला, ।

ये सब गच्छ कोई नग्रके नांम कोई क्रियासें कोई विरुदपानेकें कारणसें नांम भये ।

(अथ जैनी श्रावगी गोत्र ८४ खंडेलवाल)

प्रथम आदीश्वर भगवानसें लेकर महाबीर स्वामीतक जैन धर्मके पालने वाले श्रावक कहात्तेथे महाबीर स्वामीके मुक्ति गये पीछै चारसय तेइस वर्ष जब बीते, तब पीछै उज्जैण नगरमें, विक्रम सम्बत् सूर्य वंसी पमार राजा विक्रमादित्यनें चलाया, विक्रम सम्बत् १ एककी सालमें, अपराजित मुनिः के सिंघाड़ामेंसें, जिन सेना चार्य ५०० सौ मुनिराजको साथ लेकर विहार करते २ सम्बत् १ एककी मिती माह सुदी ५ को खण्डेला नगरमें आये, (खण्डेला नगर जोकि जयपुर राज्यके इलाकेमें है, इसवक्त) खंडेलाका राजा खंडेलगिरी सूर्य वन्सी चौहाण राज्य करता है अतराप खंडेलाके ८३ गांम लगे उस राजधानीमें कई दिनोंसें महामारी विषूचिका रोग फैल रहा था हजारों मनुष्य मर रहे थे, तब राजा रय्यतका फिकर करता, ब्राम्हनोंको पूछने लगा हे भूदेव, ये उपद्रव कैसै मिटै, तब ब्राम्हणोंने कहा, हे राजा, नरमेध यज्ञकर, उससे शान्ति होगी, तब राजाने यज्ञ प्रारम्भ करा और ब्राम्हणोंकी आज्ञा मुजब बत्तीस लक्षणवन्त पुरुष लाणेकी आज्ञा दी, अपने नोकरोंकों, उसवक्त एक मुनिश्मशान भूमिमें ध्यान लगाकर खड़े थे, उन्होंको राजाके नोकरोंने पकड़के, यज्ञशालामें ले आये, उन्होंको स्नान कराकर गहणा वस्त्र पहराकर राजाके हाथसें तिलक कराकर हाथमें ब्राम्हणोंने, साकल्य देकर बेदमंत्र बोलते, बेदी कुण्डमें स्वाहाकर पुरोडासा वांटते भये, ब्राम्हणोंनें, राजासें, कैसा अनर्थ करा यां उस पापसें, मुल्कमें, असंक्षा गुणा

---

१ कोई जमाना ऐसा मिथ्या हिंसा धर्म ब्राह्मणोंने फैलाया था घोड़े गऊ बकरे हिरण आदि ६०९ तरहके नाना जीव यज्ञमें होमे हुए ब्राह्मणोंके भक्ष होते थे लेकिन हाय

क्लेश, और उपद्रव होता हुआ, सच्चा मिसला लोक कहते हैं, (नीमे हकीम खतरे ज्यांन, । नीमे मुल्ला खतरे ईमान, ॥ ऐसे दुर्बुद्धियोंके उपदेशसें, भलाई क्या होनी थी, महा भयङ्कर समय आन पहुंचा, अग्निदाह, प्रचण्ड अन्धकार, अनावृष्टि, नाना तरहके उपद्रवसें, प्रजा पीड़ित हाहाकार मचगया, तब राजा मूर्छा खाकर, अचेत होगया, उस मूर्छामें, जो वह मुनिः होमे गये थे, वह दीखणे लगे, राजा उहांसें उठके, अपने उमरावोंको, संगले जंगलमें डोलने लगा, हाय मृत्युका वक्त आया, ऐसा बिचारता उस बनमें पांचसय दिगाम्बर मुनी ध्यानमें खड़े हैं देखके चरणोंमें जागिरा, और रोता हुआ प्रार्थना करणे लगा, तब मुनि बोले, धर्मवृद्धि, राजा देशके उपद्रवकी शान्ति पूछता हुआ, तब आचार्य बोले हे राजा पापसें तो रोग दुकालदुःख संन्ताप होता है, और फिर तेंनें नरमेध यज्ञ कर, मुनियोंको, होमडाला, इस समय फल तो ये मिला है, बाकी तो कराणेवाले और तूं नरकका दुख पावेगा, जैसै खूनका भींजा कपड़ा खूनमें धोणेसें साफ नहीं होता, इस दृष्टान्तानुसार बेदका यज्ञ है तेरा जीव जैसा तुझे प्यारा लगता है, वैसाही सर्व प्राणियोंका समझ, राजा बोला हे प्रभु, जो कुछ कसूर हुआ, सोतो हुआ, अब किसतरह शान्ति होय, वह विधी बतलाओ, गुरू बोले दयामूल जिनधर्म धारण करो, जगह २ चैत्यालय कराके, श्री जिनप्रतिमा धराके शान्तिक पूजन कराओ, धर्मका प्रभाव ऐसा है कि, दुष्ट पापकी शान्ति होगी, राजा खंडेलगिरीके खंडेलाके सर्व राजपूत, ८२ गांम, और २ गांम सुनारोंके, एवं ८४ गांमके सब मिलकर राजा खंडेलगिरि श्रावक धर्म

जुल्म मनुष्योंकों मारणेमें भी नहीं चूकते थे पतीके पिछाडी मोहाकुल स्त्रियोंको पती मिलापका, लालच दिखाकर उसका जर जेवर ले स्त्रियोंको अग्निमें जलाते थे, और अजाणलोक सती होणा अच्छा ब्राह्मणोंके बहकाये मानते चले आए, पुरुषोंका माल छीनकर कासीकर बतवणा मनुष्योंके प्राण लेते थे, बादशाह अकबरने जिनचन्द्रसूरिःके उपदेशसें, करबात लेणा बन्द करा रायपुर छत्तीसगढ़ जिले महरिया पूजामें परदेशी मनुष्यका बलिदान होता था बिसनोई ब्राह्मणोंके सखा जांभेका सांड़ मनुष्य बणाकर मारते थे अग्रेजोंने सत्ती वगैरह बन्धकरा बाहेर ब्राह्मणों बलिहारी है ।

धारता हुआ, जिन चैत्यालय ८४ गामोंमें करा २ कर, पूजन होते ही, सर्व उपद्रव शान्त हुआ, वर्षात होके सुकाल हुआ, तब ८४ जात स्थापन हुई, सोठीलाकेतोसाह कहलाये, वाकी सबोंके गांम जात राजपूत कुल-देवी सब नीचे मुजब ।

नंबर	गोत	वंश	गांम	कुलदेवी
१	साह गोत	चौहाण	खंडेला	चक्रेश्वरी
२	पाटणी गोत	तंवर	पाटणी	आमा देवी
३	पापड़ीवाल	चौहाण	पापड़ी	चक्रेश्वरी देवी
४	दोसा गोत	राठौड़	दौसागांम	जमाण देवी
५	सेठी गोत	सोमवंसी	घोठाणिया	चक्रेश्वरी देवी
६	भौसा गोत	चौहाण	भोसाणी	नांदणी देवी
७	गौधा गोत	गोधड़वंस	गोधाणी	मातणी देवी
८	चांदूवाड़ गोत	चंदेलावंस	चंदूवाड़	मातण देवी
९	मोठ्या गोत	ठीमरवंस	मोठ्या	औरल देवी
१०	अजमेरा गोत	गोड़वंस	अजमेऱ्या	नांदणी देवी
११	दरडोद्या गोत	चौहाणवंस	दरजेद गांम	चक्रेश्वरी देवी
१२	गदय्या गोत	चौहाणवंस	गदयो गांम	चक्रेश्वरी देवी
१३	पहाड्या गोत	चौहाणवंस	पहाड़ी गांम	चक्रेश्वरी देवी
१४	भूंच गोत्र	सूर्यवंस	भूंछड़ गांम	आंमण देवी
१५	वज गोत्र	हेमवंस	वजाणी गांम	आमण देवी
१६	वज्जमहाराया	हेमवंस	बजमासी	मोहणी देवी
१७	राऊका गोत्र	सोमवंस	रालोली	औरल देवी
१८	पाटोद्या गोत्र	तंवरवंस	पाटोदी	पद्मावती देवी
१९	पाद्यडा गोत्र	चौहाणवंस	पांदणी	चक्रेश्वरी देवी
२०	सोनी गोत्र	सोलंखीवंस	सोहनी	आमण देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
२१	विलाला गोत्र	ठीमरसोमवंस	विलाला	औरल देवी
२२	विरलाला गोत्र	कुरूवंसी	छोटीविलाली	सौतल देवी
२३	गगवाल गोत्र	कछावावंस	गगवांणी	जमवाय देवी
२४	विनायक्यागोत्र	गहलोतवंस	विनायकी	वेथी देवी
२५	वांकली वाल	मोहिलवंस	वांकली	जीणी देवी
२६	कासला वाल	मोहिलवंस	कोसली	जीणी देवी
२७	पापला गोत्र	सोढावंस	पापली	आमण देवी
२८	सौगाणी गोत्र	सूर्यवंस	सौगाणी	कन्हाड़ी देवी
२९	जाझऱ्या गोत्र	कछावावंस	जाझरी	जमवाय देवी
३०	कटाऱ्या गोत्र	कछावावंस	कटाऱ्यो	जमवाय देवी
३१	वैद गोत्र	सोरड़ीवंस	वदवासा	आमणी देवी
३२	टोग्या गोत्र	पमारवंस	टौगाणी	पावड़ी देवी
३३	बोहरा गोत्र	सोढ़ावंस	बोहरी गांम	सौतली देवी
३४	काला गोत्र	कुरुवंस	कुलवाड़ी गांम	सौहणी देवी
३५	छावड़ा गोत्र	चौहाण	छावड़ा गांम	औरल देवी
३६	लौग्या गोत्र	सूर्यवंश	लगाणी गांम	आमणी देवी
३७	लुहाड्या गोत्र	मौरठ्यावंश	लुहाड्या गांम	लौसल देवी
३८	भंडसाली गोत्र	सोलंखीवंश	भंडशाली गांम	आमणी देवी
३९	दगड़ावत गोत्र	सोलंखीवंश	दरडोदवंश	आमणी देवी
४०	चोधरी गोत्र	तंवर वंश	चोधऱ्या गांम	पद्मावती देवी
४१	पोटल्या गोत्र	गहलोतवंश	पोटला गांम	पद्मावती देवी
४२	गींदोड्या गोत्र	सोढ़ावंश	गिन्होड़ी गांम	श्री देवी
४३	साखूण्या गोत्र	सोढ़ावंश	साखूणी गांम	सिखराय देवी
४४	अनोपड्यागोत्र	चंदेलावंश	अनोपड़ी गांम	मातणी देवी
४५	निगोत्या गोत्र	गौडवंश	नागोती गांम	नांदणी देवी
४६	पांगुल्या गोत्र	चौहाणवंश	पागुल्या गांम	चक्रेश्वरी देवी
४७	भूलाण्या गोत्र	चौहाणवंश	भूलाणी गांम	चक्रेश्वरी देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
४८	पीतल्या गोत्र	चौहाणवंश	पीतल्यो गांम	चक्रेश्वरी
४९	वनमाली गोत्र	चौहाण	वनमाल गांम	चक्रेश्वरी
५०	अरड़क गोत्र	चौहाण	अरड़क गांम	चक्रेश्वरी
५१	रावत्या गोत्र	ठीमरसोमवंश	रावत्यो गांम	औटल देवी
५२	मौदी गोत्र	ठीमर सोमवंश	मौदहसी गांम	लौरल देवी
५३	कौकण राज्या	कुरुवंशी	कौकणज्यागांम	सौनल देवी
५४	जुगराज्या गोत्र	कुरुवंशी	जुगराज्या गांम	सौनल देवी
५५	मुलराज्या गोत्र	कुरुवंसी	मूलराज्या गांम	सौनल देवी
५६	छहड्या गोत्र	कुरुवंसी	छाहड्या गांम	सौनल देवी
५७	दुकड़ा गोत्र	दुलालवंस	दुकड़ा गांम	हेमा देवी
५८	गौती गोत्र	दुलालवंस	गौतड़ा गांम	हेमा देवी
५९	कुलाभण्या	दुलालवंश	कुलभांणी गांम	हेमा देवी
६०	वौरखंड्या गोत्र	दुलालवंश	वौरखंडी गांम	हेमा देवी
६१	सरपत्या गोत्र	मोहिलवंश	सरवर्तो गांम	जीण देवी
६२	चिरड़क्या गोत्र	चौहाणवंश	चिरड़की गांम	चक्रेश्वरी देवी
६३	निगर्द्या गोत्र	गौड़वंश	निरगद गांम	नांदणी देवी
६४	निरपोलरा गोत्र	गौड़वंश	निरपाल गांम	नांदणी देवी
६५	सवड़्या गोत्र	गौड़वंश	सरवड्या गांम	नांदणी देवी
६६	कड़वड़ा गोत्र	गौड़वंश	कड़वगरी गांम	नांदणी देवी
६७	सांभरपा गोत्र	चौहाणवंश	सांमऱ्यो गांम	चक्रेश्वरी धीयाडी
६८	हलद्या गोत्र	मोहिलवंश	हरलोद गांम	जाणिधीयाडी देवी
६९	सौमगसा गोत्र	गहलोतवंश	सौमद गांम	चौथी देवी
७०	बंबा गोत्र	सोढावंश	वंबाली गांम	सिखराय देवी
७१	चौवाण्या गोत्र	चौहाणवंश	चौवरत्या गांम	चक्रेश्वरी देवी
७२	राजहंश गोत्र	सोढावंश	राणहंश गांम	सिखराय देवी
७३	अहंकाऱ्यागोत्र	सोढावंश	अहंकर गांम	सिखराय देवी
७४	भूसावड्या गोत्र	कुरुवंशी	भसवड्या गांम	सौनल देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
७५	मौलसरा गोत्र	सोढावंश	मौलसर गांम	सिखराय देवी
७६	भांगड़ा गोत्र	खीमरवंश	भांगड़ गांम	औरल देवी
७७	लोहड़च्या गोत्र	मौरठावंश	लोहट गांम	लौसल धीयाड़ी
७८	खेत्रपाल्या गोत्र	दुलालवंश	खेत्रपाल्या गांम	हेमा देवी
७९	राजभदरा गोत्र	सांखलावंश	राजभदरा गांम	सरस्वती देवी
८०	भुंवाल्या गोत्र	कछावावंश	भूंवाल गांम	जमवाय देवी
८१	जलवाण्या गोत्र	कछावा वंश	जलवांणी गांम	जमवाय देवी
८२	वैदाल्या गोत्र	ठीमर वंश	वनवौड़ा गांम	औरल देवी
८३	लढीवाल गोत्र	सोढा वंश	लठवाड़ा गांम	श्री देवी
८४	निरपाल्या गोत्र	सौरटा वंश	निरपती गांम	अमाणी देवी

जैन धर्म पालनेवाले इस समय लाड परवाल पल्लीवाल वगैरह वणिक् जाती बहुत है मगर उन्होंकी उत्पत्ती गोत्रादिकका पत्ता मिलणेसें किसी वक्त जरूर लिखा जायगा ये बात बहुत जाननें योग्य है आर्य देश २५॥ देशमें जितने वणिये व्यापारी दया धर्म पालते हैं वे सब राजपूत या ब्राह्मन वंश वालोंको हिंसा धर्म वैद यज्ञ तथा मांस मदिरा खाणापीणा छुडाकर व्यापारी बणाणेवाले जैनके आचार्योंका उपकार है उन्होंमेंसे कइयक स्वामी शङ्कराचार्यके पीछै कोई बणिया शैव कोई विष्णु पीछे हो भी गये हैं, तथापि दया धर्म पालणा मांस मदिराका त्याग तो उन बणियोंकी जातीमें प्रचलित है, वह जैन धर्मके आचार्योंका ही उपकार प्रथमका समझणा, क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्यजी श्री चक्रकों माननेवाले थे, उन्होंके च्यार शिष्योंके नांमसे चारों ही हिन्दुस्थानकी दिशाओंमें जो शृंगेरी १ द्वारिका वगैरह मठ है, उसमें श्री चक्रकी थापना है, और श्री चक्र है सो वाममार्गी कूंडा पन्थी शाक्तोंका निजपरम इष्ट है इसलिये वाम मार्गी मदिरा पीणा मांस खाणा पवित्र धर्म समझते हैं, मांस १ मदिरा २ मच्छी ३ मैथुन ४ और मुद्रा ५ ये पांच बातोंके करणेवाले, मुक्ति जाते हैं, ऐसा वाम मार्गका सिद्धान्त है, चंड़ालणीसें भोग करणा पुष्कर तीर्थ मानते हैं, रजस्वला २

धोवण ३ इसतरह अधम जातीसे गमन करणा, ये वाम मार्ग वालोंके मतमें तीर्थयात्रा स्नांन दानका फल मिलता है, इत्यादि मतके उपदेशकोंके, उपासक दया धर्म किस तरह पाल सक्ते हैं खुद स्वामी शङ्कराचार्यके शिष्य, १० नांमके गुसांई बकरा भैंसामींढा मारकर मांस खाणा, मदिरा पीणा, दक्षिण हैदराबादमें हमनें, सईकड़ों गिरी पुरीयोंको आंखोसे देखा है, जब उन्होंके धर्माचार्य इस तरह काम करते थे और करते हैं तो उन्होंके उपासकोंके दिलमें दया धर्म किसनें डाला है, ये बदौलत जैनाचार्योंकी है, जहां एक ब्रह्म, ऽहं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, ऐसा श्रद्धा रखणेवालोंके वास्ते न तो कोई ब्राह्मण है, न कोई चाण्डाल है, स्वामी शङ्करने काशीमें, ब्रह्मपणे जाति भिन्नता कुछ नहीं समझी, ऐसा ब्रह्म समाजी बंगाली कहते भी हैं कि, जातिका झगड़ा ऽहं ब्रह्मवाले अभी करते हैं सो बड़ी भूल है, हां अलबत्ते जैनी वैष्णव करें तो न्याय है, सो तो फक्त देखणे मात्र है जिसनें अंग्रेजी दवा सेवन करा अर्क वगैरह पिया, वह मांस मदिरा वेशक खाचुका, चाहै वैष्णव हो, चाहै जैन, बिलायतके व्यापारियोंका ढंग रमणक दिखाणा है, मगर अभ्यन्तरी परिणाम तो, दया धर्म पालणेवाले विचार करे तो, निभाव होय, स्वामी शङ्कराचार्यजीनें, सब जातीको एकाकार करणेको, जैनियोंका तीर्थ, जीरावला पार्श्वनाथका जो अब जगन्नाथजीके नांमसे प्रसिद्ध है, उसको बलात्कार अपने कबजेमें करा मूर्त्तिपर लक्कड़का हाथ पांव कटा चोला पधराके, पार्श्व प्रभूकी मूर्ती अन्दर कायम रखके, भैरवी चक्र विठलाया कि, यहां जातीकी भिन्नता नहीं रखणी, ऐसा दयानन्दजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं मतलब उन्होंका ऐसा था कि यहां चारों वर्ण सामिल खालेंगे तो फेर आपसमें, नौ पूरबिया, तेरह चौका नहीं करेंगे, सो दोनों पार नहीं पड़ी, दोनों खोई रेजोगिया, मुद्रा अरु आदेश, सो हाल बणगया, उहां जाके सब ब्राह्मण वैष्णव सांमिल झूंटन खाके जात भी खो बैठते हैं, और पुरीके बाहिर निकले फिर तो वही छूंछा मौजूद है, ये जगन्नाथ पार्श्व प्रभुका मन्दिर उडिया देशके राजा जो परम जैन थे, उन्होंने कराया था, जो कि

अब कलकत्तेमें मलक कहलाते हैं बंगालियोंमें, इसवास्ते मात्र दयाधर्मी वणिक् जाती जैनधर्मी थे दक्षिण कर्णाटक महाराष्ट्र तैलंग इसमें जो लिंगायत वणिये सेठी कहलाते हैं, ये जैन थे, हिमाद्रि राजाका प्रधान, वसप्पेनें, जैन धर्म छोड शैव मत संन्यासी जंगम नामका भेष खड़ा किया शैवधर्म चलाया, आखिरकों जैना चार्योंसे हिमाद्रि राजानें सभा कराई वसप्पा हार गया, ये वार्ता सेठी लोक सब जाणते हैं, वसप्पेके पुराणमें उसके ११ में अध्यायकों अभी भी जंगम गुरू लिङ्गायत वणिये नहीं पढ़ते हैं, नहीं सुणते हैं, उसमें जैनियोंसे हारा प्रश्नोत्तर लिखा है, इस लिये वसप्पेनें लाखों जैन दिगांवर मुनियोंकों कतल करा लिङ्गायत वणियोंके शिरपर शिखा नहीं, गलेमें लिङ्ग, मुरदा घरमें मरे तो, उसकों थम्भेसें बांध कर, रसोई माल बणाकर, मुरदेके सामने जंगमोंकों बिठलाकर भोजन कराते हैं, वह जंगम मुरदेको ग्रास (कवा) दिखाता जावै, और खाता जावै पीछै मुर्देकों बैठा निकाले, सन्मुख शंख वजावै, गाडकर आवै, लेकिन् स्नान नहीं करते ऐसा स्वरूप शिव धर्म धारण कर करते हैं, तैलङ्ग देशमें कूंमटी वणिये सर्व जैन थे, अब शैव, मांस मदिरा त्याग है ।

(अथ वघेर वाल ५२ गोत्र) महाजन जैन)

वघेरवाल महाजनोंकी आदि उत्पत्ति गांम वघेरामें हुई राजा व्याघ्र सिंह इन्होंका इतिहास भी यज्ञमें हिंसा हिंसाका फल नर्क ऐसा उपदेश श्री जिन वल्लभसूरिः आचार्यादिकसें सुणके, जैन श्रावक महाजन होते हुए दिगाम्बर श्वेताम्बर दोनों धर्म मानते हैं, व्याघ्र सिंहसें वाघड़ी कहलाये, बाकी गांमके नांमसें, वघेरवाल वजगे लोग, ।

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१	खटवड़ गात्र	६	बावच्या गोत्र	११	कौटिया गोत्र
२	लावावास गोत्र	७	सीधडसोड गो.	१२	भाडाच्या गोत्र
३	साखूण्या गोत्र	८	वागड्या गोत्र	१३	कटाच्या गोत्र
४	धजोत्या गोत्र	९	हरसोरा गोत्र	१४	वलवाड्या गोत्र
५	सवधरा गोत्र	१०	साहूला गोत्र	१५	धौल्या गोत्र

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१६	पगाऱ्या गोत्र	३०	अत्रेपुरा गोत्र	४४	चमाऱ्या गोत्र
१७	वैरखंड्या गोत्र	३१	निगोत्या गोत्र	४५	सुरलाया गोत्र
१८	दीवडचा गोत्र	३२	कात्ररिया गोत्र	४६	सौराया गोत्र
१९	वडमूंढ्या गोत्र	३३	ठाइया गोत्र	४७	सीलौस गोत्र
२०	तातहडचागोत्र	३४	कुचील्या गोत्र	४८	सावूण्या गोत्र
२१	मंडाया गोत्र	३५	मादलिया गोत्र	४९	जंबाल गोत्र
२२	वालदचट गोत्र	३६	सेठ्या गोत्र	५०	केतग्या गोत्र
२३	पीतल्या गोत्र	३७	मुंईवाल गोत्र	५१	खरड्या गोत्र
२४	दगोऱ्या गोत्र	३८	सांभऱ्या गोत्र	५२	
२५	भूऱ्या गोत्र	३९	सरवड्या गोत्र		
२६	देहतोड़ा गोत्र	४०	पापल्या गोत्र		
२७	जिठाणीवाल	४१	भूंगरवाल गोत्र		
२८	मथूऱ्या गोत्र	४२	ठग गोत्र		
२९	जोगिया गोत्र	४३	वहरिया गोत्र		

इन महाजनोंका वंश व देवीका पत्ता लगा नहीं इस वास्ते लिखा नहीं है और जादा इतिहास लिखणेसें ग्रंथ भी बध जाता है. लोक गुणके तरफ खयाल रखणे वाले कम वस यह कह उठेंगे दाम ज्यादह लगाये हैं इस लिये।

(अथ नरसिंघपुरे महाजन जैनी गोत्र २८)

नरसिंघपुर नगर झब्बलपुर दक्षण मध्यदेशमें हैं दिगाम्बराचार्य भट्टारकजी रामसेनजीके उपदेशसें बेद यज्ञ नानाजीव वध घातरूप मिथ्यात्व धर्मत्यागके अष्टद्रव्य पूजा चैत्यालयमें श्री २४ तीर्थंकरके मूर्त्तिकी सम्यक्त युक्त नरसिंघपुरका राजा प्रजाके साथ जैनधर्म आदर करा इन्होंकी वस्ती मालवा मेवाड़ तथा धूलेवगढ़ केशरिया नाथ तीर्थपर है।

संख्या	गोत्र	देवी	संख्या	गोत्र	देवी
१	खडनर	वारणी देवी	१५	तलियागोत्र	कान्तश्वरी देवी
२	पुलपगर	पावई देवी	१६	बलोलागोत्र	अम्बा देवी
३	भीलण होड़ा	अंबाई देवी	१७	खेलणगोत्र	कन्टेश्वरी देवी
४	रयणपारखा	रयणी देवी	१८	खांमी गोत्र	वरवासनी देवी
५	अभयिया	रोहणी देवी	१९	हरसोलगोत्र	चक्रेश्वरी देवी
६	भुद्रपसार	भवानी देवी	२०	नागर गोत्र	नीणेश्वरी देवी
७	चिभड़िया	धरू देवी	२१	जसोहरगोत्र	झांझणी देवी
८	पवलमथा	पायई देवी	२२	झडपड़ागोत्र	पिशाची
९	पदमह	पलवी देवी	२३	बारोड़	पिपला
१०	सुमनोहर	सोहणी देवी	२४	कथौटिया	पीरण
११	कलशधर	मौरिण देवी	२५	पंचलोल	मौरठा
१२	ककूलो	चक्रेश्वरी देवी	२६	मोकरवाड़ा	
१३	वारठेच	बहुरूपणी देवी	२७	वसोहरा	सीवाणी
१४	सापड़िया	पद्मावती देवी	२८		

(अथ गौरारा महाजन जैनी गोत्र २२)

गौरारे श्रावक तीन प्रकारके हैं? गौरारारे २ गौल सिंघारे ३ गौला पूरब इन सबोंका जैन धर्म है रहना इन्होंका ग्वालियर इटावा, आगरा, इलाकेमें है इन्होंकी उत्पत्ति कहांपर कैसे हुई सो तोपाई नहीं परन्तु गोत्र मिले सो लिख दिया है किसीकों मालूम होय तो लिख भेजणेसें दुसरी बेर छपाया जायगा।

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१	पावई कैसैं गेई	९	जमसरिया	१७	चौधरी आन्तरिक
२	गयेली कैसैं गेई	१०	चौधरी जासूद	१८	चौधरी कूकच्या
३	पैरिया	११	चौधरी कौलसे	१९	डघा गोत्र
४	वेद गोत्र	१२	वरेइया गोत्र	२०	तसटिया गोत्र
५	नखेदबुखेद	१३	ढन सइया गोत्र	२१	वडसइया गोत्र
६	सिमरइया	१४	अदवइया गोत्र	२२	तेत गुरिया
७	कौसाडिया	१५	सराफ गोत्र		
८	सौहानें	१६	चौधरी बरांदकै		

अथ अग्रवाल जैन वैश्य उत्पत्ति गोत्र १७॥

ये वात जगत् विक्षात है कि चारवर्णोंमें सबसें पहले वैश्यवर्णका काम करणेवाले इस आर्यावर्तमें उग्र कुलवाले थे जैनियोंके आवश्यक सूत्रकी टीकामें युगादि देशनामें भरतेश्वर वाहुबली वृत्तीमें तेसठ शलाका पुरुष चरित्रमें आदिनाथ (ऋषभ चरित्रमें) बड़ी मनुस्मृतीमें इत्यादि श्वेताम्बर संप्रदाई ग्रंथोंमें तथा इस तरह दिगाम्बराचार्य रचित आदिनाथ पुराण उत्तरपुराणादि धर्म कथानुयोगमें, इस तरहसें लिखा है, जब भगवान ऋषभ देव तेतीस सागरका आयू सर्वार्थ सिद्ध विमानसें पूर्ण कर, निर्मल तीन ज्ञानयुक्त इक्ष्वाकु भूमीं जो कश्मीरके पास परें है, जिसके चारों दिशामें चार पहाड़ आये हुए हैं सुर शैल्य १ हिम शैल्य २ महा शैल्य ३ और अष्टापद (कैलाश) ४ इसकी वीच भूमीमें ऋषभ देवके बखेरे सात कुलकर (मनु) विमल वाहन वगैरह युगलिक लोकोंमें कसूर करणे वालोंपर वचन दण्ड करणेवाले हुए प्रथम हकार फिर मकार और फिर धिक् (धिक्कार) इस तरह कइयक उस जमानेके लायक कायदे बांधणे वाले हुए, लोक ऐसे ऋजु थे, सो जुबानसें धमकाणेसेंही डरं मानते थे, काल जैसै वीतता गया, तैसे २ कल्पवृक्षहीन फल देणे लगे, तब उन युगलिक लोकोंके अन्यायका अंकुर बढ़णे लगा, विमल बाहनके सातमें मनु नाभिराजा उनके मरुदेवी राणीके, ऋषभ देवका जन्म हुआ, उहां नगरी वगैरह कुछ नहीं थी, जो वस्तु उन युगलिक लोकोंको चाहिये थी, वह १० जातके कल्पवृक्ष उन्होंको देते थे, पूर्वजन्मके तपके प्रभावसें युगलिक पुन्यवन्त पैदा होते हैं, ४५ लक्ष योजनमें जो अढाई द्वीपमें मनुष्योंकी वस्ती उसमें कर्माभूमि १५ मेंसे सुकृत करके युगलिक लोक अकर्मा भूमीमें कालधर्मसे, उत्पन्न होते थे, प्रजा इक्ष्वाकु भूमीमें कुल दोयसय ऊपर कुछ संख्या प्रमाण औरत मर्दोंके जोड़े रहते थे, बाकी पांचसय छब्बीस योजन छकला ऊपर सब भरतभूमी मनुष्य क्षेत्रकी जिसमैं वेताढ्य (हिमालय) इधर दक्षिण भरत आधा दोयसय १३ योजन तीन कला प्रमाणक्षेत्र, सब खाली मनुष्य विगरका था वैताढ्यके पहिले तरफ उत्तरमें म्लेच्छ खण्ड गुण

पचास नगर उस वक्त वस्तीवाले थे, उन लोकोंका खांन पांन मांस मछलीका था क्यौं कै जैन ग्रंथोंमें लिखा है भरत पहिला चक्रवर्त छ खण्ड भरत क्षेत्र साधने लगा तब हिमालयकी तिमिश्रा गुफाके वाहर फौजका पड़ाव डाला जिसकों अभी खन्धार कहते हैं, यहांसे ४९ नगरवाले म्लेच्छ राजाकों, अपणी आना मनाने दूत भेजा, ऐसा लेख जम्बूद्वीप पन्नती मूलसूत्रमें लिखा है, इसलिए सिद्ध होता है के, ऋषभदेवके वडेरोंके वखतमेंही, म्लेच्छ खण्डकी वस्ती कायम थी, आधे भरतमें कालधर्म पहिला दूसरा तीसरा आरा आदि वरतणा सिद्ध होता है, सर्व भरत क्षेत्रमें सिद्ध नहीं होता, ऋषभ देवनें तो म्लेच्छ खण्ड वसाया नहीं, केवल सौ पुत्रोंके नांमका सौराज्य जिसमें निन्याणवें इधर १ एक हिमालयपार वहुली देश, का बल, जो बाहुबलकूं वसा कर दिया, भरत चक्री ४९ नग्र म्लेच्छोंपर आज्ञा मनाकर फिर अयोध्या आकर बहुली देशकी लड़ाई तो, पीछै करी है, जैन लोकोंनें इस वातकों विचारणा कोई बुद्धिमान इस बातकों न्यायसें असत्य ठहरा देगा सिद्धान्तकी साक्षीसें तो दुसरी वेर वह वात लिखी जायगी, हमनें तो सूत्रकी साक्षीसें, ये वात लिखी है, हां खास तौर पर जैनधर्म वाले ये बात मांनते हैं के भरत एरवतमें कालचक्र फिरता रहता है ऋषभ देवका होणा, तीसरे अरेका अंतका भाग अवसर्प्पणी कालका था, अंग्रेज लोकभी हिमालय (वैताढ्यके दक्षिण मुल्क तीन खण्डकोही भारत भूमि कहते हैं क्या मालुम, ये नांम कौरव पाण्डवोंके युद्धके होणेसे भारत कहलाता था, इस-लिए धरा है या भरत चक्री पहला जब होता है, तब भरतही नांमका होता है इसलिए इस भूमीकों भारत क्षेत्र कहते हैं (भरतोद्भवा भारता) लेकिन जैनधर्म वाले तो, जहांतक भरत पहले चक्रवर्तका राज्य शासन चले, ऋषभ कूट पर्वततक, जिसपर अपणा नांम लिखता है, उहां तक भरत क्षेत्र मांनते हैं, पैरिसतक, उसके पहले वर जैनियोंका लिखा चुल्लहिमवंत्तपहाड़ जिसकों आजकलकोकाफ कहते हैं, और उसके ऊपर, परियोंकी वस्ती मांनते हैं, उसके पहिलेवर कोई मनुष्य नहीं जासक्ता, वह उदयाचल पहाड़ कहलाता है, जहांसें सूर्यकी किरणें इस भारत भूमीपर प्रकाश कर

प्रभात समय दिखाई देती हैं, भारत भूमीमें फकत् म्लेच्छ भील वगैरह पहाड़ोके पास अण पढ़ लोक रहते थे, और वस्ती नही थी, उन्होंको ग्रीक लोकोंनें पेस्तर आकर, इल्म सिखाकर हुशियार करा, इस लेखका परमार्थ तो हमारी समझसें तो ऐसा निकलता है कि ये वार्ता दक्षिण भरतकी नहीं है हिमालियेके पहले तरफ जो उत्तर भरत है उसमें ४९ नग्र वालोंकों ग्रीक लोकोंने कोई जमानेमें अपणे सागिर्द बणाये होंगे, खैर रहणे देते हैं ॥ जब ऋषभ देवनें बाल्यावस्थात्यागी नाभी मनुके हुक्मसें, युगलिक लोकोंने, युगलियोंमें अन्याय फैलता हुआ देखके, ऋषभकों राजा बनाया, उस वक्त लोक जुबानकी सजाकों कुछ नहीं गिंणारने लगे, अव्वल तो कल्पवृक्ष फलहीन हुए, देख प्रथम तो चावल पकाकर सबोंको रसोई करके खांणा सिखाया, फेर वस्त्र बुननेवाले नाई चित्तेरे वगैरेह ५ कर्मके सो कर्म करणेवालोंकों कारीगरी सिखलाई प्रजाकों वढाणे संगमें जन्मी कन्याका विवाह बन्दकर दूसरेकों वेटी देणा और दुसरे गोत्रीकी लाणा सिखाकर युगला धर्म मिटाया तब रसायणिक प्रयोग पास होकर, प्रजा बढी, गढ, कोट, किल्ला, अस्त्र, शस्त्र, हाथी घोडे, गऊ, ऊंठ सब मनुष्योंके काम लायक करे नोकरी लिखत पठित प्रमुख ७२ कला प्रगटकर प्रजाकों सिखलाई ६४ कला स्त्रियोंको, ग्रहाचार सिखाकर, नवनारू, नवकारू, ऐसे अठारह श्रेणीके १८ प्रश्रेणीके ३६ कुलक्षत्री वंशमेंसे प्रगट करे

सीसगर १ दरजी २ तंबोली ३ रंगारे ४ गवाल ५ बढ़ई ६ संग्रास ७ तेली ८ धोबी ९ धुनियापिनारा १० कन्दोई ११ कहार १२ काछी १३ कुम्भार १४ कलाल अर्कअतरवाले १५ माली १६ कुंदीगर १७ कागजी १८ । कृषाण १९ वस्त्रकार २० चितेरा २१ बंधेरा २२ रेवारी २३ लखारा २४ ठंठारा २५ राजपटवा २६ छप्परबंध २७ नाई २८ भड़भूंजा २९ सोनार ३० लोहार ३१ सिकलीगर ३२ धीवर पालखीवाले ३३ चमार ३४ गिर ३५ सुथार ३६ इन्होंमें फेर कई २ तरहकी भिन्नता भई, जैसैं छीपादरजी १ मारूदरजी टोप सियानाई १ मसालचीनाई २ मारू कुंभार १ वांड़ा कुंभार २ इसतरह जिन्होंने ये कृत्य किया वोही जाति होगई ब्राह्मणिया

सुनार १ मेढ सुनारादि समझना, इनोंका कृत्य समयसे पलटा अब भगवानने प्रजामें ४ वर्ण स्थापन किये, उग्रकुल १ इन्होंकों दण्डपासक यानें कोट कचहरी दिवान मुसद्दी कोटवाल प्रमुख राजकार्य करणा न्यायाधीस वणाया १, भोगकुल २ प्रजाके वास्ते भगवान आप जिन्होंकों गुरू करके मांना २ राजन्यकुल ३ जो भगवान इक्ष्वाकुका कुल जिसमें सूर्य यश पोतेका सूर्य वंश १ चन्द्रयश पोतेका चन्द्र वंश २ चन्द्र सूर्यके जितने कोशोंमें पर्याय वाचक नाम है वह सब नाम इन वंशवालोंका समझणा, जैसै आदित्य वंश १ तो सूर्यही का नाम है, इस तरह सोमवंश २ वो चन्द्रहीका नाम है, कुरु पुत्रसे कुरु वंश, इत्यादि सौ पुत्रोंका परिवार सन्तान राजन्यवंश कहलाया, ३ वाकी युगलिक लोक प्रजा उन्होंका काश्यप गोत्र और क्षत्रीवंश स्थापन करा जिसमें छत्तीस कर्मकर निकले, जिसके पीछै असंक्षा काल वीतणेसें उन चारोंका पर्याय वाचक नाम हो गया, उग्रकुल वाले गुप्त कहलाये, देखिये वाग्भट्ट नांमका जैन गुप्त (वणिक्) नें वाग्भट्ट वैद्यक ग्रंथनेम निर्वाण महाकाव्य वाग्भट्टालङ्कार काव्य अनेकानेक गुप्त जातीके बनाये हुये हैं, ये वाग्भट्ट जैनधर्मी थे उनके ग्रंथही धर्मकी सबूती देता हैं, भोगकुलकों शर्म्मा संज्ञा हुई, राजन्य वंशीयोंको वर्मा संज्ञा हुई, इस तरह ही चारोंका पर्याय नांम धरा पीछैसें विप्र संज्ञा वेद पाठीकों, विगर संस्कार शूद्र संज्ञा, संस्कार किये पीछै द्विज संज्ञा, जब जीव अजीव पुन्य पाप इत्यादि नव तत्व जाणे, क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ निर्लोभता ४ तप ५ सत्य ६ सौच अभ्यंतर और वाह्य ७ (संजम ८ इन्द्रियदमन) और जिन पूजादिक षट् कर्म ९ इतने करनेवालोके गलेमें यज्ञोपवीत डाली गई, जिसका अपर नांम है, नोगुणी, उसको प्राकृत व्याकरणके शब्दसें, माहण भरत चक्रीनें कहा था उसका संस्कृत व्याकरणसें (ब्रह्म वेत्ति स ब्राह्मणः) यानें ब्रह्म जो अविनाशी आत्माका स्वरूप जाणे, सो ब्राह्मण कहलाये, शर्म्मापद देव पूजकोंको मिला, वर्मा नांम धराणेवाले राजन्य वंशीयोंको क्षत्री कहने लगे, वह जो राज्य कार्य कर्ता उग्रवंशी जो गुप्त नांम धराया था वो वैश्य कहलाये, छत्तीस श्रेणीके प्रश्रेणीक क्षत्री वंशवाले जो थे वह

कर्म्मा नांम धराते थे वह शूद्र कहलाए ये संज्ञा चार ब्राह्मण १ वैश्य २ क्षत्री ३ और शूद्र ४ श्रीकृष्ण चन्द्रके राज्यमें कृष्ण द्वैपायन व्यासने गीता बनाई उस वक्त यह नांम, पूर्व नाम पलटाके धरे गये, गीतामें कर्मके अनुसार चार वर्ण बंधे हैं, व्यापार, खेती करणा, गऊओंको गोकुलमें रखणे वालेकों, वैश्य कहा है, इस न्यायसें तो जाट, कुणबी, सीरवी, अहीर वगैरह भी, ऐसा कृत्य करणेसें गीताके हिसाबसें वैश्य होणा चाहिये, पुराणोंमें छ कर्म करणेवाले ब्राह्मनोंकों अधम लिखा है (यतः) असीजीव मषीजीव, देवलो ग्रामयाचकः । धावकः पाचकश्चैव, षड़ेते ब्राह्मणाधमाः ॥ ५ ॥ अर्थ) तलवार बांधके फौजोंमें सिपांही रहै नोकरी करै, मसीयानें लिखणा नामाठामा व्यापार करे, देवलों यानें मन्दिरोकी नोकरी कर बलि भक्षिणादि करे, ग्राम याचक यानें व्रती, यजमान वणाके, दापा, वंट, परणे मरणे आदिका लेवे, धावक, यानें, नोकरीमें इधर उधर जावै, सन्देशा करे कासीदी करे, ऐसे ब्राह्मणोंको, पुराणोंमें, अधम लिखा है, अरे कलियुग ऐसा कोई कांम नहीं है, सो इस पेटके लिए ब्राह्मण लोक नहीं करते होंय, केवल नांम मात्र ऋषियोंकी शन्तान हैं, दातारकी भक्ति, दान देणा गृहस्थका धर्म है, गृही दानेन शुद्धचति, इस वचनसें, बाकी नौकरी हाजरी भराके जो ब्राह्मणोंको पुन्य समझ दान देते हैं, वो देणेवाले, बड़े मूर्ख हैं, पुन्य उसका नांम है, जिसका बदला नहीं लिया जावै, इस बातकों समेट, उग्र कुलका इतिहास लिखते हैं, ।

उग्रकुल दुनियांका कार्य चलतेही स्थापन हुआ, वह क्रमसें राजकार्य करते २ कोई भुजबली राजाधिराज भी बन गये, ऐसा जमाना नहीं गुजरणा बाकी रहा होगा कि, चारों वर्णोवाले राजा न हुए होय, यानें जमानेके फेरसें अंत्यजभी राजा हो चुके, और राजा अन्नसें मोहताज हो गये, ये सब पुन्यपापके योगसें, कर्मोने जीवोंकों अनेक नाच नचाये हैं, और नचाता है, और नचावेगा, जमानेके फेरफारसें कभी धर्म जैन प्रबल रहा, इसवक्त नाना धर्मका शिक्का अपणा वक्त दिखा रहा है, मिथ्यात्व जीवके संग अनादि कालसें लग रहा है, संसारमें रुलणेवाले जीवोंकों, जिस तरफ शरीरके

पांचो इन्द्रियोंके, सुख मिले, अपने लिए चाहै कितना द्रव्य खरच हो जावै परमार्थमें पैसा कम खर्च पड़े, वह धर्म, कलियुगी जीवोंको, संसारसे तारणे वाला मालुम देता है, जिधर जिसका जी मानता है, उधरही धर्म कबूल करता है, लेकिन जिधर पांचोंइन्द्रियोंको मजामिले उस धर्मकी तरफ ज्यादह, रजू होते दीखते हैं, उग्रकुलवाले वैश्य वजणे लगे, और आपसमें वली होकर, राज्य भी करणे लगे राजा उग्रकुली धनपाल धनपुरी नगरी पंचाल देशकों कबजे करके, वसाई, इन्होंके कई पुखतान तक, राज्य रहा, राजा रंग पुत्र विशोक, विशोकके मधु, इस वक्तमें बैताढ्य पर्वतपर, इन्द्रनाम विद्याधरोंमें बड़ा बलवन्त राजा उत्पन्न हुआ, इस मधुका वर्णन, जैनरामायणमें नारदजीकों रावणनें हिंसक यज्ञ क्यों कर चला, इस प्रश्न करनेसें उत्तर दिया है, उसमें राजा मधुका और सगरका वृत्तान्त चला है, उहां देखणा, मधुका महीधर, इस वक्त राजा इन्द्रने रावणके बडेरोंकों, युद्धमें हटाकर, लङ्का छीनली, रावणके बडेरे पाताललङ्का (अमेरिका) में, जा रहै, महीधर रावणके बडेरोंका, आज्ञाकारी था, इस वास्ते इन्द्रनें इसका भी राज्य छीन लिया, महीधर फिर और राजाओंकी नौकरी करणे लगा, पीछै रावण पैदा हुआ, और इन्द्रसे युद्धकर, वैताढ्य पर्वतका राज्य छीनलिया, महीधरकों रावणनें बुलाकर सेनापती बणाया, जब रावणपर रामचन्द्रजी आए, तब बिभीषणके सङ्ग, महीधर भी रामचन्द्रजीके पास आगया, फिर अयोध्यामें, महीधर काम कर्त्ता हुआ, फिर कई लाख वर्ष बीतणेसे फिर महीधरके वंशवाले राजा होगये, यों कई पुखतान, इस वंशवाले जैनधर्म छोड़के ब्राम्हणोंका, वैदधर्म मांनने लगे, आग्रायण (अग्रसेन) नांम राजा हांसी हसार जो अब वस्ती है यहांपर अपने नामसें अग्रोहानगर वसाया, उग्रकुली लोक तथा अन्य लोकोंकी वस्ती यहां बहुत वसी, ये जमाना करीव विक्रम राजाके कुछ पहिलेका है। राजानें दिल्ली मंडल कुल कबजें कर लिया, इस वक्त वैताढ्य पहाड़पर, इन्द्रके वंसवाला, सुरेन्द्र नामका राजा, राज्य तिब्बत राजधानीमें करता था, इस समय दक्षिण देशमें कोलापुर नगरमें, नाग वंशी राजा, अभंगसेनकी पुत्रीको, सुरेन्द्रनें मांगी,

अभंग सेननें, दोनों कन्या, माधवी १ और चन्द्रिका, २ अग्रसेनको देदी, ऐसा कहला भेजा, तब सुरेन्द्र अग्रसेनसें युद्ध करणे आया अग्रसेन ये सुण कर, भग गया, कासीमें जाकर महालक्ष्मीका मंत्रसाधन करा लक्ष्मीनें प्रशन्न होंके कहा माँग इसनें कहा लक्ष्मी मेरे घरमें अतूट रहै, और शत्रु मेरे कोई नहीं हो सके, लक्ष्मी बोली, तथास्तु, फिर अलोप हो गई, उहां इसकों भूमिमें असंक्ष निधान प्राप्त हुआ कोलापुर जाकर दोनों कन्याका व्याहकर, स्वसुरका दातव्य लेकर, अग्ररोहा नगर पीछा लेलिया, उन कन्याओंके गर्भाधान रहा, तब ब्राह्मणोंने कहा, हे राजा, तेरेको लक्ष्मी प्रशन्न है, तूं पुत्रोंके कल्याणार्थ यज्ञ कर, तब राजानें यज्ञ शुरू करा, इस तरह अनेक यज्ञ अश्वमेध गऊमेध छागमेधादिक करते सतरह पुत्र होते रहै, यज्ञ करता रहा, अठारमां पुत्र गर्भमें था, यज्ञके लिए नाना पशु गण जमा किये हुए, त्रास पा रहे थे, इस समय महालक्ष्मी देवी चित्तमें व्याकुल हुई विचारणे लगी, जो मैंने सुकृतार्थ करणे, इसकों प्रशन्न होकर द्रव्य दिया था, उसकों इसनें महा अघोर पापका हेतु नरक जाणेका मार्ग, जीव वधघात, कसाइयोंका कर्म, ब्राम्हणोंके बचनोंसे कर रहा है, इस पापकी क्रिया

माहेश्वर कल्पद्रुम वालोंने अग्रवालोंकी उत्पत्तिमें लिखा है अठारमा यज्ञ आधा हुआ किसी कारणसे ग्लानि हुई ऐसा लिखा है वह ग्लानिके कारणकों प्रगट नहीं किया फक्त अपणे वेदधर्मकी वे अदबी छिपाणेकों आदि-उत्पत्ति त्रेता युगके प्रथम चर्णवार तक लिखके सबूती दिखाते हैं कोई पूछै किस वेदमें या स्मृतिमें या पुराणमें लिखा है तो मौन करणाही जबाब है और हमनें कुलका होणा असंक्षा वर्षके पहिले दुनियाकी रीत रसम चलते ही पहले लिखे शास्त्रोंसें प्रमाण देकर लिखा है उस जमानेकों वीते असंक्षा चौकडी सतयुग द्वापर त्रेता कालियुग वीत गये हैं आगे चलकर लिखा है अग्रायणके कई पीढी बाद जैनधर्म अग्रवालोंने धरा है इतना नहीं विचारा कि यज्ञमें ग्लानि प्राप्त होणा ही जैनधर्मका कायदा था इस वास्ते खुद अग्रायण बेद यज्ञ छोड जैनी हुए थे जिसमें १७॥ गोत्र हुए थे लिखते शर्म आगई स्वामी शङ्कराचार्यजीके चेले आनन्द गिरी शङ्कर दिग्विजयमें लिखते हैं (वैदिक हिंसा हिंसा न भवति) अर्थात् वेदकी राहसें जो जानवरका मांस खाया जावै उसमें हिंसा नहीं होती तब विचारो वेदधर्मियोंकों ग्लानि कैसै आवेगी, वल्के ऐसे बचनोंसें तो हिंसा कर्म वेदधर्मी वेधडक कमर बांधके करेंगें, वाहरे धर्मोपदेशक जगद्गुरू बजणे वालोंके चेलेजी, ऐसे न्यायके वचनोंसे ही दिग्विजय हुआ होगा, धन्य दिग्विजय धन्य, फिर माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें आग्रायणके कुलको ब्राह्मण ठहराया है ।

मुझकों भी लगेगी, और मेरा भी पराभव होणेसें, दुखकी भागनी होऊंगी तब रातकों देवी, इस राजाकों उठाकर, नरकमें लेगई, प्रथम तो उधर वह जीव फरसी लेलेकर राजाकों मारणे दौड़े, जिन २ जीवोंको इसनें अग्निकुण्डमें हवन किया था, और महा दुर्गंध महा विकराल मनुष्यसें वर्णन नहीं किया जावै, ऐसे नरककों देख राजा रोता पीटता भागणे लगा, तब लक्ष्मीदेवी मृत्युलोकमें लाकर वोली, अरे राजा इस यज्ञसें तूं मरकर, नर्क जायगा, और तैंनें जो पाप किये हैं और तेंनें जो मारे है वह जीव अग्निकुण्डमें, तेरेसे बदला लेंगे, तब राजा वोला, हे माता, अब इस पापसें कैसे छूटूं मेरा उद्धार कर (ऐसाही हाल प्राचीन वर्हीं राजाका नारदजीने यज्ञके पापके बदलेमें नरक दिखाकर छुडाया है, देखो भागवत पुराण विष्णुओंका, उसमें लिखा है) तब महालक्ष्मी देवी वोली हे राजा प्रभात समय, भगवान महावीरके शन्तानी लोहाचार्य महाराज, यहां आवेंगें, उन्होंकी वाणी, सर्व जीवहितकारिणी, भव समुद्र तारणी सुणकर, पापारम्भ छोड़, दया सत्य बोलणादि धर्मग्रहण करणा, तेरा उद्धार होगा, प्रभात समय, लोहाचार्य (गर्गाचार्य) अपर नांम, पधारे, राजा सपरिवार गया, दया क्षमाकों सुनकर, जैसें सांप कञ्चुकी त्यागता है, तैंसें मिथ्यात्व धर्म त्याग, सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत लिया,

---

ऋषि लिखा है भिक्षुक कर्म करनेवाले छत्तीसही पूणसे दानादिक प्रति गृहीयोंकी शन्तान लिखा है जो उग्रवंश राजपूतोंमेंसे प्रगट हुए हैं वह भिक्षुक जाति जैनधर्मवालोंको नहीं मानना अग्रवाले बडे दानी बड़े शूर बडे व्यापारी प्रत्यक्ष दीखते हैं ये बात ब्राह्मणोंसें कभी नहीं होसके दान लेनेवालोंकी जाति कभी ऐसा दान नहीं कर सकती इसवास्ते अग्रवाल अग्वल राजन्य वंशी वैश्य है बीजकी तासीर, कभी मिटे नहीं जैनधर्मवालोंके इतिहासको उल्टा सुल्टा करके माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें शैव विष्णु धर्मी प्रथमसें सिद्ध करणे की कल्पित बात लिखी है वैष्णवमती अग्रवंसी निरापेक्षीपणेसें कसोटी लगाकर बुद्धिसें परिक्षा करले इतिहास कौनसा सच्चा है अलं विस्तरेण, सतेरराणियोंके तो १७ पुत्र किसी जगह लिखा है अठारमां पुत्र राजाकी पासवान ब्राह्मणी पड़दायत्त थी उसका नाम गौण था इस वास्ते आधा गोत्र ठहराया, और बहुत लेख ऐसा है कि उग्रकुलवाले जो राजाके गोत्री वैश्य थे, उन्होंका आधा गोत्र ठहराया, मतलब आधेमें तो सत्रह पुत्र राजा होनेसें, और आधेमें सब गोत्री भाई, ऐसा एक अग्रवाल कुल व्याह करणा आपसमें ठहराया माता अलग २ होनेसें, फक्त दूध टाल दिया जैसें मुसलमान लोक टालते हैं, आगे हिन्दमें ये

जगह २ चैत्यालय कराये, बाकी सर्व अग्र वंशियोंका गोण गोत्र किया, सतरह पुत्रोंका सतरह गोत्र हुए, इनके कुल प्रोहित, हिंसक यज्ञ छोड़ कर, दया धर्म धारण करा जो गौड़ ब्राह्मण कहलाते हैं, त्यागी गुरु, मुनिः जती, राजानें कबूल करा, देवी महालक्ष्मी उपदेश देकर दया धर्म धराने वाली, लक्ष्मी पुत्र अग्रवाल लक्ष्मीके ही पात्र रहते हैं, पीछै नौकरी व्यापार, राजाके मुसद्दीपणा करते रहै, एक पुत्रकी शन्तान अग्रोहाका राजा रहा मुसल्मीन सहाबुद्दीननें, राज्य छीनलिया, फिर हेमचन्द्र अग्रवालनें कोई लिखते हैं हे मूढसर वनिया था हुमायूं बादशाहकों विक्रम सम्वत् १६७६ में युद्ध कर भगादिया, दिल्ली तख्तका बादशाह हो गया तब पीछे अकब्बरनें फिर युद्ध कर, छीन लिया, हेमचन्द्रकों अकब्बर अपने पास रखणा चाहता था, मगर दिवाननें उसकों मार डाला इस बातसें अकब्बरनें नाराज होकर उसकों मके निकाल दिया देखो वङ्गवासी छापेमें छपा अकब्बर चरित्र, अग्रवाले राजाओंकी नौकरी करणेसें संगतका असर जैनधर्मके कायदे कठिन लगामदार घोड़ा जैसें कुछ खासकेन पसिकै, इसलिए मालखाणा, मुक्तिजाणा, दिनरात दिल चाहै सो खाणा, लगाम छोड़ बैलगामी सातसय वर्ष हुए बहुतसे लोक, कोई शैव, कोई गोकुली, उधर लक्ष्मण गढ़के महानन्द रामजीके लड़के पूरणमलजी दक्षिण

रसम जारी थी के, गोत्र पुत्रोंका अलग २ मांन लेते थे, दायमे सब दधीचके, पारीक सब पाराश्वरके, शङ्खवाल संखारडीके, एककी सब शन्तान लेकिन व्याह आपसमें करते हैं सिरफ माता अलग २ सें अलग गोत्र समझा जाता था। कृष्णकी भूआ कुन्ति उसके पुत्र अर्जुनकों कृष्णकी वहन सहोदरा व्याही एसा वैष्णव कहते हैं, जैनोंके अंधक वृश्नी १ भोजक वृश्नी २ दोनों एक बापके बेटे यादव अन्धक वृश्नीका उग्रसेंन भोजक वृश्नीका समुद्र विजयका पुत्र अरिष्ट नेमि (नेमनाथ) उग्र सेंनकी पुत्री राजमतीसें व्याह होणे लगा, पडदादा एक था, इसवास्ते अग्रसेंननें कुछ नई वार्ता नहीं करी, दक्षिणमें अभी भी मामाकी बेटी भाणजेसें शादी होती है राजपूतानेके सब राजा भी ऐसा करते हैं,कोई टालता नहीं,कोई टाल देता है, लेकिन ऐव नहीं गिनते हैं, माहेश्वर कल्पद्रुमवालेने अग्रवाल वंशवालोंकी तारीफ तो लम्बी चौड़ी मनमानी लिखी है मगर अठारमा गोत्र गोल्हण ठहराया और लिखाये गोत्र कलयुगमें बहुत बढ़ेगा मतलब गोलोंकों अग्रवाल ठहराया है, आपसमें सगपण ठहराया है पूज्य पुरुषकी भक्ती तो करी मगर पूज्य पुरुषके नाक पर मक्खी बैठी जूतीसें उडाणा, ये मिसला

हैदराबादमें कोटयाधिपती बनके, चक्रांकित् रामानुजधर्मी, श्री वैष्णव हो गये, द्रव्यकी सहायता देकर हजारों छन्यातिब्राह्मणोंको, महेश्वरी अग्रवालोंको, श्री वैष्णव बनादिया, और तोताद्री जो जीर स्वामीका काम था लांच्छित करणेका, वह नई गद्दी बणाकर पुष्करजीमें स्थापित कर दिया, लाखों रुपये सीतारामबागकों लगाया एक तर्फ दक्षिणी आचार्य एक तरफ अपने गौड़ ब्राह्मणोंकी गुरू गद्दी लगादी इस तरह कोई शैव, कोई विष्णुधर्मी हुए, और बहुतसे दिल्लीके गर्दनबाह, सनातन धर्म जैनही पालते हैं, दिगाम्बर ज्यादह श्वेताम्बरी अग्रवालोंमें कम हैं, सतरह पुत्रोंके नांम १ गर २ गोयल ३ मंगल ४ संगल ५ कांसल ६ वांसल ७ ऐरण ८ ठेरण ९ विंठल १० जिंदल ११ जिंजल १२ किन्दल १३ कुंछल १४ बिंछल १५ बुद्दल १६ मिंतल १७ सिंतल और आधे गोत्र गोंणमें सब उग्र कुल गिना गया इसतरह १७॥ गोत्र कहलाते हैं ॥

(इस समय प्रसिद्ध नांम गोत्र)

१ गरगोत्र २ गोयलगोत्र ३ सिंगलगोत्र ४ मंगलगोत्र ५ तायलगोत्र ६ तरलेगोत्र ७ कांसलगोत्र ८ वांसलगोत्र ९ ऐरणगोत्र १० ढेरणगोत्र ११ सिन्तल १२ मिन्तल १३ झिंधल १४ किंधल १५ कच्छिल १६ हरहरगोत्र १७ वच्छिलगोत्र ॥ गरसूं गण ॥

कर दिखाया है बीकानेरमें नाथी पातर मोहता महेश्वरी देश दीवान राजा सूरत सिंहजीके राज्यमे घरमें रक्खी थी उसकी शन्तान महेश्वरीयोंमें मिलाई गई गड़बड़ चलाते हैं मगर महेश्वरियोंकी बेटियोंसे व्याह तो होते चार, पुखतान वीतगये असलमें पिता तो मोहताजी महेश्वरी होनेसे महेश्वरी नाथीके मोहताही बजते हैं इन्शाफसें तो कोई नुकसान नहीं दीखता क्योंके ब्राम्हणोंकी शन्तान भी तो इस तरह ही भारतमें लिखी है कोई धीवरणीके पेटसें कोई कीरणीके पेटसे देखो विश्वामित्रका पाराश्वर उसका पुत्र कृष्ण द्वैपायन व्यासके शुकदेव इन सबोंकी माता अधम जातिवाली थी मगर ब्रह्मकर्मसें ब्राह्मण मानें गये इस न्यायसे रक्खी हुई स्त्रीकी शन्तान पिताके वीर्यसे है इस न्यायसें वैष्णवोंको दलील नहीं उठाणी चाहिये जैन लोकोंमे ये व्यवहार नहीं मालुम देता, अग्रसेनके भी वेद धर्मी थे, तभी अठार मा पुत्र निज शन्तानकों जैन धर्मके कायदेसें धारेबाद जो हुआ भी है तो, आधा गोत्र ठहराया है, जैनधर्मवाले तो सब उग्रकुल १७॥ में मानते हैं, ।

(श्री बीकानेर गद्दीनसीन महाराजा)

१ रावश्री बीकाजी
२ रावश्री नेराजी
३ रावश्री लूणकर्णजी
४ रावश्री जैत सिंहजी
५ रावश्री कल्याण सिंहजी
६ महाराजा श्रीराय सिंहजी
७ महाराजा श्रीदलपत सिंहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी
९ महाराजा श्रीकरण सिंहजी
१० महाराजा श्रीअनोप सिंहजी
११ महाराजा श्रीसरूप सिंहजी
१२ महाराजा श्रीसुजाण सिंहजी
१३ महाराजा श्रीजोरावर सिंहजी
१४ महाराजा श्रीगज सिंहजी
१५ महाराजा श्रीराज सिंहजी
१६ महाराजा श्रीप्रताप सिंहजी
१७ महाराजा श्रीसूरत सिंहजी
१८ महाराजा श्रीरत्न सिंहजी
१९ महाराजा श्रीसरदार सिंहजी
२० महाराजा श्री डूंगर सिंहजी
२१ महाराजाधिराज श्रीगङ्गा सिंहजी बहादुर विजयराज्ये ॥
महाराज कुमार सादूल सिंहजी

जैसा लिख पाया वैसा सब राजवियोंकी पीढी लिखी हैं विद्यमान् महाराजा श्रीगङ्गासिंहजी बहादुर बडे भाग्यशाली बड़े बुद्धिशाली बड़े न्याय-नीतिमें अग्रेश्वरी प्रजा पालनेमें साक्षात् राजा रामचन्द्रजी जैसे जिन्होंकी कीर्ति सब बादशाहीयोंमें रोशन है । अंग्रेज सरकार पंमचजार्ज सम्राट् तथा गवर्नर जनरल साहबोंके माननीय चन्द्रसूर्य ध्रुवकी तरह राज्य करते हुए, आप हुजूर साहब चिरंजीव रहे । यह ग्रंथ करताका आशीर्वाद है ।

राष्ट्रकूट यानें राष्ट्रमांयने भारत वर्ष रूपराज्य जनपद देश उसके राज-वियोंमें कूट यानें शिखर समान उसका नांम (राठौड़) कन्नोजकी बादशाही तूटी, तब सीहाराव आसथानजी खरतर गच्छ यती आचार्य श्रीजिनदत्त सूरिःके उपकारसें आभारी हुए सं. विक्रम १२०० सेके उतारमें पाली नगरमें खरतर गुरू जात राठोड़ मांसेंगे एसी प्रतिज्ञा करी इसका विस्तार विवरण बीकानेरके बड़े उपासरेके ज्ञान भण्डारमें सर्व चमत्कार उपकारका विस्तार वर्णन हैं आगे चुंडाजी पड़िहारोंके मंडोवरमें सादी करी, (दोहा) चूंडा

चँवरी चाढ़, दीवी मंडोवर दायजे, इंदातणो उपकार कम धज कदियन वीसरे, पीछै सुनाहै के चूंडेजीके १४ जाये १४ रावकहा ये प्रथम योधपुर १ बीकानेर २ किशनगढ़ ३ रतलाम ४ झबुआ ५ ईडर ६ अहमदनगर ७ इत्यादिक १४ ही राजा हुए।

(अथ योधपुर तख्तनसीन महाराज)

१ रावश्री योधाजी
२ रावश्री सांतलजी
३ रावश्री सूजाजी
४ रावश्री गांगोजी
५ रावश्री मालदेवजी
६ रावश्री चन्द्रसेनजी
७ महाराजा श्रीउदय सिंहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी
९ महाराजा श्रीगज सिंहजी
१० रावश्री अमर सिंहजी नागोर तख्त विराजे (जेसलमेररावलराजा)
११ महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
१२ महाराजा श्रीअजीत सिंहजी
१३ महाराजा श्रीअभय सिंहजी
१४ महाराजा श्रीराम सिंहजी
१५ महाराजा श्रीवखत् सिंहजी
१६ महाराजा श्रीविजय सिंहजी
१७ महाराजा श्रीभीम सिंहजी
१८ महाराजा श्रीमांन सिंहजी
१९ महाराजा श्रीतख्त सिंहजी
२० महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
२१ सिरदार० सुमेरु० उम्मेद सिंहजी चिरञ्जीवी विजयराज्यै

सात कुलगर विमल बाहन वगैरह सातमानाभि १ ऋषभ ब्रम्हा २ आत्रेय प्रथम वैद्य ३ असंक्षा पाटवीते सोम ४ असंक्षा पाटवीते बुद्ध ५ असंक्षा पाटवीते पुरूरवा ६ असंक्षा पाटवीते आई ७ असंक्षापाटवीते लघु ८ फिर असंक्षा राजाहुए ९ असंक्षा पाटवीते, जयात्र १० असंक्षा पाटवीते चन्द्र कीर्ति ११ इसके पुत्र नहीं तब युगलक दूसरे क्षेत्रसे: लाकर देवता तख्त विठलाया हरि राजा यहांसे हरि वंश कुल प्रसिद्ध हुआ चम्पा नगरीमें जो दक्षिण मुगलाईमें वीडनामसे प्रसिद्ध है १२ इसके असंक्षा वर्ष पर दृष्टाद १३ असंख्या पीछै अजोन १४ असंक्षा वर्ष वीते अधिपती १५ असंक्षा वर्ष वीते थाई १६ सरमेन्द्र १७ उमेकर १८ चित्र १९ चित्र रथ २० चक्रधन २१ अष्ट कर २२ चन्द्र कुमार २३ अत्रेय २४ सह-

स्वार्जुन २५ सार २६ उद्धरण २७ बलिमित्र २८ प्रल्हाद २९ मृग धत्त ३० हरि विभ्रम ३१ भवण ३२ दूसल ३३ झूझक ३४ अचन सान सात ३५ भूमिपाल ३६ नवरथ ३७ दसरथ ३८ शक्त कुमार ३९ पृथ्वी भार ४० समर्थ ४१ श्रेष्ठपती ४२ यहिबपत्र ४३ जादू ४४ *इसके परिवार बहुत जादव कह लाये इस का सूर ४५ सूरके दो पुत्र सोरी* ४६ दुसरा सुबीर सोरीका अन्धक वृश्नी ४७ सुवीरका भोजक वृश्नी इनके उग्रसेन मथुराका राजा हुआ अन्धक वृश्नीके समुद्र विजय बडा सोरी पुरका राजा छोटाही छोटा वसुदेव ४८ ये १० भाई दशारण वजतेथे वसुदेवके कृष्ण ४९ प्रद्युम्न ५० अनिरुद्ध ५१ वज्र ५२ प्रतिबाहू ५३ बाहू ५४ सुबाहू ५५ भाटी ५६ इसका परिवार भाटी वजणे लगा जगसेन ५७ सालिवाहन ५८ भुवन पति ५९ भोपराज ६० मंगलराव ६१ वुद्ध ६२ वच्छराज ६३ देहल ६४ केशर ६५ तणा ६६ विजयराव ६७ देवराज सिद्धी ६८ तणु ६९ मधु ७० रावबाछ ७१ दुसाज ७२ जेसलजी जेसल मेर गढ़ डाला विक्रम सम्बत् १२१२ सावण सुदी १२ रविवार ७३ सालिवाहन ७४ रावबीजलपिता द्रोणक रिष्ट ७५ राव कल्याण ७६ राव चोचावड़ो ७७ राव कर्ण ७८ राव लखण ७९ राव पुन्यपाल ८० रावजैतसी ८१ राव मूलराज ८२ राव दूदल ८३ राव घड़सी ८४ राव केहर ८५ राव लखमण ८६ राव वैरसी ८७ रावधावो ८८ राव देइचीदास ८९ राव जैतसी ९० राव लूण करण ९१ रावमालदे ९२ राव हरदास ९३ राव भीमजी ९४ राव कल्याणदास ९५ रावमांनसिंह ९६ रावरामचन्द्र ९७ रावसबलराज ९८ राव अमरसिंह ९९ राव जसवन्तसिंह १०० राव जगत सिंह १०१ राव अखयसिंह १०२ राव मूलराजजी १०३ राव गजसिं-हजी १०४ राव रणजीत सिंहजी १०५ वैरीसालजी १०६ शालिवाहनजी विजय राज्ये

---

* देरावर बसाई पमारो पास लोद्रवालिया।

(अथ ओसवंश नाम)

श्रीमाल १ श्रीश्रीमाल १३५ गोत्र २ श्रीपना ३ श्रीपति ४

(अ)

आदित्य १ आसुपुरा २ आसाणी ३ अचल ४ अमरावत ५ अघोड़ा ६ आमाणी ७ आकोल्या ८ आमड़ ९ अशुभ १० असोचिया ११ अमी १२ आइ चणाग १३ आकाशमार्गी १४ आंचलिया १५ आछा १६ आयरिया १७ आमदेव १८ आली झाड़ १९ आलावत २० अंवड़ २१ आवगोत २२ आसी २३ आभू २४ आखां २५ अछड़ २६ आभड रहा

(ई)

इलड़िया ९ ईंदा २

(उ)

उत्कण्ठ १ उर २ ऊरण ३ ऊनवाल ४ ऊदावत ५ ओसतवाल ६ ओरडिया ७

(क)

काउक १ कटारिया २ कठियार ३ कणोर ४ कनियार ५ कनोजा ६ करणारी ७ करहेडी ८ कड़िया ९ कठोतिया १० कठफोड़ ११ कहा १२ कसाण १३ कठ १४ कठाल १५ कनक १६ ककड़ १७ कबाड़िया १८ कांकलिया काकरेचा १९ कावसा २० काग २१ कांकरिया २२ कासतवाल २३ काजल २४ कजलोत २५ काठोलड़ा २६ काबेडिया २७ कांधल २८ कांतल २९ कावड़ ३० कांचिया ३१ करणावट ३२ कुगचिया ३३ कांसेरिया ३४ केल ३५ काबा ३६ कछावा ३७ कुंभटिया ३८ कोरा ३९ कांगसिया ४० कसूंभा ४१ केशरिया ४२ काला ४३ कोचर ४४ कानूगा ४५ कोठारी कई तरहका ४६ कोचेटा ४७ कातेला ४८ कातरेला ४९ कुदाल कई तरहका ५० कुहाड़ ५१ करमदिया ५२ करोंदिया ५३ कान्हउड़ा ५४ कुबेरिया ५५ कुचेरिया ५६ कुरकुचिया ५७ कलरोही ५८ कोकड़ा ५९ कर्णाट ६० कुलहट ६१ कूकड़ ६२ कुलभांण ६३ क्याबर ६४ किरणाल ६५ कूंकूरोल

६६ काछवा ६७ कुंदण ६८ कोट ६९ कोटेका ७० कैहड़ा ७१ कलिया ७२ कंकर ७३ कावड़िया ७४ कांचलिया ७५ कुंकुम ७६ कड़े ७७ कूकड़ा ७८ कूंहड़ ७९ कौबर ८० कोंठेचा ८१ करहड़ा ८२ कलपाणा ८३ कोटलिया ८४ कोठी फोड़ा ८५

(ख)

खटवड़ १ खाटोड़ा २ खोटड़ ३ खान्या ४ खींमसरा ५ खुड़द्या ६ खेमासस्या ७ खेमानंदी ८ खेतसी ९ क्षेत्रपाल्या १० खड़भण्डारी ११ खड़भणसाली १२ खजानची १३ खूतड़ा १४ खरधरा १५ खरहत्थ १६ खोखा १७

(ग)

गणधर १ गणधर चोपड़ा २ गिड़ीया ३ गैलड़ा ४ गड़वाणी ५ गादहिया ६ गाय ७ गावड़िया ८ गांग ९ गांधी १० गंधिया ११ गूगलिया १२ गुलगुलिया १३ गेवरिया १४ गोरा १५ गोखरू १६ गोंदेचा १७ गोलेछा १८ गोढ़वाडचा १९ गोध २० गोठी २१ गोगड़ २२ गटा २३ गर २४ गोय २५ गोसल २६ गहलोत २७ गल्लाणी २८

(घ)

घुल्ल १ घोरवाड़ २ घोडावत ३ घौषा ४ घंटेलिया ५ घीया ६

(च)

चौहाण २४ सोंई जातवाले अश्वपति हुए १ चतुर २ चीपट ३ चींपड़ ४ चोरवेड़िया ५ चौपड़ा ६ चौधरी ७ चंडालिया ८ चव ९ चिड़चिड़ १० चींचड़ ११ चम्म १२ चामड़ १३ चीलमोहता १४ चोदू १५ चंद्रावत १६

(छ)

छजलाणी १ छाजहड़ काजलोत २ छाजेड़ ३ छोहन्या ४ छापरिया ५ छैत ६ छंदवाल ७ छापरवाल ८

(ज)

जणिया १ जालोरा २ जैणावत ३ जिन्नाणी ४ जुष्टल ५ जुजाण्ण

६ जुबर्हा ७ जोइया ८ जांबड़ ९ जांगड़ा १० जड़िया ११ जाइलवाल १२ जोधा १३ जलवाणी १४ जिन्द १५ जादव १६ जोहा १७

(झ)

झंबक १ झाबक २ झावड़ ३ झवरी ४ झोटा ५ झालाई ६

(ट)

टांटिया १ टूंकलिया २ टोडरवाल ३ टिकोरा ४ टेका ५ टीकायत ६ टाटया ७

(ठ)

ठाकर १ ठंठवाल २ ठकि ३ ठीकरिया ४

(ड)

डहत्थ १ डफरिया २ डफ ३ डागा ४ डाकलिया ५ डाकूपालिया ६ डांगी ७ डूंगरवाल ८ डीडू ९ डौडिया १० डिडुता ११ डोसी १२ डूगेरंचा १३

(ढ़)

ढड्ढा १ ढाबरिया २ ढिल्लीवाल ४ ढेढीया ५ ढेलडाया ६ ढींक ७ ढोर ८ ढेलड़िया ९

(त)

तलेरा १ तातहड़ २ तातेड़ ३ तिलहरा ४ तेलिया ५ तेलिया बोहरा ६ त्रिपेकिया ७ तेल्या ८ तोडरवाल ९ तिल्लाणा १० तेजाणी ११ तोसालिया १२

(थ)

थरावत १ थररावत २ थाहर ३ थोरिया ४

(द)

दरगड़ १ दक २ दरड़ा ३ दीपक ४ दूणीवाल ५ दूधेड़िया ६ दूदवेड़िया ७ दूगड़ ८ देसरला ९ देहरा १० देवानन्दी ११ दोसी १२ दुदवाल १३ दस्साणी १४ दुड़िया १५ दूधोड़ा १६ दफतरी १७ दइया १८ देवड़ा १९ दसोरा २० द्रवरी २१ देल वाडिया २२ दाना २३ देशवाल

(ध)

धनचार १ धड़वाई २ धाड़ीवाल ३ धाड़ेवा ४ धाकड़ ५ धीया ६ धूर ७ धूंध्या ८ धूप्या ९ धेनडाया १० धौंऱ्या ११ धंग १२ धत्तूरिया १३ धन्नाणी १४ धेनावत १५ धांधल १६ धोका १७

(न)

नवलखा १ नपावल्या २ नडुलाया ३ नक्षत्रगोत्र ४ नाहर ५ नाहटा ६ नानगाणी ७ नाबरिया ८ नानावट ९ नागपरा १० नाबेड़ा ११ नाबेडार १२ नाडूल्या १३ नांदेचा १४ नेणेसर १५ नेणवाल १६ नाग १७ नींबहडा १८ नारण १९ नारेला २० निरखी २१ नवकुद्दाल २२ नीमाणी २३ नाहउसरा २४ नीबाणिया २५ नाणी २६ नबाब २७ नागोरी मणसाली ओर भी कई तरहका २८ नागपुरिया २९

(प)

परमार १ पंवार २ पड़िहार ३ पंचोली ४ पचायणेचा ५ पसला ६ पटवा ७ पटवारी ८ पटविद्या ९ पगारिया १० पगाऱ्या ११ परधाल्या १२ पारख तीन तरहका १३ पापडिया १४ पामेचा १५ पालावत १६ पीपाड़ा १७ पींपलिया १८ पंचोली वावेल १९ पूनमिया २ तरहका २० पूनम्या २१ पूगलिया २ जातका २२ पोकरणा २३ पींचा २४ पंचकुद्दाल २५ पोपाणी २६ पोमाणी २७ पीतलिया २८ पीथलिया २९ पोरवाल ३० पैतीसा ३१ पचीसा ३२ पांचा ३३ पूण ३४

(फ)

फतह पुरिया १ फूमड़ा २ फूसला ३ फूल फगर ४ फोकटिया ५ फोफलिया ६ फलोधिया ७ फाकरिया ८ फलसा ९ ।

(ब)

बरढिया १ बरहड़िया २ बिछायत ३ बछावत ४ बराड़ ५ बडलोया ६ बड़गोता ७ बलाही ८ बलदोबा ९ बणभट १० बबाला ११ बावेल १२ बडोल १३ बरड़ १४ बोरड़ १५ बोंकडाया १६ बोकड़ा १७ बोहरा अनेक जातका १८ बोहरिया १९ बौल्या २० बौरधा २१ बंब २२ बंबोढ़

२३ बंश २४ बंका २५ बांका २६ बंठिया २७ बांटिया २८ बांटचा २९ बाफणा ३० बहुफणा ३१ बापना ३२ बूबकिया ३३ बैदकई जातका ३४ बैतालिया ३५ ब्रह्मैचा ३६ बडेर ३७ बद्धाणी ३८ विरहट ३९ बीर ४० बलहरा ४१ बसाह ४२ बाहंतिया ४३ बोक ४४ बोथरा ४५ वांगाणी ४६ बाघचार ४७ बाघमार ४८ बाकरमार ४९ बेगाणी ५० बीराणी ५१ बीरी बत ५२ बांभी ५३ बुचा ५४ बूंबा ५५ बराहुन्या ५६ बगडिया ५७ बायड़ा ५८ बाघड़ी ५९ बालिया . ६० बरण ६१ बिलस ६२ बाल ६३ बांबल ६४ बाहबल ६५ बट ६६ बिनायकिया ६७ ।

(भ)

भल्लड़िया १ भड़ारा २ भद्रा ३ भड़कतिया ४ भक्कड़ ५ भटेवरा ६ भादाणी ७ भ्राद्रगोत ८ भाभू ९ भामूपारख १० भीलमार ११ भरट्ट १२ भौरड़िया १३ भौर १४ भंगलिया १५ भंड़साली १६ भणशालीसाय और खड़ १७ भंडगोत्र १८ भांडावत १९ भण्डारीराय तथा क० २० भूरा २१ भर २२ भेला २३ भूतेड़िया २४ भल्ल २५ भुगड़ी २६ भंडसूरा २७ भूतोड्या २८ भटाकिया २९ भट्टारकिया ३० भेलड़ा ३१ भाटिया ३२ भाटो ३३ भूआत्ता ३४ भूप ३५ भंवरा ३६ भलाणिया ३७ भैंसा ३८ भट्ट ३९ भींडा ४० भगत ४१

(म)

मटा १ मरड़या सोनी २ मणहड़िया ३ मसरा ४ मम्मइया ५ मणहड़िया ६ मकवाण ७ महाभद्र ८ मगदिया ९ मालू २ तरहका १० माधोटिया ११ मुंहणांयी १२ मुंहणो १३ मुंहणोत १४ मेड़तवाल १५ मोहीवाल १६ मौहीवाला १७ मौहबवा १८ मंडोवरा १९ मंडोचित २० मंगलिया २१ मेर २२ मोहड़ा २३ मेघा २४ मोदी २५ मल्ल २६ मुंहाला २७ मुहियड़ २८ महेचा २९ मुकीम ३० मरोठी ३१ मरराणा ३२ मारू ३३ मोराक्ष ३४ मोलाणी ३५ मदारिया ३६ मरोठिया ३७ मक्कलवाल ३८ मगदिया ३९ मीठड़िया ४० मुंगरवाल ४१ महाजनिया ४२ मूंग-

रेचा ४३ माल्हण ४४ मुसरफ बेगाणी ४५ मीन्नी ४६ मड़िया ४७ मल्ला-वत बांठिया ४८ महाबत ४९ मालविया ५० माधवाणी ५१ महति-याण ५२ मूंधडा ५३ मोर ५४ मांचोदिया ५५ मेनाला ५६ महीपाल ५७॥

(य)

यक्षगोत्र १ यौगड़ २ यादव ३ योगेसरा ४

(र)

रतन पुरा १ रतन सूरा २ रतनावत ३ रत्ताणी बोथरा ४ रातड़िया ५ राखेचा ६ रावल ७ राणाजी ८ राय भण्डारी ९ रांका १० रीहड़ ११ रोटा गण १२ रूप १३ रूपधरा १४ रूणवाल १५ रायजादा १६ रावत १७ राठोड़ १८ रूणिया १९ रामपुरिया २ तरहका २० रेणू २१ राखड़िया २२ रामसेन्या २३ रणधीरोत कोठारी २४ राव २५।

(ल)

लक्कड़ १ ललवाणी २ लींगा ३ लुंबक ४ लूंकड़ ५ लूणावत ६ लालण ७ लालाणी ८ लूणिया ९ लेला १० लेवा ११ लोढ़ाराय १२ लोढ़ा कट्ठ १३ लोटा १४ लोलग १५ लूटंकण १६ लांबा १७ ललित १८।

(स)

सचिन्ती १ सचिन्ती ढिल्लीवाल २ सखला ३ समुद्रिया ४ सवरला ५ सालेचा ६ साहेल ७ सियार ८ सीखाणा ९ सीसोदिया १० सिरोहिया ११ सियाल दो तरहका १२ सुदेवा १३ सूराणा १४ सराफ १५ सुन्दर १६ सूरपुऱ्या १७ सूरपुरा १८ सुकलेचा १९ सेठिया २० सेठीपावरा २१ सोनगरा २२ सोलंखी २३ सोनी २ तरहका २४ सांड २ तरहका २५ संघवी कईतरहका २६ संड़ २७ संखला २८ सुघड २९ संवल ३० संखवालेचा ३१ संचती ३२ सांखला पमारामांह सुवाज्या ३३ सांखला निजराजपूत हुआ ३४ समदड़िया ३५ सांम सुका ३६ सावण सुका दोनों एक ३७ सेठिया वेद बीकानेर महाराव प्रमुख ३८ लघुसेठी सोनवत ३९ सांह वाठिया ४० साह वोथरा साह पद बहु जाती ४१ सिंघल ४२ सींप ४३ सीपाणी ४४ सुत ४५ सधरा ४६ सोझतवाल ४७ सिंघा-

ड़िया ४८ सेखाणी ४९ सुखाणी ५० सेठ ५१ सुथड़ ५२ सोमलिया ५३ समूलिया ५४ साहला ५५ सोनीवापना ५६ सापद्राह ५७ सांभरिया ५८ सारंगाणी ५९ सूर ६० सींवड़ ६१ सिन्दुरीया ६२ सचोपा ६३ सेल्होत ६४ सेवड़िया ६५ सांचोरा ६६ सोझतिया ६७ संभुआना ६८ सरला ६९ सुंधेचा ७०

(ह)

हंगुड़िया १ हींगड़ २ हेमपुरा ३ हुंड़िया ४ हाहा ५ हाथाला ६ हाला ७ हीरावत ८ हिरण ९ हरखावत बाठिया १० हिड़ाऊ ११ हेम १२ हठीला १३ हमीर १४ हंसारिया १५ हंस १६

इसी तरह हमनें ६८० इतनें नाम पाए सो लिख दिये हैं बाकी अश्वपती जात रत्नाकर सागर है, इसमें गोत्र नख मुक्तावलीका पार कौन पासक्ता है अन धन संपदा पुत्र कलत्रादि परिवारसें गुरू देव सदा इन्होंकी सवाई वाजी रख, वड़ शाखा ज्यों, विस्तार पाओ,

(गृहस्थाश्रमव्यवहार)

अव्वल तो सोलह संस्कार जैनधर्मके (आर्य वेद) के प्रमाण मंत्र युक्त विधिसें जैनधर्मी श्रावकोंकों जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त केहैं सो आगे तो जैनधर्मी ब्राह्मण थे वह कराते थे और अब श्रावकोंको चाहिए की जो काल धर्मको विचार कर जैन जती पंडितोंसे कर बाणा दुरस्त है जो किसी जगह जती पंडित नहीं मिले तो सोलह संस्कार की पुस्तक जैनधर्म आर्य वेद मंत्रोंकी विधी समेत बीकानेरमे हमारे इहां मिलती है पंडित महात्मा जैनी भोजकसे विधीसें करवावे मगर मिथ्यात्वियोंके संस्कार विधीसे दूरही रहना दुरस्त है, गुजरातमे प्रथा शुरू होगई है १ व्रत पच्च खान अपनी कायाकी शक्ती मुजिब नवकारसीसें आदिलेनिभेजेसाधारणा १ धन पैदा करके इसभव परभव दोनों सुधरे और दुनियां तारीफ धर्म वन्तकी दातारकी हमेशा करे वैसाही करणा २ शास्त्र पढ़े हुए विचक्षण उपदेशी जैनधर्ममें तत्पर निष्कपट महापुरुषकी संगत और द्रव्य भाव भक्ति करणी ३ लैण दैण साफ रखणा ४ करजदार जहां तक बणे वे कारण होना नहीं ५ विश्वास पैठ प्रतिती पूरे बाकिफ

कार हुए विगर हर किसीका करणा नहीं ६ स्त्रियोंको कुलवन्ती सुलक्षणी चतुरा सिवाय हर किसीकी संगत नहीं करणे देणा ७ अपनी तासीरकों नुकशान करे ऐसा पदार्थ ऋतुके विरुद्ध व कुलके विरुद्ध व प्रकृतीके विरुद्ध कभी खाना नहीं या पूर्ण विद्यावान् देशी वैद्यकी आज्ञा उपदेश हमेशा धारण करणा ९ कोई तरह काभी व्यसन सौखसें सीखणा नहीं १० रोग कारण और विचारणा ११ कठिन शब्द किसीको बे कारण कहना नहीं १४ घरका भेद कुमित्रोंकों कभी देणा नहीं १५ धर्मी पुरुषकों वणे जहां तक सहाय देणा १६ परमेश्वर और मौत, अपने पर किया हुआ उपकार इन तीनोंको हर दम याद करते रहना १७ किसीके घर पर जाणा तो वाहिरसें पुकार कर अन्दर घुसणा १८ मुल्कागिरी करते वक्त हाथकी सचाई १ जुवान की सचाई २ लैन दैनकी सचाई, लंगोटकी सचाई रखणा, १९ और वे खबर गफलत सोणा नहीं २० वणे जहां तक इकेलेनें मुसाफिरी नहीं करणी, २१ फाटका करणेवाला तथा जुवारीकों गुमास्ता रखणा नहीं रुपया उधार देणा नहीं २२ मंत्र पढ़कर या किमिया गिरीसें जो पुरुष द्रव्य चाहते हैं, उन्हों पर देवका कोप हुआ समझणा, २३ अपने लड़का लड़कियोंको हर एक तरहका हुन्नर सिखलाणा, इल्म सिखाणा, अखूट धन देना है २४ सरकारके कायदेके वर खिलाफ पांव नहीं धरना, २५ धन पाकर गरीबोंको सताणा नहीं, २६ अभिमान करणा नहीं २७ तनमन और वस्त्र हमेस साफ रखणा, २८ जैनधर्मके मुकावले दूसरा धर्म नहीं २९ क्योंके अहिंसा परमो धर्मः इस वर्तावसें इस धर्मका सारा व्यवहार है, पक्का इतकात रक्खो ३० जीव अपने पूर्वके किये हुए पुन्य पापसें सुख दुख पाता है ईश्वर किसीका भला बुरा नहीं करता, ३१ दुनिया न तो किसीने बनाई है और न कोई नाश कर सक्ता है, पांच समवायके मेलसें सारा काम घटत बढ़त हो रहा है काल १ स्वभाव २ भवितव्यता ३ जीवोंके कर्म ४ जीवोंका उद्यम ५ सब इन्होंकाही फेरफार

---

१ खानपानादि आहार विहारादि आरोग्यताके लिए हमारा लिखा वैद्य दीपक ग्रंथ छपा हुआ पढो, न्योछावर ५)

कुदरत दिखाता है ३२ कर्मके नचाये देव पशु मनुष्य सब स्वांग नाच रहे हैं, ब्रम्हाको कुम्भारका कर्म करणा पड़ा विष्णुको दश अवतार धारण कर महा संकट उठाणा पड़ा, रुद्रको ठीकरा हाथमें लेकर भीख मांगणी पड़ी, सूर्यको हमेश चक्र लगाना पड़ा, वस कर्मकी गतिको जिसनें पहचाणा वही जन्म मरणसे छूट गया वह सर्वज्ञ ईश्वर ज्ञानानन्द मई अरूपी आत्मा है ३४ जैसैं ईश्वर और जीव दोनों किसीके बनाये हुए नहीं वैसैंही दुनिया किसीकी बनाई हुई नहीं ३५ दुनिया ईश्वरकी कर्त्ताकी दलील करती है, मगर इन्साफसें पेश नहीं आते ३६ आकाशमें सूर्य चन्द्र तारे जो तुम देखते हो यह ईश्वरके बनाये हुए नहीं है ज्योतिषी देवताओंके विमान है, इन्होंको देवता चलाते हैं ३७ कई लोग जमीनकों नारंगीकी तरह गोल कहते हैं लेकिन जमीन थालीकी तरह गोल है और सपाट है ३८ जमीन नहीं फिरती, अचल है चन्द्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ और तारे ५ अपने कायदे मुजिब फिरते हैं ३९ आत्मा एक अविनाशी शरीर तापसें जुदा पदार्थ है मगर कर्म तापके वस मोह अज्ञान जड़नें घेरा हुआ है ४० मांस खाणेसें वैद्यक विद्याके हिसाब बडाही नुकशान करणे वाला और धर्मके कायदेसें नरक जानेका कारण, और जिसें जीवकों मारकर मांस लिया जाता है वह पिछला बदला लिए विगर हरगिज छोड़ेगा नहीं ४१ पेस्तर रावण कृष्ण रामचन्द्र तथा लक्ष्मणादिक विमानके जरिये हजारो कोसोंकी मुसाफरी करते थे ४२ जिसके पुन्य प्रबल है उसका बुरा कोई नहीं कर सक्ता ४३ देव गुरूके दर्शन करे बिगर भोजन करना श्रावकोंको उचित नहीं ४४ दौलत धर्मकी दासी है ४५ जैसा दुश्मनका कोप रखते हो ऐसा १८ पाप स्थानकोंका रक्खा करो ४६ वाप माका दिल, वंदगी कर खुश रक्खा करो मांका फरज वापसें भी आला दरजेका है तुम वह करजा कभी नहीं फेट सकोगे, जहां तक धर्म प्राप्तिका सलूक नहीं करोगे उहां तक ४७ जलमें मत घुसो ४८ बिगर छाणा जल मत पीओ ४९ बिगर गुण दोष जांणे बिगर नजरके वे दरियाफ्त कोई चीज मत खाओ पीओ ५० वासी भोजन मत करो ५१ सरकारी एनके कायदेसें

वाकिफ रहो ९२ राजद्रोह मत करो ९३ देशी उन्नतिका ढंग हुन्नर इल्म संप और मदत देणाही मुख्य है ९४ व्यापार सब मुल्ककी आवं दानीका बीज है ९५ शराबसें खराब होणा है ९६ सभामें गुरूके पास और दरबारमें जाते संका मत लाओ पूछेका जबाब विचारके दो सभामें बैठणा बोलणा लायकीसें करो ९७ राजकी कचहरीमें हाकिम धमकावे तो या फुसलावे तो डरो भी मत और न फुसलाने पर कायदेके वर खिलाफ बात करो हाकिमोंका दस्तूर है कि मुद्दई और मुद्दयिलहके दिलको कमजोर कर बात पूछणा जिससें वह हड़वड़ाके कुछका कुछ कह उठे अब वह जमाना नहीं है जोकी न्यायकी गहरी खोजसें सचका सच झूंठका झूंठ और अब तो चालाकी सफाई और गवाहीसे मिसलका पेटा भरा, वस झूंठा भी सच्चा बन जाता है ९८ जैनधर्मियोंकी रिवाज है कि, प्रात समय उठके, परमेष्ठी ध्यान मन गत करे, पीछै फिर शुच होके वस्त्र बदलके सामायक प्रतिक्रमण करे उहांसे उठ कर स्नान तिलक कर उत्तम श्रेष्ठ अष्ट द्रव्य लेकर जिन मन्दिरोंमें, या घर देरासरमें, पूजा करे, नैवेद्य बली चढ़ाकर, वस्त्र पहन कर, गुरूकूं यथा योग्य वन्दन कर, व्याख्यान सुणे, पच्चखाणकाया शक्ति मुजब, छछंडी चार आगार मोकला रक्खे, फिर घर पर सुपात्र तथा क्षुल्लक सिद्ध पुत्र, अनुकम्पावगैरह दान यथाशक्ति करके ऋतु पथ्य, प्रकृति पथ्य, कुलाचार मुजब भोजन दो भाग, एक भाग जल, एक भाग खाली पेट रक्खे, सराब ब्रांडी मिली तथा जीवोंके मांस चरबीसें वणा पदार्थ खांणा तो दूर रहा, लेकिन हाथसें भी स्पर्श, न करे वस्त्र उजले धोये हुए साफ पहरणा, आगे ऐसा रिवाज भारत वर्षमें था कि, शूद्र जातीके लोक, नख, बाल साफ कराए हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, शुद्ध ताईसें, भोजन रसवती तैय्यार करते, तब राजपूत वैश्य और ब्राह्मण भोजन करलेते स्वामी दया नन्दजी, सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं ऐसा वेदोंमें लिखा है, कौन जाने इसी रिवाजकों, हमारी जैन जाति' कबूल करके चलते होंगे मारवाड़के, क्योंके आगे ब्राह्मण लोक भट्ट झोकणेका काम, शूद्रोंका समझ, नहीं करते थे, और वनोवासी ऋषि थे वह तो, मध्यान्हकों, एकही

समय भोजन अपने हाथकी बनाई हुई खाते थे, वह स्वयंपाकी वजते थे, अब तो चारोंकामकों, ब्राह्मण मुस्तैद हैं पीर १ बबरची २ भिस्ती ३ खर ४ तो बहुतही अच्छा हैं मांसं मदिराके त्यागी जो मारवाड़ गुजरात कच्छके ब्राम्हण हैं, उन्होंसे चारों काम कराणा जैनधर्मियोंके लिए, वे जा तो नहीं है लेकिन जल दिनेमें दोवक्त छाणना, चूलेमें लकड़ीमें, सीधे सरंजाममें, साग, पात, फल, फूलके जीवोंकों, तपासणा, जैन धर्मकी स्त्रियोंको, अथवा मर्दोंकों करणा वाजिव है ब्राह्मण तो फरमाते हैं हम तो अग्निके मुख हैं, जो होय सो सब स्वाहा लेकिन दया धर्मियोंको, इस बातका विवेक रखणा, एकका झूठा, तथा बहुत मनुष्योंनें सामिल बैठके जीमना, ये उभय लोक विरुद्ध है डाक्टर लोक कहते हैं गरमी सुजाक कोढ़ खुजली आंख दुखणा वगैरह कई किस्मकी बिमारी, ऐसी तरहकी हैं, जो झूंठ खाणेवालोंकों, लग जाती है, जिस वरतणसें मुंह लगा कर, पाणी पीणा, वह वरतण पाणीके मटकेमें नहीं डालणा, कारण, उस पाणीसें रसोई, बणनेमें आवे तो, साधू सन्त, अभ्यागतकों देणा, उन्होंको अपणी झूठ न खिलाना है, वह अपना रोग लगाना है, वह महा पाप है, धर्म ध्यानके कपड़ोंसें, गृह कार्य नहीं करणा, स्त्रियोंको तीन दिन ऋतुधर्म आनेपर, घरका अनाज चुगाणा, कोरा कपडा सीणा, वगैरह रिवाजोंको बन्ध करणा, ठाणांग सूत्रपाठके, दशमें ठाणे, खूनकी असिझाई भगवाननें फरमाई है, स्नान २४ पहर पीछै करणा, २ दिनसें करणा वाजिब नहीं है, सूतक जन्म पुत्रका १० दिन, लड़कीके ११ दिन, मरणका सूतक १२ दिन, जादह सूतक अभक्ष विचार देखणा हो तो रत्न समुच्चय हमारा छपाया हुआ पुस्तक देखना जहां तक भक्षाभक्षका विवेक नहीं, उहांपर्यंत पूरा व्रतधारी श्रावक नहीं हो सकता, रोगादिक कारण यत्न करे, श्रावकको तन दुरस्त रखणा, जिससे समझ वान, धर्म १ अर्थ २ काम ३ और मोक्ष ४ चारों साध सकता है, अन्य दर्शनियोंकी संगत पाकर श्रावक धर्मकों छोडणा नहीं चाहिये, राज दंडे, लौकिक भंडे ऐसा रुजगार खान पान, धन प्राप्ति कभी नहीं करणा चाहिये, रात्रि भोजन करणेसें हैजा,

जलन्धर, अजीर्णादिक रोग होणा इसभव विरुद्ध है और नाना तरहका रात्रि भोजनसें जीवघात होणेसें, नरक तिर्यंच गति होती है यह परभव विरुद्ध है, मकान, चौका, और बरतण, और लड़का लड़कियें ये सब साफ सुघड़ रखणा चाहिये, जहां पवित्रता है वहां ही लक्ष्मी निवास करती हैं, श्रावक कुलाचारमें मांस मदिराका तो विल्कुल अभाव ही है तथापि सर्वज्ञ फर्माते हैं जहां तक तुम आत्माकी देवकी और गुरूकी साक्षीसें सौगन नहीं करोगे, उहां तक निश्चय नयसें तुम्हैं उन चीजोंकी मुमानियत नहीं मानी जायगी, हरी वनस्पति विल्कुल छोडणेका रिवाज आज कल मारवाड़के जैनोंमें ज्यादह प्रचलित है, इससे मुंहमें मसूड़े पककर खून गिरणा जोड़ोंमें दर्दखूनकी खराबीनाताकत बहुत आदमी देखणेमें आते हैं, और गुजराती कच्छी जैन कोम ज्यादह सागपात तरकारी खाणेसें, बदहजमी, मेदबृद्धिदस्त वेटेम, इत्यादि रोगोंसे पीड़ित देखणेमें आते हैं, इस लिये कलकत्ते मकसूदाबादवाले जैन कोमका रिवाज हरी वनस्पतिका मध्यवृत्तिका मालूम दिया है, जो कि ताजी वनस्पति आंम, कैरी, अनार, सन्तरा, मीठे नींबू, नेचू, गुलाबजामुन, परबलदूधी (कद्दू) आदिक वढिया फलोंका, और गिणती मुजब सागोंका, तनदुरस्तीका, बर्त्ताव देखणेमें आया, न तो अव्रतपणा रखते हैं, न ऊठोंकी तरह हर वनस्पतिको खाकर, दोनों जन्म विगाड़ते हैं, गिणती माफिक पच्च खाण करते हैं, जैसे उपासगदशासूत्रमें आनन्द श्रावकनें कहा है वैसा इच्छारोधन शक्त्यानुसार करते हैं, श्रावकोंकों, सड़ाफल चलितरस, गिलपिला हुआ, आपसें ही छेद हुआ, ऐसे फल तथा तुच्छ फल, बेर, पीलू वगैरह कमकीमती जिसमें, कृमि, अन्दर पड़ जाती हैं, ऐसोंसे, हमेश, वचणा चाहिये, पत्तोंके साग, बरसातके ४ महिनें, हरगिज नहीं खाणा चाहिये, और मोलका आटा, विगर तपासाभया, घी, साबत सुपारी खानेसें, जैन धर्मशास्त्र मांस खाणेका, दोष फरमाते हैं, मगर मुसाफिरी करनेवाले, गरीब श्रावकोंसें मोलका आटा और घीका व्रत पालणा मुशकिल मालूम देता है, रेलके मुसाफिरोंको, मोलकी पूड़ी ही, मयस्सर होती हैं, विचार कर सौगन लेणा चाहिये, सौगन दिलाणेवाला पूरे जांण-

कार १ लेणेवाला पूरा जांणकार, दोनोंमेंसे एक जांणकार, ३ यहांतक तो सौगन यांनें पच्चखाण शुद्ध माना गया, और करणेवाला, कराणेवाला, दोनों पच्चखाणके स्वरूपके अजाण ये पच्चखाण तदन अशुद्ध है, सागपत्तोंके जीव तपासे विगर हरगिज बरताव नहीं करणा चाहिये जो जो पदार्थ वैद्यक शास्त्र-वालोंनें रोग कर्त्ता निरूपण किया है सो प्रायः तीर्थंकरोंने अभक्ष फरमाया है देखो हमारा बनाया वैद्य दीपक ग्रन्थ, झूठे वरतणरातवासी नहीं रखणे चाहिये पत्तलोंमें भोजन करणेसें श्रावकोंको बडा पाप लगता है कारण उस पतलों पर भोजनका अंस लगा रहता है वह एक पर एक गिरणेसें प्रत्यक्ष कीड़े पैदा होकर हिंसा होती है, पात्र चांदीका सोनेका, गरीबोंकों उमदा कांसीके थाली कटोरे रखणा दुरस्त है आजकल टैन एलियो मिनीम वगैरहके घर २ में चल रहे हैं धातू वह अच्छा समझणा चाहिये कि जिसके पर-माणु पेटमें जाणेसें कोई किस्मकी पीछै तकलीफ न पैदा करे तांबा पीतल जरूर हानि करते हैं हमेशके मावरेमें ये पात्र बिल्कुल अच्छे नहीं कारण भोजनमें षट्रस आता है और खट्टा रस लोंण वगैरह जिस धातुके संग दुश्मन दावा रखता है ऐसा पात्र अच्छा नहीं श्रावककी करणी खरतर गच्छी जिन हर्षजीने चौपई रूप २२ गाथाकी बनाई है सो श्रावकोंके लिए नसियत है जरूर उसकों अमलमें लाणाफर्ज है बचपनेमें ब्याह करणा उनोंका समागम कराणा जिन्दगानीको धक्का लगाणा है स्त्री तेरह पुरुष १८ यह कलयुगी रिवाजसे तदन हटना नहीं चाहिये बच्चोंको पढ़ाणा जरूर है मगर याद रक्खो पहले दया धर्मकी शिक्षा दिला कर पीछै अंग्रेजी पढ़ाणा मुनासिव है अगर न दी जायगी दयाधर्म शिक्षा तो अंग्रेजी पढ़ कर जरूर होटलोंके महमांन बणेंगे कोरे घड़ेमें पहले घी डालकर पीछै आप चाहै सो वस्तु डालो खारखटाई विना हरगिज ठीकरी चिकणापन घीका नहीं छोडेगी खार खटाई शिक्षामें क्या चीज है स्त्रीका लालच धनका लालच समझणा चाहिये, कारण धर्मशिक्षा पाये हुए भी इन दोनोंकी आसामें निज धर्म बहुतसे खो बैठते हैं मगर थोड़े प्रायः नहीं छोडते हैं, इल्म पढ़ाणेमें गणितकला, लिखतकला, शास्त्री अक्षर, अंग्रेजी अक्षरादिकोंकी, पठतकला,

शिखाणा जमानेके अनुसारही चाहिये, व्यापार हरकिस्मके करके, धन उत्पन्न करणा गृहस्थोंका मुख्य कृत्य है, तथापि तिल वगैरह अनाज फागुण महिने उपरान्त रखणेसें, महाजीवोंकी हिंसा होती है, सब कार्योंमें विवेकही रखणा मुख्य धर्म है, (विचार) जैसैं गीतामें लिखा है (स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः इसका अर्थ निर विवेकी कुछका कुछ करते हैं, लेकिन कृष्ण द्वैपायन व्यास आगामी चोबीसीमें तीर्थंकर होणेवालेकी बनाई गीता कर्मयोग ग्रंथ है, इसके वचन प्रायः विसद्ध होय नहीं, इसवास्ते इसपदका सीधा अर्थ ज्ञानियोंके मान्य करणे योग्य विवेकी ऐसा समझते हैं, स्वधर्म क्या वस्तु, आत्माका ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ रूपधर्म, इस धर्ममें, निधनयानें इस शरीरके त्यागणेसें, श्रेय, याने मोक्ष होता है, परधर्म, यानें कर्म जड़ पदार्थका, जो मोह, अज्ञान, मिथ्यात्व, अव्रत रूपधर्म है, सो भयका देनेवाला है, ऐसा अर्थ विवेकी करते हैं, इत्यादिक हर पदार्थपर, विचारणा, उसका नाम विवेक है,

(स्त्रियोंके लिये शिक्षा)

पवित्रता रखणा, शील व्रत धारणा, स्त्रियोंका मुख्य शृङ्गार है, पतिकी भक्ति करणा, आज्ञानुसार वरतणा, घरका काम देखणा, रसोई बनाना, चुणणा, बीनना, फटकणा, कूटणा, पीसणा, छाणना, सब कामोंमें जीवोंका यत्न करणा, पापड़वडी दाल बनाना सुकान त्रिगड़नेवाले पदार्थोंमें फूलण कीडे न पड़ने पावे छायामें फैलाकर हवा देणा, ऊनू रेशमी वस्त्रोंको चातुरमासमें जीव नहीं पड़ने पावै इस तरकीबको ध्यानमें लाणा चाहिये, आचार मुरब्बा, बनाकर बिगडने, नहीं देना, वस्त्र धोए रंगे सुगन्धित रखणा, बच्चोंको स्नान, मज्जन खान पान, पोसाख गहणोंसे अलंकृत कर, पढाने भेजना, लडकियोंको लिखत पठत सींवना गुंथणा, कसीदा, चम्पा, अलमास, गोखरू वगैरह औरतोंकी चोसठकला, जैसें श्री ऋषभ आदीश्वरने अपनी लडकियें, ब्राह्मी सुन्दरीकों सिखलाई, उसमेंकी बणे जहांतक सिखलाणा, क्योंके स्त्रियोंकों जगह २ पुरुषोंकी अर्द्धांगा फरमाई है, और सच है भी ऐसा, मनुष्य धन कमाणा इतनेही मात्रका मजूर है लेकिन

घर धणियाणी स्त्रीही कहलाती है, अगर वह अणपढ कलाहीण होगी तो, पुरुषका आधा अङ्ग बेकाम होजाता है, जैसैं पक्षाघात (लकवा) में होता है, ये भी एक जन्मभरका रोगही लगा समझा जाता है (दोहा) पुत्र मूर्ख चपलाति या, पुत्री विधवा जात, धनहीना शठ मित्रतें विना अग्नि जर जात, १ ये पांच योग जब बण आते हैं, तबबिना अंगारके मनुष्य जल जाता है, जिन स्वार्थ तत्परोंने ऐसै २ वहम हिन्दुस्थानमें डाल रखे हैं कि, लड़कियोंको हरगिज नहीं पढणा, वह व्यभिचारिणी वा विधवा हो जाती है उन धर्माध्यक्षोंने ये विचार करा के, जो घर धणियाणी ज्यादह पढी हुई होशियार होगी तो, हम गपोड पुराण सुनाकर धर्म राजके ईश्वरके, तथा नवग्रहोंके अङ्ग, या आडतिये, वणकर, माल उतारणेका, ढंगजमावेंगेतो, हरगिज नहीं ठगायगी, सच्च है इस अण पढ़ताके कारण घरमें किसीको बिमारी होती है तो, झाडा फूंका कराणे जोगी फक्कड काजी मुल्लोंके हाथ हजारोंका माल ठगवाती है, या किसी मनमानें भूत पलीतका बोलवाकर मूर्ख अणपढ कुमार्गी कुपात्रोंको भोजन वस्त्र रुपया वगैरह जो वह मांगे, सो देती है, लेकिन रोगकी परिक्षा कराकर, विद्वान वगैरह वैद्य डाक्टरोंसे, किसी तरहसें पेश नहीं आने देती जो कभी भाग्य योग, घरमेंका स्याणा आदमी किसी वैद्यकों लावेगा तो प्रथम तो उसकी कही बात पर अमल न होणे देगी, या रोगीकों मनमाने कुपथ्य खिलावेगी, और मनमें समझेगी, वैद्य तो पथ्य कराकर, मारही डालते हैं, जब अच्छी मनमानी चीजें खायगा तो, ताकत आकर झट आराम आ जायगा दवाइयोंसें क्या होणा है, या तो अङ्गमें, भैरू पितर, मांवडिया, देवियां नचायगी, ये सब काम अणपढ़ी स्त्रियोंके साथ, सम्बन्ध रखते हैं, वाजै २ अणपढ, स्त्री भक्त, मोह ग्रसित मनुष्य भी काठके उल्लु ऐसे २ होते हैं, विधवा होना पूर्व जन्मका संस्कार हैं, प्रथम तो लड़केकी आयुरेखा समझ वारोंसें मालुम कराणी ज्योतिषी पूरे विद्वानसें ग्रहाचार आयुरेखा निश्चय करा कर, पीछै लग्न करणा चाहिये, वरके तरफ खयाल नहीं करती, घरके तरफ खयाल करती हैं, गहना

ज्यादा डाले सो घर होना, कारण कोई पूछै तो, फरमाती हैं, जमाई मर जाय तो , मेरी बेटी क्या खायगी ऐसा मांगलिक शब्द सुनाती हैं, जो इल्मदार कला कौशल सीखी हुई कन्या होगी तो, ऐसे मोकेपर अपनी कारीगरीसें चारोंका पेट भरसक्ती है, अपनी तो विशायत ही क्या है, वाजे स्त्रियें इल्महीन पती मरे पीछै गुजरान चलाणे, पर पुरुषका आसरा लाचारीसें लेती है, लड़कपनेमें ब्याह करणेसे, जब पतीका वियोग होनेसे होश सम्हाले पीछै कुललांच्छित करना सूझता है, या, जब हमलरहजास्ताहैतो, विरादरीके कोपसें गिराती है, वाजै अपघात करती हैं, मुल्क छोड़ती हैं, सरकारसें सजा पाती है, जाति वहिस्कृत हो जाती है, इस वास्ते शूद्रसंज्ञाके लोकोंमें, पुनर्विवाहकी रस्म जारी है, ऐसे २ बाबतोंकों देख गवर्मेन्ट पुनर्विवाहकों पूरा अमलमें लाया चाहती है, क्योंके प्रजा बृद्धि और पंचेन्द्री जीवोंकी हिंसाका बचाव, और स्वामी दयानन्दजी भी यही तूती बजागये, समाजी लोक बजाते फिरते हैं जैन निग्रन्थका हुक्म है, तपस्या करके इन्द्रियोंको दमन कर, धर्म तत्परता होणा विधवाओंने, या दुनियातार्क, सो प्रायः जैन कोमकी स्त्रिये बेलातेला अठाई, पक्ष, मासादिकोंकी, तपस्या करती हैं, कई रोज पीछै हाड मांस सुकाकर मृत्यूको प्राप्त होती है, ऐसा व्यवहार करणे वालियोंके लिए, ये शिक्षा, निग्रन्थ प्रवचनकी, बहुत लायक तारीफके है, लेकिन सबोंका दिल, और बदन, और आदत, एकसा होता नहीं, उन्होंके लिए, अपनी २ कोमके पंचोंने, सुलभ निर्वाह मुजब कायदेके प्रबन्ध, सोचनेकी जरूरी है, राजपूतोंमें पड़देका रिवाज शील व्रत कायम रखणेकों ही जारी किया गया है, यह जबराईसे शील व्रतका, कायदा रखणा है, सच्च है जो स्त्री स्वेच्छा चारिणीयां होकर, इधर उधर भटकेगी, जरूर लांच्छित हो जायगी, पुरुषोंका संग, दुराचारी स्त्रियोंका सहवास, मनुष्योंकी प्रार्थना और धनका लालच, एकान्त पाकर भी, जो अपना व्रत कायम रखती हैं वही सती जगतमें धन्य है, स्त्रियोंका स्वभाव है, जब रूपवन्त युवानको देखे तब, मदन वांणसें मदको अधोभागमें छोड़ देती है भगवान महावीर भगवती सूत्रमें फरमा गये हैं जो स्त्री मनमें कुशीलकी

बाञ्छा रखती है, और लाजसें, या डरसें कायासें, दुराचार नहीं करती, वह मरके वैमानकवासी पहले दूजे देव लोकमें, ५५ पल्य (असंक्षा) वर्षोंकी ऊमरवाली अपरि गृहीता, (वैश्या) देवांगना होकर, सुख भोगती हैं, इतना पुन्य मन विगर शील पालनेका है; पंछी आकाशमें उड़ते हैं मनुष्योंमें भी कुदरत है, उड़कर चलकर, ऐसा काम कर सक्ता है, विद्याधर, रेल, वाइस कल मोटरमें बैठै ऐसी चाल प्रत्यक्ष चल रहे हैं, पहाड़को भी मनुष्य उठा सक्ता है, यानें नवोंई नारायण, क्रोडमणकी शिला उठाई हजारों पहाड़ अंग्रेजोंने फोड़ डाले, सांपकों सिंहको आदमी पकड़ सक्ता है, दरियावमें प्रवेश कर रत्न निकाल सक्ता है, अग्निमें कूद जाता है, तरवारोंके प्रहार सह सक्ता है, ऐसे कठिन काम मनुष्य करते हैं, लेकिन हाय जुल्म इस अनङ्ग काम देवको नहीं जीत सकते हैं, अठयासी हजार ऋषी ब्राह्मण बडे २ तपेश्वरी पुराणोंमें लिखे हो गये हैं, तपस्या करते २ स्त्रियोंके दास बन गये हैं, ब्रह्मा विष्णु महादेव स्त्रियोंके नचाये नाचे, इसें वास्ते काम देव जीतने वाला है वही परमेश्वर है, वीर्य पात नहीं करे तब, विषय कई किस्मके है, हस्त, पशु पंडग, स्त्री, इन सबोंको छोडणे वालेकों, भगवान वीर फरमा गये हे गौतम, ब्रह्म व्रत धारी, मेरे अर्द्ध सिंहासण बैठणेवाला है, यानें परमेश्वर है, इस वास्ते पड़देकी रीत अच्छी है, मनोमती फिरणा वाजिब नहीं, लेकिन एक २ तरह पड़दा कई २ मुल्कोंमें बडी २ कोमोंमें जारी है उसमें कहार पहाड़िये चाकर वगैरह जा सकते हैं, क्या उत्तम कोमके आदमियोंके लिए पड़दा है वह क्या नाजर है, पड़दा नाम राजपूतों काही सच्चा है, बाकी तो गुड़ खाना गुलगुलेका परहेज करे जैसा है, हर तरह पतिव्रता धर्म रखणा, श्रेष्ठ है, दिलमें पड़दा तो होणा दुरस्त है, सो भी मन्दिर धर्मशालामें नहीं होणा, यह रिवाज गुजरातका, अच्छा मालूम देता है, धन लेकर अपणी लड़कियोंको, साठ २ वर्षके बुढ्ढोंके संग ब्याहे जाती है, यह चाल उत्तम कोम वालोंके लिए तदन बुरा है साठ वर्ष बाद बुढ्ढेको हरगिज ब्याह नहीं करणा चाहिये, वेटीको बेच रुपये लेनेसे बरकत कभी नहीं होती अगर पुत्र नहीं होय मातापिताके पास धन नहीं होय अशक्त होय

बेटी धन वानके घर ब्याही होय, मावापोंका, खरच चलाणा इन्साफ है, वेटा जैसी बेटी, लेकिन यह मर्यादा आपतकालकी है, किसी कविने कहा है कि (आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति) व्याहोंमें ज्यादह खरच करणा जमाईके धनसें दुरस्त नहीं, कच्छ देश मारवाड़ देशके गामोंमें थोड़ेधन वाले, कंवारे रह जाते हैं, कारण इसका यही है कि, रीत नहीं सकते हैं, रुपया दस हजार होय तो पांच छोकरीके माबाप भाईकों, पांचका दागीना ऐसा जुल्म गार रिवाज यातो न्यायी राजा वन्द कर सक्ता है, या विरादरीमे इकलास होय तो वन्द कर सक्ते हैं, बहुत जोगियेंाकी संगत भी इकेली स्त्रियोंकों नहीं करणा, सतीयोंके चरित्र सुनना या पढणा

अर्हन्नीति मुजब हक्कदारी कानून

खयाल रक्खो जो सख्स अन्तकाल भये उसके मालमिल्कियत पर किसका हक्क है और पेस्तर किसका दोयम दर्जे है बाद फिर किस २ को पहुंचता है।

दाय भाग कानून अर्हन्नीति

श्लोक) पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः सपिंडश्च दुहितृजः बन्धुजो गोत्रजश्चैव स्वामी स्यादुत्तरोत्तरं १ तदभावेच ज्ञातीया, स्तदभावे महीभुजः, तद्धनं सफलं कार्यं, धर्ममार्गे प्रदायचः २

अर्थ) स्वामीके मरणे वाद उसके कुल जायदादकी मालकिन उसकी औरत है, वेटेका कोई हक्क नहीं कि, आप मालिक, वन सके, औरत पेस्तर आई थी, तिस पीछै लड़का हुआ, तो फेर उसहीका हक्क पेस्तर है, बाद औरतके दुसरे दरजे वेटा, मालिक है, जिसके औरत वेटा, दोनों नहीं है, उस मिल्कियतके मालिक, भतीजे, उनके नहोने पर, सात मी पीढीतकका भाई, मालिक हो सकता है, वह भी कोई नहीं होय तो, वेटीका वेटा (दोहिता) मालिक है, और वह भी नहीं होय तो, चौदह पीढीतकका-भाई मालिक है, वह भी नहीं होय तो, गोत्रके लोक मालिक है, गोत्र भी नहीं होय तो, उसकी जातिके लोक मालिक है, अगर जाति भी नहीं

होय तो, राजा उस धनकों, धर्मकांममें लगा सकता है, अगर खजानेमें डाले तो, गैर इन्साफ है। खाविन्दके मरणे वाद, उसकी औरतकों कुल अख्तियार है, सब जायदादकों, अपने अधिकारमें रक्खे, बेटेको अख्तियार नहीं के बिना माके हुक्म कुछ खरच करसके, चाहै जात पुत्र हो, चाहै गोदका, स्थावर, (थिराहणेवाली) जंगम (फिरणे दुरणेवाली) मिल्कियतका देणा या बेचणा किसीका हक्क नहीं सिवाय धणियाणीके, इसमें इतनी शर्त्त जरूर है कि उसकी चाल चलननाकिस नही मिल्कियतकी मालकिन सदाचारिणी हो सकती है, गैर चलण होणे पर बेटेको अख्तियार इन्साफी पंच तथा सरकारके इन्साफसें हो सक्ता है, क्योंके धनके लालचसें झूठा मी बलवा पुत्र उठादेवे वद चलण सबूत होनेसें बेटा मिल्कियतका मालिक होकर कपडारोटी वगैरह खरचा पंचोंके राह मुजब बांधणा माताके लिए इन्साफसे है गैर चलण हो तो भी, नेक चणल माता होय तो भी पुत्रके जायदाद पर कोई हक्क नहीं है हुक्म मातासें सब कांमकर सक्ता है,

अगर कोई शख्स विना शन्तान अपने मरणेके वक्त अपने घरका बन्दोबस्त करना चाहै तो इस तरह वसीहत नांमी लिख सक्ता है जो दत्त पुत्र अपनी औरतके हुक्मकी तामील करनेवाला हो, खाबिन्दके मरणे वाद अगर दत्तपुत्र वसीहत नामेवाला सख्स बदनियत हो जाय तो, स्त्रीकों अख्तियार है उस वसीहतनामेको खारिज करके, दुसरेके नांम पर वसीहतनांमा लिखा सक्ती है, धर्म कामके लिए या जाति व्यवहारके लिए खाविन्दकी मिलकियतकों रेण व्यय करणा स्त्रीकों अख्तियार है, माबापकों अपने जात पुत्र पर भी इतना अख्तियार है अगर हुक्मके वर खिलाफ चले, या धर्म भ्रष्ट हो जाय, याने कुल मर्यादा विपरीत खानपान करणे लगे तो घरसें निकाल देवै, इसी तरह गोद लियेको भी निकाल सक्ता है चाहै उसका व्याह भी कर दिया चाहै कुल अख्तियार दे दिया होय, मातापिताकी मौजूदगीमें जात पुत्रकों अख्तियार नहीं है जायदाद माबापकीकों रेण वाव्यय करसके अलग होके कमाया होय, उस पर उसका अख्तियार है रेण वा वेचणेका।

जिसकी औरत वदचलन होय तो, पतिकों अख्तियार है, अपने घरसें निकाल दे, वद चलन औरत, पती पर रोटी कपड़ेका दावा नहीं कर सक्ती है, कोई सख्सकी औरतनें पती मरे वाद लड़का गोद लिया, और वह कुंवारा ही मरगया तो, दूसरा वेटा फिर अपने नामपर गोद ले सक्ती है, मरे लड़केके नामपर नहीं ले सक्ती है सासूकी मौजूदगीमें मरे हुए बेटेकी वहूकों सुसरेके धनमें रोटी कपड़ेके सिवाय दुसरा कुछ भी अख्तियार नहीं है, वेटा गोद लेणा वगैरह सर्व काम सासूकी आज्ञा मुजब करणा चाहिये, सासूका अन्तकाल हुए वाद फिर बहूका अख्तियार चल सक्ता है, माता-पिताके मरे वाद बेटे अपने हिस्से अलग करणा चाहै तो, सबके हिस्से बराबर होणे चाहिये, पिताके जीते हिस्सा चाहै तो, मुताबिक मरजी पिताके होगा, पितानें जीतेकराव सियतनामा सही है मरे पीछै भी अगर कोई भाई कंवारा होय, और हिस्से करणेका मौका आ जाय तो, मुनासिब है, उसके व्याहका खर्चा अलग रखकर, वा व्याह करके, बाकी दौलतका हिस्सा बराबर वांट लेना, अगर बहिन कंवारी हो तो, सबी भाई मिलकर पिताके धनसें सबोंको चौथा हिस्सा दूर कर व्याह कर देणा, कोई भाई ऐसा होय कि, अपने बापका धन नहीं खरच कर, नौकरीसें या किसी इल्मसें, या फौजमें बहादुरी बताकर धन हांसिल करै, उस दौलतमें दुसरे भाइयोंका हक्क नहीं है, विवाहसें सुसरालसे, जो कुछ धन मिले या दोस्तसें इनाम पावै, उसमें भी भाइयोंका हक्क नहीं पहुंचता, अपने कुलका दबा हुआ धन, वापभाईन निकाल सके, उसको अपनी ताकतसें, बिना भाइयोंकी सहायताके, निकाल लावे तो उस धनमें किसी भाईका हिस्सा नहीं हो सक्ता.

विवाहके वख्त या पीछै जिस औरतकों, उसके मातापितानें गहने कपड़े गांम नगर जमीन जहांगीरी जो कुछ दिया हो, उसकों कोई पीछा नहीं ले सक्ता, वह सब औरतका है चाचा, बड़ी बहन भूआ, मासी, भाई, सुसरा, सासू, या उसके खाविन्दनें जो कुछ दिया हो वह सब औरतका

है खाविन्द उस हालतमें मांग सक्ता है दुकाल बड़ी मुसीबत पडी हो, वाकी नहीं ले सक्ता, यह सब कायदे जैनी आमलोकोंके लिए, अर्हन्नितिसें, लिखा गया है, ॥

(अथ सूतक निर्णय,)

जिसके घर मृत्यु होय उसके घर १२ दिनका सूतक, एक बापके दो बेटे अलग सूतकके घर खान पान नहीं करे तो उसके घर सूतक नहीं सूतकवाले घरमें ५० रहवासी अन्य जाती रहती होय तो वह सब सूतकवाले गिने जाते हैं चोक १ दरवाज्जा २ होय तो बारह दिन तक उस घरके लोक जिन मूर्तिकी पूजा नहीं कर सक्ते साधू तथा साधर्मी उस घरका खान पान फल सुपारी तक नहीं खाते २ मन्दिरमें दूर खड़े दर्शन कर सक्ते है मुखसें धर्म शास्त्र प्रगट नहीं बोले मुर्देको कांध देनेवाला २४ पहर सूतकी है, न पूजा करे, न किसी, खान पानकों चीजोंको छुवे, कपड़े धुलाणे मुर्देके संग जाणेवाला ८ पहरका सूतकी है, दास दासी अपने घरमें मर जाय तो ३ दिन उस घरका सूतक जिस रोज बालक जन्में उसी दिन मर जाय तो एक दिनका सूतक, जापेवाली स्त्रीकों ४० दिन सूतक जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने ही दिनका सूतक, आठ वर्ष तकके बालकके मरणेका ८ दिन तक सूतक, हाथी घोड़ा ऊंठ गऊ भैंस कुत्ता बिल्ली घरमें मर जाय तो जब तक उठावे नहीं उहां तक सूतक गिना जाता है, ।

(सर्व धर्मसार शिक्षा·)

मोह द्वेष अज्ञानता, तजे कर्म अरुनार । ऐसो शिवहारि ब्रह्मजिन, सबको करो जुहार । १ । सवैया) विद्यमान तीर्थंकरकों बन्दन जो पुन्य होत वैसोही पुन्यफल जिन मूर्ति वन्दनको । चारित्र व्रत पालवेको साधूकों फल कहा सो ही फल सूत्रोंमें प्रतिमा अभिनन्दनकों ॥ दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र आचारांग राय प्रश्नी तीनोंका पाठ एक हित सुख मोक्ष स्पन्दनको । ऐसी सूत्र आज्ञा देख शंका मत चित्त राखो जिन प्रतिमा पूजन फल पापके निकन्दनकों । २ साधू दर्शन पुन्य फल, तीरथ दुयमसाध थावर तीर्थ देर

फल, तुरत मुनिः फल लाध । ३ । अन्नपान घर वस्त्रसैं, शय्यासनकर भक्त, सेवा शोभौ वन्दना, नवविधि पुन्य प्रशक्त । ४ । पर अवगुण देखे नहीं, निज अवगुण मन त्याग । निज शोभा मुखनाक है, समकित धरवड भाग । ५ । परनिन्दा निज श्लाघता, कर्त्ता जगमें बहोत निज अव गुणको जानता, विरलेई नरहोत, ६ उत्तम नरका क्रोध क्षण मध्यम का दो पहर । अधम एक दिन रखत है, अधम नीच नित जहर, ७ । उत्तमसाधु पात्र है, अनुव्रत मध्यम पात्र, समकित दृष्टी जघन्य है, भक्ति करो शुभ गात्र ८ मिथ्यादृष्टि हजारतें, एक अनुव्रतीनीक, सहस अणुव्रतीतें अधिक, सर्व व्रती तहतीक, ९ सर्व व्रतीतें लखगुणा, तत्व विवेकी जांण, तात्विक सम कोई पात्र नहिं, यों भाखे जिन भांण, १० सत्य अहिंसा शीलव्रत, तजचोरी पुनलोभ, सर्व धर्मका सार यह, स्वर्ग मुक्ति जगशोभ ११ गुजरात देशमें औदिच्य ब्राम्हनोकों हेमाचार्य उपदेशसें जैनधर्म धारण कराया, उन्होंको गुजरातमें भोजक कहते हैं, (मारवाड़ी जिन गुण गाणेसें गंद्रप कहते हैं) इन्होंके घर कुल तीनसौ है बहुत जगह इन्होंके सगे सोदरे विष्णुमती जोत्रिगाले वजते हैं, वो ९।९० जिन पद सीखके मारवाड़ादिक क्षेत्रमें गंद्रपोंके नांमसे नाटकादिक कर मांग खाते हैं, असली गंद्रप भोजक ओस वंश तथा श्रावकों विगर हाथ नहीं मांडते, वो भोजक जिन मन्दिरके पुजारे गुजरातमें हैं, गंद्रप त्रिकालोंकी परिक्षा, जैन कान्फरेंस धारेगी तब होगी, न मालूम कौन तो जैन धर्मी है, और कौन वैष्णव हैं, परदेशवालोंकों क्या खबर होती है । लेकिन् नवकार पूछना ।

मारवाड़के भोजक शाक्त निर्णय गोत्र १६ ॥

ऋषिनाम	नख.	गोत्र.	वेद.	प्रवर.	शाखा.	क्षेत्र.	वास.	माता.	भैरू.	गणेश.
१ माथुर	मथुरिया	कश्यप	ऋग्	त्रि	कोथमी	जगन्नाथ	मथुरा	सच्चाय	रुरू	एकदंत
२ भारत	भारताणी	भारद्वाज	,,	त्रि	,,	,,	शेरगढ	भ्रामरी	स्वर्णाकर्षण	गजानंद
३ मालेव	आसीवाण	शौनक	,,	त्रि	,,	,,	आमकगढ	यक्षणी	समशनिश्चर	गणेश
४ हरिस्मति	हरिमोता	हरितस	,,	त्रि	,,	,,	मांचल	महालक्ष्मी	रक्तपान	सुखोचित
५ योगहट	हटला	कौत्सव	यजुः	त्रि	माध्वनी	द्वारिका	हथनापुर	पध्यायी	शल	गणधरु
६ बलभद्र	वलिअद्	सांडिल्य	,,	त्रि	,,	,,	कोटडा	पिपल्याद्	क्रोध	कपिल
७ छैत्रऊ	छापरवाल	गौतम	,,	त्रि	,,	,,	छापरलाडणूं	सच्चाय	उनमत्त	लम्बोदर
८ केशव	कूबेरा	गौतम	,,	त्रि	,,	,,	करमरी	चामूंडा	चंड	गजकर्ण
९ ऋद्धि	रल्ल	उपमंथ	साम	पंच	कोथमी	वद्रिका	रंगपुर	खीमाज	आनंद	गणधीश
१० देवव्रत	देबेरा	कुंडलस	,,	पंच	,,	,,	देरावर	सच्चाय	भीषण	विघ्ननाश
११ शोम	शांवलेरा	चंद्रास	,,	पंच	,,	,,	साजनपुर	,,	कपाल	धूम्रकेतु
१२ मूर्द्धना	मुंधवाडा	वत्सगोत्र	,,	पंच	,,	,,	ओसिया	मुंढार	असितांग	सुमुख
१३ जगदीशा	जांगला	काश्यप	अथर्वण	पंच	असतीनहन	स्वेतपुर	अडगपुर	ब्राह्मणी	भूतेश्वर	सुपनेश्वर
१४ मांडव	मेडतवाल	पारासर	,,	पंच	,,	,,	मेडता	पुंडरीक	त्रिपुर	वक्रतुंड
१५ भाल	भीनमाल	भारद्वाज	,,	पंच	,,	,,	भीनमाल	भीमा	शहर	भालचंद्र
१६ कटि	कटारूया	कपींजल	,,	पंच	,,	,,	कोडपुर	कालिका	वटुक	नीलवर्ण
॥ अबोटी	ये सब १६ ॥ गोत्रवाले जैनविश्नव रुद्रका मंदिर पूजते हैं इन्होंमें कोइ जैनधर्म मानता है									

(दोहा) खण्ड खंडेलामें मिली, साढी बारह जात, । खण्डप्रस्थ नृपकी समय, जी म्यां दालरु भात । १ । वेटी अपनी जातमें, रोटी सामल होय, कच्ची पक्की दूधकी, भिन्न भाव नहीं कोय । २ । श्रीमाल भीनमालसें १ ओसवाल ओसियांसे २ मेड़तवाल मेड़तासें ३ जायल वाल जायलसें ४ वघेरवाल बघेरासें ५ पल्लीवाल पालीसें ६ खण्डेलवाल खंडेलासें ७ डीडू महेश्वरी डीड वाणेसें ८ पौकरा पौकरजीसें ९ टींटोड़ा टींटोड गढ़सें, १० कठड़ा खाटूसें, ११ राजपुरा राजपुरसें, १२ आधीजात बीजा बर्गी ।

(मध्य देश ८४ वणिक् जाति ।)

गौढ़वाड़ देश पारेवा पद्मावती नगरमें वस्तुपाल तेजपाल जितनें दया धर्मी वणिक् जाती थी उन सबोंको मुल्क २ में खरच भेज इकट्ठे किये बड़ी भक्तिसें उतारा दिया भोजन पंक्ति जीमने लगी उस वक्त एक बुड्ढी पौरवालकी विधवा स्त्रीनें भर पंचोमें आकर कहा अहो धर्म भाइयों किसके घर जीमते होये वस्तुपाल तेजपालका नाना कौन है ये भी कुछ खबर है खबर करी तो मालुम हुआ बाप पोरवाल माता वाल विधवा दुसरे वैश्य कुलकी सबूत हुई तब जीम लिये सो १० । नहीं जीमे सो २० ये झगड़ा बहुत जगह २ फैल गया तब बस्तुपाल तेजपालने असंक्ष द्रव्य खर्च २ अपने २ पक्ष मन्तव्य गुरू आदि सबही अलग स्थापन करा उहां आये जिन्होंके नांम ।

श्रीमाल २ श्रीश्रीमाल ३ श्रीखण्ड ४ श्रीगुरू ५ श्रीगौड़ ६ अगरवाल ७ अजमेरा ८ अजौधिया ९ अड़ालिया १० अवकथवाल ११ औसवाल १२ कठाडा १३ कठनेरा १४ ककस्थन १५ कपौला १६ कांकरिया १७ खरवा १८ खड़ायता १९ खेमवाल २० खंडेलवाल २१ गंगराड़ा २२ गोहिलवाल २३ गौलवाल २४ गौगवार २५ गींदोडिया २६ चकौड २७ चतुरथ २८ चीतोडा २९ चौरंडिया ३० जायलवाल ३१ जालोरा ३२ जैसवाल ३३ जम्बूसरा ३४ टींटौडा ३५ टंटोरिया ३६ ढूंसर ३७ दसौरा ३८ धंवलकौष्टी ३९ धाकड ४० नारनगरेसा ४१ नागर ४२ नेमा ४३ नरसिंह पुरा ४४ नबांभरा ४५ नागिन्द्रा ४६ नाथचल्ला ४७ नाछेला ४८ नौटिया ४९ पल्लीवाल ५० पवार ५१ पंचम ५२ पौकरा ५३ पौरवाल

५४ पौसरा ५५ बघेरवाल ५६ बदनौरा ५७ बरमाका ५८ बिदियादा ५९ बौगार ६० भवनगे ६१ भूंगडवार ६२ महेश्वरी ६३ मेडतवाल ६४ माथुरिया ६५ मौडलिया ६७ राजपुरा ६८ राजिया ६९ लवेचू ७० लाड ७१ हरसोरा ७२ हूंबड ७३ हलद ७४ हाकरिया ७५ सांभरा ७६ सडौइया ७७ सरेडवाल ७८ सौरठवाल ७९ सेतवाल ८० सौहित-वाल ८१ सुरंद्रा ८२ सौनइया ८३ सौरंडिया ८४ ।.

इसतरह दक्षिणके ८४ जाती तथा गुजरातके ८४ जातिके वणिकोंमें कोई नाम इसमेंके नहीं दूसरे हैं ग्रंथ बढणेके भयसें यहां दरज निरुपयोगी जांणके नहीं किया है ये वणिक् जाति दयाधर्म पालते हैं इससें प्रगट प्रमाणसें सिद्ध है प्रथम सबोंका धर्म जैन था राजपूतोंमेंसें जैना चार्योंनेही प्रतिबोध देकर व्यापारी कौम बणाई है जमानेके फेरफारसें अन्य २ धर्म कोई वैश्य मानने लग गये हैं मगर मांस मदिराका परित्यागपणा जो इन जातियोंमें है वह जैन धर्मकी छाप है जो धर्म जैन पालते हैं उन्होंको लौकिकवाले अभी महाजन नांमसे पहचाणते हैं जिन्होंने जैन धर्म छोड़ दिया है वो वैश्य या वणिये वजते हैं वीसे दशे पांचे अढ़ाइये पूण तथा पचीसे इस किस्म इन्होंकी शाखायें कारण योगसें फंटती चली गई है दुनि-यांमें सबसें बडे राजन्य वंसी लेकिन् धर्म मूर्त्ति दीनहीन षट् दर्शनादिक सर्व जीवोंके प्रतिपाल गुणवन्त गुणीकी कदर करणेवाले महाजन, वैश्य, वणिक्, परमेश्वरके भक्त जयवन्त रहो ये जाति बड़ी उत्तम दरजेकी सत्य धर्म पर चिरंजीवी होकर वर्त्तो श्रीरस्तुः कल्याण मस्तुः ॥ आपका शुभेच्छक जैनधर्मी पंडित । उपाध्याय रामलालगणिः ॥

(श्रीमद् बृहद्गच्छ खरतर पट्टावली)

१ भगवन्त श्रीवर्द्धमानस्वामी स्वयं बुद्ध केवली २४ में तीर्थंकर ।
२ श्रीसुधर्मा स्वामी गणधर ५ में केवली सौधर्म गच्छ प्रगट ।
३ श्रीजम्बूस्वामी चरम केवली यहांसें जिन कल्पादि १० वस्तु विच्छेद हुई ।
४ श्रीप्रभवस्वामी श्रुत केवली १४ पूर्व धर
५ श्रीशय्यंभव सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर

६ श्रीयशोभद्रसूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर
७ श्रीसंभूतिविजय सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर
८ श्रीभद्रवाहुसूरिः अनेक सूत्र निर्युक्ती निमित्त ग्रन्थ रचे १४ पूर्वधर श्रुतकेवली कल्प सूत्रमें अशाढ़ चौमासेसें ५० दिनसें संवत्सरी पर्व करणा फरमाया जैन अभि वर्द्धन संवत्सरमें पोष असाढ़ सिवाय दुसरे महीनें बढ़ते नहीं इसवास्ते संवत्सरी बाद ७० दिनसें काती चौमासा लगता हैं समवायांग सूत्र और कल्प सूत्रका पाठ संमिलित है भद्र बाहुस्वामीनें कल्प सूत्रमें महावीरके ६ कल्याणक कहे। (पंच हत्थुत्तरे होत्था साइणा परि निव्वुए) पांच कल्याणक उत्तरा फाल्गुणीमें स्वाती नक्षत्रमें निर्वाण पाये
९ श्रीस्थूल भद्रसूरिः १४ पूर्वधर श्रुतकेवली ८४ चोवीसी नाम चलेगा
१० श्रीआर्य महागिरी सूरिः दस पूर्वधर श्रुतकेवली
११ श्रीसुहस्तिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१२ श्रीसुस्थितिसूरिः इन्होंने कोटि सूरि मंत्रका जाप करा कोटिक गच्छकी थापना हुई १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१३ श्रीइन्द्र दिन्नसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१४ श्रीदिन्न सूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१५ श्रीसिंह गिरिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१६ श्रीवज्रस्वामीसूरिः १० पूर्वधर चरम श्रुतकेवली वज्रशाखा नाम हुआ
१७ श्रीवज्रशेनसूरिः भगवानके ६०९ वर्षपर दिगाम्बर सम्प्रदाय निकली
१८ श्रीचन्द्रसूरिः इन्होंके नांमसेंकोटिक गच्छ वज्रशाखा चन्द्रकुल प्रासिद्ध हुआ
१९ श्री समंत भद्रसूरिः। २० श्रीवृद्धदेवसूरिः। २१ श्री प्रद्योतनसूरिः
२२ श्री मानदेवसूरिः लघुशान्तिस्तोत्रके कर्त्ता
२३ श्रीमानतुङ्गसूरिः वृद्ध भोजराजा सन्मुख भक्तामरस्तोत्र कर्त्ता तथा भयहर स्तोत्र रचकर नागराजाकों वसकरा। २४ श्री वीरसूरिः।
२५ *श्री जयदेवसूरिः*
२६ श्री देवानन्दसूरिः भगवानके ८४९ पीछै वल्लभी नगरी टूटी।

२७ श्री विक्रमसूरिः । २८ श्री नरसिंहसूरिः । २९ श्री समुद्रसूरिः ।

३० श्री मांनदेवसूरिः इन्होंके समय भगवानसें ८८५ हरिभद्रसूरिः स्वर्ग गये और पूर्वोकी विद्या विच्छेद हुई

३१ श्री विवुध प्रभसूरिः इन्होके समय सूत्रोंके भाष्य कर्त्ता जिनभद्रगणिः आचार्य हुए । ३२ श्री जयानन्द सूरिः । ३३ श्री रविप्रभसूरिः ।

३४ श्री यशोदेवसूरिः । ३५ श्री विमल चन्द्रसूरिः ।

३६ श्री देवसूरित्यागी वैरागी क्रिया उद्धारीसें सुविहित पक्ष हुआ ।

३७ श्री नेमिचन्द्रसूरिः प्रवचन सारोद्धार टीका ग्रंथ बणाया, बरदिया वगैरह बहुत गोत्र स्थापन किए

३८ श्री उद्योतनसूरिः इन्होंके निजाशिष्य चैत्य वास छोडके आए हुए वर्द्धमान सूरिः ८३ दूसरे २ थविरोंके शिष्य जिन्होंको सिद्ध वडनीचे शुभ मुहूर्त्तमें सूरिः मंत्रका वास चूर्ण दिया वह ८३ अलग २ गच्छों की स्थापना करी इसवास्ते खरतर गच्छमें अभीभी ८४ नंदी प्रचलित है ८४ गच्छ थापन हुआ

३९ श्री वर्द्धमानसूरिः १३ बादशाह आबूपर अम्बादेवीकों, वसकर बुलाकर विमल मंत्री पचायणेचा पौरवाल गोत्रीकों, प्रतिबोध देकर आबू तीर्थपर १८ करोड तेपन लाख स्वर्ण द्रव्य लगाकर, मन्दिर विमल वसीकी प्रतिष्ठा करी, १३ बादशाहोंने गुरूको सन्मान दिया, हजारों सचिंती वगैरह महाजन बणाये, देवताको भेजके सीमंधर जिनसे सूरिः मंत्र शुद्ध कराया

४० श्री जिनेश्वरसूरिः अणहिल पुरपाटणमें चैत्यवासी शिथलाचारी उपकेश गच्छियोंसें राजाने सभा कराई राजा दुर्लभनें शास्त्र मर्यादसे, यथार्थ ज्ञान क्रिया देख, राजाने कहा तुमे खराछो शिथलाचारी चैत्य द्रव्य भक्षकोंको कहा तुमें कुंवला छो, यहांसें खरतर विरुद सं. १०८० में मिला, कोटिक गच्छ वज्र शाखा चन्द्रकुल खरतर विरुद प्रसिद्ध हुआ, सुविहित पक्ष, ।

४१ श्री जिन चन्द्र सूरिः इन्होंने एक गरीबके अङ्गमें चिन्ह देखकर कहा, तूं शाहनशाह साम्राट होगा, आखिरकों मोजदीन दिल्लीका

बादशाह हुआ, गुरूकों बडे उत्सवसें, धनपाल शिवधर्मी महतियान श्रीमालके घर विराजमान किया, उहां त्याग वैराग्य अतिशय विद्या उपदेशसें, श्रीमाल सर्व जैनधर्म धारण करा, महितियाण गोत्रियोंको श्री श्रीमालकी पदवी बादशाहने प्रदान की ऐसा भी एक जगह लिखा-देखा है दिल्ली लखनेऊ आगरा भिंयाणी झुझणूं जैपुर वगैरह सर्व श्रीमाल १३५ गोत्रके गुरूके श्रावक हो गये प्रथम श्रीमाल जैन थे, वह शैव शङ्कराचार्यके हमलेमें हो गये थे, सबोंको पीछा जैन श्रावक करा जिन्होंकी वस्ती राजपूताना दिल्लीके अतराफ सबोंका गच्छ खरतर है, गुरूनें संवेग रंग शाला ग्रंथ रचा, ।

४२ श्री अभय देव सूरिः बारह वर्ष आंबिल तप करणेसें, गलत कुष्ठ उत्पन्न हुआ, तब शासन देवीनें प्रगट हो, नव कोकड़ी सूतकी सुल-झाणेका कहा, और कहा हे गुरू अणसण अभी नहीं करणा सेढ़ी नदीके तटपर पार्श्व जिनेन्द्रकी स्तुति करणा, सर्व अच्छा होगा तब गुरू राजा दिकसंघ युक्त जयति हुअण वत्तीसी बनाकर स्तुति करी थंभणा पार्श्व नाथकी मूर्त्ति धरणीतलसे प्रगट हुई, स्नान जल छांटते सोवन वर्ण काया हुई, इस वक्त जिन वल्लभ सूरिः चैत्यवासी, चित्रावाल गच्छकी विरुद्ध आचरणा देख, श्रीअभयदेव सूरिःके शिष्य हुए योग्य जांण, गुरूनें वाचनाचार्यका पद दिया; आप नव अंगोकी टीका शासन देवीके आग्रहसे, गन्ध हस्ती कृत टीका, दुष्ट लोकोंनें गलादी, जलादी, शंकराचार्यनें, तब जिनेन्द्र व्याकर्ण पूर्व कृत गुरुमुख, अर्थ धारणासे, टीका वृत्ति रची, १२ वर्ष विचरते रहै, अपने हाथसें सूरि मंत्र देके वल्लभ सूरिःको आपने अनशण करा, तब गच्छमें केइयक साधु आचार्य पद वल्लभ सूरिःके क्रिया कठिनतासें, डरते नहीं देणा धारा, तब गुरूनें चामुण्डासच्चाय देवीको बस करके, सौ ग्रंथ संघ पट्टा, पिंड निर्युक्ती स्तोत्रादि रचकर, ९२ गोत्र, राज-पूत महेश्वरी, वावड़ी, हुबडोंकों प्रतिबोध देकर महाजन किये तब सर्व संघ और बड़े २ आचार्योंने मिल कर आचार्य पद दिया, चामुं-

ण्डानें कहा आज पीछै आपके शन्तानको जिन संज्ञा होणी ९ जिन ठाणांगमें कहे प्रभावीक पुरुषकों जिन संज्ञा है सर्व २९ वर्ष वाचनाचार्य पदमें रहै छ महिने आचार्य पद पाला, द्वेष बुद्धिसें एक ग्रंथमें अपनी कल्पित पट्टावली लिखणे वालेनें मनमानी बात लिखी है जिनेश्वरसूरिः के पाटवल्लभ सूरिःको लिखा है और अपने ही हाथसे जैन कल्प वृक्षमें जिनेश्वर सूरिः चन्द्रसूरिः अभयदेवसूरिः के पट्टपर वल्लभ सूरिः कों लिखा है उस समय द्वेष नहीं जगा होगा बाद तो द्वेष बुद्धि प्रत्यक्ष दरसाई है कुछ तो पूर्वापर विचारणा था २ पाट दुसरे लेखमें उठाया जिनेश्वर सूरिः के ७० वर्ष वीतने बाद वल्लभसूरिः हुए हैं भगवतीकी टीका तो देखी होगी उसमें अभय देवसूरिः खुद लिखते हैं जिनेश्वर सूरिके चन्द्र सूरिः उन्होंकामें अभय देव सूरिः नेये वृत्ती रची तो जिनेश्वर सूरिःके पट्ट पर वल्लभ सूरिःकैसे हुए प्रमाणीक ग्रंथ वनाकर उसमें कल्पित पट्टावलीमें असमंजस लिखणान्यायांभोनिधि पदकों झलकाया, मालुम देता है, चर्चाका चांद उदय करणेवाला जो लिखता है सो सब जाहिरा मालुम दिया है, फिर लिखा है कुर्च्च पुरी गच्छवासी वल्लभसूरिः छकल्याणकवरिके प्ररूपणा करी, न तो जिन वल्लभ सूरिःका कुर्च्च पूरी गच्छ था न षट् कल्याणक् इन्होंनें प्ररूपणा करीछ कल्याणक प्ररूपणेवाले श्रुतकेवली भद्र वाहू स्वामी हैं, नहीं माननेवाले आपलोकहो, पहलेका गच्छ अगर लिखणेका प्रवाह आप मन्जूर करते हो तब तो मेघ विजयका लोंका गच्छ पीछै क्यों नहीं लिखा अगर फिर ऐसा है तो लिखणेसें कोई द्वेषापत्ती तो नहीं होगी पंजाबी ढूंढिया जीवण दासका शिष्य आत्मारामजीनें वुटेरायजीका शिष्य हो अहमदाबादमें सोरठ देश सत्रुंजय तीर्थकों अनार्य देशकी प्ररूपणा करी, इस बातको विचार कर प्रमाणीक लेख प्रमाणीक पुरुष होकर यथार्थ ही लिखणा जरूर था वल्लभ सूरिःनें तुह्मारी तरे विरुद्ध आचरणा छोड़ दी थी फेर ऐसा आक्षेप द्वेष बुद्धिसें क्यों करा।

४३ श्रीजिन वल्लभ सूरिः इन्होंके समय मधुकर खरतर गच्छ भेद। १।

४४ श्रीजिन दत्तसूरिःजीनें सवा क्रोड़ हींकारका जप करा ५२ वीर ६४ योगणी पंच नदी पांच पीरोंको बस किया १ लाख तीस हजार घर राजपूत महेश्वरी आदिकसें जैनधर्मी महाजन बणाये चित्तोड़ नगरके वज्र खम्भकी तथा उज्जैन नगरके वज्र खम्भकी साढा तीन कोटि सिद्ध विद्या निकाल कर जैन संघमें महाउपकार करावो पुस्तक अब जेसलमेरमें विद्यमान वन्द है विजलीगिरी उसकों पात्रके नीचे दाब कर विजलीसें बरदान लिया दादा श्रीजिन दत्तसूरिःजी ऐसा नाम जपणेवालेके घर नहीं गिरूंगी मरी गउकूंपर काय प्रवेशनि विद्यासें जिन मन्दिरके सामनेसे स्वतः उठादी, मरे हुए नबाबके पुत्रकों, भरु अच्छ नगरमें, परकाय प्रवेशनि विद्यासें, छ महिना जिला दिया संघकी आपदा मिटाई, पुत्र धन रोग अनेक वाच्छार्थियोंकी कामना पूर्ण कर, ओस वंश बधाया, रत्न प्रभ सूरिःनें ओसियां नगरमें १८ गोत्र रूप अश्व पति गोत्रका बीज वोया था, उसकों खरतर गच्छाचार्योंने साखा प्रशाखा पत्र फल फूलसें ओस वंश सुरतरुकों शक्तिरूप जल उपकार रूप छांहसे गह मह कर दिया, जिन्होंसें जैन दर्शन तथा अन्यमती भी निर्वाह करते हैं इन्होंके विद्यमांन समय १२०४ में लोद्रव पट्टणमें रुद्रपल्ली खरतर दुसरा गच्छ भेद हुआ जिससें खरतर गच्छके द्वेषी वे प्रमाण लिखते हैं १२०४ में खरतर हुए, ये दूसरी शाखा फटी ऐसे तो ११ शाखा निकल चुकी है द्वेष बुद्धिवाला तो सत्यकों भी असत्य कहैगा लेकिन बे प्रमाण लिखणेसें अन्यायी ठहरते हैं।

४५ मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिः इन्होंनें हजारों घर महाजन वणाये दिल्लीमें इन्होंकी रथी उठी नहीं तब कुतबुद्दीन बादशाहकी आज्ञासें सिरे बाजार दाग हुआ खोड़िया क्षैत्रपाल सेवित अनेकोंका मरणान्त कष्ट मिटाया मुसल्मीन भी जिन्होंको दादा पीर कहते थे इन्होंके समय पूर्ण तल्ल गच्छी देवचन्द्रसूरिःका शिष्य हेम चन्द्रसूरिः जिन्होंने शब्दानुशासन प्रकट करा कुमारपाल राजाकों जैनी करा छीपा भाव सालोंको जैनी

करा औदीच्य ब्राम्हणोंको उपदेश देकर जैनी करा जो गुजरातमें भोजक मारवाडमें (गंद्रपके नांमसे पहचाणे जाते हैं) धर्म ३०० घर जैन पालते हैं जैनीसिवाय दांन नहीं लेते हैं इन्होंके समय १२१३ में आंचल १२२६ में सार्ध पुनमिया १२९० आगमिया हुए

४६ श्री जिन पति सूरिःजी इन्होंके समय चित्रावाल गच्छी चैत्यवासी जग चन्द्रसूरिःनें वस्तुपाल तेजपालकी भक्तीसें क्रिया उद्धार करा तप करणेसें चित्तोड़के राणेजीनें १२८९ में तपा विरुद दिया वस्तुपाल तेजपाल लहुड़ीन्यात ओसवाल पोरवाल श्रीमालियोंमें करनेवाला, मायाका अखूट भण्डारीने इन्होंका नन्दिमहोत्सव करा जिसनें जगत् चन्द्रसूरिःकी सामाचारी कबूल करी, उस गरीबकों श्रीमन्त वणाते गया,जगत् चन्द्रसूरिःने श्रावककों पोसह व्रत पच्चखाण करे पीछै पोसहमें भोजन एकाशन करणेकी प्ररूपणा करी और आंविलमें ६ विगय टालके सींधा निमक काली मिर्च पोतीके वेसणके चिलड़े वगैरह अनेक द्रव्य खाणेकी प्ररूपणा करी सो अभी गुजरातमें प्रथा चलती है बड गच्छके आचार्य जब अपने समुदायकों आज्ञा कारी नहीं देखा तब हनुमान गढ़ बीकानेरके इलाकेमें आय रहै पिछाड़ी फिर जती श्रावक मिलके आचार्य मुकरर किया उन्होंके पाटानुपाट विद्यमांन सं. विक्रम १९६६ कार्तिकमें मुम्बईमें बडगच्छके आचार्य हमसें मिले थे लेकिन तपागच्छके वस्तुपालतेजपालकी सहायतासें बड़गच्छ निर्बल होता गया जतीभी कइयक तपागच्छमें मिलगये श्रावक भी मिलते गये तथापि पट्टधर आचार्य वडगच्छ विद्यमान है ।

४७ श्री जिनेश्वर सूरिः इन्होंके समयमें १३३१ मे सिंहसूरिः सें लघुखरतर शाखा निकली ३ गच्छ भेद हुआ इनमें जिन प्रभसूरिः चमत्कारी हुए । ४८ श्री जिन प्रबोधसूरिः

४९ श्री जिनचन्द्रसूरिः दिल्लीके बादशाह चित्तोड़का राणा जेसलमेरकाराबल मंडोवरके राठौड़राव राजा ऐसे ४ राजा गुरूके भक्त हुए इस

आर्यावर्त्तमें जगह २ जीव दया और जैन धर्मकी उन्नती खरतरा चार्योंकी महिमा विस्तारपाई बादशाहनें कई २ बन्दोबस्तके फुरमाण लिखे तबसें राज्यगुरू खरतर राज गच्छ कहलाया अनेक प्रतिबादी-योंकों जीता तब बादशाहने भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरिः ऐसा खास रुक्केमें लिखा भट्टारक नाम हेम अमरादि कोशोंमें पूजनीक पुरुषोंका है अथवा अनेक भट्टोंकों न्यायसें हराणेवाले भट्टारक सर्व गच्छके लोक खरतर भट्टारक गच्छ कहने लगे।

९० श्री जिन कुशलसूरिः ९२ वीर ६४ योगनी पंचनदी पंचपीर बस करके संघका बहुत उपकार करा, ५० सहस्र श्रावककरे निर्धन श्रावककों धन अपुत्रियेकों पुत्र दिया, पाटण सहरमें गुरूव्याख्यान बांचते थे उस समय गूजर मलबोथरेकी जिहाज रतनाकरमें डूबने लगी उसनें गुरूकी स्तुति शुरू करी कैसें २ अवसरमें गुरू रखी लाज हमारी उस समय गुरू पक्षी रूप हो उड़कर गूजरमलकी जहाजकों किनारे लगा दर्शन दे पीछे आकर व्याख्यान करा तब संघनेयेस्वरूपदेख आश्चर्य किया, १ महिनेसें गूजरमलनें पाटणमें आकर संघसें सर्व वात कही इसतरह स्वर्ग पाये पीछै समय सुन्दर उपाध्यायकी तथा सुखसूरिः की डूबती हुई जहाजकों पार लगाई मुसल्मान लोकोंका बहुत उपकार कर दादा पीरकहलाये फाल्गुण वदी अमावस देरा उरमें धांमपाकर पूनमकों अपने भक्तोंको जगह २ दर्शन दिया फुरमाया भुवन पती निकायका आयुष्य मेरा पहली बंध गया था सम्यक्तवाद गुरूमहाराजसें पाया जो याद करोगे तो होणेवाले कामकों शीघ्र कर दूंगा बडे दादा साहिब सौधर्म देवलोक टक्कल विमान ४ पल्यकी स्थितिपर विमाना-धिपति हुए हैं उन धर्मदाता गुरूका ध्यान पूजन भक्ती कारककोंमें सहाय करूंगा भक्तोंके आधीन रहूंगा अन्तर्ध्यान हुए तबसें लोक नगर २ में चरण पूजने लगे।

९१ श्री पद्मसूरिः कुशलसूरिः के शांतानी उपाध्यायश्री क्षेमकीर्तिगणीनें सबि-याण गढमें राजपूतोंकी जांन प्रतिबोध ५०० कों दिक्षादी कुशलसूरिः

प्रगट हो ५०० सेका उप गरण राजासें दिलाया क्षेम धाड़ शाखा प्रगट हुई ये प्रथम भट्टारक गणशाखा १ तीन शाखा और एवं ४ है।

५२ श्री जिनलब्धिसूरिः। ५३ श्री जिनचन्द्रसूरिः।

५४ श्री जिनउदयसूरिः यावज्जीव एकान्तरोपवास नव कल्पी विहार एक लाहारी, सं. १४२२ में जेसलमेरमें वेगड़ खरतर गच्छ भेद ४ था।

५५ श्री जिनराज सूरिजी न्याय मार्तण्ड कहलाये।

५६ श्री जिनभद्र सूरिः इन्होंने दोनों भैरवों की आराधना करी काला भैरूंकों गच्छाधिष्टायक बणाया गद्दी धरकों मंडोवर जाणा, आराधे तब साहाय कारी रहूंगा, बलि देणा अष्ट द्रव्यकी ऐसा वचन लिया बोहरा महाजन करे १४७४ में पीपलिया खरतर ५ मागच्छ भेद भट्टारक गच्छमें इन्होंसें भद्रसूरिः शाखा चली।

५७ श्री जिनचंद्र सूरिः इन महाराजाके देव लोक हुए पीछै १५३१ में तपागच्छी दस्सा श्री माली वणियां लिखारी लूंकेनें जिन प्रतिमा निषेध रूपमत अहमदाबादमें चलाया उसमें ३ गुजराती २ नागोरी १ उत्तराधी इन्होंमें ५ सम्प्रदाई विद्वान होकर जिन प्रतिमा मन्तव्य करली।

५८ श्री जिनहन्स सूरिः इन्होंने गहलड़ा गोत्र थापा बहुत महाजन बनाये आचारांग सूत्रपर दीपिका बनाई देव सानिद्धसें ५०० से कैदी बादशाहसें छुड़ाये मुल्कोंमे अमारी डूंड़ी पिटवाई इन्होंके समयमें १५६४ में आचार्य खरतर गच्छभेद ६ जो पाली नग्रमें है १५६२ कड़वा मती १५७० मेंलूंकेकामतत्याग बीजे वैंश्यने बीजा मत निकाल जिन प्रतिमामानी १५७२ में तपागच्छमें से पार्श्व चन्द्रजीनें ५ की संवत्सरी प्रमुख सम्प्रदाय निकाली।

६० श्री जिनमाणिक्य सूरिः इन्होंके समय हुमायू बादशाहके जुल्मसे (अत्याचारसें) त्यागियोंने अणसण किया कई लंगोट बद्ध महात्मा पोसा लिया होगये बाकी बहुत गच्छके जती घर बारी होगये तब लोक मति हीन कहणे लगे (मथेण) यथार्थ नाम घरधारी मथेणका, मिथुन होगा, स्त्रीपुरुषके सहवास जोडेको मिथुन संस्कृतमें कहते हैं

तब आचार्य शिथलाचार बहुत फैला देखकर जैसलमेरमें रहे वाद वछावत संग्राम सिंहने गच्छभावसें महाराजकों बीकानेर बुलाया तब कुशलसूरिःजीका दर्शन करणेकों संघके साथ देराउर जाते दिनकों जल नहीं मिला रातको जल मिला यावज्जीव चोविहार तब अणसण कर शिष्यको क्रिया उद्धार करणेकी आज्ञा दे देवता हुए, जेसलमेरमें श्रीजिनचंद्रसूरिःको दर्शन देकर सहायकारी हुए, कहा, भस्म ग्रह उतरा है उदयका वखत है जो विचारेगा सो सब काम होता रहैगा। श्री जिनचन्द्रसूरिः इन्होंने लाहोर नगरमें अकबर बादशाहको धर्मोपदेश देकर जैनश्रद्धा कराई अनेक दुःख प्रजाका दूर कराया जैन तीर्थ श्रावकोंकी रक्षा कराई पारसीके मोहरछाप फुरमाण बादशाहके करे हुए बीकानेर बडे उपासरेमें भेज दिये महात्यागी पंच महाव्रतधारी प्रतिमा निंदकोंको परास्त करते गुजरातमें लूंपकमती तपोंको प्रतिबोध देकर श्रावक बणाया गुरूनें बिचारा गुजरातमें मतांतरी बहुत होगये हैं उन जीवों-पर करुणा लाकर गुजरातमें विचरकर मत कदाग्रह तोड़ा जगह २ खरतर गच्छ दीपाया और मतान्तरियोंकों शुद्ध श्रद्धाकी पहचान कराई तपा गच्छी विजयदांन सूरिः के शिष्य धर्म सागरजीनें कुमति कुद्दाल कल्पित ग्रंथमें लिखा था कि अभय देवसूरिः नव अङ्गटीका कार खरतर गच्छमें नहीं हुए इसका निर्धार करणेको पाटणमें सब गच्छके प्रमाणीक आचार्य उपाध्याय वगैरहको एकट्ठे किये तब सबोंने धर्म सागरजीकों ८४ गच्छ बाहिर कराये बात गीतार्थ विजयदांनसूरिः मेडतामें सुनकर कुमति कुद्दाल ग्रंथकी जो प्रति मिली सो सब जल शरण करी और खरतर गच्छसें विरोध करना बंध करा इन्होंके पट्ट हीरविजयसूरिः थे उन्होंने तपा गच्छके संघमें सात हुक्म जाहिर करे परपक्षीको निन्नव नहीं कहणा, परपक्षी प्रतिष्ठित मन्दिर प्रतिमा मानवा योग, पर पक्षिनी धर्म करणी सर्व अनुमोद वा योग इस तरह ७ हैं सो लेख बड़े उपासरे बीकानेर ज्ञानभण्डारमें विद्यमांन है, इन दोनोंनें बड़ा संप रख्खा प्रभावीक हो गये इस बखत बालोतरेमें भाव हर्ष उपाध्यायनें

७ गच्छभेद किया भाव हर्ष नामसें, इन्होंने अपने हाथसें सिंहसूरिःकों आचार्य पदवी दी बादशाहने चमर छत्रादि राजचिन्ह संग कर दिये।

६२ श्रीजिनसिंहसूरिः सागर चन्द्रसूरिः १ कीर्ति रत्नसूरिः २ शाखा हुई

६३ श्रीजिनराजसूरिः इन्होंके समय १६८६ में मण्डलाचार्य सागरसूरिःसे आचार्य खरतर शाखा निकली ८ मां गच्छभेद गुरूमहाराजनें सूरिः मन्त्र देकर जिन रत्नसूरिःकों आचार्य पदमें स्थापन करा।

६४ श्रीजिन रत्न सूरिः इन्होंके समय सं. १७०० में रंग विजय गणिसें रंग विजय खरतर शाखा ९ मांगच्छ भेद इस गच्छमेंसें जिन हर्ष गणिके चेले श्रीसारनें श्रीसारखरतर शाखा निकाली ये १० मा गच्छान्तर हुआ।

६५ श्रीजिन चन्द्र सूरिः इन्होंके समय १७०९ में ढुंढकमत प्रकटा धर्म दास छींपा वगैरह २२ पुरुषोंने बंधा मत निकाला, हाजी फकीरकी दवासें मत चलाया। इन २२ मेंसे निकले वे वंदन करनेवालेको वेहाजी भाई कहा करते हैं

६६ श्रीजिन सुख सूरिः इन्होंकी गोगा बन्दरसें खंभात जाते दरियावमें जहाज फटी पाणीसें भरगई कुशल सूरिः का स्मरण किया दादा साहबने नई जहाज वणाके खंभात पहुंचाई वह जहाज अलोपकरी।

६७ श्रीजिन भक्ति सूरिः सादड़ी ग्राममें पर पक्षी तपोकों निरुत्तर, करा पूनामें सिवाजी पेशवाकी सभामें, वेदान्त मती ब्राम्हणोंको जीता।

६८ श्रीजिन लाभ सूरिः।

६९ श्रीजिन चन्द्र सूरिः इन्होंने लखनेऊमें प्रतिमा उत्थापक जो मत फैला था, उन्होंको परास्तकर राजा वच्छ राज नाहटेको चमत्कार दे, नवाबसे राजा वणवादिया,।

७० श्रीजिन हर्ष सूरिः इन्होंके पांच शिष्य निजथे छठा शिष्य नागोरके जती माणक चन्दजी का रूपबंत देखकर मांग कर लेलिया निज शिष्य सूरत रांमजी, जो मांगकर लेलिया उन्होंका नाम मनरूपजी था इन्होंके समय खरतर भट्टारक गच्छमें, १८०० जतियोंकी शंक्षा थी।

७१ श्रीजिन सौभाग्य सूरिः इन्होंके समयमें १८९२ में मंडोवरमें महेन्द्र सूरिः सें ११ मांगच्छ भेद हुआ सौभाग्य सूरिः यावज्जीव एक लठाणा प्पादल विहार साढे १२ हजार सूरिः मंत्रका हमेश जाप सचितके त्यागी कंवर पदेंमें हनुमन्त वीरका मंत्र साधा था सो सिद्ध हो गया था रामगढमें पोतेदारकी लड़कीके वचपणसें पथरी हो रही थी गुरूके पास लाया गुरूनें तीन चलू पाणी पिलाया उसी समय २) रुपये भरकी पथरी निकल पड़ी मुरासिदा बादमें प्रताप सिंह दूगड़ कों वृद्ध पणमें नव पद आम्नायदिया लक्ष्मीपती धनपति दो पुत्र धर्मोद्योतक हुए। बीकानेरमें महेश्वरी माणक चन्द वाघड़ीकों वृद्धपणे में पुत्र दिया राजा राठौड़कों अनेक चमत्कारसें बीकानेरमें सिरदार सिंहजीकों परम भक्त वना कर अनेक कष्ट आपदा जीवोंकी दूर की इत्यादि बहुत है ग्रंथ बढ़णेके भयसें नहीं लिखते हैं महाराजासिरदार सिंहजीने ४ गांम भेंट करणेकी बहुत विनती करी गुरूने कहा सन्यासियोंको भृष्ट करणेको जागीर होती है सो सर्वथा इन्कार किया ऐसे दीर्घ दृष्टि त्याग बुद्धिः परम उपकारी हुए।

७२ श्रीजिन हंससूरिः इन्होंके समय श्रीजिन महेन्द्र सूरिःके पटोधर श्रीजिन मुक्ति सूरि बडे शास्त्र वेत्ता चमत्कारी प्रकटे जेसलमेरसें फलोधी पधारते पोकरणके ठाकुरके कंवर हिरण मारणेको बन्दूक उठाई गुरूनें मना किया गुरूनें कहा छोड़ तो देखता हूं तीन वक्त कारतूस दिया बन्दूक काष्ठकी तरह हो गई यह चमत्कार देख चरणोंमें गिरपड़ा सहरमे पधराकर भक्तिकरी ऊंठ फेरता फतह सिंह चम्पावतकों फरमाया १ वर्षमें तेरे राज्ययोग होणा है वैसाही हुआ जैपुरनरेश सवाई रामसिंहजीके सामने कुल कांम कर्त्ता मुसाहिब हुआ गुरू जैपुर पधारे तब फतह सिंहने राजासें सर्व वृत्तान्त कहा राजा वोला मेरे मनकी बात कहैगें तो जरूर भक्ती करूंगा दोनों गुरूके पास आए गुरूनें कहा विलायतसें जो आज्ञा चाहते होसो एकही मुहूर्त्तसें सिद्ध काम होणेवाला है वस बैठे २ ही तार आगया वैसाही तब राजाने भक्तिसें

५) रुपये हमेशके गांम भेटकर जैपुर रहणेकी प्रतिज्ञा कराई ऐसै प्रभावीक खरतराचार्य विद्यमांन हमनें देखा है। खरतर साधु १। रिद्धिसागरजी २। श्रीसुगन चन्दजी बड़े प्रभावीक निकलै श्रीक्षमा कल्याण गणिःके पौत्र थे ऋद्धि सागरजी वलिबाकल प्रतिष्ठामें दश दिग्पालोंको देते नारेल उछालते गोटा ऊपर आकाशमें अलोप टोपसियां फकत नीचे गिरती दुसाले पर आरती कपूर सिलगाकै धर कर श्रावकोंसे जिन प्रतिमाकै सामने उतरवाते दुसालाके दाग नहीं लग सकता। मारवाड़में जिन मन्दिरकों बंध कर बिना पांनी बिना आदमी धोकर, साफ करवाया, हजार घड़े पानी ढुला पाया। मंदिर खोला तो सब मलीनता साफ और जलसें गीला मालम दिया इत्यादि अनेक विद्याओंसें सम्पन्न फलौधी लोहावट पोकरणकै श्रावक देखनेवाले मौजूद हैं ३। श्रीसुगन चन्दजीने बीकानेर नरेश महाराजा डूंगर सिंहजीको अनेक मन चिंताकी होनेवाली बात आगे कह दी। तब राजासें शिवबाड़ीमें मंदिरके वास्ते भूमिका पट्टा करवाया। अभी आचार्य खरतर पंडित तन सुखजीनें मेघ बर्षाका बिकानेरमें बिलकुल अभाव भया तब दरबार महाराज श्रीगंगासिंहजीनें हजारों रुपये खर्च कर ब्राह्मणोंसे अनुष्ठान कराया बूंद भी नहीं गिरी तब इनको बुलवाया। इन्होंने कहा यदि गुरुदेव करेगा तो भादवा बदी दशमीसे बर्षा शुरू होगी और सच ही उस दिनसें ही मेघनें जय जयकार कर दिया। यह बात १९६३ सम्बत्की है। ऐसे २ प्रभावशाली मंत्रबादी सर्व शास्त्रवेत्ता यती अभी विद्यमान हैं खरतर गच्छमें।

७४ श्री जिन चंद्रसूरिः इनकी अवज्ञा करनेवालोंको महाराजनें स्फुर माया तूं कोढिया होगा, सो सच होगया। पं. अनोपचन्द जतीको, शैतान लगा था, सो बिना पढे अनेक भाषा बोलता था। बहुत लोगोंने इलाज किये परंतु अच्छा नहीं हुआ गुरूनें एक तमाचा मारा सो उसी वख्त छोड़कर बोला जाता हूं। उसी वक्त वह होशमें आया। वह

यती विद्यमान बीकानेरमें है। ऐसें प्रभावीक गुरु होगये।

७४ श्रीजिनकीर्तिसूरिःतत्पद

७५ जंगमयुग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीजिन चारित्र सूरीश्वर विजयते, क्षेमधाड़ शाखामें उपाध्याय श्रीनेममूर्ति जीगणिः। वाचक विनय भद्रजीगणिः उपाध्यायक्षेम माणिक्यजीगणिः तथा पंडित राजसिंहजी गणिः इन्होंकों दादा साहिब अर्स पर्स थे जिन्होंने छत्रपती थारे पायनमें इत्यादि दरपूनम एक स्तवन सीरणी गुरूकी करते एकाशन हमेश करते वदन कमलवाणी विमल इत्यादि अनेक छन्द महाकवी षट् शास्त्र वेत्ता हुए उन दोनोंके शिष्य पंडित लद्धि हर्षजी सवियाण गांममे ठाकुरके पूजनीय हुए उन्होंकेशिष्यछठेमासलोचपंच तिथी उपवास उभय कालप्रतिक्रमणवालब्रम्हचारी सर्व आरम्भके त्यागी सवाक्रोड़ परमेष्ठी मंत्रके स्मारक प्रसिद्ध नांम श्रीसाधुजी दीक्षानाम धर्मशीलगणिः उन्होंके बड़े शिष्य हेमप्रिय गणिः लघुपंडित श्रीकुशल निधान मुनिके शिष्य उपाध्याय श्रीरामलाल (ऋद्धिसार गणिः) ने इस ग्रंथका संग्रह करा जो कुछ जादह कम लिखणेमें आया होय तो मिथ्यादुस्कृतं, ये ग्रंथ सर्व विवेकी भव्य जीवोंको आनन्द मंगल सुख वृद्धि करो श्रीरस्तुकल्याण मस्तु लेखकपाठकयोशुभं (दोहा) विक्रम संवत् उगण शत, छासठ ऊपर मान, श्रीविक्रमपुर नग्रमें गंग-सिंह राजान। १। खरतर भट्टारकपती; श्रीजिन कीर्तिसूरिन्द। पट्ट प्रभाकर जय रहो, काटो कुमति फंद। २। गुण अनेक जगमें अचल, मंत्र विसारद पुरि, जापजपे उपगारपर श्री जिनचारित्रसूरिः ३ धर्मशील गुरूराजके मुनिवर कुशल निधान। युक्ति वारिधिः गुण प्रगट, उपाध्याय पदथान। ४। संग्रह कीनो ग्रंथको रामगणिः ऋद्धिसार। चार वर्णकी ख्यातको, समझोसबनरनार ५ विद्याशालासे सदा जैनधर्म उद्योत,। पढ़सुणकर श्रीसंघके, नित २ मंगल जोत। ६। इतिश्रीओसवंसमुक्तावलि श्रावकाचार कुलदर्पण संम्पूर्णम्॥